UPBIL 04831

संस्कृति, साहित्य, अध्यात्म और जीवन दर्शन की मासिक द्विभाषी पत्रिका

मूल्य ₹200

संस्कृति पर्व

Sanskritiparva

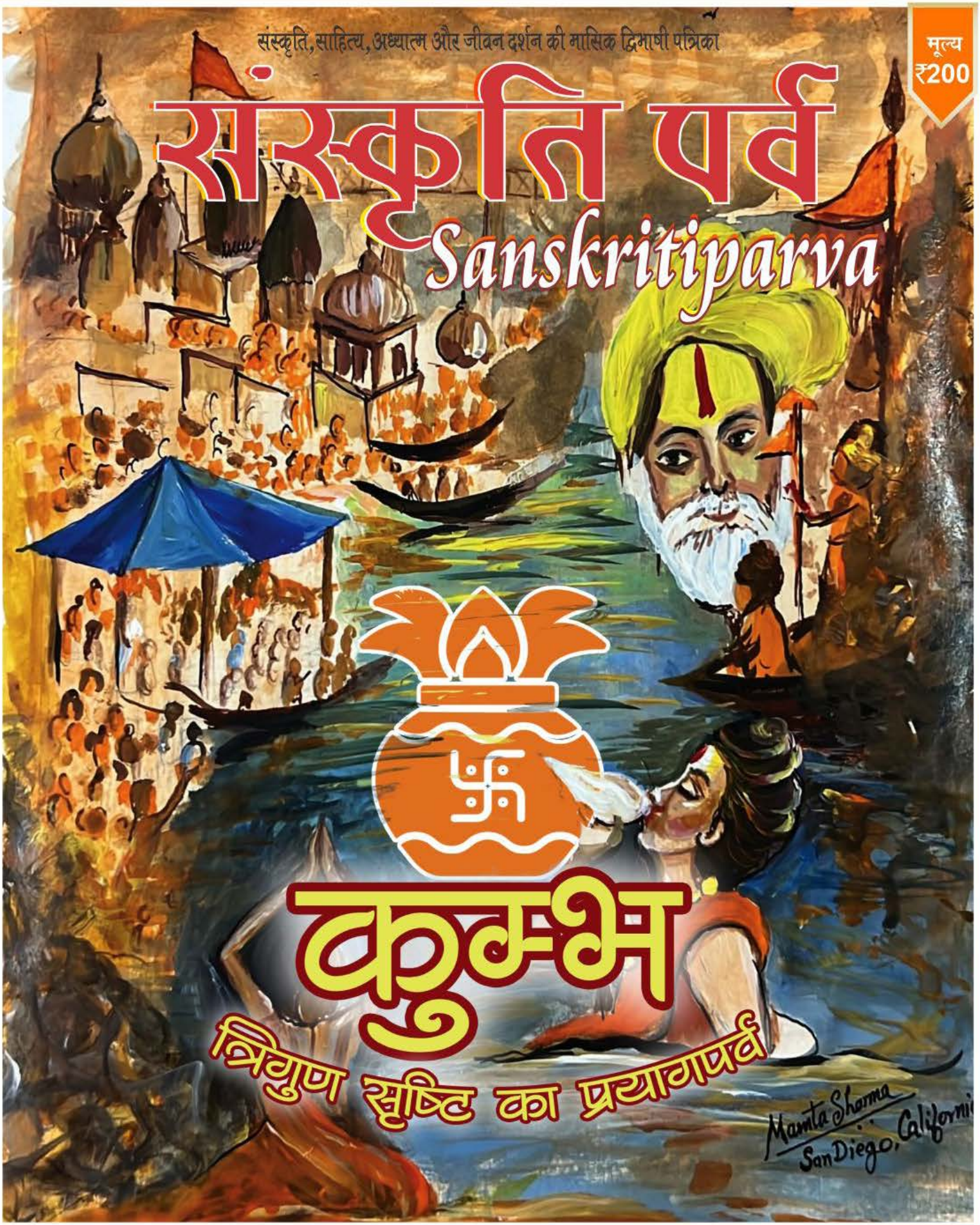

कुम्भ

त्रिगुण सृष्टि का प्रयागपर्व

Mamta Sharma
San Diego, California

विदेश के लिए मूल्य : $10

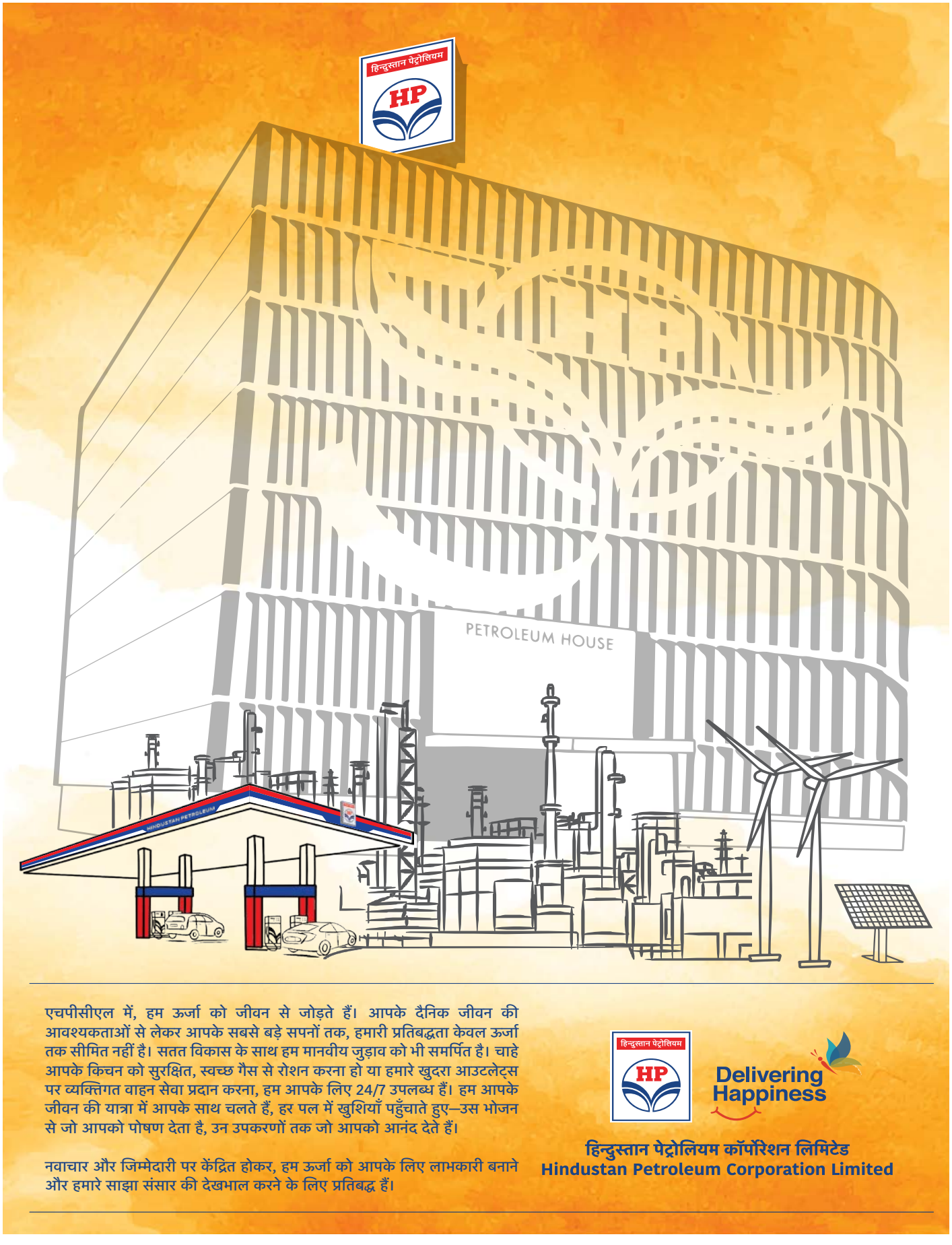

एचपीसीएल में, हम ऊर्जा को जीवन से जोड़ते हैं। आपके दैनिक जीवन की आवश्यकताओं से लेकर आपके सबसे बड़े सपनों तक, हमारी प्रतिबद्धता केवल ऊर्जा तक सीमित नहीं है। सतत विकास के साथ हम मानवीय जुड़ाव को भी समर्पित है। चाहे आपके किचन को सुरक्षित, स्वच्छ गैस से रोशन करना हो या हमारे खुदरा आउटलेट्स पर व्यक्तिगत वाहन सेवा प्रदान करना, हम आपके लिए 24/7 उपलब्ध हैं। हम आपके जीवन की यात्रा में आपके साथ चलते हैं, हर पल में खुशियाँ पहुँचाते हुए—उस भोजन से जो आपको पोषण देता है, उन उपकरणों तक जो आपको आनंद देते हैं।

नवाचार और जिम्मेदारी पर केंद्रित होकर, हम ऊर्जा को आपके लिए लाभकारी बनाने और हमारे साझा संसार की देखभाल करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम
HP

Delivering Happiness

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड
Hindustan Petroleum Corporation Limited

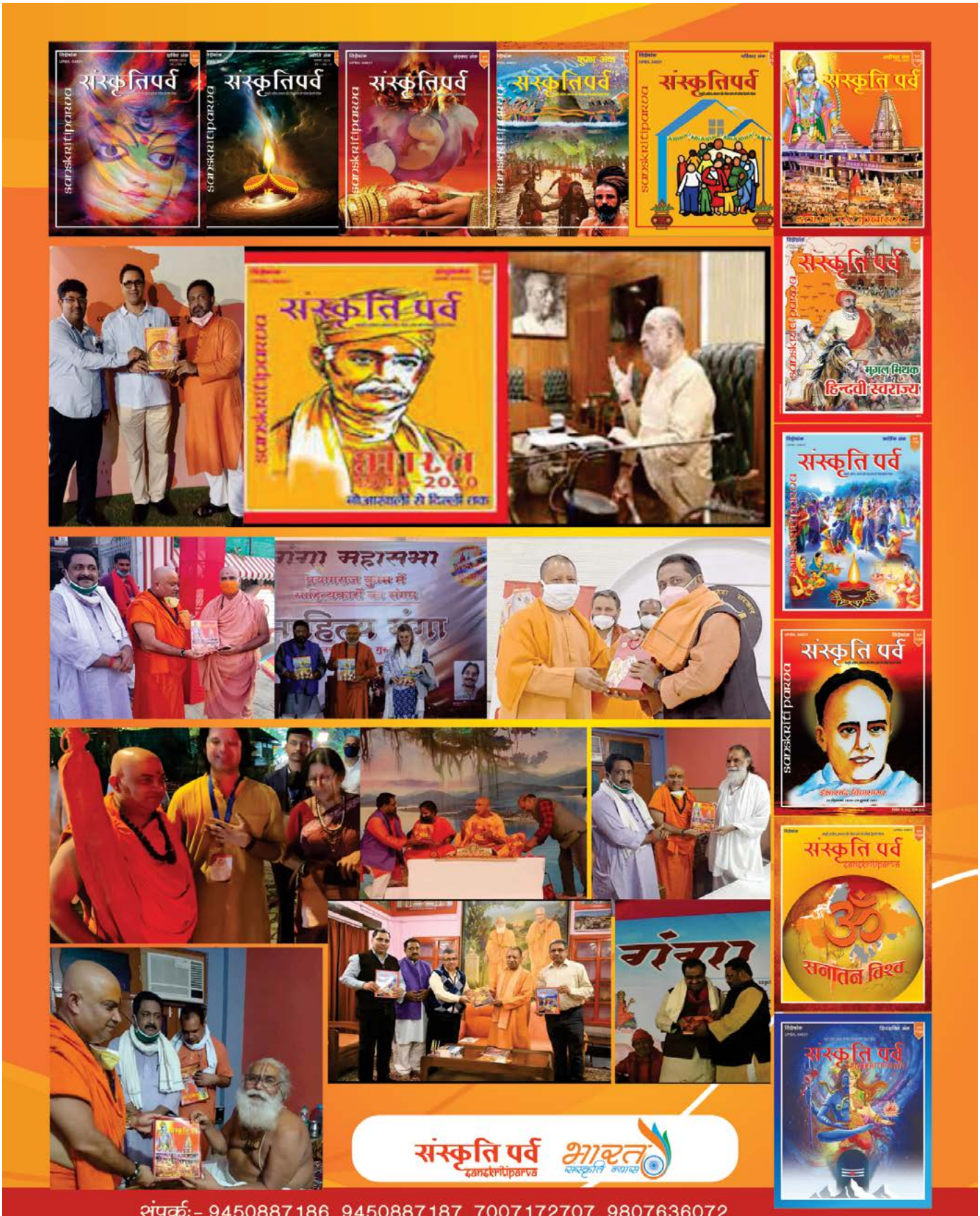

संपर्कः- 9450887186, 9450887187, 7007172707, 9807636072
email- editor.sanskritiparva@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

20
कुम्भ असीम कृपा का अमृत घट

प्रयागराज का कुंभ मानव जाति के लिए एक ऐसा ही अवसर है जब असीम कृपा प्राप्त कर मनुष्य अपने जीवन क्रम को यात्रा का आकार प्रदान कर सृष्टि में समन्वय के साथ जीने और अमर होने की संस्तुति प्राप्त करने की क्षमता विकसित कर पाता है।

कुम्भ:अमृतधार्मिता का उत्सव
28

कुंभ पर्व मात्र नहीं पर्वों का जल और जमीन से जुड़ी साधना के पर्वों एक ऐसा समुच्चय है, जो मनुष्य के अमृत धर्मयात्रा का सम्पूर्ण निदर्शन कराता है। मरणधर्मिता से अमरत्व की ओर अन्धकार से प्रकाश की ओर मानव जाति के प्रगमन का इतिहास, संजोये महाकुंभ का महापर्व सनातन धर्म में ज्ञान, दान, सेवा और तप चैतन्य स्वरूप है। इसीलिए कुंभ की मूल कथा में अमृत का वितरण है।

38
KUMBH MELA : A Historical Perspective

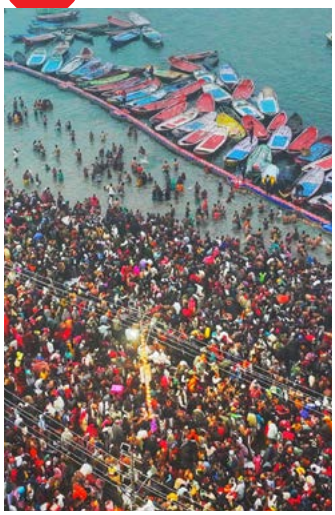

According to Hindu mythology, Vishnu disguised himself as Mohini to prevent demons from obtaining the amrit during the churning of the ocean. However, some drops of this nectar fell on earth during their struggle. These four cities are believed to be blessed with these drops.

67
लोक आस्था का सांस्कृतिक महापर्व

मानव को नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाता कुम्भ नई पीढ़ी के लिए किसी विश्वविद्यालय से कम नहीं है। भारतीय एकता-अखंडता का विहंगम उदाहरण कुंभ महापर्व हमारे समक्ष जीवंत उदाहरण है जो कि भारतीय लोक आस्था की परंपराओं, उत्सवों एवं सनातन धर्म- संस्कृति की निरंतर प्रवाहमान धारा को जीवंत बनाये हुए है।

संगम क्षेत्र में लहरा रही सनातन की ऊर्जा
94

इस बार संगम तट मकर संक्रांति से महाशिवरात्रि के बीच 45 दिनों तक महाकुंभ पर्व का पावन सुयोग होगा। इस अवधि में शैव संप्रदाय के दशनामी संन्यासी, वैष्णव संप्रदाय के रामानंदाचार्य , रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य,निम्बार्काचार्य, वल्लभाचार्य, गौड़पादाचार्य आदि के साथ ही गृहस्थ, दार्शनिक, वैज्ञानिक, देशी-विदेशी श्रद्धालु, पर्यटक संगम तट पहुंच रहे हैं। सरकारी अनुमानों की मानें तो 45 दिनों की इस अवधि में यहां करीब 40 करोड़ लोग यहां आने वाले हैं।

118
सनातन आस्था संस्कृति और अध्यात्म के संरक्षण को समर्पित अदाणी समूह

महाकुंभ सेवा और परमार्थ की तपोभूमि है। सेवा ही राष्ट्रभक्ति और ईश्वर की पूजा का सर्वोच्च स्वरूप है। कुम्भ का यह अद्वितीय पर्व धार्मिक उन्नति, सामाजिक एकता एवं भारत की सांस्कृतिक समृद्धि का अनुपम प्रतीक है।

पाठकों से

संस्कृति पर्व का यह विशेष अंक आपके हाथों में है। इस अंक के लिये चित्रों का संकलन गूगल से किया गया है जिसके लिए हम उन सभी छायाकारों के प्रति कृतज्ञ हैं। इस अंक मे संभव है कि संपादन अथवा संयोजन में कुछ त्रुटियां रह गयी हों इसलिए हम अपने सुधी पाठकों से अपेक्षा करते हैं कि वे त्रुटियों को नजरअंदाज करेंगें। यह अंक आपको कैसा लगा इस बारे में हमें अपने विचारों से अवश्य अवगत कराईएगा। सनातन संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में आपका योगदान अत्यंत मूल्यवान है।

– सम्पादक

सनातन प्रकाश पुंज

जगद्गुरू स्वामी वासुदेवाचार्य जी स्वामी विद्याभास्कर जी महाराज

स्वामी जीतेन्द्रानंद सरस्वती जी

(महामंत्री, अखिल भारतीय संत समिति एवं गंगा महासभा)

जगद्गुरु स्वामी राघवाचार्य जी (श्री अयोध्या जी)

स्वामी राजकुमार दासजी (श्री अयोध्या जी)

संरक्षक

श्री शिव प्रताप शुक्ल

(महामहिम राज्यपाल, हिमांचल)

विद्वत परिषद

प्रो. सभाजीत मिश्र - (पूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, गो.वि.वि.)

श्री मनोजकांत मिश्र - (निदेशक, राष्ट्रधर्म)

प्रो. सुरेन्द्र दुबे - (उपाध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा)

प्रो. एम. एम. पाठक - (कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,नई दिल्ली)

प्रो. संजय द्विवेदी - (माखनलाल चतुर्वेदी रा.प.वि., भोपाल)

डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव - (अवकाशप्राप्त आई.ए.एस.)

श्री कृष्णकांत उपाध्याय - (वरिष्ठ पत्रकार)

प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी - (सदस्य, आईसीएचआर, इतिहास विभाग, गो.वि.वि.)

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय - (पूर्व अध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा)

प्रो. अजित के चतुर्वेदी - (आईआईटी, कानपुर)

प्रो. राजेन्द्र सिंह - (पूर्व प्रतिकुलपति, गो.वि.वि.)

प्रो. मुन्ना तिवारी - (अधिष्ठाता एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग बु.वि.वि. झांसी)

श्री प्रफुल्ल केतकर - (सम्पादक, ऑर्गनाइजर)

डॉ. मृणालिनी चतुर्वेदी - (अध्यक्ष क्रायोबैंक इंटरनेशनल, नई दिल्ली)

डॉ. नरेश अग्रवाल - (वरिष्ठ बाल रोग विशेषज्ञ, गोरखपुर)

श्री भास्कर दूबे - (वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)

डॉ. योगेश मिश्र - (समूह सम्पादक, अपना भारत/न्यूज ट्रैक, लखनऊ)

डॉ. देवर्षि शर्मा - (लेखक एवं समाजसेवी, कानपुर)

श्री राकेश त्रिपाठी - (आई. आर. एस.)

डॉ. अजय मणि त्रिपाठी - (प्रधानाचार्य)

संस्कृति पर्व
sanskritiparva

विशेषांक

वर्ष-7 अंक-2 **जनवरी-2025**

प्रेरणा

परम पूज्य स्वामी अखण्डानंद जी महाराज

संत साहित्य मर्मज्ञ आचार्य परशुराम चतुर्वेदी

ब्रह्मर्षि रेवती रमण पाण्डेय

सलाहकार परिषद

अध्यक्ष

प्रो. राकेश कुमार उपाध्याय

(भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली)

उपाध्यक्ष

श्री वेदांक सिंह, (दिल्ली)

सदस्य

श्री अजीत दुबे (सदस्य साहित्य अकादमी, नई दिल्ली)

डॉ. पुनीत कुमार द्विवेदी, (इंदौर)

श्री कुणाल तिलक, (पुणे)

श्री अनीश गोखले, (बेंगलुरु)

श्री अंबरीष फडणवीस, (मुम्बई)

श्री सुजीत कुमार पाण्डेय (वरिष्ठ पत्रकार, गोरखपुर)

श्री दयानंद पाण्डेय (लेखक एवं पत्रकार)

डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव (चिकित्सक एवं लेखक, वाराणसी)

डॉ. वाई के मद्धेशिया (वरिष्ठ चिकित्सक, कुशीनगर)

प्रो. पुनीत विसारिया(हिन्दी विभाग, बुं.वि.वि. झांसी)

आचार्य सोमदत्त द्विवेदी (आनंदकानन, वाराणसी)

श्री अरुणकांत त्रिपाठी (सम्पादक, कमलज्योति)

श्री दीप्तभानु डे (वरिष्ठ पत्रकार, गोरखपुर)

श्री रतिभान त्रिपाठी (वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)

श्री पुरुषोत्तम तिवारी (वरिष्ठ पत्रकार, कोलकाता)

डॉ. राम शर्मा (शिक्षाविद्, मेरठ)

श्री दिवाकर शर्मा (वरिष्ठ पत्रकार, शिवपुरी)

श्रीमती प्रज्ञा मिश्र (वाराणसी)

श्री सिद्धार्थ मणि त्रिपाठी (देवरिया)

प्रधान सम्पादक

श्री हनुमानजी महाराज

सम्पादकीय संरक्षक

पद्मश्री आचार्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

प्रबंध सम्पादक

बी के मिश्र

सम्पादक

संजय तिवारी

कार्यकारी सम्पादक

डॉ. अर्चना तिवारी

सहायक सम्पादक

अनिता अग्रवाल

सह सम्पादक

आचार्य गोविन्द शर्मा

आमोदकान्त मिश्र

संयुक्त सम्पादक

श्रेया मेहता

सम्पादक : समन्वय

कैप्टन सुभाष ओझा

सम्पादक : फिल्म, कला और संचार

ज्योत्सना गर्ग

विशेष सम्पादकीय परामर्श

आचार्य लालमणि तिवारी

(गीता प्रेस, गोरखपुर)

विधि सलाहकार

श्री अमिताभ चतुर्वेदी

(वरिष्ठ अधिवक्ता, नई दिल्ली)

असित के चतुर्वेदी

(वरिष्ठ अधिवक्ता, लखनऊ)

लेखा परीक्षक

अरुण गुप्ता

लेआउट, ग्राफिक्स एवं डिजाइन

संजय मानव

विज्ञापन एवं मुद्रण

अरविन्द यादव

सूचना तकनीक एवं प्रबंधन

उत्कर्ष तिवारी

क्रिएटिव

प्रकर्ष तिवारी

(Shot by inflict & Blvck Hole Media)

केन्द्र प्रभारी, अमेरिका

आचार्य रत्नदीप उपाध्याय

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक संजय तिवारी द्वारा स्वास्तिक ग्रफिक्स, महागनगर, लखनऊ उ. प्र. से मुद्रित एंव बी–64, आवास विकास कॉलोनी, सूरजकुण्ड, गोरखपुर, उ.प्र. से प्रकाशित

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के लिए संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। किसी भी प्रकार के न्यायिक विवाद का क्षेत्र गोरखपुर जिला न्यायालय के अधीन होगा।

पंजीकृत कार्यालय : बी-64, आवास विकास कालोनी, सूरजकुंड, गोरखपुर-273001

लखनऊ कार्यालय : 2/43, विजय खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010

सम्पर्क - : + **9194508 87186-87**

USA Office : 17413 Blackhawk St. Granada Hills, CA 91344 USA

Cell : 1-818-815-9826

- DISTRIBUTER -

Universal Book Sellers
82, Hazratganz, Lukcnow.
1/10, Vivek Khand,
Mithaiwala Chauraha,
Gomtinagar, Lucknow.
Cont : 9335912652
www.universbooksellers.com

(भारत संस्कृति न्यास और संस्कृति पर्व प्रकाशन का प्रकल्प)

editor.sanskritiparva@gmail.com

www.bharatsanskritinyas.org

Follow us

॥ श्री हरि ॥

श्री शंकराचार्यो विजयतेतराम्

अनंत श्री विभूषित ज्योतिषपीठाधीश्वर भगवत्पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्य

श्री स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती जी महाराज

ज्योर्तिमठ, बद्रीका आश्रम, जोशीमठ, बद्रीनाथ
ज्योर्तिमठ, जोशीमठ चमोली उत्तराखंड
श्री ब्रह्मनिवास शंकराचार्य आश्रम 56/15,
अलोपीबाग प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

अनंत श्री विभूषित ज्योतिषपीठोद्धारक भगवत्पूज्यपाद जगद्गुरु
शंकराचार्य ब्रह्मलीन श्री स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी महाराज

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि संस्कृति पर्व पत्रिका ने प्रयागराज कुंभ 2025 के लिए विशेष रूप से एक अप्रतिम अंक का संयोजन किया है। मुझे ज्ञात हुआ है कि इस अंक में कुंभ की प्राचीनतम परंपरा , संस्कृति, इसके विज्ञान और संपूर्ण आध्यात्मिक स्वरूप पर इस पत्रिका में शोध परक सामग्री प्रस्तुत की गई है।

इसमें देश के अनेक विद्वानों ने अपना योगदान दिया है। पत्रिका के प्रबंध संपादक श्री बी के मिश्रा, संपादक संजय तिवारी और उनकी परिषद का यह प्रयास अद्भुत है। इसका लाभ सामान्य जन को भी मिलेगा।

मैं संस्कृति पर्व के इस विशेष अंक की असीम सफलता की कामना करता हूं।
स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती

अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद

अध्यक्ष

श्री महन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज (महानिर्वाणी अखाड़ा)

पत्रांक सं. :

दिनांक :

मंगल संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि सनातन संस्कृति और अध्यात्म के लिए समर्पित भारत संस्कृति न्यास के एक प्रकल्प संस्कृति पर्व प्रकाशन की पत्रिका संस्कृति पर्व ने अपनी यात्रा के 6 वर्ष पूरे कर लिए हैं। पत्रिका के सातवें वर्ष का प्रथम अंक प्रयागराज कुंभ के अवसर पर विशेष रूप से प्रकाशित किया जा रहा है। मेरे संज्ञान में आया है कि इस विशेष अंक के लिए अत्यंत शोध परक सामग्री का संयोजन किया गया है।

पत्रिका के संपादक श्री संजय तिवारी की इस श्रमसाध्य योजना के लिए उनको एवं उनकी संपादकीय परिषद को हृदय से बधाई। संस्कृति पर्व के इस विशेष अंक के माध्यम से भावी पीढ़ी निश्चित रूप से हमारी सनातन आध्यात्मिक विरासत और परंपरा से परिचित होकर भारत को विश्वगुरु के रूप में स्थापित करने में अपना योगदान दे सकेगी।

मैं अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद की ओर से संस्कृति पर्व के इस विशेष अंक की सफलता की कामना करता हूं। सनातन, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक आचार्य के रूप में संपादक संजय तिवारी जी के उज्जवल भविष्य की मंगलकामना।

श्रीमहंत रविन्द्र पुरी जी महाराज

दक्ष प्रजापति मन्दिर,
कनखल, हरिद्वार,
उत्तराखण्ड - 249408

राष्ट्र रक्षा धर्म रक्षा गौ-गंगा रक्षा

अखिल भारतीय संत समिति

पंजीकृत कार्यालय : स्वामी वामदेव ज्योर्तिमठ, चैतन्य विहार फेज-2, सौफुटा रोड, वृंदावन, मथुरा (उप्र)
केंद्रीय कार्यालय : ब्रह्मनिवास, 60/30, छोटी गैबी, सिगरा वाराणसी

शुभकामना संदेश

प्रयागराज कुंभ 2025 के पावन आयोजन की बेला में संस्कृति पर्व का विशेष अंक प्रकाशित होना सनातन संस्कृति और आध्यात्मिक जगत के लिए अत्यंत हर्ष का विषय है। भारत संस्कृति न्यास और संस्कृति पर्व के संस्थापक श्री संजय तिवारी जी के इस तरह के संयोजन और प्रस्तुतियों से अवगत हूं इसलिए आश्वस्त हूं कि संस्कृति पर्व का यह अंक ऐसा होगा जिससे सनातन के प्रति जिज्ञासा रखने वाले पाठक लाभान्वित होंगे।

सनातन भारत के निर्माण के आधुनिक कालखंड में जिस प्रकार से महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी और भाई जी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार जी ने जिस यात्रा को आरंभ किया उसको संजय तिवारी अपने गृहस्थ परंपरा के साथ साथ आगे बढ़ा रहे हैं। यह कार्य अत्यंत दुरूह और कठिन है। मैं समझ सकता हूं कि विगत 6 वर्षों में 34 विशेषांक कैसे प्रकाशित हुए होंगे। निश्चित तौर पर इसमें किसी दैवीय शक्ति की प्रेरणा और इच्छा है।

गृहस्थ जीवन की दुरूहताओं के साथ ऐसी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अनुसंधानयुक्त यात्रा संजय तिवारी के आचार्यत्व को स्थापित करती है। संस्कृति पर्व के 34वें विशेषांक के लिए संस्कृति पर्व की संपादकीय परिषद को हृदय से बधाई।

नारायण

स्वामी जीतेंद्रानंद सरस्वती
महामंत्री
अखिल भारतीय संत समितिगंगा महासभा

Mo. No. : 09415304860 | E-mail : acharya_jeetendra@yahoo.co.in

हरदीप एस पुरी
HARDEEP S PURI

सत्यमेव जयते

मंत्री
पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस
भारत सरकार
Minister
Petroleum and Natural Gas
Government of India

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि सनातन संस्कृति और अध्यात्म के लिए समर्पित **'भारत संस्कृति'** न्यास के एक प्रकल्प के रूप में **'संस्कृति पर्व'** प्रकाशन की पत्रिका संस्कृति पर्व ने अपनी यात्रा के 6 वर्ष पूरे कर लिए हैं। पत्रिका के सातवें वर्ष का प्रथम अंक प्रयागराज महाकुंभ-2025 के अवसर पर विशेष रूप से प्रकाशित किया जा रहा है। मेरे संज्ञान में आया है कि इस विशेष अंक के लिए अत्यंत शोध परक सामग्री का संयोजन किया गया है। जिसके लिए **'संस्कृति पर्व'** की संपादकीय परिषद को हृदय से बधाई।

'संस्कृति पर्व' के इस विशेष अंक के माध्यम से भावी पीढ़ी निश्चित रूप से हमारी सनातन आध्यात्मिक विरासत और परंपरा से परिचित होगी और भारत को विश्वगुरु के रूप में पुनः स्थापित करने में अपना योगदान देगी।

मैं महाकुंभ के अवसर पर **'संस्कृति पर्व'** के इस विशेष अंक की सफलता की कामना करता हूँ।

(हरदीप एस पुरी)

दिनांक 07 जनवरी 2025
स्थान - नई दिल्ली

Office : Room No. 201-A, Shastri Bhawan, New Delhi-110001; Phone : 011-23386120, 23381462, 23386118 (Fax)

प्रयागराज में प्रधानमंत्री – शब्दशः

भव्य शुभारंभ

त्रिवेणीं माधवं सोमं, भरद्वाजं च वासुकिम्।
वन्दे अक्षय-वटं शेषं, प्रयागं तीर्थनायकम्॥

त्रिवेणी का त्रिकाल प्रभाव, वेणी माधव की महिमा, सोमेश्वर के आशीर्वाद, ऋषि भारद्वाज की तपोभूमि, नागराज वासुकि का विशेष स्थान, अक्षय वट की अमरता और शेष की अशेष कृपा! ये है- हमारा तीर्थराज प्रयाग! तीर्थराज प्रयाग यानी- "चारि पदारथ भरा भँडारू। पुन्य प्रदेस देस अति चारू"। अर्थात्, जहां धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ सुलभ हैं, वो प्रयाग है।

उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल जी, मुख्यमंत्री श्रीमान योगी आदित्यनाथ जी, उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या जी, ब्रजेश पाठक जी, उत्तर प्रदेश के मंत्री, सांसद और विधायक साथी, प्रयागराज के मेयर और जिला पंचायत अध्यक्ष, अन्य महानुभाव, और मेरे प्यारे भाइयों और बहनों।

प्रयागराज में संगम की इस पावन भूमि को मैं श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता हूं। महाकुंभ में पधार रहे सभी साधु-संतों को भी नमन करता हूं। महाकुंभ को सफल बनाने के लिए दिन-रात परिश्रम कर रहे कर्मचारियों का, श्रमिकों और सफाई-कर्मियों का मैं विशेष रूप से अभिनंदन करता हूं। विश्व का इतना बड़ा आयोजन, हर रोज लाखों श्रद्धालुओं के स्वागत और सेवा की तैयारी लगातार 45 दिनों तक चलने वाला महायज्ञ, एक नया नगर बसाने का महा-अभियान, प्रयागराज की इस धरती पर एक नया इतिहास रचा जा रहा है। अगले साल महाकुंभ का आयोजन देश की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक पहचान को नए शिखर पर स्थापित करेगा। और मैं तो बड़े विश्वास के साथ कहता हूं, बड़ी श्रद्धा के साथ कहता हूं, अगर मुझे इस महाकुंभ का वर्णन एक वाक्य में करना हो तो मैं कहूंगा ये एकता का ऐसा महायज्ञ होगा, जिसकी चर्चा पूरी दुनिया में होगी। मैं इस आयोजन की भव्य और दिव्य सफलता की आप सभी को शुभकामनाएं देता हूं।

साथियों,

हमारा भारत पवित्र स्थलों और तीर्थों का देश है। ये गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा जैसी अनगिनत पवित्र नदियों का देश है। इन नदियों के प्रवाह की जो पवित्रता है, इन अनेकानेक तीर्थों का जो महत्व है, जो महात्म्य है, उनका संगम, उनका समुच्चय, उनका योग, उनका संयोग, उनका प्रभाव, उनका प्रताप ये प्रयाग है। ये केवल तीन पवित्र नदियों का ही संगम नहीं है। प्रयाग के बारे में कहा गया है-

माघ मकरगत रबि जब होई।

तीरथपतिहिं आव सब कोई॥

अर्थात्, जब सूर्य मकर में प्रवेश करते हैं, सभी दैवीय शक्तियाँ, सभी तीर्थ, सभी ऋषि, महर्षि, मनीषि प्रयाग में आ जाते हैं। ये वो स्थान है, जिसके प्रभाव के बिना पुराण पूरे नहीं होते। प्रयागराज वो स्थान है, जिसकी प्रशंसा वेद की ऋचाओं ने की है।

भाइयों-बहनों,

प्रयाग वो है, जहां पग-पग पर पवित्र स्थान हैं, जहां पग-पग पर पुण्य क्षेत्र हैं।

त्रिवेणीं माधवं सोमं, भरद्वाजं च वासुकिम्। वन्दे अक्षय-वटं शेषं, प्रयागं तीर्थनायकम्॥

अर्थात्, त्रिवेणी का त्रिकाल प्रभाव, वेणी माधव की महिमा, सोमेश्वर के आशीर्वाद, ऋषि भारद्वाज की तपोभूमि, नागराज वासुकि का विशेष स्थान, अक्षय वट की अमरता और शेष की अशेष कृपा! ये है- हमारा तीर्थराज प्रयाग! तीर्थराज प्रयाग यानी- "चारि पदारथ भरा भँडारू। पुन्य प्रदेस देस अति चारू"। अर्थात्, जहां धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ सुलभ हैं, वो प्रयाग है। प्रयागराज केवल एक भौगोलिक भूखंड नहीं है। ये एक आध्यात्मिक अनुभव क्षेत्र है। ये प्रयाग और प्रयाग के

लोगों का ही आशीर्वाद है, कि मुझे इस धरती पर बार-बार आने का सौभाग्य मिलता है। पिछले कुंभ में भी मुझे संगम में स्नान करने का सौभाग्य मिला था। और, आज इस कुंभ के आरंभ से पहले मैं एक बार फिर मां गंगा के चरणों में आकर के आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त किया है। आज मैंने संगम घाट के लेटे हुए हनुमान जी के दर्शन किए। अक्षयवट वृक्ष का आशीर्वाद भी प्राप्त किया। इन दोनों स्थलों पर श्रद्धालुओं की सहूलियत के लिए हनुमान कॉरिडोर और अक्षयवट कॉरिडोर का निर्माण हो रहा है। मैंने सरस्वती कूप री-डवलपमेंट प्रोजेक्ट की भी जानकारी ली। आज यहां हजारों करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट का लोकार्पण हुआ है। मैं इसके लिए आप सबको बधाई देता हूं।

साथियों,

महाकुंभ हजारों वर्ष पहले से चली आ रही हमारे देश की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक यात्रा का पुण्य और जीवंत प्रतीक है। एक ऐसा आयोजन जहां हर बार धर्म, ज्ञान, भक्ति और कला का दिव्य समागम होता है। हमारे यहां कहा गया है, दश तीर्थ सहस्राणि, तिस्रः कोट्यस्तथा अपराः।

सम आगच्छन्ति माघ्यां तु, प्रयागे भरतर्षभ॥

अर्थात्, संगम में स्नान से करोड़ों तीर्थ के बराबर पुण्य मिल जाता है। जो व्यक्ति प्रयाग में स्नान करता है, वो हर पाप से मुक्त हो जाता है। राजा-महाराजाओं का दौर हो या फिर सैकड़ों वर्षों की गुलामी का कालखंड आस्था का ये प्रवाह कभी नहीं रुका। इसकी एक बड़ी

वजह ये रही है कि कुंभ का कारक कोई वाह्य शक्ति नहीं है। किसी बाहरी व्यवस्था के बजाय कुंभ, मनुष्य के अंतर्मन की चेतना का नाम है। ये चेतना स्वतः जागृत होती है। यही चेतना भारत के कोने-कोने से लोगों को संगम के तट तक खींच लाती है। गांव, कस्बों, शहरों से लोग प्रयागराज की ओर निकल पड़ते हैं। सामूहिकता की ऐसी शक्ति, ऐसा समागम शायद ही कहीं और देखने को मिले। यहां आकर संत-महंत, ऋषि-मुनि, ज्ञानी-विद्वान, सामान्य मानवी सब एक हो जाते हैं, सब एक साथ त्रिवेणी में डुबकी लगाते हैं। यहां जातियों का भेद खत्म हो जाता है, संप्रदायों का टकराव मिट जाता है। करोड़ों लोग एक ध्येय, एक विचार से जुड़ जाते हैं। इस बार भी महाकुंभ के दौरान यहां अलग-अलग राज्यों से करोड़ों लोग जुटेंगे, उनकी भाषा अलग होगी, जातियां अलग होंगी, मान्यताएं अलग होंगी, लेकिन संगम नगरी में आकर वो सब एक हो जाएंगे। और इसलिए मैं फिर एक बार कहता हूं, कि महाकुंभ, एकता का महायज्ञ है। जिसमें हर तरह के भेदभाव की आहुति दे दी जाती है। यहां संगम में डुबकी लगाने वाला हर भारतीय एक भारत-श्रेष्ठ भारत की अद्भुत तस्वीर प्रस्तुत करता है।

साथियों,

महाकुंभ की परंपरा का सबसे अहम पहलू ये है कि इस दौरान देश को दिशा मिलती है। कुंभ के दौरान संतों के वाद में, संवाद में, शास्त्रार्थ में, शास्त्रार्थ के अंदर देश के सामने मौजूद अहम विषयों पर, देश के सामने मौजूद चुनौतियों पर व्यापक चर्चा होती थी, और फिर संतजन मिलकर राष्ट्र के विचारों को एक नई ऊर्जा देते थे, नई राह भी दिखाते थे। संत-महात्माओं ने देश से जुड़े कई महत्वपूर्ण निर्णय कुंभ जैसे आयोजन स्थल पर ही लिए हैं। जब संचार के आधुनिक माध्यम नहीं थे, तब कुंभ जैसे आयोजनों ने बड़े सामाजिक परिवर्तनों का आधार तैयार किया था। कुंभ में संत और ज्ञानी लोग मिलकर समाज के सुख-दुख की चर्चा करते थे, वर्तमान और भविष्य को लेकर चिंतन करते थे, आज भी कुंभ जैसे बड़े आयोजनों का महात्म्य वैसा ही है। ऐसे आयोजनों से देश के कोने-कोने में समाज में सकारात्मक संदेश जाता है, राष्ट्र चिंतन की ये धारा निरंतर प्रवाहित होती है। इन आयोजनों के नाम अलग-अलग होते हैं, पड़ाव अलग-अलग होते हैं, मार्ग अलग-अलग होते हैं, लेकिन यात्री एक होते हैं, मकसद एक होता है।

साथियों,

कुंभ और धार्मिक यात्राओं का इतना महत्व होने के बावजूद, पहले की सरकारों के समय, इनके महात्म्य पर ध्यान नहीं दिया गया। श्रद्धालु ऐसे आयोजनों में कष्ट उठाते रहे, लेकिन तब की सरकारों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। इसकी वजह थी कि भारतीय संस्कृति से, भारत की आस्था से उनका लगाव नहीं था, लेकिन आज केंद्र और राज्य में भारत के प्रति आस्था, भारतीय संस्कृति को मान देने वाली सरकार है। इसलिए कुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए सुविधाएं जुटाना डबल इंजन की सरकार अपना दायित्व समझती है। इसलिए यहां केंद्र और राज्य सरकार ने मिलकर हजारों करोड़ रुपए की योजनाएं शुरू की हैं। सरकार के अलग-अलग विभाग, जिस तरह महाकुंभ की तैयारियों को पूरा करने में जुटे हैं, वो बहुत सराहनीय है। देश-दुनिया के किसी कोने से कुंभ तक पहुंचने में कोई दिक्कत

ना हो, इसके लिए यहां की कनेक्टिविटी पर विशेष फोकस किया गया है। अयोध्या, वाराणसी, रायबरेली, लखनऊ से प्रयागराज शहर की कनेक्टिविटी को बेहतर किया गया है। मैं जिस Whole of the Government अप्रोच की बात करता हूं, उन महाप्रयासों का महाकुंभ भी इस स्थली में नजर आता है।

साथियों,

हमारी सरकार ने विकास के साथ-साथ विरासत को भी समृद्ध बनाने पर फोकस किया है। आज देश के कई हिस्सों में अलग-अलग टूरिस्ट सर्किट विकसित किए जा रहे हैं। रामायण सर्किट, श्री कृष्णा सर्किट, बुद्धिस्ट सर्किट, तीर्थांकर सर्किट, इनके माध्यम से हम देश के उन स्थानों को महत्व दे रहे हैं, जिन पर पहले फोकस नहीं था। स्वदेश दर्शन योजना हो, प्रसाद योजना हो, इनके माध्यम से तीर्थस्थलों पर सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। अयोध्या के भव्य राम मंदिर ने पूरे शहर को कैसे भव्य बना दिया है, हम सब इसके साक्षी हैं। विश्वनाथ धाम, महाकाल महालोक इसकी चर्चा आज पूरे विश्व में है। यहां अक्षय वट कॉरिडोर, हनुमान मंदिर कॉरिडोर, भारद्वाज ऋषि आश्रम कॉरिडोर में भी इसी विजन का प्रतिबिंब है। श्रद्धालुओं के लिए सरस्वती कूप, पातालपुरी, नागवासुकी, द्वादश माधव मंदिर का कायाकल्प किया जा रहा है।

साथियों,

हमारा ये प्रयागराज, निषादराज की भी भूमि है। भगवान राम के मर्यादा पुरुषोत्तम बनने की यात्रा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव श्रृंगवेरपुर का भी है। भगवान राम और केवट का प्रसंग आज भी हमें प्रेरित करता है। केवट ने अपने प्रभु को सामने पाकर उनके पैर धोए थे, उन्हें अपनी नाव से नदी पार कराई थी। इस प्रसंग में श्रद्धा का अनन्य भाव है, इसमें भगवान और भक्त की मित्रता का संदेश है। इस घटना का ये संदेश है कि भगवान भी अपने भक्त की मदद ले सकते हैं। प्रभु श्री राम और निषादराज की इसी मित्रता के प्रतीक के रूप में श्रृंगवेरपुर धाम का विकास किया जा रहा है। भगवान राम और निषादराज की प्रतिमा भी आने वाली पीढ़ियों को समता और समरसता का संदेश देती रहेगी।

साथियों,

कुंभ जैसे भव्य और दिव्य आयोजन को सफल बनाने में स्वच्छता की बहुत बड़ी भूमिका है। महाकुंभ की तैयारियों के लिए नमामि गंगे कार्यक्रम को तेजी से आगे बढ़ाया गया है। प्रयागराज शहर के सैनिटेशन और वेस्ट मैनेजमेंट पर फोकस किया गया है। लोगों को जागरूक करने के लिए गंगा दूत, गंगा प्रहरी और गंगा मित्रों की नियुक्ति की गई है। इस बार कुंभ में 15 हजार से ज्यादा मेरे सफाई कर्मी भाई-बहन कुंभ की स्वच्छता को संभालने वाले है। मैं आज कुंभ की तैयारी में जुटे अपने सफाई कर्मी भाई-बहनों का अग्रिम आभार भी व्यक्त करूंगा। करोड़ों लोग यहां पर जिस पवित्रता, स्वच्छता, आध्यात्मिकता के साक्षी बनेंगे, वो आपके योगदान से ही संभव होगा। इस नाते यहां हर श्रद्धालु के पुण्य में आप भी भागीदार बनेंगे। जैसे भगवान कृष्ण ने जूठे पत्तल उठाकर संदेश दिया था कि हर काम का महत्व है, वैसे ही आप भी अपने कार्यों से इस आयोजन की महानता को और बड़ा करेंगे। ये आप ही हैं, जो सुबह सबसे पहले ड्यूटी पर लगते हैं, और

देर रात तक आपका काम चलता रहता है। 2019 में भी कुंभ आयोजन के समय यहां की स्वच्छता की बहुत प्रशंसा हुई थी। जो लोग हर 6 वर्ष पर कुंभ या महाकुंभ में स्नान के लिए आते हैं, उन्होंने पहली बार इतनी साफ-सुंदर व्यवस्था देखी थी। इसलिए आपके पैर धुलकर मैंने अपनी कृत्यज्ञता दिखाई थी। हमारे स्वच्छता कर्मियों के पैर धोने से मुझे जो संतोष मिला था, वो मेरे लिए जीवन भर का यादगार अनुभव बन गया है।

साथियों,

कुंभ से जुड़ा एक और पक्ष है जिसकी चर्चा उतनी नहीं हो पाती। ये पक्ष है- कुंभ से आर्थिक गतिविधियों का विस्तार, हम सभी देख रहे हैं, कैसे कुंभ से पहले इस क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों में तेजी आ रही है। लगभग डेढ़ महीने तक संगम किनारे एक नया शहर बसा रहेगा। यहां हर रोज लाखों की संख्या में लोग आएंगे। पूरी व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रयागराज में बड़ी संख्या में लोगों की जरूरत पड़ेगी। 6000 से ज्यादा हमारे नाविक साथी, हजारों दुकानदार साथी, पूजा-पाठ और स्नान-ध्यान कराने में मदद करने वाले सभी का काम बहुत बढ़ेगा। यानी, यहां बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर तैयार होंगे। सप्लाई चेन को बनाए रखने के लिए व्यापारियों को दूसरे शहरों से सामान मंगाने पड़ेंगे। प्रयागराज कुंभ का प्रभाव आसपास के जिलों पर भी पड़ेगा। देश के दूसरे राज्यों से आने वाले श्रद्धालु ट्रेन या विमान की सेवाएं लेंगे, इससे भी अर्थव्यवस्था में गति आएगी। यानि महाकुंभ से सामाजिक मजबूती तो मिलेगी ही, लोगों का आर्थिक सशक्तिकरण भी होगा।

साथियों,

महाकुंभ 2025 का आयोजन जिस दौर में हो रहा है, वो टेक्नोलॉजी के मामले में पिछले आयोजन से बहुत आगे है। आज पहले की तुलना में कई गुना ज्यादा लोगों के पास स्मार्ट फोन है। 2013 में डेटा आज की तरह सस्ता नहीं था। आज मोबाइल फोन में यूजर फ्रेंडली ऐप्स हैं, जिसे कम जानकार व्यक्ति भी उपयोग में ला सकता है। थोड़ी देर पहले अभी मैंने कुंभ सहायक चैटबॉट को लॉन्च किया है। पहली बार कुंभ आयोजन में AI, Artificial Intelligence और चैटबॉट का प्रयोग होगा। AI चैटबॉट ग्यारह भारतीय भाषाओं में संवाद करने में सक्षम है। मेरा ये भी सुझाव है कि डेटा और टेक्नोलॉजी के इस संगम से ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ा जाए। जैसे महाकुंभ से जुड़ी फोटोग्राफी कंपटीशन का आयोजन किया जा सकता है। महाकुंभ को एकता के महायज्ञ के रूप में दिखाने वाली फोटोग्राफी की प्रतियोगिता रख सकते हैं। इस पहल से युवाओं में कुंभ का आकर्षण बढ़ेगा। कुंभ में आने वाले ज्यादातर श्रद्धालु इसमें हिस्सा लेंगे। जब ये तस्वीरें सोशल मीडिया पर पहुंचेंगी तो कितना बड़ा कैनवास तैयार होगा, इसकी कल्पना नहीं कर सकते। इसमें कितने रंग, कितनी भावनाएं मिलेंगी, ये गिन पाना मुश्किल होगा। आप आध्यात्म और प्रकृति से जुड़ी किसी प्रतियोगिता का आयोजन भी कर सकते हैं।

साथियों,

आज देश एक साथ विकसित भारत के संकल्प की तरफ तेजी से बढ़ रहा है। मुझे विश्वास है कि इस महाकुंभ से निकली आध्यात्मिक और सामूहिक शक्ति हमारे इस संकल्प को और मजबूत बनाएगी। महाकुंभ स्नान ऐतिहासिक हो, अविस्मरणीय हो, मां गंगा, मां यमुना और मां सरस्वती की त्रिवेणी से मानवता का कल्याण हो! हम सबकी यही कामना है। संगम नगरी में आने वाले हर श्रद्धालु को मैं शुभकामनाएं देता हूं, आप सबका भी मैं हृदय से बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं।

प्रबंध संपादक की कलम से

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि वर्ष 2018 में शुरू हुई संस्कृति पर्व के सनातन आंदोलन की यात्रा के 6 वर्ष पूरे हो चुके। सातवें वर्ष का प्रथम पुष्प आपके हाथ में है। प्रयाग कुंभ 2019 में ही इसके प्रथम चार अंकों का लोकार्पण श्री गंगा महासभा के मंच से सभी पूज्य शंकराचार्यों और जगद्गुरुओं के पावन कर कमलों से संपन्न हुआ था। इस बार प्रयाग राज के पूर्ण कुंभ के अवसर पर संस्कृति पर्व ने इस अतिविशिष्ट अंक की योजना बनाई जिसमें कुंभ से संबंधित विशिष्ट एवं दुर्लभ सामग्री संयोजित की गई है। इसके लिए अखिल भारतीय संत समिति के राष्ट्रीय महामंत्री पूज्य स्वामी जीतेंद्रानंद जी सरस्वती, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष पूज्य स्वामी रविन्द्र पुरी जी, श्री काशी विद्वत्परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आचार्य गोविंद शर्मा, महामना जी के स्थापित पुष्प श्री गंगा महासभा के साथ ही देश के ख्यातिलब्ध विद्वानों के सहयोग और परामर्श से सामग्री का चयन किया गया है। अमेरिका की प्रख्यात चित्रकार डॉ ममता शर्मा जी ने इस अंक के आवरण के लिए अत्यंत आकर्षक पेंटिंग की रचना कर उपलब्ध कराया है, इसके लिए उन्हें विशेष साधुवाद।

संस्कृति पर्व की इन 6 वर्षों की यात्रा में सामान्य अंकों के अलावा 33 विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं। संस्कृति पर्व के महामना अंक का लोकार्पण देश के गृहमंत्री श्री अमित शाह जी ने किया था। अभी अक्टूबर नवंबर 2024 के संयुक्तांक का लोकार्पण हिंदी साहित्य परिषद के 47वें अधिवेशन में बुंदेलखंड विश्व विद्यालय में किया गया जिसमें अनेक विद्वानों के साथ ही उत्तर प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री की विशेष उपस्थिति रही। गत 22 जनवरी को संस्कृति पर्व ने चक्रस्थ अयोध्या के नाम से एक बहुत महत्वपूर्ण अंक का प्रकाशन किया था जिसको श्री अयोध्या जी में श्री राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रसारित किया गया। इस सांस्कृतिक, आध्यात्मिक यात्रा को अपने कठिन परिश्रम से संस्कृति पर्व की संपादकीय परिषद ने सुगम बनाया है, इसके लिए संपादक मंडल और सभी विद्वत जनों के प्रति विशेष आभार। कुंभ 2025 पर केंद्रित यह 34वाँ विशेषांक अब आपके हाथ में है। अपने भाव और स्नेह से हमें अवश्य अवगत कराइएगा।

सादर

बी के मिश्रा

संपादक की कलम से

पंच महाभूतों का त्रिगुण संपन्न आधार

> गंगा , यमुना और सरस्वती के पावन संगम को यह साक्षी मान कर मासोपरांत विदा होता है। पृथ्वी पर उपस्थित मानव जाति इसके मर्म को समझने का प्रयास करती है। सनातन की यह अवधारणा नित प्रति नई व्याख्याओं के साथ आगे बढ़ती जाती है। इस महाकुंभ के आयोजन का आधार सृष्टि के वे ही त्रिगुणात्मक अवयव हैं जिन्हें वेदों ने भी गाया है और गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी। तीन की इस आधार आंकिक योग से इतर इस सृष्टि और पूरे ब्रह्मांड में कुछ भी शेष है ही नहीं।

प्रयागराज में संगम का तट पुनः ऊर्जा लिए उपस्थित है। 12 वर्ष बीत चुके। पृथ्वी, पवन, पानी, आकाश, वायु और अग्नि अपनी अपनी गति से रचना और विलय की यात्रा कर रहे हैं। जो निर्मिति है उसका शोधन होना है। इसी निर्माति में समस्त चराचर जगत है। इस निर्मिति का एक लय है, आधार है, अध्यात्म है, दर्शन है जिसे सनातन मनीषा महाविज्ञान की संज्ञा देती है। यह अद्भुत है। अद्वितीय है। विश्व की किसी सभ्यता के पास इसको समझने की सामर्थ्य नहीं। सनातन भारत की मनीषा ने इसका गूढ़ जान लिया है और सृष्टि के साथ ही इसके संस्कारयुक्त आकार , प्रकार और आयोजनों को स्थापित भी कर लिया है। सृष्टि में पिंड की स्थापना का आधार प्रति बारहवें वर्ष संशोधित और परिमार्जित होता है। यही कुंभ है। यह कुंभ शुरू हो चुका है। आस्था का सैलाब किस तरह प्रयाग की ओर उमड़ा है, इसे विश्व देख रहा है।

सृष्टि के साथ साथ तीर्थ की यात्रा। अमृत घट का रहस्यमय स्वरूप। सृष्टि में तीन लोक। इन तीन में से एक लोक। इस एक लोक में तीर्थराज प्रयागराज । यहां गंगा, यमुना और सरस्वती की त्रिवेणी का पवित्र संगम। ऐसे संगम तट पर महाकुंभ का अलौकिक समागम । समुद्र मंथन के कुंभ घट से जुड़े इस तीर्थ क्रम में अब तक लाखों पड़ाव बीत चुके हैं। युगों और कल्पों की इस यात्रा में यह संगम स्वरूप भारत के तीन घाटों की यात्रा कर अपनी संपूर्णता में प्रत्येक 12 वर्ष पर प्रयागराज में अवतरित होता है। गंगा , यमुना और सरस्वती के पावन संगम को यह साक्षी मान कर मासोपरांत विदा होता है। पृथ्वी पर उपस्थित मानव जाति इसके मर्म को समझने का प्रयास करती है। सनातन की यह अवधारणा नित प्रति नई व्याख्याओं के साथ आगे बढ़ती जाती है। इस महाकुंभ के आयोजन का आधार सृष्टि के वे ही त्रिगुणात्मक अवयव हैं जिन्हें वेदों ने भी गाया है और गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी। तीन की इस आधार आंकिक योग से इतर इस सृष्टि और पूरे ब्रह्मांड में कुछ भी शेष है ही नहीं। इसी लिए सनातन संस्कृति और इसके समस्त शास्त्रों में सृष्टि और प्रकृति को त्रिगुणात्मक कहा गया है। इस त्रिगुणात्मक स्वरूप की व्याख्या आगे करेंगे लेकिन इसके तीन अंग कितने और किस रूप में व्यवस्थित हैं, उसको समझना जरूरी है।

यह कुंभ क्या है? एक घट। यानी घड़ा। अमृत से भरा हुआ घट ही समुद्रंथन से प्राप्त हुआ था। उस घट में विद्यमान अमृत की प्राप्ति की इच्छा ने ही सुर और असुर संघर्ष को जन्म दिया। प्रत्येक 12 वें वर्ष, इस ब्रह्मांड की इस सृष्टि में पृथ्वी पर एक मात्र गंगा, यमुना और सरस्वती का यह संगम स्थल है जहां उस घट की अमृत की कुछ बूंदें यहां प्राप्त हो जाने की संभावना प्रबल रहती है। इन बारह वर्षों की अवधि के भीतर प्रत्येक तीन वर्ष पर यह आंशिक स्थिति हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में बनती है। इसीलिए इन तीन स्थानों पर क्रम से प्रत्येक तीन वर्ष के अंतराल पर कुंभ आयोजित होते हैं। 12 वर्ष के बाद प्रयागराज में यह अद्भुत संयोग बनता है। 12 वर्षों के अंतराल के बाद कुंभ और ऐसे 12 कुंभ के बाद 144 वर्षों में एक महाकुंभ। महाकुंभ 1977 में लग चुका है। कुंभ और इस ब्रह्मांड के संबंधों को भी समझने की जरूरत है। अंड शब्द का आशय एक कोष से है। ऐसा कोष जिसमें जगदनियंता परम ब्रह्म विराजमान हो। ब्रह्म जो अजन्मा है। अविनाशी है। उसी के कोष को ब्रह्मांड कहते हैं। अर्थात ब्रह्मांड में जो है वह ब्रह्म है, अविनाशी है, अमर है। इसीलिए सनातन शास्त्रों ने मनुष्य की व्याख्या करते समय इसे अमृतस्य पुत्राः की संज्ञा प्रदान की है।

उस ब्रह्मांड का जो आकार है वह घट जैसा है। ऐसे घट के आकार वाले ब्रह्मांड का ही स्वरूप महाकुंभ अथवा कुंभ का आयोजन भी है। इस कुंभ में भरे हुए अमृत की बूंद पाने को लालायित प्रेमी

ही इस आयोजन के भागीदार होते हैं।

सनातन संस्कृति में कुंभ अर्थात घट या कलश का बहुत महत्व है। जन्म से मृत्यु तक के सभी शुभाशुभ संस्कारों में कुम्भ (कलश) को स्थापित करने के पश्चात् ही देव पूजन कर्म करने का विधान है। कलश या घट ही कुम्भ है। ज्योतिष शास्त्र में बारह राशियों में से कुम्भ एक राशि भी है। कुम्भ का आध्यात्मिक अर्थ है ज्ञान का संचय करना, ज्ञान की प्राप्ति प्रकाश से होती है और कुम्भ स्नान, दर्शन, पूजन से आत्म तत्व का बोध होता है। हमारे अन्दर ब्रह्माण्ड की समस्त रचना व्यापत है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार 'यत् पिण्डे, तत् ब्रह्माण्डे, तत् ब्रह्माण्डे, यत् पिण्डे', अर्थात् जो मानव पिण्ड में है, वही ब्रह्माण्ड है और जो ब्रह्माण्ड में है, वही मानव पिण्ड में है। कुम्भ, 'घट' का सूचक है और घट शरीर का, जिसमें घट-घट व्यापी आत्मा का अमृत रस व्याप्त रहता है।

जब कुंभ के आकार वाले ब्रह्मांड की चर्चा करते हैं तो इसके सूक्ष्म स्वरूप से चिंतन आरंभ होता है। सृष्टि में जो भी साकार है उसका निर्माण अणुओं से हुआ है। सनातन संस्कृति में प्रत्येक सूक्ष्म के तीन गुण बताए गए हैं। इसी आधार पर प्रकृति और सृष्टि को त्रिगुणी कहा गया। रज, तम, सत की संज्ञा वाले इन गुणों पर आगे चर्चा करेंगे। अभी इतना संज्ञान में लेना आवश्यक है कि पश्चिम के आधुनिक विज्ञान ने भी सृष्टि के सूक्ष्म को तोड़ कर तीन हो गुण प्राप्त किया है जिन्हें आधुनिक विज्ञान की भाषा में हम इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन की संज्ञा देते हैं। इन्हीं तीन के आधार पर आज की आधुनिक दुनिया दौड़ रही है। सनातन संस्कृति में सृष्टि के आधार कारक स्वरूप तीन देव सुनिश्चित किए गए हैं जिन्हें क्रम से ब्रह्मा , विष्णु और महेश की संज्ञा दी गई है। जन्म के कारक ब्रह्मा जी हैं। जीवन के पोषक विष्णु जी हैं। मृत्यु के देव महेश हैं। आधुनिक विज्ञान के आधार अन्वेषण में प्राप्त इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन के गुणों की विवेचना से स्पष्ट हो जाएगा कि हमारे सनातन शास्त्रों ने प्रकृति और सृष्टि को त्रिगुणी क्यों कहा होगा। हमारे पूज्य ब्रह्मा, विष्णु और महेश की निरंतर उपस्थिति के कारण क्या हैं और ब्रह्माण्ड का सृष्टि पर्व कुंभ ही क्यों है। शास्त्र कहते हैं , कण कण में भगवान की उपस्थिति है। आधुनिक विज्ञान कहता है, प्रत्येक अणु में इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, और न्यूट्रॉन की उपस्थिति है। फिर यह कुंभ क्या है और इस कुंभ के भीतर जो अमृत तत्व निर्धारित किया जाता है वह क्या है

आधुनिक विज्ञान की नवीनतम खोज के रूप में इलेक्ट्रॉन को चेतना या प्रकाश के रूप में देखा जा सकता है। यह जीवन और सृजनशीलता का प्रतीक है। यही गुण तो ब्रह्मा का भी है। प्रोटॉन को शक्ति या ऊर्जा के रूप में देखा जा सकता है। यह शक्ति और स्थिरता का प्रतीक है। न्यूट्रॉन को सद्भाव या शांति के रूप में देखा जा सकता है। यह संतुलन और एकता का प्रतीक है। इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, और न्यूट्रॉन से ही पदार्थ का अस्तित्व है। इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, और न्यूट्रॉन से परे होकर मोक्ष की अवस्था प्राप्त की जा सकती है। इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, और न्यूट्रॉन से जुड़े गुणों का क्रम ब्रह्मा, विष्णु, और शिव के क्रम के समान है। ब्रह्मा निर्माण करते हैं, इसलिए इलेक्ट्रॉन निर्माण का आधार है। विष्णु पालनकर्ता हैं, इसलिए न्यूट्रॉन के कारण पदार्थ के स्वरूप और उपयोग का निर्धारण होता है। शिव संहारकर्ता हैं, इसलिए प्रोटॉन के कारण परमाणु का विघटन या विनाश हो जाता है। कुंभ को सृष्टि पर्व भी कहा जाता है क्योंकि यह एक मात्र अवसर है जिसमें सृष्टि के उदय से लेकर अवसान तक की यात्रा को समझा जा सकता है। यह समझ केवल सनातन की यात्रा से जुड़ कर ही आती है। भारत से बाहर की दुनिया को यह आयोजन बहुत ही रहस्यमय और अद्भुत लगता है। धर्म, पंथ, मजहब, अध्यात्म और दुनिया के सांस्कृतिक एवं भौतिकवादी चिंतन के विद्वान इसमें कुछ गूढ़ की तलाश करते हैं। भारत यह ठीक से समझता है कि लाखों वर्षों की सनातन यात्रा में उत्पन्न आध्यात्मिक, सांस्कृतिक परिवेश का समुच्चय बन कर यह कुंभ कुछ नए संदेशों के साथ प्रत्येक अंतराल पर अवतरित होता है। यह एक मात्र समागम है जिसमें सनातन को स्वीकार कर अपनी यात्रा कर रहे तीन अनियों, 13 अखाड़ों और 147 संप्रदायों को प्रयागराज में संगम तट पर एक साथ देखा और जाना जा सकता है। इन अनियों, अखाड़ों और संप्रदायों के बारे में इसी अंक में विस्तार से चर्चा की गई है। सृष्टि में जो कुछ भी है , इतने में ही समाहित है। जन्म प्राप्त करना, जीवन जीना और फिर मृत्यु का वरण। इसके अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं। त्रिगुण प्रकृति के भी तीन गुण हैं। ब्रह्मांड पुरुष (चेतना) और प्रकृति (प्रकृति) का मिलन है। प्रकृति ब्रह्मांड में जीवित और निर्जीव, स्थूल और सूक्ष्म पदार्थ में खुद को प्रकट करती है। पुरुष उस पदार्थ के क्षण या जीवन के पीछे का कारण है। ये तीन जैविक तत्व अथवा त्रिदोष मानव शरीर के घटक भी हैं वात, पित्त और कफ। यह प्रकृति है। जबकि मनुष्य के जन्मजात गुणों को तीन अलग-अलग श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है जिन्हें त्रिगुण के रूप में जाना जाता है। यह आध्यात्मिक पक्ष है। त्रिगुण मन के अभिन्न अंग हैं। सत्व, रजस और तमस, इन तीनों को मानसिक संरचना में मनसा दोष के नाम से भी जाना जाता है। तमस निष्क्रिय अवस्था है जो सबसे कम है। यह भ्रमपूर्ण, आलसी, भ्रमित, अधिकार जताने वाला, सुस्त और लालची, अज्ञानता, आसक्ति है। रजस सक्रिय अवस्था है जो अति सक्रिय है। इसकी विशेषता बेचैन, काम में डूबे रहने वाला, आत्मकेंद्रित, उपलब्धि प्राप्त करने

वाला, आक्रामक, बेचैन, महत्वाकांक्षी है। सत्व क्रियाशीलता और जड़ता के बीच संतुलन है। सत्व अवस्था खुशी, शांति, आत्मीयता, ध्यान, संतुष्टि और देखभाल करने वाली होती है। सृष्टि में जो कुछ भी है उसमें में ये तीन गुण अवश्य होंगे। वह सजीव हो अथवा निर्जीव। हमारे शरीर में रक्त का निरंतर प्रवाह रजोगुण कहलाता है। हमारा मन कभी-कभी बेतहाशा बहता है और यह रजोगुण है, और जब हम उस उतार-चढ़ाव को रोक पाते हैं, तो यह तमोगुण होता है। गहन ध्यान के दौरान, जब हम आत्म प्रेम और आनंद महसूस करते हैं, तो यह सत्व गुण है जो संतुलन है। त्रिगुण हमारे अंदर भौतिक और अभौतिक विशेषताओं को आकार देते हैं। तीन अलग-अलग त्रिगुणों का अनुपात हमें अलग-अलग तरीके से व्यवहार करने, प्रतिक्रिया करने, अवधारणा बनाने और आसपास की प्रकृति को समझने के लिए प्रेरित करेगा। विरासत में मिले गुण को शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव के कारण बदला जा सकता है। किसी निश्चित समय में गुणों के प्रमुख होने से व्यवहार का आकार निर्धारित होता है। प्रमुख गुण व्यक्तित्व को तब प्रभावित करेगा जब 5 तत्वों को हमारी 5 इंद्रियों द्वारा अनुभव किया जाएगा और मन के माध्यम से प्रक्रिया की जाएगी तथा प्रमुख गुण द्वारा संशोधित किया जाएगा। इसलिए, गुण अंतिम तत्व हैं जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के पास संचित जाएं से अपनी बुद्धि का समर्थन करने के लिए अहंकार होता है। अहंकार से उत्पन्न होने वाले त्रिगुण उस व्यक्तित्व को निर्धारित करेंगे जिसके माध्यम से किसी विशेष समय पर प्रभुत्व होगा। सत्व गुण वाला व्यक्ति आध्यात्मिक गुणों से युक्त शुद्ध और सकारात्मक होता है। जब काम की बात आती है, तो वह वांछनीय और अवांछनीय स्थितियों के बीच अंतर करते हुए शांत रहता है। जितना अधिक सत्व स्वभाव होगा, उतना ही अधिक प्रेम, करुणा, दया और खुशी के प्रति लगाव होगा। अच्छे स्वास्थ्य की स्थिति यहीं है। राजसिक व्यक्ति इच्छाओं और आसक्तियों से भरा होता है। चूँकि वे बहुत आत्म-केंद्रित होते हैं, इसलिए वे कभी-कभी सही और गलत में अंतर नहीं कर पाते। जब कोई उत्साही, गहरी दिलचस्पी रखने वाला, काम के प्रति समर्पित, सफल व्यक्ति होता है, तो वह संतुलित राज अवस्था में होता है। यह सत्व और तम के बीच का पुल है, और उन्हें संतुलित करता है। चूंकि यह जुनून को संदर्भित करता है, यह बेहतर बदलाव के लिए प्रेरणा, आंदोलन, सही कार्रवाई, रचनात्मकता पैदा करता है। यदि यह असंतुलन है, तो व्यक्ति में क्रोध, चिंता और उत्तेजना होगी। तम अंधकार से संबंधित है।यह भ्रम, नकारात्मकता, सुस्ती और निष्क्रियता से घिरा हुआ है। संतुलित तम अवस्था में, व्यक्ति समय पर सोएगा, संतुलित आहार लेगा, प्रकृति की सराहना करेगा, दूसरों के बारे में चिंता करेगा। हालाँकि, अगर यह असंतुलन है, तो व्यक्ति अधिकार जताने वाला, दूसरों को नुकसान पहुँचाने की इच्छा रखने वाला, अल्पकालिक सुखी होता है। इसमें 7 संयोजन हैं: प्रमुख सत्व गुण, प्रमुख तम गुण, प्रमुख रज गुण, प्रमुख सत्व-रज गुण, प्रमुख सत्व-तम गुण, प्रमुख रज-तम गुण, संतुलित सत्व-रज-तम गुण। त्रिगुण की उपस्थिति को हम जो कार्य करते हैं, उस कार्य के पीछे का इरादा और प्रतिक्रिया के माध्यम से देखा जा सकता है। कार्य और इरादे के लिए, हमें हर कार्य के लिए खुद से पूछना होगा: मैं यह क्यों कर रहा हूँ (इरादा) और मैं यह कैसे कर रहा हूँ (अभिव्यक्ति)। यह अलग-अलग गुण हो सकते हैं जो इरादे और अभिव्यक्ति दोनों पर हावी होते हैं, और अगर आप इस पर ध्यान दें तो हम प्रमुख को संतुलित कर सकते हैं। जहाँ तक प्रतिक्रिया की बात है तो यह की गई कार्रवाई का परिणाम है, आप कैसा महसूस करते हैं या प्रतिक्रिया करते हैं। हमें हमेशा संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है। तम से रज की ओर बढ़ते हुए हम अधिक शारीरिक आसन क्रियाकलापों में संलग्न हो सकते हैं, सकारात्मक लोगों के साथ घुलमिल सकते हैं, नए स्थानों की यात्रा कर सकते हैं, हल्का भोजन कर सकते हैं। ये हमारे ऊर्जा स्तर को ऊपर उठाएंगे और राज अवस्था में ले जाएंगे। यहाँ से, सत्व की ओर बढ़ने के लिए, हम ध्यान, पढ़ना, गैर-लाभकारी कार्य कर सकते हैं और अत्यधिक ऊर्जा को संतुलित करने के लिए यम का पालन कर सकते हैं। निरीक्षण करना और बदलाव करना ही कुंजी है। इन सभी विचारों को समेटने के प्रयास के साथ प्रयागराज कुंभ 2025 के पुनीत अवसर के लिए संस्कृति पर्व ने इस विशेष अंक का आयोजन किया है। संतों, महात्माओं, अखाड़ों, अलग अलग संप्रदायों और सनातन संस्कृति और अध्यात्म के अध्येताओं के सहयोग और उनसे व्यापक विमर्श के बाद यह अंक आकार ले सका है। हम आशा कर रहे हैं कि संस्कृति पर्व के इस अंक के माध्यम से सनातन संस्कृति और कुंभ के महात्म्य को पाठक, विशेष रूप से नई पीढ़ी को सनातन के आधार तत्व को समझ पाने की दिशा मिल सकेगी। इस अंक में सहयोग करने वाले सभी संतों, मनीषियों और विद्वानों के प्रति हृदय से आभार।

आधार आलेख

कुम्भ असीम कृपा का अमृत घट

शिव प्रताप शुक्ल

(लेखक हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल और संस्कृति पर्व के मुख्य संरक्षक हैं।)

प्रयागराज का कुंभ मानव जाति के लिए एक ऐसा ही अवसर है जब असीम कृपा प्राप्त कर मनुष्य अपने जीवन क्रम को यात्रा का आकर प्रदान कर सृष्टि में समन्वय के साथ जीने और अमर होने की संस्तुति प्राप्त करने की क्षमता विकसित कर पाता है। प्रत्येक 6 वर्ष पर अर्धकुंभ, 12 वर्षों पर कुंभ और 144 वर्षों के बाद महाकुंभ के अवसर पर प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती की त्रिवेणी में स्नान के साथ साथ दुर्लभ संतों की वाणी से अमृत तत्व का रसपान ही सनातन का वह अद्भुत विधान है जिसे देखने और सुनने के बाद दुनिया विस्मय से भर जाती है।

मनुष्य जाति के लिए वेद वचन है, अमृतस्य पुत्राः। हम सभी अमृत के पुत्र हैं। अमृत तत्व से निर्मित। किंतु अमृत का यह तत्व शरीर नहीं है। यह कुछ और है जिससे अमरता प्राप्त होती है। श्रीकृष्ण इसे गीता में स्पष्ट करते हैं, आत्मा की परिभाषा देकर। यह आत्मा मानव के भीतर की वह परम चेतना है जो अजर है, अमर है। इस परम चेतन तत्व को गुरु से प्राप्त होना है। जीवन में गुरु तत्व की प्रधानता है। गुरु तत्व के बिना जीवन अपूर्ण

है। गोस्वामी जी ने इसी गुरु तत्व के लिए श्री गुरु चरण सरोज रज की स्थापना दी है। गुरु तत्व की प्राप्ति का स्थल असीम है क्योंकि गुरुत्व कृपा प्रदाता है। इसी कृपा से मनुष्य पूर्ण चेतना का विस्तार पाता है। यह कृपा किसी सीमा से परे है। बंधन से परे है। इसकी प्राप्ति ही मनुष्य जन्म की सिद्धि है। इसकी प्राप्ति के अनगिनत साधन सनातन शास्त्र वर्णित करते हैं। इन साधनों में सर्वसुलभ साधन है सत्संग। सत्संग का विधान भी सनातन तय करता है। वेद कहता है , गंगा से जान प्राप्त करो। यमुना से प्रज्वल बनो। सरस्वती से सारस्वत होकर जीवन को परम चेतना से प्रज्वलित करो। यही जीवन का ध्येय भी है और प्रेय भी। ध्येय और प्रेय को साधने के लिए यज्ञ, तप, दर्शन, सत्संग, सुविचार और पवित्र सनान के साथ साथ दान और पुण्य के विधान रचे गए हैं। सृष्टि के साथ ही इनकी रचना अपौरुषेय वेद वाणी के रूप में हमारे ऋषियों ने और उनके बाद के पूर्वाचार्यों से सब सहज रूप में हमें उपलब्ध कराया है। हम उनसे कितना पा सकते हैं, यह हमारे स्वयं की साधना और उत्कंठा में निहित है।

प्रयागराज का कुंभ मानव जाति के लिए एक ऐसा ही अवसर है जब असीम कृपा प्राप्त कर मनुष्य अपने जीवन क्रम को यात्रा का आकर प्रदान कर सृष्टि में समन्वय के साथ जीने और अमर होने की संस्तुति प्राप्त करने की क्षमता विकसित कर पाता है। प्रत्येक 6 वर्ष पर अर्धकुंभ, 12 वर्षों पर कुंभ और 144 वर्षों के बाद महाकुंभ के अवसर पर प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती की त्रिवेणी में स्नान के साथ साथ दुर्लभ संतों की वाणी से अमृत तत्व का रसपान ही सनातन का वह अद्भुत विधान है जिसे देखने और सुनने के बाद दुनिया विस्मय से भर जाती है। यह अद्भुत खगोलीय उत्सव है जो एक निश्चित अंतराल पर सृष्टि को संचालित रहने योग्य ऊर्जा देने के लिए पृथ्वी पर प्रयागराज में अवतरित होता है। कुंभ की प्रचलित कथा तो एक संकेत है किंतु इसका महाविज्ञान केवल कथा नहीं बल्कि ऐसा वैज्ञानिक यथार्थ है जिसके बिना जीवन की सार्थक कल्पना भी संभव नहीं। आस्था, श्रद्धा और विश्वास से अभिसिंचित इस सम्मिलन का अभिप्राय और इसके निहितार्थ वास्तव में मानव जाति के लिए अमृत हैं जो इसे सृष्टि में सर्वोत्तम बनाते हैं।

सनातन के प्रत्येक ग्रन्थ के आधार तत्व ये तीन ही हैं। श्रद्धा, आस्था और विश्वास। वस्तुतः ये मनुष्य के संस्कार हैं जो अनेक अवसरों पर विधान बन कर हमारे वांग्मय में उपस्थित हैं। मानस के प्रणेता गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं :

वंदे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकर रूपिणम्,
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चंद्रः सर्वत्र वन्द्यते।।

इस श्लोक का अर्थ है कि ज्ञानमय, नित्य, शंकर रूपी गुरु की मैं वंदना करता हूं। जिनके आश्रित होने से ही टेढ़ा चंद्रमा भी सर्वत्र वंदित होता है।

संगम का अर्थ है मिलन, सम्मिलन। भूगोल में संगम उस जगह को कहते हैं जहाँ जल की दो या दो से अधिक धाराएँ मिल रही होती हैं। तीर्थराज प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती) के मिलन स्थल को त्रिवेणी संगम कहते हैं। यह स्वयं एक स्थापित देवस्वरूप हैं। श्रीरामचरित मानस में इस पावन त्रिवेणी संगम ने स्वयं श्री भरत जी से संवाद किया है। भरत जी जब श्रीराम को मानने के लिए चित्रकूट की यात्रा में जाते हैं तो पवित्र संगम पर त्रिवेणी के समक्ष एक याचना करते हैः

मागउँ भीख त्यागि निज धरमू।
आरत काह न करइ कुकरमू॥
अस जियँ जानि सुजान सुदानी।
सफल करहिं जग जाचक बानी॥

मैं अपना धर्म (न माँगने का क्षत्रिय धर्म) त्यागकर आप से भीख माँगता हूँ। आर्त्त मनुष्य कौन सा कुकर्म नहीं करता? ऐसा हृदय में जानकर सुजान उत्तम दानी जगत् में माँगने वाले की वाणी को सफल किया करते हैं (अर्थात् वह जो माँगता है, सो दे देते हैं)॥

अरथ न धरम न काम रुचि
गति न चहउँ निरबान।
जनम-जनम रति राम पद
यह बरदानु न आन॥

मुझे न अर्थ की रुचि (इच्छा) है, न धर्म की, न काम की और न मैं मोक्ष ही चाहता हूँ। जन्म-जन्म में मेरा श्री रामजी के चरणों में प्रेम हो, बस, यही वरदान माँगता हूँ, दूसरा कुछ नहीं।

यह श्रद्धा का परम विशिष्ट उदाहरण भी है और इतिहास का उल्लिखित त्रिवेणी की महत्ता का प्रमाण भी। यह असीम कृपा प्राप्ति का विनय पद है। गंगा और यमुना के संगम का यह विवरण ऋग्वेद के नवीनतम खंडों में उल्लेख किया गया है जिसके अनुसार,"जो लोग उस जगह पर स्नान करते हैं जहां दो नदियां एक साथ बहती हैं,उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती हैं"। पुराणों के अनुसार, इसी में सरस्वती की पवित्र धारा भी विद्यमान है।

अब यहां यह आवश्यक हो जाता है कि इन पावन जलधाराओं अर्थात गंगा, यमुना और सरस्वती के बारे में आस्था, श्रद्धा और विश्वास के उस त्रिगुण तत्व का विवेचन किया जाय जिसके कारण संगम तट का यह कुंभ कृपा का असीम स्वरूप प्रदान कर अमृत पुत्रों की रचना करता है। माता गंगा के बारे में भगवान आदि शंकर के कुछ श्लोक यहां उद्धृत करना समीचीन होगा। वह लिखते हैः

देवि! सुरेश्वरि! भगवति! गंगे!
त्रिभुवनतारिणि तरलतरंगे।
शंकरमौलिविहारिणि विमले
मम मतिरास्तां तव पदकमले ॥ 1 ॥

हे देवी! सुरेश्वरी! भगवती गंगे! आप तीनों लोकों को तारने वाली हैं। शुद्ध तरंगों से युक्त, महादेव शंकर के मस्तक पर विहार करने वाली हे मां! मेरा मन सदैव आपके चरण कमलों में केंद्रित है।

भागीरथीसुखदायिनि मातस्तव
जलमहिमा निगमे ख्यातः।
नाहं जाने तव महिमानं
पाहि कृपामयि मामज्ञानम् ॥ 2 ॥

हे मां भागीरथी! आप सुख प्रदान करने वाली हो। आपके दिव्य जल की महिमा वेदों ने भी गाई है। मैं आपकी महिमा से अनभिज्ञ हूं। हे कृपामयी माता! आप मेरी रक्षा करें।

हरिपदपाद्यतरंगिणी गंगे
हिमविधुमुक्ताधवलतरंगे।
दूरीकुरुमम दुष्कृतिभारं
कुरु कृपया भवसागरपारम् ॥ 3 ॥

हे देवी! आपका जल श्री हरि के चरणामृत के समान है। आपकी तरंगें बर्फ, चंद्रमा और मोतियों के समान धवल हैं। कृपया मेरे सभी पापों को नष्ट कीजिए और इस संसार सागर के पार होने में मेरी सहायता कीजिए।

तव जलममलं येन निपीतं
परमपदं खलु तेन गृहीतम्।
मातर्गंग त्वयि यो भक्तः किल
तं द्रष्टुं न यमः शक्तः ॥ 4 ॥

हे माता! आपका दिव्य जल जो भी ग्रहण करता है, वह परम पद पाता है। हे मां गंगे! यमराज भी आपके भक्तों का कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

पतितोद्धारिणि जाह्नवि गंगे
खंडित गिरिवरमंडित भंगे।
भीष्मजननि हे मुनिवरकन्ये!
पतितनिवारिणि त्रिभुवन धन्ये ॥ 5 ॥

हे जाह्नवी गंगे! गिरिवर हिमालय को खंडित कर निकलता हुआ आपका जल आपके सौंदर्य को और भी बढ़ा देता है। आप भीष्म की माता और ऋषि जह्नु की पुत्री हो। आप पतितों का उद्धार करने वाली हो। तीनों लोकों में आप धन्य हो।

कल्पलतामिव फलदां लोके
प्रणमति यस्त्वां न पतति शोके।
पारावारविहारिणिगंगे
विमुखयुवति कृततरलापंगे ॥ 6 ॥

हे मां! आप अपने भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण करने वाली हो। आपको प्रणाम करने वालों को शोक नहीं करना पड़ता। हे गंगे! आप सागर से मिलने के लिए उसी प्रकार उतावली हो, जिस प्रकार एक युवती अपने प्रियतम से मिलने के लिए होती है।

तव चेन्मातः स्रोतः स्नातः
पुनरपि जठरे सोपि न जातः।
नरकनिवारिणि जाह्नवि गंगे
कलुषविनाशिनि महिमोत्तुंगे। ॥ 7 ॥

हे मां! आपके जल में स्नान करने वाले का पुनर्जन्म नहीं होता। हे जाह्नवी! आपकी महिमा अपार है। आप अपने भक्तों के समस्त कलुषों को विनष्ट कर देती हो और उनकी नरक से रक्षा करती हो।

पुनरसदंगे पुण्यतरंगे
जय जय जाह्नवि करुणापांगे।
इंद्रमुकुटमणिराजितचरणे
सुखदे शुभदे भक्तशरण्ये ॥ 8 ॥

हे जाह्नवी! आप करुणा से परिपूर्ण हो। आप अपने दिव्य जल से अपने भक्तों को विशुद्ध कर देती हो। आपके चरण देवराज इंद्र के मुकुट के मणियों से सुशोभित हैं। शरण में आने वाले को आप सुख और शुभता प्रदान करती हो।

रोंगं शोकं तापं पापं हर मे
भगवति कुमतिकलापम्।
त्रिभुवनसारे वसुधाहारे
त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे ॥ 9 ॥

हे भगवती! मेरे समस्त रोग, शोक, ताप, पाप और कुमति को हर लो आप त्रिभुवन का सार हो और वसुधा का हार हो,हे देवी! इस समस्त संसार में मुझे केवल आपका ही आश्रय है।

अलकानंदे परमानंदे कुरु
करुणामयि कातरवंद्ये।
तव तटनिकटे यस्य निवासः
खलु वैकुंठे तस्य निवासः ॥ 10 ॥

हे गंगे! प्रसन्नता चाहने वाले आपकी वंदना करते हैं। हे अलकापुरी के लिए आनंद-स्रोत हे परमानंद स्वरूपिणी! आपके तट पर निवास करने वाले वैकुंठ में निवास करने वालों की तरह ही सम्मानित हैं।

वरमिह नीरे कमठो मीनः
किं वा तीरे शरटः क्षीणः।
अथवाश्वपचो मलिनो दीनस्तव
न हि दूरे नृपतिकुलीनः ॥ 11 ॥

हे देवी! आपसे दूर होकर एक सम्राट बनकर जीने से अच्छा है आपके जल में मछली या कछुआ बनकर रहना अथवा आपके तीर पर निर्धन चंडाल बनकर रहना।

भो भुवनेश्वरि पुण्ये धन्ये
देवि द्रवमयि मुनिवरकन्ये।
गंगा स्तवमिममलं नित्यं पठति
नरे यः स जयति सत्यम् ॥ 12 ॥

हे ब्रह्मांड की स्वामिनी! आप हमें विशुद्ध करें। जो भी यह गंगा स्तोत्र प्रतिदिन गाता है, वह निश्चित ही सफल होता है।

येषां हृदये गंभक्तिस्तेषां
भवति सदा सुखमुक्तिः।
मधुराकंता पञ्झटिकाभिः
परमानन्दकलितललिताभिः ॥ 13 ॥

जिनके हृदय में गंगा जी की भक्ति है। उन्हें सुख और मुक्ति निश्चित ही प्राप्त होते हैं। यह मधुर लययुक्त गंगा

स्तुति आनंद का स्रोत है।
गंगा स्तोत्रमिदं भवसारं
वांछितफलदं विमलं सारम्।
शंकरसेवक शंकर रचितं पठति
सुखीः तव इति च समाप्तः ॥ 14 ॥

भगवतचरण परमपूज्य भगवान आदि शंकर द्वारा रचित यह स्तोत्र हम सभी को वांछित फल प्रदान कर हमारे जीवन को दिशा प्रदान कर सुख की प्राप्ति कराए।

अब चर्चा करते हैं श्री यमुना जी की। इसके लिए श्री वल्लभाचार्य जी द्वारा रचित यमुनाष्टकम् के शब्द उन्हीं के अनुसार यहां प्रस्तुत करना उचित प्रतीत हो रहा है।

नमामि यमुना महम्, सकल सिद्धि हेतुम मुदा,
मुरारी पादपंकज-स्फुरदमंद, रेनूट-कटम्,
ततस्थ नव कानन, प्रकट मोद पुष्पम्बुना,
सुरा सूर सुपूजिताः, स्मर पितुः श्री यम-बिभ्रतीम।।

अर्थात पूर्ण प्रेम और भक्ति के साथ श्री यमुनाजी को नमामि प्रणाम करता हूँ। वे भगवान के प्रेम का आनंद लेने में भक्तों की सभी इच्छाओं (सकल सिद्धि) को पूरा करने में सक्षम हैं। श्री यमुनाजी सभी प्रकार की सिद्धियाँ देने में सक्षम हैं। यह पहला श्लोक नदी की भौतिक स्थिति का वर्णन करता है। इसके दोनों किनारे चमकदार रेत से भरे हुए हैं जो श्री मुरारी प्रभु (श्रीकृष्ण) के चरण कमलों के समान कोमल माने जाते हैं। इसके अलावा, नदी के दोनों किनारों पर विभिन्न प्रकार के सदाबहार बगीचे हैं। बगीचे के फूलों के कारण नदी का पानी सुगंध से भरा रहता है। श्री यमुनाजी की पूजा भी व्रज के दो प्रकार के भक्तों (सुर-सुर) द्वारा की जाती है।

कलिंद गिरिमस्तके, पत-द-मंद पुरोज्वला,
विलास गमनोलासत्, प्रकटगंड शैलोन्नता,
सगोश-गंतीदंतुरा, समाधिरूढ़ दोलोत्तमा,
मुकुंद रति वर्धिनी, जयति पद्म बंधो सुता।।

इस श्लोक में श्री महाप्रभुजी बताते हैं कि किस प्रकार श्री यमुनाजी अपने भक्तों को श्री मुकुंद प्रभु के प्रति प्रेम बढ़ाने का आशीर्वाद दे सकती हैं। साथ ही, श्री महाप्रभुजी यमुनाजी के भौतिक अस्तित्व का वर्णन नदी के रूप में करते हैं। यह कलिंद पर्वत की चोटी से उत्साहपूर्वक (वेग और वैभव के साथ) बहती है। बल और घुमाव के कारण पानी दूध जैसा प्रतीत होता है। ऐसा लगता है जैसे श्री यमुनाजी व्रज में जाकर श्री कृष्ण से मिलने के लिए बहुत उत्सुक हैं। ऐसा भी लगता है जैसे श्री यमुनाजी (दोलोत्तमा) झूला झूल रही हों। श्री यमुनाजी सूर्य की पुत्री हैं, जो कमल (पद्म) के मित्र हैं।

भुवं भुवन पावनीम, मधिगतमाने कश्वनैहि,

सरस्वती नदी को 'यमुना के पश्चिम' और 'सतलुज के पूर्व' में बहती हुई बताया गया है। उत्तर वैदिक ग्रंथों, जैसे ताण्डय और जैमिनीय ब्राह्मण में सरस्वती नदी को मरुस्थल में सूखा हुआ बताया गया है, महाभारतमें भी सरस्वती नदी के मरुस्थल में 'विनाशन' नामक जगह पर विलुप्त होने का वर्णन आता है। महाभारत में सरस्वती नदी के प्लक्षवती नदी, वेदस्मृति, वेदवती आदि कई नाम हैं।

प्रियभिरिव सेवतम, शुक मयूर हंसादिभिहि,
तरंग भुज कंकणा, प्रकट मुक्तिका वालुका,
नितंबतत् सुंदरीम, नमत कृष्ण तुर्य प्रियम।

जब भी श्री यमुनाजी स्वर्ग से धरती पर आती हैं, वे पृथ्वी को आशीर्वाद देती हैं (भुवं भुवना पावनम्)। तोता, मोर, हंस जैसे सभी पक्षी श्री यमुनाजी की सेवा करते हैं। श्री महाप्रभुजी चमकती हुई रेत को उनके कंगन के मोती (मुक्तिकावलुका) के रूप में और पानी की लहरों को श्री यमुनाजी के सुंदर दिव्य हाथों (तरंग भुज कंकणा) के रूप में देखते हैं। पक्षी की दृष्टि से, श्री यमुनाजी दोनों किनारों पर चमकदार रेत और पानी से भरी नदी के साथ सुंदर दिखती हैं। वह श्री कृष्ण की पसंदीदा चौथी रानी हैं। और श्री महाप्रभुजी हमें उन्हें (नमत कृष्ण तुर्या प्रियम) प्रणाम करने के लिए कहते हैं।

अनंत गुणभूसिते, शिव विरंचि देवस्तुते,
घनघन निभे सदा, ध्रुव पराशर भिस्तदे,
विशुद्ध मथुरा ताते, सकल गोप-गोपी वृते,
कृपा जलाधि संश्रिते, मम मन्हा सुखम भावयः।।

इस श्लोक में श्री महाप्रभुजी श्री यमुना महारानी से की गई प्रार्थना का वर्णन करते हैं। हे श्री यमुनाजी, आप अनंत दिव्य गुणों से युक्त हैं - असंख्य सद्गुणों से युक्त हैं। शिव, ब्रह्मा आदि देवता भी आपकी स्तुति करते हैं। आप ध्रुव और पराशर जैसे भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण करने में समर्थ हैं। आपके तट पर मथुरा जैसे पवित्र तीर्थ हैं। आप सदैव गोपियों और गोपीजनों से घिरे रहते हैं और आप सदैव श्री कृष्ण के आशीर्वाद से सुरक्षित रहते हैं। हे श्री यमुनाजी, मेरी इच्छा है कि आप मुझे ऐसा आशीर्वाद दें जिससे मेरे मन को शांति और प्रसन्नता मिले।

याया चरण पद्मजा, मुरारिपोहो प्रियम भावुका,
समागमंतो भवेत्, सकल सिद्धिदा सेवतम्,
तय सदा सहता मियात्, कमलजा स्पत्नी वयत्,
हरि प्रिया कालिन्दय, मानसी मे सदा स्थितयत्।।

श्री गंगाजी श्री भगवान के चरण कमलों से उत्पन्न हुई हैं। श्री गंगाजी त्रिवेणी संगम पर श्री यमुनाजी में विलीन होने के कारण पवित्र और पावन हो गई हैं। श्री यमुनाजी ने श्री गंगाजी को भक्तों को सकल सिद्धि प्रदान करने में सक्षम बनाया है। श्री लक्ष्मीजी ही श्री यमुनाजी के बराबर और तुलनीय हैं-लेकिन कुछ हद तक। मेरी कामना है कि ऐसी श्री यमुनाजी, जो अपने भक्तों की सभी चिंताओं को दूर कर सकती हैं और जो श्री कृष्ण की भी प्रिय (हरि प्रिया) हैं, मेरे हृदय और आत्मा में हमेशा के लिए आकर बस जाएं।

नमोस्तु यमुने सदा, तव चरित्र मत्यद्भूतम्,
न जातु यम यत्न, भवति ते पयहा पणत-हा,
यमोपि भगिनी सुतन्, कथामुहन्ति दुष्टानपि,
प्रियोभवति सेवनात, तव हरेर्यथा गोपिकाहा।

हे! श्री यमुनाजी, मैं आपको पूरे तन-मन से प्रणाम करता हूँ। आपका दिव्य चरित्र बहुत ही अद्भुत है। व्रज में आपका जल पीने मात्र से हमें कष्टकारी मृत्यु की चिंता नहीं करनी पड़ती। आपके भक्त श्री कृष्ण के वैसे ही प्रिय बन सकते हैं जैसे गोपीजन "कात्यानी व्रत" करके प्रिय बन गईं। शीतकाल में (गोपमास) व्रत का अर्थ है उपवास।

ममस्तु तव सन्निधौ, तनु नवत्वा मेटावता,
न दुर्लभतामा रातिर, मुरारिपौ मुकुंदप्रिये,
अतोस्तु तव ललना, सुरधुनि परमं संगमात्,
तवैव भुवि कीर्तिता, न तु कदापि पुष्टि स्थितैः।

हे! श्री यमुनाजी, जो श्री मुकुंद प्रभु की प्रिय हैं, आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे दिव्य तनु नवत्व प्रदान करें, जिससे मैं प्रभु की दिव्य लीलाओं में काम आ सकूँ तथा आपकी सेवा भी कर सकूँ। ऐसा करने में केवल आप ही समर्थ हैं। ऐसे दिव्य शरीर से मैं श्री मुकुंद प्रभु की सेवा बहुत अच्छे से कर सकूँगा। पुष्टिमार्गीय वैष्णवों ने श्री गंगाजी में आपके

विलीन हुए बिना कभी श्री गंगाजी की स्तुति नहीं की।

स्तुतिम् तव करोतिखा, कमल जा सपत्नी प्रिये,
हरेर यदनु सेवया, भवति सौख्य मामोक्षतः,
इयं तव कथाधिका, सकल गोपिका संगम स्मर,
स्मरश्रमज लानुभि, सकलगात्र जय संगमहा।

हे! श्री यमुनाजी, आप सौभाग्यवती श्री लक्ष्मीजी के समान हैं। किन्तु आपकी स्तुति कोई नहीं कर सकता, क्योंकि जो व्यक्ति पहले भगवान् की सेवा करता है, फिर श्री लक्ष्मीजी की, उसे मृत्यु के पश्चात भी सभी सुख प्राप्त होते हैं। किन्तु श्री यमुनाजी का महत्व सबसे श्रेष्ठ है। यहाँ श्री महाप्रभुजी श्री यमुनाजी के जल में स्नान मात्र से आत्मा के उत्कर्ष की व्याख्या कर रहे हैं, जो प्रतिदिन "ब्रजभक्तों के साथ भगवान् की रासलीला" से पवित्र हो जाती है। श्री यमुनाजी की सेवा करने से हमें उनका आशीर्वाद मिलता है, जो हमारी आत्मा को उत्कर्षित करने तथा पवित्र बनाने में सहायक होता है।

जिस प्रकार हम अपने शरीर को सुन्दर बनाने के लिए उसे बाहर से धोते हैं, उसी प्रकार हमें अपनी आत्मा तथा शरीर को भीतर से धोने के लिए श्री यमुनाजी के नदी जल के रूप में आशीर्वाद की आवश्यकता होती है। उनके आशीर्वाद से हमारा मन तथा विचार श्री कृष्ण की सेवा के लिए अनुकूल हो जाते हैं।

तवष्टक मिदं मुदा, पथति सूरसुतेसदा,
समस्ता दुरितक शयो, भवति वै मुकुंदे रतिहि,
तय सकल सिद्धयो, मुरारी पुश्च सन्तुष्यति,
स्वभाव विजयो भवेत, वदति वल्लभ श्री हरेहे।

हे सूर्यपुत्री (श्री यमुनाजी) जो व्यक्ति इन नौ श्लोकों का सदैव पाठ करता है, वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है और निश्चित रूप से श्री कृष्ण के प्रति प्रेम बना रहता है। इससे उसे सभी दिव्य शक्तियाँ प्राप्त होती हैं और श्री कृष्ण हर तरह से प्रसन्न होते हैं। तुम अपने स्वभाव पर विजय प्राप्त करो, ऐसा श्री हरि के प्रिय वल्लभ ने कहा है। इस प्रकार श्री वल्लभाचार्य द्वारा रचित श्री यमुना का श्लोक समाप्त होता है।

सरस्वती नदी तो अद्भुत हैं। वे धन्य होंगे जिन्होंने इनकी बेगवती धारा को पृथ्वी पर देखा होगा। अभी इनकी धारा भूमिगत है जिस पर अत्यंत गंभीर शोध हो रहे हैं। सरस्वती नदी ऋग्वेद में वर्णित मुख्य नदियों में से एक है। ऋग्वेद के नदी सूक्त के एक मंत्र (१०.७५) में सरस्वती नदी को 'यमुना के पश्चिम' और 'सतलुज के पूर्व' में बहती हुई बताया गया है। उत्तर वैदिक ग्रंथों, जैसे ताण्डय और जैमिनीय ब्राह्मण में सरस्वती नदी को मरुस्थल में सूखा हुआ बताया गया है, महाभारतमें भी सरस्वती नदी के मरुस्थल में 'विनाशन' नामक जगह पर विलुप्त होने का वर्णन आता है। महाभारत में सरस्वती नदी के प्लक्षवती नदी, वेदस्मृति, वेदवती आदि कई नाम हैं। महाभारत, वायुपुराण अदि में सरस्वती के विभिन्न पुत्रों के नाम और उनसे जुड़े मिथक प्राप्त होते

हैं। महाभारत के शल्य-पर्व, शांति-पर्व, या वायुपुराण में सरस्वती नदी और दधीचि ऋषि के पुत्र सम्बन्धी मिथक थोड़े थोड़े अंतरों से मिलते हैं उन्हें संस्कृत महाकवि बाणभट्ट ने अपने ग्रन्थ 'हर्षचरित' में विस्तार दे दिया है। वह लिखते हैं- "एक बार बारह वर्ष तक वर्षा न होने के कारण ऋषिगण सरस्वती का क्षेत्र त्याग कर इधर-उधर हो गए, परन्तु माता के आदेश पर सरस्वती-पुत्र, सारस्वतेय वहां से कहीं नहीं गया। फिर सुकाल होने पर जब तक वे ऋषि वापस लौटे तो वे सब वेद आदि भूल चुके थे। उनके आग्रह का मान रखते हुए सारस्वतेय ने उन्हें शिष्य रूप में स्वीकार किया और पुनः श्रुतियों का पाठ करवाया. अश्वघोष ने अपने 'बुद्धचरित' काव्य में भी इसी कथा का वर्णन किया है। दसवीं सदी के जाने माने विद्वान राजशेखर ने 'काव्यमीमांसा' के तीसरे अध्याय में काव्य संबंधी एक मिथक दिया है कि जब पुत्र प्राप्ति की इच्छा से सरस्वती ने हिमालय पर तपस्या की तो ब्रह्मा ने प्रसन्न हो कर उसके लिए एक पुत्र की रचना की जिसका नाम था- काव्यपुरुष। काव्यपुरुष ने जन्म लेती ही माता सरस्वती की वंदना छंद वाणी में यों की- हे माता! मैं तेरा पुत्र काव्यपुरुष तेरी चरण वंदना करता हूँ जिसके द्वारा समूचा वाङ्मय अर्थरूप में परिवर्तित हो जाता है।

इन तीन माताओं ने इस पृथ्वी को सींच कर हमारे लिए जीवन के योग्य बनाया है और अपने आंचल संयुक्त कर प्रयाग राज में ऐसे धर दिया है जिसकी त्रिवेणी मानव जाति की प्राण बन कर अब तक उपस्थित है। अपनी इन महान माताओं की गोद अर्थात त्रिवेणी के पावन नीर की प्रचुर धारा में स्नान और महान एवं दुर्लभ संतों के दर्शन और श्रवण के लिए अमृत कुंभ सजा हैं। आइए दर्शन भी करें, स्नान भी करें और माताओं और संतों की असीम कृपा प्राप्त कर स्वयं के जीवन को आस्था, श्रद्धा और विश्वास की त्रिवेणी में समाहित कर महान विश्वगुरु भारत के पुनर्निर्माण में भारत के महानायक, सनातन के योद्धा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सपनों के विश्वगुरु भारत के निर्माण में प्राणप्रण से जुट जाएं।

विशेष आलेख

सनातन का नैसर्गिक स्वरूप है कुंभ

मानव देह को संस्कारयुक्त मनुष्य स्वरूप प्रदान करता है कुंभ

स्वामी जीतेंद्रानंद सरस्वती

12 वर्ष के अंतराल पर एक खास खगोलीय स्थितियां कुंभ के सम्मिलन की तिथि तय करती हैं और सनातन समाज अपने अपने घर, गांव ,कस्बे, नगर, महानगर , प्रदेश और अलग अलग देशों की सीमाएं पार कर प्रयागराज में एकत्र होता है। वैश्विक मीडिया और समाज इस आयोजन में मेला देखता है। सनातन समाज इसमें अपने लिए युगानुकुल संस्कार, परिमार्जन और जीवन के नए मूल्यों की संभावना तलाशता है।

राष्ट्रीय महामंत्री,
अखिल भारतीय संत समिति
एवं गंगा महासभा

तीर्थराज प्रयाग में 13 जनवरी से पूर्ण कुंभ का आरंभ हो रहा है। गंगा, यमुना और सरस्वती के पावन संगम के रेतीले तट पर आयोजित होने वाला यह सम्मिलन पूर्णतः नैसर्गिक है। प्राचीन उतना कि जितनी सृष्टि है। सनातन संस्कृति की यह यात्रा सृष्टि के साथ शुरू हुई और जब तक यह सृष्टि है तब तक चलती रहेगी। सनातन भी अपने स्वरूप में सृष्टि के साथ सहयात्री बन कर अनवरत यात्रा में है और रहेगा। रज, तम और सत के त्रिगुण से निर्मित इस सृष्टि में यह ऐसा क्रम है जिसको कोई बाधित नहीं कर सकता। यह सनातन यात्रा का ऐसा पड़ाव है जो अपने समाज को संस्कारयुक्त, समयानुकूल क्रियात्मक गति देता रहा है और ऐसे ही देता रहेगा।

कुंभ कोई मेला नहीं है। मेला शब्द मेल से आता है। मेल शब्द का आधार मिलन है। कुंभ वस्तुतः सम्मिलन है। यह न तो धार्मिक है न पांथिक। जब मैं धार्मिक लिख रहा हूं तो इसका आशय आधुनिक शैली में प्रयुक्त धर्म शब्द से है। सनातन संस्कृति में धर्म स्वभाव है, गुण है, संबंध है और संस्कार है। धर्म को पश्चिम ने पांथिक परिभाषा में संकुचित किया है। सनातन को भी धर्म कह दिया गया जबकि सनातन पंथ जैसा कोई धर्म नहीं है बल्कि संस्कृति है। संस्कृति का मतलब भी कल्चर नहीं। संस्कृति न तो कोई कल्ट है न ही इसे कल्टीवेट किया जा सकता है। पश्चिम ने हमे और हमारी विरासत को अपने शब्दों की परिभाषा देकर बहुत विकृत किया है। यह अलग विषय है। सनातन की व्याख्या ब्रह्मर्षि नारद ने बहुत सलीके से की है। उसे सभी को जानना भी चाहिए। युधिष्ठिर के एक प्रश्न के उत्तर में नारद जी स्पष्ट करते हैं, सनातन सर्व वेदा स्वरूपः। अर्थात सनातन वेद का स्वरूप है। सनातन ही ब्रह्म है। सनातन ही पांच महाभूत अर्थात पवन, पानी , अग्नि, आकाश और वायु है। सनातन आदि है और सृष्टि तक है। सनातन को किसी सीमा में नहीं बांध सकते। वेद का ऋषि कहता है -

ॐ इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।
अपघ्नन्तो अराव्णः

(ऋग्वेद-9/63/5)

अर्थात, मनुष्य को अपने अंदर से दुख और बुराइयों की प्रवृत्ति को हटाकर 'इंद्र' अर्थात आत्मा, समृद्धि और अच्छे कर्मों को बढ़ाना चाहिए। इससे न केवल हमारा अपना जीवन बेहतर होता है, बल्कि दूसरों की भलाई में भी योगदान मिलता है। यहाँ आर्य शब्द का तात्पर्य किसी विशेष 'जाति', 'जाति' या 'पंथ' से नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है एक गुणी और संस्कारवान व्यक्ति। इसी की व्याख्या करते हुए ब्रह्मर्षि वशिष्ठ कहते हैं,

कर्त्तव्यमनाचरण कर्म, अकृतव्यमनाचरण।
विष्ठति प्रकृतिचारे ये स आर्य स्मृतिः

(वसिष्ठ स्मृति)

अर्थात् जो व्यक्ति केवल प्रशंसनीय कार्य करता है, परम्पराओं को उच्च सम्मान देता है और उनका पालन करता है, हानिकारक आदतों और कार्यों को नहीं अपनाता बल्कि उनसे छुटकारा पा लेता है तथा स्वभाव से ही दयालु होता है, वही आर्य कहलाता है। यह आर्य तत्व की मनुष्य होने के संस्कार देता है और इसी संस्कारयुक्त संपूर्ण मनुष्य के निर्माण का आध्यात्मिक आयोजन है कुंभ। सृष्टि के पथप्रदर्शकों के पाथेय प्राप्त करने के इसी संस्कार ने सनातन को विश्वकल्याण के लिए योग्य भी बनाया है और अधिकृत भी किया है। यही तत्व विश्व को कुंभ के प्रति आकर्षित करता है।

अभी चर्चा कुंभ की करते हैं। 12 वर्ष के अंतराल पर एक खास खगोलीय स्थितियां कुंभ के सम्मिलन की तिथि तय करती हैं और सनातन समाज अपने अपने घर, गांव ,कस्बे, नगर, महानगर , प्रदेश और अलग अलग देशों की सीमाएं पार कर प्रयागराज में एकत्र होता है। वैश्विक मीडिया और समाज इस आयोजन में मेला देखता है। सनातन समाज इसमें अपने लिए युगानुकुल संस्कार, परिमार्जन और

जीवन के नए मूल्यों की संभावना तलाशता है। विश्व के लिए कुंभ के दृश्यों में चमत्कार और रंग विस्मय बोध के विषय बनते हैं। क्योंकि खास कर पश्चिम को सनातन के मूल का कोई ज्ञान है ही नहीं।

सनातन संस्कृति की विशालता का अनुमान भर लगाया जा सकता है। कुंभ वस्तुतः सनातन का वह महाविज्ञान है जिसकी चर्चा हमारी शास्त्रीय परंपरा और श्रुतियां करती हैं। इसी महाविज्ञान से दर्शन और अध्यात्म की यात्रा शुरू होती है। इसको समझने के लिए एक संकेत करता हूं। सनातन परंपरा में उपस्थित किसी भी ग्रन्थ को गंभीरता से अध्ययन करने पर अध्येता को यह ज्ञात हो सकता है कि सृष्टि में कौन सी घटना कब घटित हुई होगी। काल अर्थात समय का यह निर्धारण सनातन की खगोलीय शिक्षा प्रणाली में उपस्थित है। वेद, स्मृति, पुराण, रामायण, महाभारत या नवीनतम रामचरित मानस जैसे ग्रंथ अनेक बार ऐसा सटीक घटनाक्रम प्रस्तुत करते हैं। सबसे ताजा उदाहरण तो मानस में ही मिल जाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीराम के जन्म के समय की जो खगोलीय व्याख्या संकेतों में लिखी है उसे आज के आधुनिक विज्ञान की समय प्रणाली में जब फीड किया जाता है तो श्रीराम के जन्म का समय सटीक निकल कर आता है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। गीता का व्याख्यान श्रीकृष्ण ने किस समय किस तिथि को दिया था यह भी हमारे ग्रन्थ अपने खगोलीय स्थिति में व्यक्त करते हैं और आज का वैज्ञानिक समाज जब वर्णित खगोलीय परिप्रेक्ष्य की तलाश करता है तो बिल्कुल सटीक समय मिल जाता है।

प्रयागराज में प्रत्येक 12 वर्ष के अंतराल का यह सम्मिलन भी खगोलीय महाविज्ञान का एक ऐसा घटनाक्रम है जिसे घटित होना नैसर्गिक है। इसीलिए इस पवित्र तट पर सनातन के 14 अखाड़े और 147 संप्रदायों के पांथिक समुदाय अपने अपने स्वरूप में यहां उपस्थित होकर 12 वर्षों में मानव समाज की यात्रा का मूल्यांकन और सम्यक विवेचन कर उसे पुनर्गठित और पुनर्परिभाषित भी करते हैं। स्नान और समागम तो कर्मकांड हैं जो संस्कृति के अंग हैं। संस्कृति कोई अध्याय नहीं है , विशुद्ध कर्मकाण्ड है जिसमें क्रिया का तत्व अनिवार्य है। परिमार्जन और शोधन संस्कृति के गुरुत्व से आता है जिसको कुंभ का सम्मिलन आकार और स्वरूप प्रदान करता है। सामान्य लोग इस आयोजन में तरह तरह के संतों , मंडलेश्वर और महामण्डलेश्वरों , नागा साधुओं, अखाड़ों और अन्य भव्यताओं को देख कर ही विभोर रहते हैं। पश्चिमी जगत को यहां विचित्र चित्रांकन मिल जाता है।

कुंभ ऐसा घटनाक्रम या आयोजन है जो मानव देह को संस्कारयुक्त मनुष्य के निर्माण की यात्रा की ऊर्जा और गति देता है। कुंभ वस्तुतः सनातन का महाविज्ञान है जिसके गहन गहवर में प्रवेश करने के लिए मन से पवित्र और निष्काम होना पड़ता है। गंगा , यमुना और सरस्वती के त्रिगुण तट पर यह जन्म, जीवन और मृत्यु को साधने और समझने की वह स्थिति है जिसे शास्त्रों ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश के कर्तव्यों में बांट दिया है। यह कुंभ ही है। इसीलिए क्योंकि अमरता का कोई तत्व किसी अन्य पात्र में आ ही नहीं सकता। इसका कारण सभी को जानना चाहिए। शास्त्र स्पष्ट करते हैं कि सृष्टि में करोड़ों आकाश गंगा हैं। उनमें से एक निहारिका में भी करोड़ों ब्रह्मांड है। उनमें से एक प्रिशनि ब्रह्मांड में से एक

विशेष आलेख

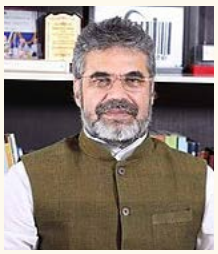

प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

कुम्भ:अमृतधार्मिता का उत्सव

कुंभ पर्व मात्र नहीं पर्वों का जल और जमीन से जुड़ी साधना के पर्वों एक ऐसा समुच्चय है, जो मनुष्य के अमृत धर्मयात्रा का सम्पूर्ण निदर्शन कराता है। मरणधर्मिता से अमरत्व की ओर अन्धकार से प्रकाश की ओर मानव जाति के प्रगमन का इतिहास, संजोये महाकुंभ का महापर्व सनातन धर्म में ज्ञान, दान, सेवा और तप चैतन्य स्वरूप है। इसीलिए कुंभ की मूल कथा में अमृत का वितरण है।

भारत उत्सवधर्मी देश है तथा भारत की धार्मिक परंपरा धर्म को उत्सव और उत्सव को धर्म के रूप में और निष्ठित करने की परंपरा है। कुंभ का मेला भारतीय उत्सवधर्मिता का सबसे प्रखर और विराट रूप हैं। कुंभ को केंद्र में रखकर के यह कहा जा सकता है कि धर्म के उत्सर्जित होने, उच्छलित होने की परंपरा ही उत्सव है। कुंभ पर्व मात्र नहीं पर्वों का जल और जमीन से जुड़ी साधना के पर्वों एक ऐसा समुच्चय है, जो मनुष्य के अमृत धर्मयात्रा का सम्पूर्ण निदर्शन कराता है। मरणधर्मिता से अमरत्व की ओर अन्धकार से प्रकाश की ओर मानव जाति के प्रगमन का इतिहास, संजोये महाकुंभ का महापर्व सनातन धर्म में ज्ञान, दान, सेवा और तप चैतन्य स्वरूप है। इसीलिए कुंभ की मूल कथा में अमृत का वितरण है।

अमृत के वितरण की यह कथा वितरण के पूर्व ही अमृत के उच्छलित होने की भी कथा है। यह भी ध्यातव्य कि अमृत पूर्ण कुंभ से ही छलकता है और छलकता भी चार स्थानों पर है। अमृत मंथन से निकलता है। मंथन से और भी रत्न निकलते हैं लेकिन अमृत तक वही पहुँचता है जो

> कुम्भ वास्तव में उस घड़े का प्रतीक है, जिसे स्थापित करके और जिसे साक्षी मानकर हमें संस्कारित किया जाता है। यह पूरे ब्रह्माण्ड का प्रतीक है, जिसमें सृजनात्मक विस्तार की अनन्त संभावनाएँ छिपी हुई हैं। कुम्भ मानवता का अमृत कलश है, और इस अमृत की प्राप्ति का साधन है दिव्य और आसुरी वृत्तियों के बीच निरंतर संघर्ष, जो भारतीय मानसिकता और लोकजीवन में सुर-असुर युद्ध की कथाओं के रूप में उजागर होता है।

लेखक महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा के पूर्व कुलपति एवम् तुलनात्मक धर्म दर्शन के आचार्य हैं।

अन्य रत्नों के लालच में आकर्षण है नही फंसता है और निकलता भी है तो कुंभ में आवृत्त होकर।

यह ब्रह्मांड भी कुंभाकार है कुम्भाकार ब्रह्मांड में कुंभाच्छादित अमृत का होना एक विशिष्ट सृष्टि विधान है। जिसमें सृष्टि परब्रह्म से निःश्रित होकर पूर्ण कुंभ के रूप में अभिव्यक्त होती है और यह अभिव्यंजना देश और काल से परे है। इसलिये परे हैं कि सृष्टि के मूल में भी अमृत से भरा हुआ पूर्ण कलश है और यह समस्त ब्रह्मांड भी अमृत से कलशाकार में ही आवृत्त है।

घट में जल है जल में घट है भीतर बाहर पानी।
फूटा घट जल जल ही समाना यह तत्कथहौ ज्ञानी।।

कुम्भ का सामान्य अर्थ 'घड़ा' है, लेकिन यहाँ इसका अर्थ इससे कहीं अधिक है। यह घड़ा केवल एक प्रतीक है, जो आर्य संस्कृति और उसकी समृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है। कुम्भ वास्तव में उस घड़े का प्रतीक है, जिसे स्थापित करके और जिसे साक्षी मानकर हमें संस्कारित किया जाता है। यह पूरे ब्रह्माण्ड का प्रतीक है, जिसमें सृजनात्मक विस्तार की अनन्त संभावनाएँ छिपी हुई हैं। कुम्भ मानवता का अमृत कलश है, और इस अमृत की प्राप्ति का साधन है दिव्य और आसुरी वृत्तियों के बीच निरंतर संघर्ष, जो भारतीय मानसिकता और लोकजीवन में सुर-असुर युद्ध की कथाओं के रूप में उजागर होता है।

जब हम कुम्भ का आवाहन, पूजन और स्थापना करते हैं, तब हम अपने संबंधों को ब्रह्माण्ड से जोड़ते हैं और आत्म चेतन को ब्रह्मांड चैतन्य के साझा करते हैं। समुद्र-मंथन का उल्लेख पुराणों में कई बार हुआ है। समुद्र-मंथन से निकला अमृत, जिसे दिव्यता के विस्तार के इच्छुक देवताओं ने चखा, राहु ने भी उसका स्वाद लिया; लेकिन सृष्टि के पालनकर्ता विष्णु ने उसके गले को काट दिया। इससे यह स्पष्ट होता है कि अमृत को धारण करने की पात्रता न होने पर वह वहाँ टिक नहीं सका। यह सब मानवता के कल्याण के लिए भावनात्मक और विचारात्मक विकास का बीज सूत्र लेकर आया। जो अमृत ज्ञान के समुद्र-मंथन से निकला, उसे भारत में चार पवित्र स्थानों - प्रयाग, उज्जैन, नासिक और हरिद्वार में छलकाया गया।

इस अमृत के उच्छलित होने से धर्म का विकास हुआ और इस अमृत का पान करने वाले देवताओं और अमृतकामी मनुष्यों ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उद्घोष किया। इसके प्रवाहित होने से मनुष्य ने संसार की विविधता को पंचतत्त्वों के अक्षरों में देखा, और धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का अनुभव किया। भारत की इस समृद्ध संस्कृति ने मानवता को गौरवान्वित किया, जिसने मनुष्य का ऐसा स्वरूप प्रस्तुत किया जो विश्व कल्याण की भावना को धारण करता है। इसी कारण से 'लोका समस्ताः सुखिनो भवन्तु' की अमृत दृष्टि का उदय हुआ।

कुम्भ एक संवाद है, एक परिषद व्यापार है जो एकवरा त्रिवारा दशवरा न होकर के कोटिवरा है; यह मानवता का एक ब्रह्माण्डीय पर्व है। कुम्भ एक अनहद नाद की तरह है, जिसका न कोई आरंभ है और न अंत। तिथि और नक्षत्र, अंतरिक्ष के ब्रह्मांड के काल समयानुसार चलते हैं, और लोग अपनी गठरी-मोटरी बांधकर इसकी ओर चल पड़ते हैं। वही व्यक्ति इस अनुभव का सही अर्थ समझेगा, जिसने

चार स्थानों पर बारह वर्षों पर और हरिद्वार तथा प्रयाग दो स्थानों पर छह वर्ष पर अर्ध कुंभ के आयोजन से प्रत्येक दो वर्ष में एक बार कुंभ का मेला होता है। दो वर्ष की अवधि तक भारत के साधु सन्यासी परिव्राजक और यति चारिका करते हुए चक्रमण करते हुए धर्म चेतना को जाग्रत करने का यत्न करते हैं। समाज के धर्म, अर्थ और काम साधन में आने वाली बाधा और दुख प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं और उसके बाद हर दूसरे वर्ष होता है इनका महाकुंभ।

अपनी आँखों से इसे देखा है जिसमें कुंभ के मेले में शामिल होकर के भाव जल से मन को ज्ञान जल से, मेधा को और संवाद जन से वाणी को,संस्कारित किया है। कुम्भ संतों के आशीर्वाद, सेवा, लोगों की आस्था, समर्पण, श्रद्धा और विश्वास से आत्मदर्शन की ओर ले जाता है आत्मदर्शन ही अमरता है। भारतीय जीवन दर्शन और कुम्भ का अनुभव बिना स्वयं देखे, बिना इसको जिये संभव नहीं है।

करोड़ों सनातन धर्मावलम्बियों का यह उत्कट विश्वास है कि कुम्भ के अमृत से दैहिक, दैविक और भौतिक ताप दूर हो जाएंगे। कुंभ पर्व में किए गये सत्कर्म के द्वारा मनुष्य इहलोक में शारीरिक सुखों को देने वाला और जन्म जन्मांतरमें उत्कृष्ट सुखों की प्राप्ति कराने वाला पुण्य अर्जित करता है।

"कुम्भो वनिष्टुर्जनिता शाचिभिर्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्मोअन्तः।
प्लाशिर्व्यक्तः शतधारउत्सो दुहे न कुम्भी स्वधा पितृभ्यः।।"

(शुक्ल यजुर्वेद, 19.87.)

कुंभ का पर्व व्यष्टि से समष्टि के बीच पूर्ण और तादात्म सम्बन्धों का निर्धारक भी है। यह सृष्टि पंच भूतात्मक है अर्थात ब्रह्मा ने पंचमहाभूतों से सृष्टि की रचना की है। कुंभ में यह पंचतत्व प्रतीक रूप में समाहित हैं।

कुंभ मेले के दार्शनिक पक्ष को समझने के लिए आवश्यक है कि हम कुम्भ के वैदिक मूल को स्पष्ट कर लें। कुंभ की अवधि मूल रूप से अथर्ववेद में प्राप्त होती हैं। अथर्ववेद में कहा गया है कि स्वयं ब्रह्मा ने मानव के लोक पर लोक कल्याण के लिए कुंभ का प्रावधान किया और संपूर्ण वसुधा को वैभव, सम्पन्नता एवं लोक कल्याण से मंडित करने के लिए धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए चतुर्कुम्भ को स्थापित किया है। ऋचा मे आगे यह भी कहा गया है कि ब्रह्मा ने चार कुंभों को चार अर्थों की पूर्ति के लिए मनुष्यों को दिया और देने का तात्पर्य यहां चार स्थानों पर उसे स्थापित करने से ही है।

पुराणों में इन्हें चारों स्थानों पर कुंभ मेले की शुरुआत की कथा कुछ इस प्रकार से है कि- 'मेला तब से प्रारम्भ हुआ जब देवता और दैत्य दोनो ही इसी धरती पर निवास करते थे। एक समय महर्षि दुर्वासा के शाप के कारण इन्द्र और अन्य देवता कमजोर हो गए तो दैत्यों ने उन पर आक्रमण किया और पराजित कर दिया। पराजित देवता भगवान विष्णु के पास गए और उन्हे पराजय का संपूर्ण वृत्तान्त सुनाया। तब श्रीहरि ने बलशाली दैत्यों के साथ मिल करके समुद्र मंथन कर मृत अवगाहित करने का परामर्श दिया। जिसका सेवन कर देवता अमर हो जाए। विख्यात कथा है कि इसके लिये मंदराचल पर्वत को मथानी और नाग राज वासुकि को रस्सी बनाया गया। शर्त तय हुई कि समुद्र मंथन से अमृत सहित जो भी रक्त न निकलेंगे उन सबका बराबर बराबर का बंटवारा होगा। शास्त्रो वर्षो समुद्र मंथन हुआ।

मंथन की प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद अनेक रत्न निकले जो भी विविधि देवताओं और दैत्यों में वितरित हुए। सबसे अंत में अमृतकुम्भ लिए हुए भगवान धन्वन्तरि प्रकट हुए। अमृत का निकलना था कि देवताओं के इशारे पर देवराज इन्द्र के पुत्र जयंत ने अमृत का कलस उठाया और आसमान में उड़ चलें। दैत्यों ने जयंत का पीछा किया और अंततः उन्हें पकड़ लिया। फिर एक बार देवताओं और दैत्यों में युद्ध प्रारंभ हुआ यह युद्ध बारह दिनों तक चला था। अमृत की इस छीना झपटी में अमृतकुम्भ से कुछ बूंदें उत्सर्जित होकर भारत के चार स्थानों पर गिर गयीं और सब जानते हैं कि इन्हीं चार स्थानों पर कुंभ का मेला लगता है।

यह युद्ध बारह दिन हुआ था और देवताओं के एक दिन का मान मनुष्यों के एक वर्ष का होता है। इसलिए 12 दिन के युद्ध के पश्चात मिले अमृतकुंभ को अभिलक्ष्य करके इन चारों स्थानों पर बारह वर्षों बाद कुंभ का मेला लगता है। चार स्थानों पर बारह बारह वर्षों पर और हरिद्वार तथा प्रयाग दो स्थानों पर छह छह वर्ष पर अर्ध कुंभ के आयोजन से प्रत्येक दो वर्ष में एक बार कुंभ का मेला होता है। दो वर्ष की अवधि तक भारत के साधु सन्यासी परिव्राजक और यति चारिका करते हुए चक्रमण करते हुए धर्म चेतना को जाग्रत करने का यत्न करते हैं। समाज के धर्म अर्थ और काम साधन में आने वाली बाधा और

उससे उत्पन्न होने वाले दुख प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं और उसके बाद हर दूसरे वर्ष होता है इनका महाकुंभ।

सभी अखाड़े सभी संप्रदाय विविध योग धाराएं, भक्तिमार्गी या यज्ञमार्गी सभी के सभीहर दूसरे वर्ष एक स्थान पर एकत्रित आते है। कुम्भ किसी एक संप्रदाय महापुरुष, समूह या जाति का ही नहीं अपितु व्यष्टि चेतना और विराट चेतना के विमर्श का अतिविराट जंगम तीर्थ है। सम्पूर्ण वसुधा के सनातनावलंबी विशेषतः जम्बू द्वीप के सचेत धर्मजीवी जन इस जंगम तीर्थों के मेले में जल बिंदु के समान समाहित होने के लिए उमड़ पड़ते हैं और महान जन संघात से जाग्रत हो उठता है अमृत पुत्रों की चेतना का यह महाकुंभ।

प्रयाग का महाकुम्भ तो और भी विशिष्ट है। सनातन परम्परा में। नदियों के संगम को अत्यंत पुण्यशाली में माना गया है। पर प्रयाग में श्रीहरिप्रिया यमुना, महादेव प्रिया गंगा और ब्रह्मवर्चस् संपन्न किन्तु गुप्तसलिला सरस्वती का संगम है। सरस्वती का ज्ञान यमुना की भक्ति और गंगा की योग साधना में जंगम तीर्थों के समागम के साथ गुप्त सलिला सरस्वती भक्ति, ज्ञान, योग और यज्ञ के प्रखरोत्कर्ष के बीच. जन के कलरव, जंगम में तीर्थों के जनरव में भास्वर रुप में भासित हो जाती है।

ईश्वर की सत्ता का अनुभवसाधारण जन के लिए निराकार के रूप में होना संभव नहीं है। जब तक ईश्वर की सत्ता का अनुभव नहीं होता है, तब तक मनुष्य को अपनी अमृतधार्मिता का बोध भी नहीं होता है। इसलिए उसका अननुभूयमान को अनुभूति के लिये साकार रूप होना चाहिए। कुम्भ उसी निराकार परम सत्य आनंद स्वरूप परमात्मा का, सबके उद्गम और लक्ष्य का साकार रूप में प्रकटीकरण है। ईश्वर के स्वरूप के साथ तादात्म्य सायुज्य सारूप्य कुछ भी प्राप्त करने के लिए समावर्तित होना स्नात होना आवश्यक है। और इसके लिए सहज सुगम जो रास्ता है उसे स्नान कहा गया है। जो वेद स्नान करता है वही स्नातक होता है और जो पंचविध स्नान करता है वहीं अमृत की प्राप्ति करता है।

आग्नेम्यं भस्मानां स्नानं सलिलेनतु वारूणम्।
आपोहिष्टेति च ब्राह्मयम् वायव्यम गोरजं स्मृतम्।।

अग्निस्नान या भस्मस्नान, वारुणस्नान या जलस्नान ब्रह्म स्नान या मन्त्र स्नान और गोधूलि स्नान या वायव्य स्नान इन पंचविध स्नानों की एक स्थान पर एक, कालखंड में, एक जनभाव से, सबको उपलब्धि केवल और केवल महाकुंभ में होती है और इन पंचस्नानो से संपन्न व्यक्ति पंच महाभूतों से निर्मित सृष्टि और शरीर को अतिक्रांत करता हुआ, सभी पुरुषार्थों की सिद्धिपूर्वक अमृत पद मुक्ति को प्राप्त करता है।

कुंभ से लौटते समय घर के लिए ये चीजें जरूर लाएं

1. पवित्र त्रिवेणी जल

- संगम में स्नान के बाद वहां का पवित्र जल अपने साथ घर लाना शुभ माना जाता है।
- गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम का जल घर की पवित्रता बढ़ाता है और नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त करता है।
- यह जल परिवार के सुख-शांति और समृद्धि के लिए अत्यंत लाभकारी होता है।

2. त्रिवेणी संगम की मिट्टी

- यह माना जाता है कि प्रयागराज में अमृत की बूंदें गिरी थीं, इसलिए त्रिवेणी संगम की मिट्टी दिव्य और औषधीय गुणों से भरपूर होती है।
- इसे घर लाने से ग्रह दोष और नकारात्मक प्रभाव समाप्त होते हैं।
- यह मिट्टी घर की सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाती है।

3. शुद्ध भोग या प्रसाद

- महाकुंभ क्षेत्र में स्थित पवित्र मंदिरों में चढ़ाए गए भोग और प्रसाद को घर लाना शुभ माना जाता है।
- इस दौरान मिलने वाले प्रसाद और खाद्य सामग्री को दिव्य मानते हुए अपने परिवार के साथ बांटें।
- यह घर में शुभता और सुख-शांति लाता है।

4. पवित्र पुष्प

- महाकुंभ के दौरान मंदिरों या नदी के किनारे मिले पवित्र फूलों को घर लाना भी शुभ होता है।
- साधु-संतों से मिले फूलों को विशेष रूप से घर में रखना चाहिए।
- यह घर में सुख-शांति और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है और रोग-दोष को दूर करता है।
- महाकुंभ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह जीवन में सकारात्मकता और शुद्धता लाने का एक माध्यम है।
- इन पवित्र वस्तुओं को घर लाने से आपके जीवन और परिवार में शुभता और समृद्धि का वास होगा।

सनातनबोध का प्रकटीकरण है कुंभ

प्रो.संजय द्विवेदी

दुनिया में मनुष्यों का यह सबसे बड़ा एकत्रीकरण है। कोई एक शब्द इसके लिए पर्याप्त नहीं। इसलिए इसे 'कुंभ' कहना ही पर्याप्त है। कुंभ में होना ज्ञान, परंपरा, संस्कृति, सामंजस्य, गीत-संगीत, प्रदर्शन कलाओं, धर्मबोध, भारतबोध, मूल्यबोध के साथ होना है। एक स्थान पर इतनी सारी विधाओं को साधने वाला एकत्रीकरण असंभव है। कुंभ का पर्याय सिर्फ कुंभ है। इस कुंभ में सारा जीवन है, सारा ज्ञान है।

कुंभ भारत का सबसे बड़ा उत्सव है। आस्था, ज्ञान, सनातनबोध और भारतबोध कराने का ऐसा अप्रतिम उत्सव कोई दूसरा नहीं है। भारत को जानने और मानने की अभिलाषा लेकर यहां आए लोग रिक्त नहीं लौटते। कुंभ आपकी आस्था को और प्रगाढ़ करता है, भारतप्रेम को सजग करता है। आपको ज्यादा संवेदनशील और मानवीय बनाता है। इसलिए कुंभ की मान्यता और ख्याति विरल है। कुंभ की यात्रा हमें संपूर्ण करती है। एक खास भावबोध से बांधती है। इस यात्रा के सजग अनुभव से आप ज्यादा हिंदू या ज्यादा भारतीय हो जाते हैं। आपका मन सरल हो जाता है, आपके मन में भारत उतर जाता है धीरे-धीरे। आप एक सनातन यात्रा में सहयात्री हो जाते हैं। मन कहने लगता है, "युग-युग से बहता आता यह पुण्य प्रवाह हमारा।"

कुंभ की लोक में खास मान्यता है। यहां होना पुण्यभागी होना है, सौभाग्यशाली होना है। भारतीय संस्कृति की समझ और उसे एकत्र देखने का भाव हर भारतवासी को यहां खींच लाता है। दुनिया में मनुष्यों का यह सबसे बड़ा एकत्रीकरण है। जमावड़ा है। मेला है। कोई एक शब्द इसके लिए पर्याप्त नहीं। इसलिए इसे 'कुंभ' कहना ही पर्याप्त है। कुंभ में होना ज्ञान, परंपरा, संस्कृति, सामंजस्य, गीत-संगीत, प्रदर्शन कलाओं, धर्मबोध, भारतबोध, मूल्यबोध के साथ होना है। एक स्थान पर इतनी सारी विधाओं को साधने वाला एकत्रीकरण असंभव है। कुंभ का पर्याय सिर्फ कुंभ है। इस कुंभ में सारा जीवन है, सारा ज्ञान है। आज का जीवन है, भविष्य का संकेत है। यह एक साथ भारत की तरह ही नया और पुराना दोनों है। यहां आनंद है, अध्यात्म है। जीवन है, जीवन राग है तो जीवन से विराग भी है। परिवार है तो सन्यास भी है। भोजन है, तो उपवास भी है।

कुंभ सही अर्थों में एक आध्यात्मिक मेला है। जिसने भारत की एकता, सद्भाव और विविधता को साधकर सदियों से इस राष्ट्र को एक कर रखा है। कुंभ की यात्रा और उसके पुण्य जल के आचमन से व्यक्ति की जिंदगी में बड़े बदलाव आते हैं। वह एक परंपरा से जुड़कर संस्कृति का वाहक बन जाता है। भारत के सभी पंथों शैव, वैष्णव, शाक्त, अघोर पंथी, उदासी, सिक्ख, जैन और बौद्ध मतावलंबी कुम्भ में एकत्र आते हैं। सभी शंकराचार्य और सभी अखाड़े इसमें सहभागी होते हैं। इस तरह यह भारत के एकीकरण का भी सूचक है। इससे हमारी सांस्कृतिक एकता का प्रकटीकरण होता है। वैसे भी भारत के बारे में हम कहते हैं कि यह ऋषियों का बनाया हुआ राष्ट्र है। इसलिए इसका अलग ही महत्व है। यह

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल में 10 वर्ष मास कम्युनिकेशन विभाग के अध्यक्ष, विश्वविद्यालय के कुलपति और कुलसचिव भी रहे। भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली (आईआईएमसी) के पूर्व महानिदेशक हैं। 'मीडिया विमर्श' पत्रिका के सलाहकार संपादक।

सामान्य देश या राज्य नहीं है। यह राष्ट्र है। जिसकी एकता का आधार संस्कृति है। बिना किसी आमंत्रण के दुनिया भर से लोग यहां अपनी-अपनी व्यवस्थाओं से यहां आते हैं और आनंद का अनुभव करते हैं। कुंभ में होना सौभाग्यशाली होना है। हर हिंदु की यह कामना होती है कि वह चारों धाम की यात्रा और कुंभ में एक बार स्नान अवश्य करे।

पुराण कथा तो कहती है कि समुद्र मंथन से अमृत कलश निकला तो दोनों पक्ष भिड़ गए। देवताओं और राक्षसों की इस जंग में अमृत जहां-जहां छलका, वे सारे स्थान ही कुंभ के केंद्र या आयोजन स्थल बने। अमृत की ये बूंदें आज तक हमारे जीवन को अध्यात्म और समरसता के भाव से भर रही हैं। वे हमें जोड़ रही हैं उस परंपरा से, उस संस्कृति से जो नितनूतन और चिरपुरातन है। यह संवाद का केंद्र भी है। अपने समाज और उसके वर्तमान के प्रश्नों से जूझना और आनेवाले समय के लिए पाथेय प्राप्त करना भी कुंभ में आने वाले समाज का ध्येय रहता है। जाति, पंथ, भाषा, क्षेत्र के भेद से परे हटकर समाज चिंतन के लिए यहां हम एकत्र होते हैं। सारा कुछ भूलकर,सारा कुछ छोड़कर। समाज को समरस और आत्मीय बनाने के सूत्र यहां मिलते हैं। परंपरा से जुड़कर हम सीखते हैं और संदेश अपने गांव, नगरों, वनों और पर्वतों तक ले जाते हैं। कुंभ किसका है तो इसका जवाब है यह सबका है। समाज के हर वर्ग की यहां उपस्थिति उसे पूर्ण बनाती है। यहां पहचानें विलीन हो जाती हैं सब हिंदु या भारतीय हो जाते हैं। "जाति पांति पूछे नहीं कोई हरि को भजै सो हरि का होई।" का भाव यहां चरितार्थ हो जाता है।

कुंभ संचार व संवाद का सबसे बड़ा केंद्र है। यहां ज्ञान सरिता बहती रहती है। प्रवचन, उपदेश, शास्त्रार्थ, प्रदर्शन कलाओं और संवाद के माध्यम से आम लोगों को संदेश दिया जाता है। कुंभ की उपयोगिता इस अर्थ में विलक्षण है कि यहां संचार और संवाद की अनंत धाराएं बहती हैं। परंपरा से यहां संवाद हो रहा है। इसका उद्देश्य है- मानवता के समक्ष उपस्थित चुनौतियों और संकटों के हल खोजना। ऋषियों और गुरुजनों से मिले पाथेय को नीचे तक पहुंचाना ताकि हमारा समाज अपने समय के संकटों के ठोस और वाजिब हल पा सके। संवाद की यह चेतना इतनी गहरी है कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक कुंभ का संदेश सदियों से बिना विकृत हुए यथारूप पहुंचता था। आज संचार साधनों की बहुलता में संदेश का उसी रूप में पहुंचना कठिन होता है। या तो संदेश की पहुंच में समस्या होती है, या उसके अर्थ बदल जाते हैं और उनकी पवित्रता नष्ट हो जाती है। किंतु प्राचीन समय की संवाद और संचार व्यवस्था इतनी ताकतवर थी कि समाज के सामने कुंभ के संदेश और वहां मिला पाथेय यथारूप पहुंचता था। इस तरह कुंभ हमारे सांस्कृतिक राष्ट्र की समाज व्यवस्था का एक अनिवार्य अंग हैं, जिसके माध्यम से राष्ट्र अपने संकटों के समाधान खोजता रहा है। इन्हीं रास्तों से गुजरकर हम यहां तक पहुंचे हैं।

कुंभ में आने वाले लोगों को देखिए तो भारत के प्रति आस्था बढ़ जाती है। कुंभ में देश के सुदूर प्रांतों, गांवों, वनों और पहाड़ों से लोग बहुत संघर्ष करके अपनी तीन-तीन पीढ़ियों के साथ पहुंचते हैं। बिना आरक्षण ट्रेनों, बसों और विविध साधनों से पहुंचने वाले यह लोग भारत की आत्मा को खोजते हुए यहां आते हैं। साधनों की अनुपलब्धता भी उनके लिए बाधा नहीं है। वरिष्ठ नागरिकों की भारी संख्या से लेकर बच्चों की भी यहां उपस्थिति होती है। एक साथ कई पीढ़ियां अपने देश के सांस्कृतिक वैभव से परिचित होती हैं। कुंभ की महिमा बहुत है। हमारे शास्त्र इसके बारे में बहुत व्यापक वर्णन करते हैं। देश में होते रहे आक्रमणों, विदेशी शासकों की उपस्थिति के नकारात्मक प्रभावों के बाद भी यह परंपरा जारी रही और फलती-फूलती रही। परंपरा को बनते हुए देखना और संस्कृति की तरह उसका मनों में पैठ जाना भारत के लोकमानस की विशेषता रही है। भारत का सांस्कृतिक अवचेतन इन्हीं आयोजनों और लोकपर्वों से निर्मित हुआ है। इन्हीं ने भारत के मन को इतना विशाल, सरोकारी और सर्वजनहिताय बनाया है। भारत परंपरा गुणधर्मी समाज रहा है जिसने विस्तार के बजाए गुणता पर जोर दिया है। मनुष्य निर्माण की एक पूरी यात्रा हमारे समाज की स्वविकसित प्रणाली है। जहां कर्म ही उसका धर्म है और प्राण है। इसी प्राण से उर्जा लेकर हमारे ऋषि राष्ट्र की 'सांस्कृतिक चिति' की निर्मिति करते रहे हैं। इस तरह हमारे सांस्कृतिक प्रवाह में कुंभ मेला केंद्रीय आध्यात्मिक भूमिका निभाता और हमारे होने व जीने में सहायक है। ज्ञान परंपरा का संबल, धर्म की वास्तविक समझ और दान की महत्ता का विस्तार हमें मनुष्य बनने में मदद करते हैं। कुंभ इन्हीं सरोकारों से संपूर्ण होता है। जहां आत्मत्याग, भारतबोध, धर्म की धारणा को कल्पवास के माध्यम से जीवन में उतरता हुआ हम देख पाते हैं। यहां बड़ा, छोटा और ऊंचा आदमी अपने गुणों से होता है, अन्य कारणों से नहीं। समझ और विवेक के तल पर हमारा होना हमें सार्थक बनाना है। इसलिए हम लंबे नहीं सार्थक जीवन की कामना करते हैं और वानप्रस्थ और सन्यास हमारे जीवन के उच्चादर्श बन जाते हैं। जीवन में रहते हुए मुक्ति की कामना और परोपकार का भाव ही सही मायने में भारत के मनुष्य के अवचेतन में समाया हुआ है। वह छोड़कर मुक्त होता है। भगवान राम, महावीर, गौतम बुद्ध सब राजपुत्र हैं, जो राज छोड़कर अपनी मुक्ति की राह बनाते हैं। तो राज करते हुए भी कृष्ण योगेश्वर और जनक विदेह हो जाते हैं। भरत का त्याग तो अप्रतिम ही है, वे राजा तो हैं किंतु सिंहासन पर नहीं हैं। भारत ऐसी ही विभूतियों के त्याग और प्रेरक कथाओं से बना है। कुंभ में नायकों का स्मरण, निरंतर होने वाली ज्ञान चर्चाएं भारत का मन बनाती हैं। वे बताती हैं कि हमारा भारत बने रहना क्यों जरूरी है। सच यही है कि कुंभ का मन ही भारत का मन है। जब तक कुंभ है, भारत बना रहेगा। भारतबोध की प्रक्रिया जारी रहेगी। अमृत जहां गिरा वहां कुंभ का होना इस बात की गवाही है कि जहां अमृत छलकेगा भारतपुत्र वहां जरूर होंगें। ज्ञान का अमृतपान करने, परंपरा का अवगाहन करने, भारत को जानने के लिए, खुद को पहचानने के लिए।

विशेष आलेख

ब्रह्मांड की गति और सृष्टि के अंतर्संबंध

कुंभ मेला, कथा और स्नान

सनातन के खगोल विज्ञान की प्राचीनता का प्रमाण है कुंभ

अभिषेक चौधरी

(लेखक सनातन संस्कृति के अध्येता, राष्ट्रवादी चिंतक, कॉलमिस्ट और हावर्ड केनेडी स्कूल में मिड टर्म कैरियर स्टूडेंट हैं।)

'कुम्भ' का शाब्दिक अर्थ घट, घड़ा, सुराही, या ऐसा ही कोष है। यह वैदिक ग्रन्थों में पाया जाता है। इसका अर्थ, अक्सर पानी के विषय में या पौराणिक कथाओं में अमरता (अमृत) के बारे में बताया जाता है। मेला शब्द का अर्थ है, किसी एक स्थान पर मिलना, एक साथ चलना, सभा में या फिर विशेष रूप से सामुदायिक उत्सव में उपस्थित होना। यह शब्द ऋग्वेद और अन्य प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों में भी पाया जाता है। इस प्रकार, कुम्भ मेले का अर्थ है "अमरत्व का मेला" है।

कुंभ स्नान और मानव समागम का यह आयोजन जितना सांस्कृतिक है उससे भी अधिक खगोल विज्ञान और सृष्टि के अंतर्संबंध को भी स्थापित करता है। यह कई मायनों में अद्भुत है। यह सनातन परंपरा के महाविज्ञान का प्रमाण है। जब आधुनिक दुनिया सृष्टि और ब्रह्माण्ड के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी, सनातन संस्कृति के ग्रन्थ और विद्वान ब्रह्मांड की एक एक गति से परिचित थे। कुंभ के आयोजन की स्थिति और तिथि पूर्ण रूप से ब्रह्मांड की गति के साथ जुड़ी है। इसका निर्धारण भी सनातन की लाखों वर्ष पुरानी खगोलीय गणनाओं के आधार पर ही होता है।

खगोलीय गणनाएं

खगोल गणनाओं के अनुसार यह मेला मकर संक्रान्ति के दिन प्रारम्भ होता है, जब सूर्य और चन्द्रमा, वृश्चिक राशि में और वृहस्पति, मेष राशि में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रान्ति के होने वाले इस योग को "कुम्भ स्नान-योग" कहते हैं और इस दिन को विशेष मंगलकारी माना जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार इस दिन खुलते हैं और इस प्रकार इस दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति सहजता से हो जाती है। यहाँ स्नान करना साक्षात् स्वर्ग दर्शन माना जाता है।

कुम्भ मेला सनातन हिन्दू वैदिक संस्कृति और अध्यात्म परंपरा का महत्वपूर्ण पर्व है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु कुम्भ पर्व स्थल प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में एकत्र होते हैं और नदी में स्नान करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर प्रति 12वें वर्ष तथा प्रयाग में दो कुम्भ पर्वों के बीच छह वर्ष के अन्तराल में अर्द्ध कुंभ भी होता है। वर्ष 2013 का कुम्भ प्रयाग में हुआ था। फिर 2019 में प्रयाग में अर्ध कुंभ मेले का आयोजन हुआ था। यह पूर्व ही बताया जा चुका है कि 'कुम्भ' का शाब्दिक अर्थ घट, घड़ा, सुराही, या ऐसा ही कोष है। यह वैदिक ग्रन्थों में पाया जाता है। इसका अर्थ, अक्सर पानी के विषय में या पौराणिक कथाओं में अमरता (अमृत) के बारे में बताया जाता है। मेला शब्द का अर्थ है, किसी एक स्थान पर मिलना, एक साथ चलना, सभा में या फिर विशेष रूप से सामुदायिक उत्सव में उपस्थित होना। यह शब्द ऋग्वेद और अन्य प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों में भी पाया जाता है। इस प्रकार, कुम्भ मेले का अर्थ है "अमरत्व का मेला" है।

ज्योतिषीय महत्व

कुम्भ का असाधारण महत्व बृहस्पति के कुम्भ राशि में प्रवेश तथा सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के साथ जुड़ा है। ग्रहों की स्थिति हरिद्वार से बहती गंगा के किनारे पर स्थित हर की पौड़ी स्थान पर गंगा जल को औषधिकृत करती है तथा उन दिनों यह अमृतमय हो जाती है। यही कारण है कि अपनी अन्तरात्मा की शुद्धि हेतु पवित्र स्नान करने लाखों श्रद्धालु यहाँ आते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से अर्ध कुम्भ के काल में ग्रहों की स्थिति एकाग्रता तथा ध्यान साधना के लिए उत्कृष्ट होती है।

सागर मन्थन

कुम्भ पर्व के आयोजन को लेकर दो-तीन पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं जिनमें से सर्वाधिक मान्य कथा देव-दानवों द्वारा समुद्र मन्थन से प्राप्त अमृत कुम्भ से अमृत बूँदें गिरने को लेकर है। इस कथा के अनुसार महर्षि दुर्वासा के शाप के कारण जब इन्द्र और अन्य देवता कमजोर हो गए तो दैत्यों ने देवताओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया। तब सब देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास गए और उन्हे सारा वृतान्त सुनाया। तब भगवान विष्णु ने उन्हे दैत्यों के साथ मिलकर क्षीरसागर का मन्थन करके अमृत निकालने की सलाह दी। भगवान विष्णु के ऐसा कहने पर सम्पूर्ण देवता दैत्यों के साथ सन्धि करके अमृत निकालने के यत्न में लग गए। अमृत कुम्भ के निकलते ही देवताओं के इशारे से इन्द्रपुत्र जयन्त अमृत-कलश को लेकर आकाश में उड़ गया। उसके बाद दैत्यगुरु शुक्राचार्य के आदेशानुसार दैत्यों ने अमृत को वापस लेने के लिए जयन्त का पीछा किया और घोर परिश्रम के बाद उन्होंने बीच रास्ते में ही जयन्त को पकड़ा। तत्पश्चात अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देव-दानवों में बारह दिन तक अविराम युद्ध होता रहा।

इस परस्पर मारकाट के दौरान पृथ्वी के चार स्थानों (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक) पर कलश से अमृत बूँदें गिरी थीं। उस समय चन्द्रमा ने घट से प्रस्त्रवण होने से, सूर्य ने घट फूटने से, गुरु ने दैत्यों के अपहरण से एवं शनि ने देवेन्द्र के भय से घट की रक्षा की। कलह शान्त करने के लिए भगवान ने मोहिनी रूप धारण कर यथाधिकार सबको अमृत बाँटकर पिला दिया। इस प्रकार देव-दानव युद्ध का अन्त किया गया।

अमृत के लिए संघर्ष

अमृत प्राप्ति के लिए देव-दानवों में परस्पर बारह दिन तक निरन्तर युद्ध हुआ था। देवताओं के बारह दिन मनुष्यों के बारह वर्ष के तुल्य होते हैं। अतएव कुम्भ भी बारह होते हैं। उनमें से चार कुम्भ पृथ्वी पर होते हैं और शेष आठ कुम्भ देवलोक में होते हैं, जिन्हें देवगण ही प्राप्त कर सकते हैं, मनुष्यों की वहाँ पहुँच नहीं है। जिस समय में चन्द्रादिकों ने कलश की रक्षा की थी, उस समय की वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले चन्द्र-सूर्यादिक ग्रह जब आते हैं, उस समय कुम्भ का योग होता है अर्थात जिस वर्ष, जिस राशि पर सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति का संयोग होता है, उसी वर्ष, उसी राशि के योग में, जहाँ-जहाँ अमृत बूँद गिरी थी, वहाँ-वहाँ कुम्भ पर्व होता है। मानव मिलन का यह विश्व का सबसे बड़ा आयोजन होता है।

कुंभ में स्नान के विशेष दिन

मकर संक्रान्ति से कुंभ की औपचारिक शुरुआत होती है। इसके बाद, पौष पूर्णिमा, एकादशी , मौनी अमावस्या, वसन्त पंचमी, रथ सप्तमी, माघी पूर्णिमा, भीष्म एकादशी और महाशिवरात्रि के विशेष स्नान होते हैं।

कुम्भ की प्राचीनता

तीर्थ परम्परा में कुम्भ एक सर्वाधिक पवित्र आयोजन है। करोड़ों महिलाएँ, पुरुष, आध्यात्मिक साधकगण और पर्यटक आस्था एवं विश्वास की दृष्टि से शामिल होते हैं। यह विद्वानों के लिये शोध का विषय है कि कब कुम्भ के बारे में जनश्रुति आरम्भ हुई थी और कब इसने तीर्थयात्रियों को आकर्षित करना आरम्भ किया। किन्तु, यह एक स्थापित सत्य है कि प्रयाग कुम्भ सनातन परम्परा का केन्द्र बिन्दु रहा है और ऐसे विस्तृत पटल पर एक घटना एक दिन में घटित नहीं होती है बल्कि धीरे-धीरे एक लम्बी कालावधि में विकसित होती है।

भारत सदैव से सनातन परम्परा का वाहक रहा है। सनातन परम्परा ही है जिसने भारतीय मनीषियों को ही नहीं बल्कि जो भी यहाँ आया उसे उसके प्रश्नों का समुचित उत्तर मिला। ऐसा कोई इतिहास नहीं मिलता कि सनातन परम्परा में किसी को सवाल पूछने या प्रश्न खड़ा करने के लिए जान से मार दिया गया हो। सत्य की ख़ोज ही सनातन का मूल रहा है।

यहाँ ऋषि-मुनि, साधु-संत और गृहस्थ भी धर्मलाभ के लिए, आत्मिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए हज़ारों-लाखों की सँख्या में पवित्र तीर्थों में निष्पाप होने के लिए जाते रहे हैं। ऐसी स्थिति में मुक्तिप्रद कुम्भयोग में अनगिनत लोगों का समावेश हो, तो ये भारतीयों के लिए कोई अकल्पनीय घटना नहीं है।

कुम्भ मेला कितना प्राचीन है, इस बारे में कोई निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता। कौन इसके प्रथम उद्घोषक थे कौन आयोजक? इसका पता लगाना भी कठिन है। अमृत कुम्भ के बारे में शास्त्रों में विस्तृत चर्चा है। संभवतः सनातन धर्म जितना पुराना है, उतना ही प्राचीन कुम्भ मेला भी है।

फिर भी इतिहास के आईने में अगर देंखे तो कुम्भ मेला का मूल को 8वीं सदी के महान दार्शनिक शंकर से जुड़ती है। जिन्होंने वाद विवाद एवं विवेचना हेतु विद्वान सन्यासीगण की नियमित सभा परम्परा की शुरुआत की थी। आदिगुरु शंकर कुम्भ मेला के संगठक भी थे।

कहते हैं, बौद्ध धर्म के विस्तृत फैलाव के दौर में जब देश में अनाचार, व्यभिचार, कदाचार तेजी से फैलने लगा। जब वैदिक धर्म-परम्परा को नष्ट करने की पुरज़ोर कोशिश होने लगी तब वैदिक धर्म के मूर्त विग्रह महान प्रणेता श्रीमत शंकराचार्य ने अपनी अपूर्व प्रतिभा तथा आध्यात्मिक शक्ति के बल पर समस्त भारत में वेदांत की विजय पताका फहराई।

उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम, भारत के चारों दिशाओं में चार मठ स्थापित कर उन्होंने संन्यासी-संघ का उद्घाटन किया। जो आज शंकराचार्य पीठ के नाम से प्रसिद्द है। शंकराचार्य ने ही सनातन धर्म के महात्म्य की पुनर्स्थापना के लिए लोगों को उपस्थित हो शास्त्र चर्चा का आदेश दिया। उसी समय से ही वर्तमान कुम्भ मेला की प्रतिष्ठा मानी जाती है। आगे चलकर धीरे-धीरे सभी संप्रदायों का समागम होकर यह महोत्सव महिमान्वित होकर वर्तमान समय में विराट रूप धारण कर चुका है। कहा गया है, साधु-महापुरुषों के पदार्पण से ही तीर्थ पवित्रता तथा अपने नाम की योग्यता को प्राप्त करता है। लाखों-करोड़ों की संख्या में साधु-संन्यासी जहाँ उपस्थित होते हैं। वहाँ आकाश-पाताल, जल-वायु, धूलकण से लेकर सभी पञ्च महाभूत तक मुक्तिप्रद और धर्म भाववर्धक बन जाते हैं।

साधु-सम्मेलन ही कुम्भ मेला की जीवनी-शक्ति हैं। यहाँ नर-नारियों का जो विशाल समूह आता है, वह सिर्फ़ तीर्थस्थान के निमित्त नहीं आते जितना कि पुन्यात्मा साधु-महात्माओं के दर्शन की लालसा लेकर आते हैं। उनका चरण स्पर्श और आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते हैं। ये जो करोड़ों की संख्या में सर्वत्यागी, तपस्वी साधु-महात्मा, जो लोग मृत्यु पर जय प्राप्त करने के उपरान्त अमृतत्व की तलाश के व्रती हैं। उनका विराट समावेश जहाँ भी है। वहीं तो अमृत है। कुम्भ स्वयं अमृतवर्षी है। पौराणिक कहानी का रहस्यमय रूपक आज इसी प्रकार वास्तविकता ग्रहण कर चुका है।

कलशस्य मुखे विष्णु कण्ठे रुद्र समाश्रितः।
मूलेतत्रस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्थिताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथवर्ण।।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कुम्भं तु समाश्रिताः।

सम्राट हर्षवर्धन

ऐतिहासिक साक्ष्य कालनिर्धारण के रूप में इस बात के प्रमाण हैं कि राजा हर्षवर्धन का शासन काल (664 ईसा पूर्व) में कुम्भ मेला को विभिन्न भौगोलिक स्थितियों के मध्य व्यापक मान्यता एवं प्रसिद्धि प्राप्त हो गयी थी। प्रसिद्ध यात्री व्हेनसांग ने अपनी यात्रा वृत्तांत में कुम्भ मेला की महानता का उल्लेख किया है। व्हेनसांग का उल्लेख राजा हर्षवर्धन की दानवीरता का सार संक्षेपण भी करती है।

राजा हर्ष प्रयाग की रेत पर एक महान पंचवर्षीय सम्मेलन का आयोजन करते थे, जहाँ पवित्र नदियों का संगम होता है और अपनी धन-सम्पत्ति को सभी वर्गों के गरीब एवं धार्मिक लोगों में बाँट देते थे।

प्रयागराज में कुम्भ मेला को ज्ञान एवं प्रकाश के श्रोत के रूप में सभी कुम्भ पर्वों में व्यापक रूप से सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। सूर्य जो ज्ञान का प्रतीक है, इस पर्व में उनकी अपार महिमा है।

कुम्भ का तात्विक अर्थ

कुम्भ सृष्टि में सभी संस्कृतियों का संगम है। कुम्भ आध्यत्मिक चेतना मानवता, नदियों, वनों एवं ऋषि संस्कृति का प्रवाह है। कुम्भ जीवन की गतिशीलता एवं मानव जीवन का संयोजन है। कुम्भ ऊर्जा का श्रोत एवं आत्मप्रकाश का मार्ग है।

उपलब्ध इतिहास

- 10,000 ईसापूर्व (ईपू) - इतिहासकार एस बी राय ने अनुष्ठानिक नदी स्नान को स्वसिद्ध किया।
- 600 ईपू - बौद्ध लेखों में नदी मेलों की उपस्थिति।
- 400 ईपू - सम्राट चन्द्रगुप्त के दरबार में यूनानी दूत ने एक मेले को प्रतिवेदित किया।
- ईपू 300 ईस्वी - रॉय मानते हैं कि मेले के वर्तमान स्वरूप ने इसी काल में स्वरूप लिया था। विभिन्न पुराणों और अन्य प्राचीन मौखिक परम्पराओं पर आधारित पाठों में पृथ्वी पर चार विभिन्न स्थानों पर अमृत गिरने का उल्लेख हुआ है।

  सर्व प्रथम आगम अखाड़े की स्थापना हुई कालान्तर मे विखण्डन होकर अन्य अखाड़े बने -
- 547- अभान नामक सबसे प्रारम्भिक अखाड़े का लिखित प्रतिवेदन इसी समय का है।
- 600- चीनी यात्री ह्यान-सेंग ने प्रयाग (वर्तमान प्रयागराज) पर सम्राट हर्ष द्वारा आयोजित कुम्भ में स्नान किया।
- 904- निरंजनी अखाड़े का गठन।
- 1146- जूना अखाड़े का गठन।
- 1300- कानफटा योगी चरमपन्थी साधु राजस्थान सेना में कार्यरत।
- 1398- तैमूर, हिन्दुओं के प्रति सुल्तान की सहिष्णुता के दण्ड स्वरूप दिल्ली को ध्वस्त करता है और फिर हरिद्वार मेले की ओर कूच करता है और हजारों श्रद्धालुओं का नरसंहार करता है। विस्तार से - 1398 हरिद्वार महाकुम्भ नरसंहार
- 1565- मधुसूदन सरस्वती द्वारा दसनामी व्यवस्था की लड़ाका इकाइयों का गठन।
- 1678- प्रणामी सम्प्रदायके प्रवर्तक, महामति श्री प्राणनाथजीको विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक घोषित।
- 1684- फ़्रांसीसी यात्री तवेर्निए नें भारत में 12 लाख हिन्दू साधुओं के होने का अनुमान लगाया।
- 1690- नासिक में शैव और वैष्णव साम्प्रदायों में संघर्ष; 60,000 मरे।
- 1760- शैवों और वैष्णवों के बीच हरिद्वार मेलें में संघर्ष; 1,800 मरे।
- 1780- ब्रिटिशों द्वारा मठवासी समूहों के शाही स्नान के लिए व्यवस्था की स्थापना।
- 1820- हरिद्वार मेले में हुई भगदड़ से 430 लोग मारे गए।
- 1906 - ब्रिटिश कलवारी ने साधुओं के बीच मेला में हुई लड़ाई में बीचबचाव किया।
- 1954- चालीस लाख लोगों अर्थात भारत की 1% जनसंख्या ने प्रयागराज में आयोजित कुम्भ में भागीदारी की; भगदड़ में कई सौ लोग मरे।
- 1989- गिनिज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने 6 फरवरी के प्रयाग मेले में 1.5 करोड़ लोगों की उपस्थिति प्रमाणित की, जो उस समय तक किसी एक उद्देश्य के लिए एकत्रित लोगों की सबसे बड़ी भीड़ थी।

1954 में आयोजित कुम्भ का दृश्य

- 1995- प्रयागराज के "अर्धकुम्भ" के दौरान 30 जनवरी के स्नान दिवस को 2 करोड़ लोगों की उपस्थिति।
- 1998- हरिद्वार महाकुम्भ में 5 करोड़ से अधिक श्रद्धालु चार महीनों के दौरान पधारे; 14 अप्रैल के एक दिन में 1 करोड़ लोग उपस्थित।
- 2001- प्रयागराज के मेले में छः सप्ताहों के दौरान 7 करोड़ श्रद्धालु, 24 जनवरी के अकेले दिन 3 करोड़ लोग उपस्थित।
- 2003- नासिक मेले में मुख्य स्नान दिवस पर 60 लाख लोग उपस्थित।
- 2004- उज्जैन मेला; मुख्य दिवस 5 अप्रैल, 19 अप्रैल, 22 अप्रैल, 24 अप्रैल और 4 मई।
- 2007- प्रयागराज में अर्धकुम्भ। पवित्र नगरी प्रयागराज में अर्धकुम्भ का आयोजन 3 जनवरी 2007 से 26 फरवरी 2007 तक हुआ।
- 2010- हरिद्वार में महाकुम्भ प्रारम्भ। 14 जनवरी 2010 से 28 अप्रैल
- 2010 तक आयोजित किया हुआ।
- 2013 - प्रयागराज का कुम्भ 14 जनवरी से 10 मार्च 2013 के बीच आयोजित किया गया। यह कुल 55 दिनों के लिए था, इस दौरान प्रयागराज सर्वाधिक लोकसंख्या वाला शहर बन गया। 5 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में 8 करोड़ लोगों का उपस्थित होना विश्व की सबसे अद्भुत घटना है।
- 2015- नासिक और त्रम्बकेश्वर में एक साथ जुलाई 14,2015 को प्रातः 6:16 पर वर्ष 2015 का कुम्भ मेला प्रारम्भ हुआ और सितम्बर 25,
- 2015 को कुम्भ मेला समाप्त हो गया।
- 2016- उज्जैन में 22 अप्रैल से आरम्भ
- 2019- प्रयागराज में अर्धकुम्भ
- 2021- हरिद्वार में अर्कुद्ध कुम्भ लगा।
- 2025-13 जनवरी से प्रयागराज में महाकुंभ का मेला शुरू होगा।

विशेष आलेख

KUMBH MELA

A Historical Perspective

Neel Mani Lal

Kumbh Mela attracts masses from all sections of Hindu religious life, ranging from sadhus who practice the most severe physical disciplines, to hermits who leave their isolation only for these pilgrimages, and even modern gurus employing the latest technology. The religious organizations represented range from social welfare societies to spiritual leaders and preachers. Vast crowds of disciples, devotees, and spectators join the individual ascetics and organizations. The naga akhadas, whose members historically served as guards of the Hindu religion, often claim the holiest spots at each Kumbh Mela's most auspicious moments.

According to Hindu mythology, Vishnu disguised himself as Mohini to prevent demons from obtaining the amrit during the churning of the ocean. However, some drops of this nectar fell on earth during their struggle. These four cities are believed to be blessed with these drops. It is also believed that taking a dip in these holy rivers during Kumbh Mela can cleanse one's soul and lead them toward moksha.

The historical legacy of Kumbh Mela connects its modern attendees with an ancient tradition that has remained unchanged in essence. For millions, attending the Kumbh Mela is not merely a pilgrimage but a return to the roots of Sanatan spirituality, symbolizing unity, purification, and the journey toward moksha—the ultimate liberation. The rich history of Kumbh Mela enhances its meaning for participants, offering a spiritual experience deeply intertwined with India's cultural heritage.

Kumbh Mela attracts masses from all sections of Hindu religious life, ranging from sadhus who practice the most severe physical disciplines, to hermits who leave their isolation only for these pilgrimages, and even modern gurus employing the latest technology. The religious organizations represented range from social welfare societies to spiritual leaders and preachers. Vast crowds of disciples, devotees, and spectators join the individual ascetics and organizations. The naga akhadas, whose members historically served as guards of the Hindu religion, often claim the holiest spots at each Kumbh Mela's most auspicious moments.

Kumbh Mela is undoubtedly the largest religious gathering in the world. This unique and extraordinary congregation of millions of people, saints, sages, and holy leaders is considered timeless. The mythological origins of the Kumbh Mela are described in our ancient sacred texts. The 'sagar manthan' (ocean-churning) story, which appears in a number

Senior Journalist and writer.

of Sanskrit texts including the Mahabbarata, Ramayana and several puranas, is popularly believed to provide the textual basis of the mela's origins. It tells of the battle between the gods and the demons for the nectar of life (amrit), which was produced from the churning of the milk ocean and was placed into a pot (kumbh).

The coveted kumbh was carried over India by Dhanvantari, the physician of the gods, who, en route to Paradise, stopped in Prayag, Hardwar, Ujjain, and Nasik to rest, giving the mela its four venues. In other tellings, Garuda, or Indra in the form of Mohini, lets the kumbh fall to the ground, "thus sprinkling the amrita at many places on the earth" The word kumbh refers not only to the pot of nectar spilt on its way to the heavens but also to the astrological sign Aquarius, which also represents the water carrier in Western astrology.

Kumbh Mela is the only event in the world that is held regularly on fixed dates for thousands of years. The event itself is believed to have roots in the Vedic period.

The earliest historical evidence of Kumbh Mela dates back to at least the 4th to 6th centuries CE, during the Gupta Empire. The Gupta period is considered a golden age for Hindu culture and religion. Ancient texts and records mention large gatherings at sacred rivers for bathing and rituals, which gradually evolved into the large-scale Kumbh Mela events. The first recorded mention of Kumbh Mela as a grand religious gathering comes from the 7th century, during the travels of the Chinese Buddhist monk Xuanzang, who traveled across India and noted large gatherings at Haridwar.

Kumbh Mela began to take a more organized form in the 8th century, largely under the influence of the great Hindu philosopher Adi Shankaracharya.

Mythology Behind Kumbh Mela

According to Hindu mythology, Lord Vishnu disguised himself as Mohini to prevent demons from obtaining the amrit during the churning of

the ocean. However, some drops of this nectar fell on earth during their struggle. These four cities are believed to be blessed with these drops. It is also believed that taking a dip in these holy rivers during Kumbh Mela can cleanse one's soul and lead them toward moksha. It is said that bathing during the Prayagraj Kumbh, at the confluence of the Ganga, Yamuna, and Saraswati rivers, washes away all sins.

Timelines and Evolution

Vedic Period: The foundations of ritual bathing and pilgrimage at sacred rivers were laid during the Vedic period.

Early Common Era: References to large gatherings for religious purposes near holy rivers begin to appear in texts, setting the stage for Kumbh Mela.

7th–8th Century : Kumbh Mela began to take a more structured form, with recognized venues and specific rituals.

Medieval Period : The festival grew in prominence, especially under the influence of various dynasties. The Mela expanded in size, and more people began attending. Mughal emperor Akbar even attended the Kumbh Mela in the 16th century, highlighting its significance. The festival flourished under the patronage of medieval rulers, who recognized its cultural and spiritual importance. During this period, the fair saw increased participation from Bhakti saints and devotees from various sects, leading to the establishment of different akharas (religious orders), which became integral to Kumbh Mela's traditions. The sadhus, ascetics, and yogis who attended were seen as embodiments of spiritual knowledge and practice, drawing even greater numbers to the event.

Under dynasties like the Mauryas and Guptas, the Kumbh Mela gained royal support, enabling larger and more organized gatherings. This period also marked the rise of pilgrimage culture in India, with Kumbh Mela at the forefront, symbolizing unity and devotion.

- **British Colonial Period :** The British colonial authorities began regulating and observing the festival due to its scale and the large number of people it attracted. The event was formally organized with better infrastructure and logistics, though its religious core remained intact. Kumbh Mela is mentioned in British colonial records. In 1812, the archives of the British East India Company noted a "great" congregation of people at the "mela" that had not occurred in 28 years. Historians of religion have observed that the British conflated another ancient fair, the Magha Mela, with Kumbh Mela. At the time, the East India Company imposed a "pilgrim tax" on participants, though it did not provide infrastructure or amenities.

Until 1801, the Kumbh Mela was managed by sects or akharas, who skillfully handled the logistical challenges of the massive pilgrimage and festival. They organized accommodations, food, policing, and the resolution of disputes. They also instituted and collected pilgrim taxes.

By 1858, the British crown had taken control of India and sought to regulate the logistics and rules for Kumbh Mela, particularly for pilgrims' movements at the site, to prevent stampedes and improve sanitary conditions. Legal agreements over the bathing order ensured an end to violence between the akharas. The British allowed and instituted an order for ascetics from 14 akharas to bathe on the three auspicious bathing days of the Mela. The first British reference to Kumbh Mela appeared in an 1868 report, which noted the need for tighter sanitation controls at the "Coomb fair" scheduled for January 1870.

Between 1892 and 1908, during major famines, cholera, and plague epidemics in British India, the colonial government controlled entry to the

Kumbh, citing hygiene concerns. Pilgrim numbers fell to about 300,000, as reported by the Imperial Gazetteer. In 1941, the British government banned the sale of tickets amid rumors that Japan might bomb Allahabad, where the Kumbh was slated to take place.

Post-Independence - Present)

After India gained independence, the Kumbh Mela continued to grow in size and importance, becoming a global phenomenon. It is now recognized as one of the largest religious gatherings in the world. Today, Kumbh Mela is not just a religious event but also a cultural and social phenomenon. It was inscribed on UNESCO's Representative List of Intangible Cultural Heritage of Humanity in 2017, recognizing its global significance. The festival's modern form blends ancient traditions with contemporary organization. Governments invest heavily in infrastructure, health services, and security to accommodate millions of pilgrims. Innovations like digital platforms for navigation, online registration, and live broadcasts have further enhanced the Mela's accessibility and appeal.

An Experience of a Lifetime

Kumbh Mela is unique not only for its scale but also for its inclusivity. People from all walks of life, irrespective of caste, creed, or nationality, participate with equal devotion. The sacred baths at the confluence of the rivers, the vibrant processions, the spiritual discourses, and the cultural exhibitions create an atmosphere of unity and reverence. For many, attending Kumbh Mela is a once-in-a-lifetime experience, offering spiritual solace and a sense of belonging to a larger community.

Kalpvas is one of the many unique rituals associated with Kumbh mela. The word "Kalpavas" comes from two Sanskrit words: "Kalpa," meaning a long period of time and "Vas" which means dwelling. During Kalpavas, devotees live a simple life as they give up comforts and dedicating

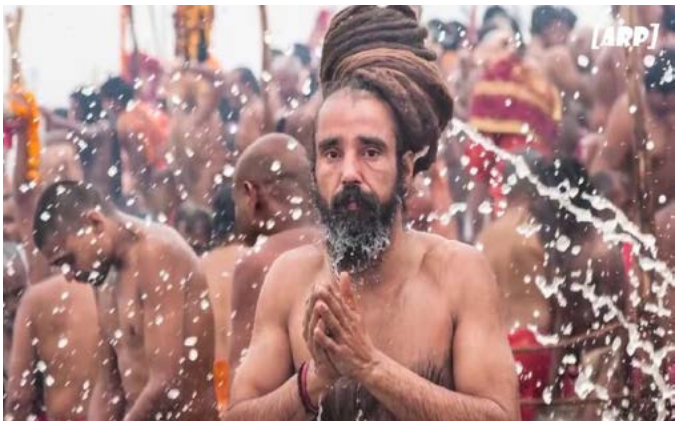

themselves to practices like meditation, prayers and reciting sacred texts. They stay at tents on the banks of Triveni and live a vesy simple life during this period. Kalpvasi also take part in Vedic fire rituals, known as Yajnas and Homas, to seek divine blessings and attend Satsangs. Kalpavas is a lesser-known ritual but a special part of the Maha Kumbh Mela which provides pilgrims a chance to focus on spiritual growth, simplicity and discipline. Kalpvasi sepnd

The history of Kumbh Mela is a testament to the enduring power of faith and the rich cultural tapestry of India. From its mythical beginnings to its modern-day grandeur, the festival continues to inspire and attract millions. It is more than just a spiritual gathering—it is a celebration of humanity's eternal quest for meaning and connection. This peaceful, mammoth congregation of humanity, shaped by mythology, astrology, and society over the course of history, is the largest religious gathering of its kind in the world. Rooted in Hinduism's ancient theological texts, the bathing ritual has survived wars, revolutions, and famines. To say the least, Kumbh Mela is an experience of lifetime with numerous teachings and learning just by visiting and spending time at this great event.

Special Article

Cosmic Beauty, attraction, emotion, love, devotion and KUMBH at Triveni Sangam

Bharateeya Darshan find all its obsevations, based on cosmic arrangements. If you want to understand this, take an exampale of Pryagraj Kumbh. It comes after 12 years due to planetary positions of 9 pal-nwtes of our Saurmandal. The movement of every palnete is fixed in universe. On the banks of rivers Ganga, Yamuna and Unseen Saraswati The Kumbh is organised in perticular Dates.

Acharya Sanjay Tiwari

Every creature in this universe can get every feelings and powers, present in this. Human body has all the things, which present in universe. It's character has three basic substances called Rajas, Tamas and Satva. These basic materials are present in every creation of this Srishti. A human being has Body, Mind and Soul.

Creation is full of beauty, love and emotions. Cosmos arrange for all. All the parts of cosmic arrangement are dooing for this every second. All are creating at every moment. This movement is full of pure energy. This energy never beeing destroys. This generate for all creations every moment. This energy is base of the universe. All the parts of universe are working with and along with this only. This arrangement is full of love, beauty, emotions, devotions and joy. Every creature in this universe can get every feelings and powers, present in this. Human body has all the things, which present in universe. It's character has three basic substances called Rajas, Tamas and Satva. These basic materials are present in every creation of this Srishti. A human being has Body, Mind and Soul. Today's science says, every atom has Electron, Proton and Nutron in it. See, the characters of Rajas, Tamas and Satva are just like electron, proton and Nutron. One create, one nourishing and third one destroy every moment. In Greate Sanatan Darshan, all the thoghts are around The Brahma, The Vishnu and The Mahesh. This tri charecter phillosophy is same , in science, in western thoughts and in Greate Bharatiya Darahan also.

Bharateeya Darshan find all its obsevations, based on cosmic arrangements. If you want to understand this, take an exampale of Pryagraj Kumbh. It comes after 12 years due to planetary positions of 9 palnwtes of our Saurmandal. The movement of every palnete is fixed in

universe. On the banks of rivers Ganga, Yamuna and Unseen Saraswati The Kumbh is organised in perticular Dates. You can thik, you have your Body, your Mind and your Soul like ganga, Yamuna and Saraswati. Your all the physical and mental creations are only bounded in three. Your devotion, love, likings, emotions, creations, imaginations, desires, lust, and every need of livehood are bounded in three segments only. On the earth, all the creations which are gifted by the greate nature are so beautyful that every one can joy and be satisfied. All the rivers, ocians, mauntains, hills, trees, flowers, forests, birds, animals, pets, petals and leves of plants, all the greenaris, desarts, sandy beeches and pur air are freely avilabel for every human. In presence of so much beautyful things, how it can be that one will be unhappy and why? Sadness and madness ,seeing in the society is due to some other things, lust and greedyness of ourself only. Cosmos is providing every things for our love and happiness, how we can receive, this is the point. Now, come to cosmic relationship. It's so beautyful. Cosmic relationship can refer to a romantic relationship that is destined to be powerful and everlasting, or to a love for all living things. It can also refer to a feeling of connection to the universe or to one's own soul.

Cosmic love

A romantic relationship that is destined to be powerful and everlasting. A love for all living things, with the belief that we are one with the universe.

A cosmic connection is a bond you share with another person that encourages personal and spiritual growth. They aim to give you the necessary life lessons you need. You may share a cosmic connection when you're immediately drawn to each other and share similar values, morals, life goals, and perspectives.

Cosmic love is absolutely ruthless and highly indifferent: it teaches its lessons whether you like/dislike them or not. "Cosmic love dwells within the heart of each of us". "Love is the most universal, the most tremendous and the most mysterious of the cosmic forces… the physical structure of the universe is love".

Cosmic emotions

An emotion felt in regard to the universe or the sum of things An emotion that can relate to the Macrocosm (the universe around us) or the Microcosm (the universe of our own souls)

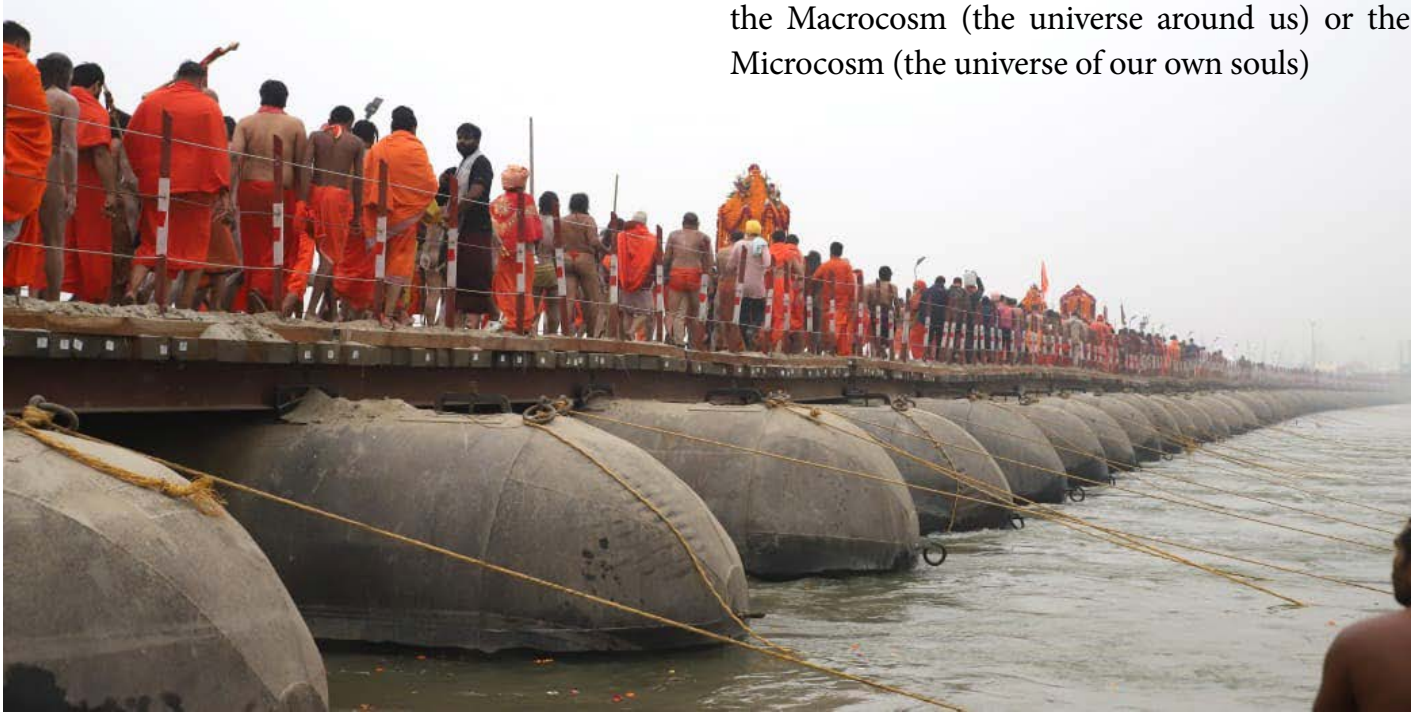

Cosmic marriage

A marriage that is a manifestation of a divine union A marriage that is a microcosm of a cosmic marriage, with unity that penetrates through the physical and spiritual dimensions.

Cosmic bonding

A bond that helps us to welcome, honor, serve, support, and engage our relation.

Nature's Law of attraction

The nature's Law of Attraction is simple, like attracts like. Our thoughts and feelings send out corresponding frequencies to the universe, and in return, we attract similar situations and individuals into our lives. By a cosmic emotion, the phrase is an emotion which is felt in regard to the universe or sum of things, viewed as a cosmos or order. It's have in the mind that the arrangements of cosmos don't can be diturbed any how by a human being. There are two kinds of cosmic emotions. Onene having reference to the Macrocosm or universe surrounding and containing us, the other relating to the Microcosm or universe of our own souls. When we try to put together the most general conceptions that we can form about the great aggregate of events that are always going on. These events strike a sort of balance among the feelings which these events produce in us, and to add to these the feeling of vastness associated with an attempt to represent the whole of existence, then we experience a cosmic emotion of the first kind. This is only the great Love. It may have the character of awe, veneration, resignation, submission. It may be an overpowering stimulus to action, like the effect of the surrounding orchestra upon a musician, or singer, or poet who is thereby caught up and driven to play his proper part with force and exactness of time and tune. If, on the other hand, we consider the totality of our own actions and of the feelings that go with them or spring out of them, if we frame the highest possible generalisation to express the character of those which we call good, and if we contemplate this with the feeling of vastness which belongs to that which concerns all things that all men do, we shall experience a cosmic emotion of the second kind. I propose to consider and compare an ancient and a modern system of cosmic ideas, and to show how the emotions suited to the latter have already in part received poetic expression. See, this is the life, this is livehood, this is love, this is devotion, ecceptance, connection and feeling in every breath. Enjoy this love, devotion and beauty every moment , till the end of life on this planete. This is the great message of Triveni Sangam, Kumbh and in your inner current.

Special Article

Impact of social media youth and Mahakumbh

Sherya Mehta

Our life cultur is ideal for whole Humanity. Now, It's the era of a revolution in information technology and this has very big power in the field of influencing to the society. Especially, youth are the aim. They are easily getting divices and use them for vairious plateforms. These plateforms are although usefull but their use has been seen as negative more. Due to indefinite data field, there are alot of things floating around cyber sky.

> **our Great Sanyasies, Sadhaks, Saints, Mahatmas, Nagaa Sadhu, Mahamandaleshvar, Jagadgurus, Shankarachayas and so many great things, it had seen only a cotrovarsial and valuless in social media. What a nonsence that every utuber and influencer showing about a 'neeli aankhon vaali ladki', 'maala bechane vaali' and an 'Itian baba' in so many of ways.**

(Writer is Thinker, Social reformer and honourable member, Editorial board of Sanskriti Parva)

Our society is very much sensitive and progressive also. Our civilization is so encient. Our life cultur is ideal for whole Humanity. Now, It's the era of a revolution in information technology and this has very big power in the field of influencing to the society. Especially, youth are the aim. They are easily getting divices and use them for vairious plateforms. These plateforms are although usefull but their use has been seen as negative more. Due to indefinite data field, there are alot of things floating around cyber sky. Here, I want to discuss especially, what is going on arrund us. How this impressive and powerfull media create alot of controversies and negative paintings of our greate rituals, culture, spiritual thought process and Sanatan values. In presence of our Great Sanyasies, Sadhaks, Saints, Mahatmas, Nagaa Sadhu, Mahamandaleshvar, Jagadgurus, Shankarachayas and so many great things, it had seen only a cotrovarsial and valuless in social media. What a nonsence that every utuber and influencer showing about a 'neeli aankhon vaali ladki', 'maala bechane vaali' and an 'Itian baba' in so many of ways. They can't see that there are millinans of sanatan devoties, there are rare sadhaks, there are power of bharateeya values, there are millions of point to emerge our Sanatan? This is only a very small example. I mean to say that this powerfull medium should be used to present new sanatan Bharat. It should be used to present the beautyfull arrangements done by central and UP government. This can be used to present ths powerfull values and Sadhana of Sanatan Bharat. This can be paly a positive and healthy role. But it is very painfull to see this in its negative forms. This negativity creates enxity and it seems that all the society is in the sate of a type of psychosomatic mindset.

Every one should know that the Kumbh is not only any religious event. This the event of life. This is the event of whole Humanity, Happiness, love, peace, and to improve our nature and culture. This is pure and positive programme, arranged with the pure positions of planetes. This is the

great event of human civilization on the Earth. This should be shown. This should be presented through powrfull mediums.

Negative Impact

The issue is complicated, however. While there are indicators that it can have a profound risk of harm to teens (more on that below), social media use aimed at making healthy connections with others may actually be beneficial to some people. So many reaseach reports indicates that more research is needed to fully understand the impact of social media. For parents, this means there are no easy answers. So many studies say that Social media can have negative effects on mental health, physical health, and relationships. These effects can be especially prevalent for teens and young adults. Social media can increase feelings of anxiety and depression. Social media can lead to feelings of low self-esteem. Social media can lead to body image issues.Social media can contribute to suicidal thoughts.

Fear of missing out (FOMO)

Social media can lead to feelings of FOMO, which can cause anxiety and depression. Physical health can be affected. Sleep disruption creates serious problems. Social media can lead to poor sleep habits, which can contribute to depression and memory loss. Like wise Nausea, headaches, muscle tension, and tremors can create serious heath issues. Social media can cause anxiety and depression, which can lead to physical symptoms like nausea, headaches, muscle tension, and tremors. Missing out on face-to-face relationships is a serious condition in this. It can lead to missing out on face-to-face relationships. Social media can lead to less time for other activities. Social media can damage your online reputation. Social media can lead to cyberbullying and harassment, which can have serious psychological, physical, mental, and emotional effects.

Positive impact

Social media has many positive impacts also. Today all world seeing and exited to see the Praygaraj Mahakumbh is its example also. Social media allows people to communicate in real time, regardless of distance. It can also help people stay connected with friends and family. Social media can provide educational resources, encourage knowledge sharing, and help students collaborate with each other. Social media can help businesses promote their products and increase brand awareness. It can also help businesses engage with their customers and use feedback to improve their products and services. Social media can help people connect with others who share their interests, experiences, or causes. This can be especially beneficial for people with mental health challenges. Social media can help drive innovation by enabling the open flow of ideas and information. Social media can encourage creativity by providing a platform for people to share their ideas, graphics, videos, and written content. Young people can use social media to build a positive digital footprint by sharing their achievements and talents. Social media can help spread news, educational content, and important facts quickly.

I mean to say that we should be carefull to use social media plateforms every time. We use all these to explore moe positive values in society as well as every where, we shoul reach. The invention is imporatant. More important to use it for humanity and to create and form a beautyfull society.

आस्था, भक्ति, श्रद्धा और विश्वास

डॉ. पुनीत कुमार द्विवेदी

किसी की भी आस्था के मूल में श्रद्धा और विश्वास ही आधार तत्व हैं। श्रद्धा मन का गूढ़ भाव है और विश्वास हृदय का। दोनो का सम्मिलन ही आस्था की नींव रखता है, ठीक वैसे ही जैसे अर्धनारीश्वर स्वरूप में एकाकार शिव को साधक धारण करता है।

आस्था जीवन का अमृत है। आस्था के लिए श्रद्धा और विश्वास का होना जरूरी है। श्रद्धा, विश्वास की तरह सरल नहीं है। गोस्वामी जी लिखते हैं :

भवानी शंकरौ वन्दे, श्रद्धा विश्वास रूपिणौ।
याभ्या बिना न पश्यन्ति सिद्धा; स्वान्तः स्थमीश्वरम्॥

अर्थात्- मैं उन श्रद्धा एवं विश्वास रूपी भवानी और शंकर की वन्दना करता हूं, जिनके बिना अन्तःकरण में अवस्थित परमात्म-सत्ता को सिद्धजन देख नहीं सकते। यह श्लोक संक्षेप में अध्यात्म के तत्वज्ञान के आधारों का निरूपण है। श्रद्धा तो मूल है जिसमें माना हुआ विश्वास और जाना हुआ विश्वास मिलते हैं तब इसका स्वरूप पूर्ण होता है। प्रयागराज में गंगा यमुना और सरस्वती के पवित्र त्रिवेणी का संगम इसी आस्था, श्रद्धा और विश्वास का संगम है। यही सृष्टि में मनुष्य का लोक उत्सव है जिसके लिए 12 वर्ष प्रतीक्षा करनी होती है।

इस माहात्म्य को गोस्वामी जी ने बहुत सरलता से लिखा कि माता भवानी श्रद्धा हैं, शिव विश्वास है। श्रीरामचरित मानस के प्रारंभ में ही यह दूसरा श्लोक अपने में अत्यंत गूढ़ रहस्य छिपाए हुए है, अध्यात्म पथ के पथिक के लिए यह अत्यंत अनिवार्य प्रकाश स्तम्भ है जिसकी उपेक्षा, अवहेलना साधक के लिए आत्मघाती ही सिद्ध होती है, और आज के समय में अधिकांश जन यही गलती कर रहे हैं।

किसी की भी आस्था के मूल में श्रद्धा और विश्वास ही आधार तत्व हैं। श्रद्धा मन का गूढ़

(लेखक सनातन चिंतक, सुप्रसिद्ध उद्यम विशेषज्ञ और सृजन कर्म के प्रणेता हैं।)

भाव है और विश्वास हृदय का। दोनो का सम्मिलन ही आस्था की नींव रखता है, ठीक वैसे ही जैसे अर्धनारीश्वर स्वरूप में एकाकार शिव को साधक धारण करता है। विश्वास का आरंभ ही दो से होता है। एक विश्वास जिसको जाना जाता है। दूसरा जिसको माना जाता है। प्रथम अर्थात जिसे जाना जाता है वह वैसा ही है जैसे बालक शिक्षा ग्रहण करने जाता है तो वह यह मान लेता है कि पुस्तकों में जो लिखा है या शिक्षक जो पढ़ा रहे हैं वह सत्य है। यही माना हुआ विश्वास है। यही बालक जब आगे की शिक्षा प्राप्त करते विकसित होता है तो उसमें अब तक पढ़े हुए को जान लेने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। इसके लिए वह अपने अब तक प्राप्त माने हुए ज्ञान को जानने का प्रयत्न करता है और शोध तक की यात्रा कर अपने अनुसार सत्य को जान पाता है। पहले माने हुए और अब जाने हुए विश्वास के बल से वह श्रद्धा तक पहुंच पाता है।

माने हुए से जाने हुए तक की इस यात्रा को गोस्वामी जी ने काग भूसुंडि जी और गरुण जी के संवाद के माध्यम से उत्तरकांड में बहुत सलीके से समझाया है। इसी तथ्य को ब्रह्मर्षि नारद जी ने भक्ति सूत्र में अनेक उदाहरण के साथ व्यापक विवेचना के साथ उपस्थित किया है। त्रेता और द्वापर की कई घटनाओं को अनेक तथ्यों के साथ प्रस्तुत कर नारद जी ने श्रद्धा, विश्वास और आस्था को भक्ति के सूत्र से जोड़ा है। इसमें सूर्पनखा, कुब्जा, गोपियां, रुक्मिणी जी, सीता जी, शबरी समेत गुरु मतंग, कंस, रावण और ऐसे अनेक चरित्रों के मनोभाव चित्रित कर नारद जी ने प्रभु को पाने के लिए उपयुक्त अनुराग की बहुत सुंदर व्याख्या की है। युगतुलसी पंडित राम किंकर जी ने इस विषय की बहुत गहन व्याख्या कई संदर्भों में की है।

गोस्वामी जी ने आगे एक जगह कहा है-

गुरु बिनु भवनिधि तरहिं कि कोई, जो बिरंचि शंकर सम होई।

इसी से अध्यात्म मार्ग में गुरु की महिमा प्रकट होती है। सद्गुरु की विशेषता बतलाते हुए तुलसीदास जी ने उन्हें सर्वप्रथम ज्ञानमय कहा है, अर्थात ज्ञान के मूर्तिमान स्वरुप। जिसके संपर्क, सान्निध्य, मार्गदर्शन में शिष्य के हृदय में विद्यमान अज्ञान का अंधकार उसी प्रकार दूर होता चला जाता है जैसे सूर्योदय होने पर रात्रि का अंधकार विलुप्त हो जाता है। दूसरी विशेषता बताते हुए सद्गुरु को उन्होंने नित्य कहा है अर्थात तीनों कालों में सदा विद्यमान रहने वाला। यह कैसे संभव है?

सद्गुरु उच्चकोटि के साधक, विद्वान, लोक कल्याणकारी और शिष्य के लिए ईश्वर तुल्य होते हैं। शिष्य की यह भावना, श्रद्धा, निष्ठां, समर्पण ही उसे परमात्मा तक पहुंचाता है। सद्गुरु की दिव्य चेतना, शिष्य साधक का मार्गदर्शन, संरक्षण, जिंदगी के साथ भी, जिंदगी के बाद भी, उसके हृदय में निवास करते हुए करती रहती है अतः सद्गुरु भी नित्य हैं। तीसरी विशेषता में उन्हें भगवान शंकर का प्रतिरूप कहा है। अर्थात शिव जी, देवाधिदेव महादेव हैं, शीघ्र प्रसन्न होने वाले, स्वयं कुछ नहीं चाहिए, थोड़े में ही प्रसन्न हो साधक को निहाल कर देने वाले हैं।

इस से भी अत्यंत महत्वपूर्ण गुप्त रहस्य छिपा हुआ है सद्गुरु की तुलना भगवान शंकर से करने में जिसे अवश्य जान लेना चाहिए। जिसप्रकार कोई डॉक्टर भी अपना इलाज स्वयं नहीं करता, उसे दूसरे डॉक्टर से परामर्श व इलाज कराना पड़ता है यह एक कहावत है। उसी प्रकार किसी अध्यात्मपथ के पथिक के लिए कौन सी साधना विधि उपयुक्त है यह साधक स्वयं निर्णय नहीं कर सकता।

प्राचीन काल के तथाकथित राक्षस (स्वार्थपूर्ण उद्देश्य के लिए कठोर तप करने वाले) और आज के सामान्य जन भी बिना सद्गुरु से दीक्षा और बिना उनके मार्गदर्शन के मनमानी पूजा विधियों को अपनाते हैं जिस से या तो वह पूजा, उपासना व्यर्थ सिद्ध होती है, या फिर ऐसा व्यक्ति अपना जीवन नष्ट कर लेता है।

अब यहां अवश्य याद करें, गंगावतरण का प्रसंग। राजा भगीरथ ने अपने पूर्वजों, राजा सगर के 60,000 पुत्रों के उद्धार के लिए, कठोर तपस्या कर माँ भगवती गंगा को प्रसन्न कर लिया था। परंतु माँ गंगा ने कहा कि मेरे वेग को कौन धारण करेगा? अन्यथा मैं तो पाताल में चली जाऊंगी, क्योंकि तुम मेरे वेग को धारण करने में समर्थ नहीं हो। तब राजा भगीरथ भगवान शंकर की शरण में गए थे, अपने तप से उन्हें प्रसन्न किया था। भगवान शंकर ने माँ गंगा को अपनी जटाओं में उलझा कर अपने मस्तक पर धारण किया था तथा गंगा जी की एक पतली सी धारा प्रवाहित होने दी। जिसे भागीरथ गंगा सागर तक ले गए।

अब यह स्पष्ट है कि गुरु शंकर रूप इसलिए है कि परमात्मचेतना का शक्तिप्रवाह बिजली के समान है और साधक बिजली के उपकरणों- बल्ब,टीवी, फ्रिज,पंखा आदि के समान। तो उच्चकोटि का साधक सद्गुरु ट्रांसफार्मर या स्टेबिलाइजर की तरह हाई वोल्टेज को लो में और लो वोल्टेज को हाई में बदलकर शिष्य साधक को साधनापथ पर अग्रसर करते रहता है,ताकि उसे कोई क्षति न पहुंचे और वह शीघ्र तथा निर्विघ्न, सफलता को प्राप्त हो। जिसे ऐसे (उच्चकोटि के साधक, लोकमंगल के लिए जिनकी साधना, तपश्चर्या हो) सद्गुरु मिल गए, वह शिष्य सद्गुरु के आश्रय से उसी प्रकार श्रेय,यश,कीर्ति, सम्मान का भागी बन जाता है जैसे टेढ़ा चन्द्रमा भी भगवान शंकर के आश्रय से सर्वत्र वंदित होता है। यह है-

'गुरुं शंकर रूपिणं, यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते'

सृष्टि में मनुष्य के लिए सहज रूप में उपलब्ध यही गुरु तत्व का बोध और लोक पक्ष की आस्था स्वयं में विश्वास पूर्वक एक त्रिवेणी का निर्माण करते हैं। इसी त्रिवेणी को साकार रूप में तीर्थराज प्रयाग में देवपक्ष स्थापित करता है और इसके पावन पुण्य समागम से लोक तृप्त होता है।

नागा, अखाड़ा, परंपरा और इतिहास

आमोदकांत मिश्र

कालांतर में कई और अखाड़े अस्तित्व में आए। शंकराचार्य ने अखाड़ों को सुझाव दिया कि मठ, मंदिरों और श्रद्धालुओं की रक्षा के लिए जरूरत पडने पर शक्ति का प्रयोग करें। इस तरह बाह्य आक्रमणों के उस दौर में इन अखाड़ों ने एक सुरक्षा कवच का काम किया। कई बार स्थानीय राजा-महाराज विदेशी आक्रमण की स्थिति में नागा योद्धा साधुओं का सहयोग लिया करते थे।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और संस्कृति पर्व के सह संपादक हैं।)

नागा साधु सनातन आर्य वैदिक धर्मावलम्बी साधु हैं जो कि दिगंबर रहने तथा युद्ध कला में माहिर होने के लिये प्रसिद्ध हैं। ये विभिन्न अखाड़ों में रहते हैं जिनकी परम्परा आदिगुरु शंकराचार्य द्वारा की गयी थी।इनके आश्रम हरिद्वार और दूसरे तीर्थों के दूरदराज इलाकों में हैं जहां ये आम जनजीवन से दूर कठोर अनुशासन में रहते हैं। इनके क्रोध के बारे में प्रचलित किस्से कहानियां भी भीड़ को इनसे दूर रखती हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि यह शायद ही किसी को नुकसान पहुंचाते हों। हां, लेकिन अगर बिना कारण अगर कोई इन्हें उकसाए या तंग करे तो इनका क्रोध भयानक हो उठता है। कहा जाता है कि भले ही दुनिया अपना रूप बदलती रहे लेकिन शिव और अग्नि के ये भक्त इसी स्वरूप में रहेंगे।

नागा साधु तीन प्रकार के योग करते हैं जो उनके लिए ठंड से निपटने में मददगार साबित होते हैं। वे अपने विचार और खानपान, दोनों में ही संयम रखते हैं। नागा साधु एक सैन्य पंथ है और वे एक सैन्य रेजीमेंट की तरह बंटे हैं। त्रिशूल, तलवार, शंख और चिलम से वे अपने सैन्य दर्जे को दर्शाते हैं।

ये साधु प्रायः कुम्भ में दिखायी देते हैं। नागा साधुओं को लेकर कुंभ मेले में बड़ी जिज्ञासा और कौतुहल रहता है, खासकर विदेशी पर्यटकों में। कोई कपड़ा ना पहनने के कारण शिव भक्त नागा साधु दिगंबर भी कहलाते हैं, अर्थात आकाश ही जिनका वस्त्र हो। कपड़ों के नाम पर पूरे शरीर पर धूनी की राख लपेटे ये साधु कुम्भ मेले में सिर्फ शाही स्नान के समय ही खुलकर श्रद्धालुओं के सामने आते हैं। आमतौर पर मीडिया से ये दूरी ही बनाए रहते हैं।

अधिसंख्य नागा साधु पुरुष ही होते हैं, कुछ महिलायें भी नागा साधु हैं पर वे सार्वजनिक रूप से सामान्यतः नग्न नहीं रहती अपितु एक गेरुवा वस्त्र लपेटे रहती हैं।

इतिहास

भारतीय सनातन धर्म के वर्तमान स्वरूप की नींव आदिगुरू शंकराचार्य ने रखी थी। शंकर का जन्म 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व के में हुआ था जब भारतीय जनमानस की दशा और दिशा बहुत बेहतर नहीं थी। भारत की धन संपदा से खिंचे तमाम आक्रमणकारी यहाँ आ रहे थे। कुछ उस खजाने को अपने साथ वापस ले गए तो कुछ भारत की दिव्य आभा से ऐसे मोहित हुए कि यहीं बस गए, लेकिन कुल मिलाकर सामान्य शांति-व्यवस्था बाधित थी। ईश्वर, धर्म, धर्मशास्त्रों को तर्क, शस्त्र और शास्त्र सभी तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था। ऐसे में शंकराचार्य ने सनातन धर्म की स्थापना के लिए कई कदम उठाए जिनमें से एक था देश के चार कोनों पर चार पीठों का निर्माण करना। यह थीं गोवर्धन पीठ, शारदा पीठ, द्वारिका पीठ और ज्योतिर्मठ पीठ। इसके अलावा आदिगुरू ने मठों-मन्दिरों की सम्पत्ति को लूटने वालों और श्रद्धालुओं को सताने वालों का मुकाबला करने के लिए सनातन धर्म के विभिन्न संप्रदायों की सशस्त्र शाखाओं के रूप में अखाड़ों की स्थापना की शुरूआत की।

आदिगुरू शंकराचार्य को लगने लगा था सामाजिक उथल-पुथल के उस युग में केवल आध्यात्मिक शक्ति से ही इन चुनौतियों का मुकाबला करना काफी नहीं है। उन्होंने जोर दिया कि युवा साधु व्यायाम करके अपने शरीर को सुदृढ़ बनायें और हथियार चलाने में भी कुशलता हासिल करें। इसलिए ऐसे मठ बने जहाँ इस तरह के व्यायाम या शस्त्र संचालन का अभ्यास कराया जाता था, ऐसे मठों को अखाड़ा कहा जाने लगा। आम बोलचाल की भाषा में भी अखाड़े उन जगहों को कहा जाता है जहां पहलवान कसरत के दांवपेंच सीखते हैं। कालांतर में कई और अखाड़े अस्तित्व में आए। शंकराचार्य ने अखाड़ों को सुझाव दिया कि मठ, मंदिरों और श्रद्धालुओं की रक्षा के लिए जरूरत पडने पर शक्ति का प्रयोग करें। इस तरह बाह्य आक्रमणों के उस दौर में इन अखाड़ों ने एक सुरक्षा कवच का काम किया। कई बार स्थानीय राजा-महाराज विदेशी आक्रमण की स्थिति में नागा योद्धा साधुओं का सहयोग लिया करते थे। इतिहास में ऐसे कई गौरवपूर्ण युद्धों का वर्णन मिलता है जिनमें 40 हजार से ज्यादा नागा योद्धाओं ने हिस्सा लिया। अहमद शाह अब्दाली द्वारा मथुरा-वृन्दावन के बाद गोकुल पर आक्रमण के समय नागा साधुओं ने उसकी सेना का मुकाबला करके गोकुल की रक्षा की।

वर्तमान स्थिति

आजादी के बाद इन अखाड़ों ने अपना सैन्य चरित्र त्याग दिया। इन अखाड़ों के प्रमुख ने जोर दिया कि उनके अनुयायी भारतीय संस्कृति और दर्शन के सनातनी मूल्यों का अध्ययन और अनुपालन करते हुए संयमित जीवन व्यतीत करें। इस समय 13 प्रमुख अखाड़े हैं जिनमें प्रत्येक के शीर्ष पर महन्त आसीन होते हैं। एक 14वें अखाड़े को भी मान्यता दी गई है। इन प्रमुख अखाड़ों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं:

- **श्री निरंजनी अखाड़ा:** यह अखाड़ा ८२६ ईस्वी में गुजरात के मांडवी में स्थापित हुआ था। इनके ईष्ट देव भगवान शंकर के पुत्र कार्तिकस्वामी हैं। इनमें दिगम्बर, साधु, महन्त व महामंडलेश्वर होते हैं। इनकी शाखाएं प्रयागराज, उज्जैन, हरिद्वार, त्र्यंबकेश्वर व उदयपुर में हैं।
- **श्री जूनादत्त या जूना अखाड़ा:** यह अखाड़ा ११४५ में उत्तराखण्ड के कर्णप्रयाग में स्थापित हुआ। इसे भैरव अखाड़ा भी कहते हैं। इनके ईष्ट देव रुद्रावतार दत्तात्रेय हैं। इसका केंद्र वाराणसी के हनुमान घाट पर माना जाता है। हरिद्वार में मायादेवी मंदिर के पास इनका आश्रम है। इस अखाड़े के नागा साधु जब शाही स्नान के लिए संगम की ओर बढ़ते हैं तो मेले में आए श्रद्धालुओं समेत पूरी दुनिया की सांसें उस अद्भुत दृश्य को देखने के लिए रुक जाती हैं।आजकल इनके पीठाधीश्वर स्वामी अवधेस आनंद गिरी महाराज है
- **श्री महानिर्वाण अखाड़ा:** यह अखाड़ा ६७१ ईस्वी में स्थापित हुआ था, कुछ लोगों का मत है कि इसका जन्म बिहार-झारखण्ड के बैजनाथ धाम में हुआ था, जबकि कुछ इसका जन्म स्थान हरिद्वार में नील धारा के पास मानते हैं। इनके ईष्ट देव कपिल महामुनि हैं। इनकी शाखाएं इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन, त्र्यंबकेश्वर, ओंकारेश्वर और कनखल में हैं। इतिहास के पन्ने बताते हैं कि १२६० में महंत भगवानंद गिरी के नेतृत्व में २२ हजार नागा साधुओं ने कनखल स्थित मंदिर को आक्रमणकारी सेना के कब्जे से छुड़ाया था।वर्षों प्राचीन पाशुपत परंपरा से उज्जैन स्थित महाकाल ज्योतिर्लिंग पर नित्य प्रति इसी अखाडे के पुरी नामा नागा साधुओं के महंत भस्म चढाते आ रहे हैं जब मराठा शासनकाल में मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ उस समय मं रामेश्वर पुरी थे उनके बाद नृसिंह पुरी मया पुरी राम पुरी भागीरथ पुरी गोपाल पुरी हेम पुरी शंकर पुरी भैरव पुरी रेवांगिर पुरी प्रकाश पुरी और वर्तमान में महंत दया पुरी हैं जो कि महाकाल मंदिर परिसर में ही निवास करते हैं और लगभग पांच हजार वर्षों प्राचीन परंपरा का सतत् पालन कर रहे हैं
- **श्री अटल अखाड़ा:** यह अखाड़ा ५६९ ईस्वी में गोंडवाना क्षेत्र में स्थापित किया गया। इनके ईष्ट देव भगवान गणेश हैं। यह सबसे प्राचीन अखाड़ों में से एक माना जाता है। इसकी मुख्य पीठ पाटन में है लेकिन आश्रम कनखल, हरिद्वार, इलाहाबाद, उज्जैन व त्र्यंबकेश्वर में भी हैं।
- **श्री आह्वान अखाड़ा:** यह अखाड़ा ६४६ में स्थापित हुआ और १६०३ में पुनर्संयोजित किया गया। इनके ईष्ट देव श्री दत्तात्रेय और श्री गजानन हैं। इस अखाड़े का केंद्र स्थान काशी है। इसका आश्रम ऋषिकेश में भी है। स्वामी अनूपगिरी और उमराव

गिरी इस अखाड़े के प्रमुख संतों में से हैं।

- **श्री आनंद अखाड़ाः** यह अखाड़ा ८५५ ईस्वी में मध्यप्रदेश के बेरार में स्थापित हुआ था। इसका केंद्र वाराणसी में है। इसकी शाखाएं इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन में भी हैं।
- **श्री पंचाग्नि अखाड़ाः** इस अखाड़े की स्थापना ११३६ में हुई थी। इनकी इष्ट देव गायत्री हैं और इनका प्रधान केंद्र काशी है। इनके सदस्यों में चारों पीठ के शंकराचार्य, ब्रहमचारी, साधु व महामंडलेश्वर शामिल हैं। परंपरानुसार इनकी शाखाएं इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन व त्र्यंबकेश्वर में हैं।
- **श्री नागपंथी गोरखनाथ अखाड़ाः** यह अखाड़ा ईस्वी ८६६ में अहिल्या-गोदावरी संगम पर स्थापित हुआ। इनके संस्थापक पीर शिवनाथजी हैं। इनका मुख्य दैवत गोरखनाथ है और इनमें बारह पंथ हैं। यह संप्रदाय योगिनी कौल नाम से प्रसिद्ध है और इनकी त्र्यंबकेश्वर शाखा त्र्यंबकंमठिका नाम से प्रसिद्ध है।
- **श्री वैष्णव अखाड़ाः** यह बालानंद अखाड़ा ईस्वी १५९५ में दारागंज में श्री मध्यमुरारी में स्थापित हुआ। समय के साथ इनमें निर्मोही, निर्वाणी, खाकी आदि तीन संप्रदाय बने। इनका अखाड़ा त्र्यंबकेश्वर में मारुति मंदिर के पास था। १८४८ तक शाही स्नान त्र्यंबकेश्वर में ही हुआ करता थाए परंतु १८४८ में शैव व वैष्णव साधुओं में पहले स्नान कौन करे इस मुद्दे पर झगड़े हुए। श्रीमंत पेशवाजी ने यह झगड़ा मिटाया। उस समय उन्होंने त्र्यंबकेश्वर के नजदीक चक्रतीर्था पर स्नान किया। १९३२ से ये नासिक में स्नान करने लगे। आज भी यह स्नान नासिक में ही होता है।
- **श्री उदासीन पंचायती बड़ा अखाड़ाः** यह अखाड़ा १९१० में स्थापित हुआ। इस संप्रदाय के संस्थापक श्री चंद्रआचार्य उदासीन हैं। इनमें सांप्रदायिक भेद हैं। इनमें उदासीन साधु, मंहत व महामंडलेश्वरों की संख्या ज्यादा है। उनकी शाखाएं शाखा प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, त्र्यंबकेश्वर, भदैनी, कनखल, साहेबगंज, मुलतान, नेपाल व मद्रास में है।
- **श्री उदासीन नया अखाड़ाः** यह अखाड़ा १७१० में स्थापित हुआ। इसे बड़ा उदासीन अखाड़ा के कुछ सांधुओं ने विभक्त होकर स्थापित किया। इनके प्रवर्तक मंहत सुधीरदासजी थे। इनकी शाखाएं प्रयागए हरिद्वार, उज्जैन, त्र्यंबकेश्वर में हैं।
- **श्री निर्मल पंचायती अखाड़ाः** यह अखाड़ा १७८४ में स्थापित हुआ। १७८४ में हरिद्वार कुंभ मेले के समय एक बड़ी सभा में विचार विनिमय करके श्री दुर्गासिंह महाराज ने इसकी स्थापना की। इनकी ईष्ट पुस्तक श्री गुरुग्रन्थ साहिब है। इनमें सांप्रदायिक साधु, मंहत व महामंडलेश्वरों की संख्या बहुत है। इनकी शाखाएं प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और त्र्यंबकेश्वर में हैं।
- **निर्मोही अखाड़ाः** निर्मोही अखाड़े की स्थापना १७२० में रामानंदाचार्य ने की थी। इस अखाड़े के मठ और मंदिर उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात और बिहार में हैं। पुराने समय में इसके अनुयायियों को तीरंदाजी और तलवारबाजी की शिक्षा भी दिलाई जाती थी। ऐसा भी माना जाता है कि प्राचीन काल में लोमश नाम के ऋषि थे जिनकी आयू अखंड है कहते है जब एक हजार ब्रह्मा समाप्त होते है तो उनके शरीर का एक रोम गिरता है। आचार्य लोमश ऋषि के ने भगवान शंकर के कहने पर गुरू परंपरा पर तंत्र शास्त्र पर आधारित सबसे पहले आगम मठ की स्थापना की। जो सबसे प्राचीन है विश्व में जिसका मुख्ययालय वर्त्तमान मे हिमालय मे कही है। आगम मठ के साधू बहुत ही रहस्यमयी होते है,पूजा ध्यान करते हुऐ वो भूमि का त्याग कर अधर मे होते है

नागा बनने की प्रक्रिया

नागा साधु बनने की प्रक्रिया कठिन तथा लम्बी होती है। नागा साधुओं के पंथ में शामिल होने की प्रक्रिया में लगभग छह साल लगते हैं। इस दौरान नए सदस्य एक लंगोट के अलावा कुछ नहीं पहनते। कुंभ मेले में अंतिम प्रण लेने के बाद वे लंगोट भी त्याग देते हैं और जीवन भर यूँ ही रहते हैं। कोई भी अखाड़ा अच्छी तरह जाँच-पड़ताल कर योग्य व्यक्ति को ही प्रवेश देता है। पहले उसे लम्बे समय तक ब्रह्मचारी के रूप में रहना होता है, फिर उसे महापुरुष तथा फिर अवधूत बनाया जाता है। अन्तिम प्रक्रिया महाकुम्भ के दौरान होती है जिसमें उसका स्वयं का पिण्डदान तथा दण्डी संस्कार आदि शामिल होता है।

पवित्र संगम में स्नान करने के लिए कुंभ मेले में करोड़ों भक्त, श्रद्धालु, साधु संत और यात्री आएंगे। कुंभ के समय पर जो दृश्य उत्पन्न होते हैं उनके लिए शब्द कम पड़ जाते हैं ऐसा अद्भुत नजारा होता है। कुंभ मेले की सबसे बड़ी शोभा होते हैं नागा साधु। आम आदमी के लिए कुंभ मेला नागा साधुओं का एक जुटान है क्योंकि यही एक मौका है जब आम आदमी भी नागाओं के जीवन को समझने और देखने का अवसर पाता है। कुंभ मेले में नागा साधु अपनी युद्ध कला का प्रदर्शन करते हैं। आइए आपको आज इन्हीं नागुओं के जीवन से जुड़ी रोचक बात बताते हैं।

नागा साधुओं के बारे में जानना है तो नागा शब्द का पीछा करना होगा। नागा शब्द प्राचीन समय से भारतीय समाज में प्रयोग में है। यहां नागवंश और नागा जाति का उल्लेख मिलता है। देश में तो नागा नाम से एक राज्य भी है। इतिहास को जानेंगे तो पता चलेगा कि देश में नागवंशी, नागा, दसनामी संप्रदाय काफी समय से रहते आ रहे हैं। नाथ संप्रदाय दसनामी संप्रदाय से जुड़ा हुआ है। भगवान शिव को मानने वाले शैव पंथ में ही विभिन्न मत और संप्रदाय हैं। नागा देश की एक प्रमुख जनजाति भी है। नंगा पर्वत श्रेणी भी है। नागा शब्द संस्कृत से निकला

है। जिसका अर्थ है पर्वत। पर्वत पर रहने वालों को नागा कहा जाता है। कच्छारी भाषा में नागा का अर्थ है युवा बहादुर लड़ाकू व्यक्ति। वहीं नागा का एक अर्थ नग्न रहने से भी। हालांकि यह बस एक अर्थ है। जरूरी नहीं नागा का अर्थ नग्न रहना ही हो।

सिंधुघाटी सभ्यता से संबंध-

अगर नागा संतों के इतिहास की बात की जाए तो प्राचीन समय से साधु संतों का समागम होता रहा है। समय के साथ अखाड़े बने। अखाड़ों के बनने में जगतगुरु शंकाराचार्य की भूमिका थी। अगर आप सिंधु घाटी सभ्यता को पढ़ेंगे तो समझ आएगा कि जटाधारी तपस्वी लोग उस समय में भी थे। शिव की उपासना तब भी होती थी।

दिगंबर जैन साधु और नागा साधुओं का इतिहास एक जैसा रहा है। मान्यता है कि नाग, नाथ और नागा पंरपरा गुरु दत्तात्रेय की परंपरा की शाखाएं हैं। नवनाथ की पंरपरा को सिद्धों की बहुत ही अहम परंपरा माना जाता है। एक मान्यता ये भी है कि महर्षि वेद व्यास ने वनवासी संन्यासी परंपरा की शुरूआत की थी। ऋषि शुकदेव के बाद ये परंपरा और आगे बढ़ी।

नागाओं ने लड़े युद्ध-

- ❖ इतिहास में कई युद्ध नागा साधुओं द्वारा लड़े गए थे। अहमद शाह अब्दाली के खिलाफ नागाओं ने युद्ध किया था।
- ❖ सनातन धर्म को बचाने के लिए संतों ने बनाई थी फौज, दी थी खुद की बलि।
- ❖ औरंगजेब ने मूर्तियों को खंडित करने का अभियान चलाया तब नागा संतों के सहयोग से वृंदावन आदि से भगवान की मूर्तियों को राजस्थान में भेजा गया।

रामानंद सम्प्रदाय के महान संत बालानन्द ने धर्म और ढूंढाड़ को बचाने के लिए वैरागी वैष्णव संतों के लड़ाकू अखाड़ों का गठन किया था। चांदपोल हनुमानजी के पास बालानन्दजी का रास्ता में ऊंचाई पर बने मंदिरनुमा मठ कभी नागा सेना की छावनी रहा था। यहां सैनिकों के अलावा हाथी व घोड़े भी रहते थे। राजपूत जाति के संत बालानन्द गुरु व्रजानन्द के साथ पुष्कर होते हुए आमेर रियासत में आए। इनका पहला पड़ाव झालाना इलाके में रहा। जयपुर बसने के बाद इनको मंदिर का पट्टा दिया गया। सवाई माधोसिंह प्रथम ने संत बालानन्द को राजगुरु का सम्मान दिया।

शस्त्रधारी नागा संतों की 52 गद्दियां व तीन अनी अखाड़ों का गठन संत बालानन्द के नेतृत्व में सन् 1729 में वृंदावन में किया गया। इस काम में गलता के हर्याचार्य, निम्बार्क के वृंदावनदेवाचार्य, दादूपंथी मंगलदास व रेवासा आदि पीठों के संत अखाड़ा साथ रहे। 1789 के नासिक कुंभ में संतों को बचाने के लिए हुए युद्ध में संत बालानन्द

की सेना ने वीरता दिखाई। औरंगजेब ने मूर्तियों को खंडित करने का अभियान चलाया तब नागा संतों के सहयोग से वृंदावन आदि से भगवान की मूर्तियों को राजस्थान में भेजा गया।

भरतपुर के महाराज सूरजमल ने संत बालानंद के सहयोग से आगरा किले पर भी कब्जा कर लिया और वहां से किवाड़ भी उतार लाए। अयोध्या राम जन्म भूमि को लेकर हुए युद्ध में संत बालानन्द ने गुरुभाई संत मानदास के साथ वीरता दिखाई। सवाई प्रतापसिंह व महादजी सिंधिया के बीच हुए तूंगा युद्ध में नागा सेना ने दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए। मेवाड़ की कृष्णा कुमारी के मामले में जयपुर व मारवाड़ के बीच 14 मार्च 1807 को हुए गिगोली युद्ध में गंभीरानंद की अगुवाई में संतों की सेना ने भाग लिया।

बरसाना के जाट मुगल युद्ध में नागा सेना ने जाटों के पक्ष में युद्ध लड़ा। इसमें पांच हजार सैनिक घायल हुए और करीब दो हजार मारे गए। संत बालानंद के जयपुर से जाने पर महाराजा उन्हें विदा करने और वापस आने पर अगवानी करने पहुंचते। रेलवे स्टेशन के पास बड़ौदिया गांव के अलावा तेवड़ी, कारवा आदि इनकी जागीर में रहे। वृंदावन, गोवर्धन, भरतपुर व लोहार्गल आदि में संत बालानंद के मंदिर व बाग थे। इतिहासकार आनन्द शर्मा के मुताबिक महाराजाओं ने संत बालानन्द व गद्दी के महंतों को सम्मान दिया।

मठ की छावनी में सेना के लिए गेहूं भी बैलों की चक्की से पिसता था। मठ में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के साथ सीता, उर्मिला, मांडवी व कीर्ती की भी पूजा होती है। अष्ट दिग्गज गद्दी के वेंकटेश, रंगनाथ, श्रीतोताद्रिनाथ, श्री वरदराज के अलावा शठकोप चरण पादुकाओं पूजा होती है। विजय राघव व धनुर्धारी हनुमान को युद्ध में आगे रखा जाता। जेठ सुदी पंचमी को संत बालानन्द की जयंती पर नागा साधु अपने कमांडर को आज भी ढोक देने आते हैं। अजबगढ़ युद्ध में गोविंदानन्द ने जयपुर की तरफ से युद्ध लड़ा। गोविंदानंद के बाद गंभीरानंद मठ के महंत बने। आजादी के बाद नागा साधुओं ने अपने यौद्धा स्वरूप को त्याग दिया और केवल मात्र आध्यात्म की राह पकड़ ली।

ब्रह्मांड, सृष्टि, मनुष्य और कुंभ का अमृत तत्व

आचार्य गोविन्द शर्मा

वेद कहते हैं कि मृत्यु से रहित अविनाशी ईश्वर की संतान हैं चूँकि संतान में पिता के गुण होना स्वाभाविक है। इसलिए वेदानुसार हम भी अमृत हैं, बदलाव प्रकृति का नियम है जिस के अनुसार संसार की हर वस्तु प्रति क्षण बदलती रहती है। पूरे ब्रह्मांड में जन्म-मरण एवं बनने और टूटने की प्रक्रिया प्रतिक्षण चलती रहती है।

लेखक काशी विद्वत परिषद् और गंगा महासभा के राष्ट्रीय संगठन मंत्री हैं।

कुंभ से अमृत प्राप्त करने की सांस्कृतिक परंपरा को सामान्य रूप में एक समागम या मेला बता कर , वर्णित कर नहीं समझा जा सकता है। यह अत्यंत गूढ़ है।महाविज्ञान है। स्वयं सिद्ध दर्शन है। यदि वेद ने मनुष्य को अमृतस्य पुत्राः कहा है तो इसके पीछे कोई ठोस कारण होगा। वेद के ऋषि ने निश्चित रूप से इसको सप्रमाण देखा होगा। बिना स्वयं दर्शन किए ऋषि ने कोई ऋचा नहीं रची। यह तो परंपरा और शास्त्रों के अध्येताओं की जिम्मेदारी है कि इस गूढ़ की मीमांसा और विवेचना कर इसे जन सामान्य की समझ के योग्य परोसें।

इसको समझना आवश्यक है। वयम् अमृतस्य पुत्राः (श्वेताश्वर उपनिषद) क्यों कहा गया। क्या है इसका पूर्ण आयाम।

अमृतस्य पुत्रा वयं, सबलं सदयं नो हृदयम्।
गतमितिहासं पुनरुन्नेतुं, युवसङ्घटनं नवमिह कर्तुम् ॥
भारतकीर्तिं दिशि दिशि नेतुं, दृढसङ्कल्पा विपदि विजेतुम्।
ऋषिसन्देशं जगति नयेम, सत्त्वशालिनो मनसि भवेम ॥
कष्टसमुद्रं सपदि तरेम, स्वीकृतकार्यं न हि त्यजेम।
दीनजनानां दुःखविमुक्तिं, महतां विषये निर्मलभक्तिम् ॥
सेवाकार्ये सन्ततशक्तिं, सदा भजेम भगवति रक्तिम्।
सर्वे अमृतस्य पुत्राः शृण्वन्तु ये दिव्यानि धामानि आतस्थुः॥
युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्विश्लोक एतु पथ्येव सूरेः।
शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः॥

(श्वेताश्वतरोपनिषद् - द्वितीयोऽध्यायः)

वेद कहते हैं कि मृत्यु से रहित अविनाशी ईश्वर की संतान हैं चूँकि संतान में पिता के गुण होना स्वाभाविक है। इसलिए वेदानुसार हम भी अमृत हैं, बदलाव प्रकृति का नियम है जिस के अनुसार संसार की हर वस्तु प्रति क्षण बदलती रहती है। पूरे ब्रह्मांड में जन्म-मरण एवं बनने और टूटने की प्रक्रिया प्रतिक्षण चलती रहती है। शारीरिक अर्थात सांसारिक जीवन तो प्राकृतिक सिद्धांत अनुसार माता पिता के द्वारा पैदा होता है और प्रकृति के नियम अनुसार संसार की कोई भी वस्तु - जड़ या चेतन कभी एक जैसी नहीं रह सकती।

भगवद गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं; जातस्य हि ध्रुवं मृत्यु, अर्थात जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु भी निश्चित है - जो बना है उसका मिटना अनिवार्य है। इसलिए शरीर रूप में तो कोई भी अमृत अर्थात मृत्यु से रहित नहीं हो सकता लेकिन आत्मा जन्म मरण से रहित है।

वेद का ये महामंत्र - वयम् अमृतस्य पुत्राः, शरीर को नहीं, बल्कि आत्मा को सम्बोधित करते हुए कहा गया है।

अष्टावक्र गीता में जनक से अष्टावक्र कहते हैं :

यदि देहं पृथक्कृत्य - चिति विश्राम्य तिष्ठसि।
अधुनैव सुखी शांतः बन्धमुक्तो भविष्यसि।।

यदि स्वयं को देह से अलग कर के देखोगे और चित को स्थिर करके आत्मा में स्थित हो जाओगे तो अभी सुखी और शांत हो जाओगे और बंधन मुक्त हो कर मोक्ष को प्राप्त कर लोगे। जागने के बाद, अमृत रूप का ज्ञान और अनुभव हो जाने के पश्चात क्या करना चाहिए ?

इस अमरत्व को स्वामी विवेकानंद ने बहुत ही सलीके से व्याख्यायित किया है। सनातन की प्राचीनता और महाविज्ञान के साथ ही इसकी प्रामाणिक व्याख्या भी उन्होंने की है। स्वामी जी लिखते हैं, वैदिक यज्ञ वेदी ज्यामिति का मूल थी। देवों या उज्ज्वल देवताओं का आह्वान पूजा का आधार था। विचार यह है कि जिसका आह्वान किया जाता है, उसे सहायता मिलती है और वह सहायता करता है।

भजन केवल प्रशंसा के शब्द नहीं होते बल्कि शक्ति के शब्द होते हैं, जिन्हें मन की सही मनोवृत्ति के साथ उच्चारित किया जाता है। स्वर्ग अस्तित्व की अन्य अवस्थाएं हैं जिनमें अतिरिक्त इंद्रियां और बढ़ी हुई शक्तियां होती हैं।सभी उच्चतर शरीर भी भौतिक शरीर की तरह विघटन के अधीन हैं। इस जीवन और अन्य जीवन में सभी प्रकार के शरीरों की मृत्यु होती है। देवता भी नश्वर हैं और केवल आनंद दे सकते हैं।सभी देवों के पीछे एक इकाई सत्ता है - ईश्वर, क्योंकि इस शरीर के पीछे कुछ उच्चतर सत्ता है जो अनुभव करती है और देखती है।ब्रह्माण्ड की रचना, संरक्षण और विनाश की शक्तियां, तथा सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमानता जैसे गुण, उसे देवताओं का देवता बनाते हैं।

"हे अमरत्व की संतानों सुनो! हे देवो जो उच्चतर लोकों में रहते हैं सुनो!" (श्वेताश्वतर, II. 5)। "मैंने सभी अंधकार से परे, सभी संदेहों से परे एक किरण खोज ली है। मैंने उस आदिपुरुष को पा लिया है" (ibid . III. 8)। इसका मार्ग उपनिषदों में निहित है। धरती पर हम मरते हैं। स्वर्ग में हम मरते हैं। सबसे ऊँचे स्वर्ग में हम मरते हैं। जब हम ईश्वर तक पहुँचते हैं, तभी हम जीवन प्राप्त करते हैं और अमर हो जाते हैं। सनातन शास्त्रों का संदेश स्पष्ट है_

यावत जीवेत - सुखम् जीवेत, धर्मकार्यम कृत्वा अमृतं पिबेत्।

जब तक संसार में जीओ - सुख पूर्वक जीओ। धर्म के कार्य करते हुए - अर्थात जो भी कार्य करो, धर्म को सामने रखते हुए करो - नेक कमाई से जीवन यापन करते हुए भलाई के काम भी करते रहो - दूसरों का भी भला करो। तथा ज्ञान रुपी अमृत पान करते रहो।

कुंभ पर विशेष

अदृश्य नहीं हैं त्रिवेणी की सरस्वती

डॉ वसुंधरा उपाध्याय

सरस्वती को सामान्य परंपरा में अदृश्य कहा जा रहा है किंतु वस्तुतः ऐसा नहीं है। मां सरस्वती हैं इसीलिए प्रयागराज में त्रिवेणी का पवित्र संगम है। इसीलिए इस पवित्र संगम तट पर कुंभ और महाकुंभ भी हैं। इसके लिए आवश्यक है कि अपनी इस विलुप्त कही जाने वाली माता की तेजस्वी धारा की तलाश की जाय और इसके इतिहास का अध्ययन किया जाय। आज के वैज्ञानिक युग में यह असंभव नहीं है। यद्यपि भारत का साहित्य बहुत प्रमाणों के साथ सरस्वती की गाथा गा रहा है फिर भी सामान्य परंपरा में इसे विलुप्त कहा जा रहा है जो उचित नहीं है। सरस्वती की चर्चा वेदों में भी है। इसे प्लाक्षवती,वेद्समृति, वेदवती भी कहते है! ऋग्वेदमें सरस्वती का अन्नवती तथा उदकवती के रूप में वर्णन आया है। यह नदी सर्वदा जल से भरी रहती थी और इसके किनारे अन्न की प्रचुर उत्पति होती थी।

> **महाभारत में सरस्वती नदी के प्लक्षवती नदी, वेदस्मृति, वेदवती आदि कई नाम हैं।महाभारत, वायुपुराण अदि में सरस्वती के विभिन्न पुत्रों के नाम और उनसे जुड़े मिथक प्राप्त होते हैं। महाभारत के शल्य-पर्व, शांति-पर्व, या वायुपुराण में सरस्वती नदी और दधीचि ऋषि के पुत्र सम्बन्धी मिथक थोड़े थोड़े अंतरों से मिलते हैं।**

प्रयागराज में त्रिवेणी का संगम इसलिए है क्योंकि माता सरस्वती नदी भी उपस्थित हैं। सरस्वती को सामान्य परंपरा में अदृश्य कहा जा रहा है किंतु वस्तुतः ऐसा नहीं है। मां सरस्वती हैं इसीलिए प्रयागराज में त्रिवेणी का पवित्र संगम है। इसीलिए इस पवित्र संगम तट पर कुंभ और महाकुंभ भी हैं। इसके लिए आवश्यक है कि अपनी इस विलुप्त कही जाने वाली माता की तेजस्वी धारा की तलाश की जाय और इसके इतिहास का अध्ययन किया जाय। आज के वैज्ञानिक युग में यह असंभव नहीं है। यद्यपि भारत का साहित्य बहुत प्रमाणों के साथ सरस्वती की गाथा गा रहा है फिर भी सामान्य परंपरा में इसे विलुप्त कहा जा रहा है जो उचित नहीं है। सरस्वती की चर्चा वेदों में भी है। इसे प्लाक्ष्वती,वेद्समृति, वेदवती भी कहते है ! ऋग्वेदमें सरस्वती का अन्नवती तथा उदकवती के रूप में वर्णन आया है। यह नदी सर्वदा जल से भरी रहती थी और इसके किनारे अन्न की प्रचुर उत्पत्ति होती थी। कहते हैं, यह नदी हिमाचल में सिरमौरराज्य के पर्वतीय भाग से निकलकर अंबाला तथा कुरुक्षेत्र,कैथल होती हुई पटियाला राज्य में प्रविष्ट होकर सिरसा जिले की दृशद्वती (कांगार) नदी में मिल गई थी। प्राचीन काल में इस सम्मिलित नदी ने राजपूताना के अनेक स्थलों को जलसिक्त कर दिया था। यह भी कहा जाता है कि प्रयाग के निकट तक आकर यह गंगा तथा यमुना में मिलकर त्रिवेणी बन गई थी। कालांतर में यह इन सब स्थानों से तिरोहित हो गई, फिर भी लोगों की धारणा है कि प्रयाग में वह अब भी अंतःसलिला होकर बहती है। मनुसंहिता से स्पष्ट है कि सरस्वती और दृषद्वती के बीच का भूभाग ही ब्रह्मावर्त कहलाता था। सरस्वती नदी सभी सनातन ग्रन्थों तथा ऋग्वेद में वर्णित मुख्य नदियों में से एक है। ऋग्वेद के नदी सूक्त के एक मंत्र (१०.७५) में सरस्वती नदी को 'यमुना के पश्चिम' और 'सतलुज के पूर्व' में बहती हुई बताया गया है। उत्तर वैदिक ग्रंथों, जैसे ताण्डय और जैमिनीय ब्राह्मण में सरस्वती नदी को मरुस्थल में सूखा हुआ बताया गया है, महाभारतमें भी सरस्वती नदी के मरुस्थल में 'विनाशन' नामक जगह पर विलुप्त होने का वर्णन आता है। महाभारत में सरस्वती नदी के प्लक्षवती नदी, वेदस्मृति, वेदवती आदि कई नाम हैं।महाभारत, वायुपुराण अदि में सरस्वती के विभिन्न पुत्रों के नाम और उनसे जुड़े मिथक प्राप्त होते हैं। महाभारत के शल्य-पर्व, शांति-पर्व, या वायुपुराण में सरस्वती नदी और दधीचि ऋषि के पुत्र सम्बन्धी मिथक थोड़े थोड़े अंतरों से मिलते

(लेखिका सनातन चिंतक, अध्येता और हिंदी विभाग, सरदार भगतसिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रूद्रपुर, उधमसिंह नगर,उत्तराखंड में आचार्य हैं)

हैं। उन्हें संस्कृत महाकवि बाणभट्ट ने अपने ग्रन्थ 'हर्षचरित' में विस्तार दे दिया है। वह लिखते हैं- " एक बार बारह वर्ष तक वर्षा न होने के कारण ऋषिगण सरस्वती का क्षेत्र त्याग कर इधर-उधर हो गए, परन्तु माता के आदेश पर सरस्वती-पुत्र, सारस्वतेय वहां से कहीं नहीं गया। फिर सुकाल होने पर जब तक वे ऋषि वापस लौटे तो वे सब वेद आदि भूल चुके थे। उनके आग्रह का मान रखते हुए सारस्वतेय ने उन्हें शिष्य रूप में स्वीकार किया और पुनः श्रुतियों का पाठ करवाया. अश्वघोष ने अपने 'बुद्धचरित'काव्य में भी इसी कथा का वर्णन किया है। दसवीं सदी के जाने माने विद्वान राजशेखर ने 'काव्यमीमांसा' के तीसरे अध्याय में काव्य संबंधी एक मिथक दिया है कि जब पुत्र प्राप्ति की इच्छा से सरस्वती ने हिमालय पर तपस्या की तो ब्रह्मा ने प्रसन्न हो कर उसके लिए एक पुत्र की रचना की जिसका नाम था- काव्यपुरुष। काव्यपुरुष ने जन्म लेते ही माता सरस्वती की वंदना छंद वाणी में की- हे माता! मैं तेरा पुत्र काव्यपुरुष तेरी चरण वंदना करता हूँ जिसके द्वारा समूचा वाङ्मय अर्थरूप में परिवर्तित हो जाता है।.." ऋग्वेद तथा अन्य पौराणिक वैदिक ग्रंथों में दिये सरस्वती नदी के सन्दर्भों के आधार पर कई भू-विज्ञानी मानते हैं कि हरियाणा से राजस्थान होकर बहने वाली मौजूदा सूखी हुई घग्घर-हकरा नदी प्राचीन वैदिक सरस्वती नदी की एक मुख्य सहायक नदी थी, जो 5000-3000 ईसा पूर्व पूरे प्रवाह से बहती थी। उस समय सतलुज तथा यमुना की कुछ धाराएं सरस्वती नदी में आ कर मिलती थीं। इसके अतिरिक्त दो अन्य लुप्त हुई नदियाँ दृष्टावदी और हिरण्यवती भी सरस्वती की सहायक नदियां थीं, लगभग 1900 ईसा पूर्व तक भूगर्भी बदलाव की वजह से यमुना, सतलुज ने अपना रास्ता बदल दिया तथा दृष्टावदी नदी के 2600 ईसा पूर्व सूख जाने के कारण सरस्वती नदी भी लुप्त हो गयी। ऋग्वेद में सरस्वती नदी को नदीतमा की उपाधि दी गयी है। वैदिक सभ्यता में सरस्वती ही सबसे बड़ी और मुख्य नदी थी। इसरो द्वारा किये गये शोध से पता चला है कि आज भी यह नदी हरियाणा, पंजाब और राजस्थान से होती हुई भूमिगत रूप में प्रवाहमान है।

सरस्वती एक विशाल नदी थी। पहाड़ों को तोड़ती हुई निकलती थी और मैदानों से होती हुई अरब सागर में जाकर विलीन हो जाती थी। इसका वर्णन ऋग्वेद में बार-बार आता है। कई मंडलों में इसका वर्णन है। ऋग्वेद वैदिक काल में इसमें हमेशा जल रहता था। सरस्वती आज की गंगा की तरह उस समय की विशालतम नदियों में से एक थी। उत्तर वैदिक काल और महाभारत काल में यह नदी बहुत कुछ सूख चुकी थी। तब सरस्वती नदी में पानी बहुत कम था। लेकिन बरसात के मौसम में इसमें पानी आ जाता था। भूगर्भी बदलाव की वजह से सरस्वती नदी का पानी गंगा में चला गया, कई विद्वान मानते हैं कि इसी वजह से गंगा के पानी की महिमा हुई, भूचाल आने के कारण जब जमीन ऊपर उठी तो सरस्वती का पानी यमुना में गिर गया। इसलिए यमुना में सरस्वती का जल भी प्रवाहित होने लगा। सिर्फ इसीलिए प्रयाग में तीन नदियों का संगम माना गया, जबकि यथार्थ में वहां तीन नदियों का संगम नहीं है। वहां केवल दो नदियां हैं। सरस्वती कभी भी प्रयागराज तक नहीं पहुंची।

ऋग्वेद में सन्दर्भ

ऋग्वेद की चौथे मंडल को छोड़कर सरस्वती नदी का सभी (मंडलों) पुस्तकों में कई बार उल्लेख किया गया है। केवल यही

ऐसी नदी है जिसके लिए ऋग्वेद की ऋचा ६.६१,७.९५ और ७.९६ में पूरी तरह से समर्पित स्तवन दिये गये हैं।

प्रशस्ति और स्तुति

वैदिक काल में सरस्वती की बड़ी महिमा थी और इसे 'परम पवित्र' नदी माना जाता था, क्यों कि इसके तट के पास रह कर तथा इसी नदी के पानी का सेवन करते हुए ऋषियों ने वेद रचे और वैदिक ज्ञान का विस्तार किया। इसी कारण सरस्वती को विद्या और ज्ञान की देवी के रूप में भी पूजा जाने लगा। ऋग्वेद के 'नदी सूक्त' में सरस्वती का इस प्रकार उल्लेख है :-

'इमं में गंगे यमुने सरस्वती शुतुद्रि स्तोमं सचता परूष्ण्या असिक्न्या मरूद्वधे वितस्तयार्जीकीये श्रृणुह्या सुषोमया'

सरस्वती, ऋग्वेद में केवल 'नदी देवी' के रूप में वर्णित है (इसकी वंदना तीन सम्पूर्ण तथा अनेक प्रकीर्ण मन्त्रों में की गई है), किंतु ब्राह्मण ग्रथों में इसे वाणी की देवी या वाच् के रूप में देखा गया, क्योंकि तब तक यह लुप्त हो चुकी थी परन्तु इसकी महिमा लुप्त नहीं हुई और उत्तर वैदिक

वैदिक काल में एक और नदी दृषद्वती का वर्णन भी आता हैं। यह सरस्वती नदी की सहायक नदी थी। यह भी हरियाणा से हो कर बहती थी। कालांतर में जब भीषण भूकम्प आए और हरियाणा तथा राजस्थान की धरती के नीचे पहाड़ ऊपर उठे, तो नदियों के बहाव की दिशा बदल गई। दृषद्वती नदी, जो सरस्वती नदी की सहायक नदी थी, उत्तर और पूर्व की ओर बहने लगी। इसी दृषद्वती को अब यमुना कहा जाता है, इसका इतिहास 4,000 वर्ष पूर्व माना जाता है।

काल में सरस्वती को मुख्यतः, वाणी के अतिरिक्त बुद्धि या विद्या की अधिष्ठात्री देवी भी माना गया। ब्रह्मा की पत्नी के रूप में इसकी वंदना के गीत गाये गए हैं। ऋग्वेद में सरस्वती को नदीतमा की उपाधि दी गयी है। उसकी एक शाखा २.४१.१६ में इसे "सर्वश्रेष्ठ माँ, सर्वश्रेष्ठ नदी, सर्वश्रेष्ठ देवी" कह कर सम्बोधित किया गया है। यही प्रशंसा ऋग्वेद के अन्य छंदों ६.६१,८.८१,७.९६ और १०.१७ में भी की गयी है। ऋग्वेद के मंत्र ७.९.५२ तथा अन्य जैसे ८.२१.१८ में सरस्वती नदी को "दूध और घी" से परिपूर्ण बताया गया है। ऋग्वेद के श्लोक ३.३३.१ में इसे 'गाय की तरह पालन करने वाली' बताया गया है

ऋग्वेद के श्लोक ७.३६.६ में सरस्वती को सप्तसिंधु नदियों की जननी बताया गया है। अन्य वैदिक ग्रंथों में सन्दर्भ ऋग्वेद के बाद के वैदिक साहित्य में सरस्वती नदी के विलुप्त होने का उल्लेख आता है, इसके अतिरिक्त सरस्वती नदी के उद्गम स्थल की 'प्लक्ष प्रस्त्रवन' के रूप में पहचान की गयी है, जो यमुनोत्री के पास ही अवस्थित है।

यजुर्वेद

यजुर्वेद की वाजस्नेयी संहिता ३४.११ में कहा गया है कि पांच नदियाँ अपने पूरे प्रवाह के साथ सरस्वती नदी में प्रविष्ट होती हैं, ये पांच नदियाँ पंजाब की सतलुज, रावी, व्यास, चेनाव और दृष्टावती हो सकती हैं। वी. एस वाकणकर के अनुसार पांचों नदियों के संगम के सूखे हुए अवशेष राजस्थान के बाड़मेर या जैसलमेर के निकट पंचभद्र तीर्थ पर देखे जा सकते है।

रामायण

वाल्मीकि रामायण में भरत के कैकय देश से अयोध्या आने के प्रसंग में सरस्वती और गंगा को पार करने का वर्णन है- 'सरस्वतीं च गंगा च युग्मेन प्रतिपद्य च, उत्तरान् वीरमत्स्यानां भारूण्डं प्राविशद्वनम्' सरस्वती नदी के तटवर्ती सभी तीर्थों का वर्णन महाभारत में शल्यपर्व के 35 वें से 54 वें अध्याय तक सविस्तार दिया गया है। इन स्थानों की यात्रा बलराम ने की थी। जिस स्थान पर मरूभूमि में सरस्वती लुप्त हो गई थी उसे 'विनशन' कहते थे।

महाभारत

महाभारत में तो सरस्वती नदी का उल्लेख कई बार किया गया है। सबसे पहले तो यह बताया गया है कि कई राजाओं ने इसके तट के समीप कई यज्ञ किये थे। वर्तमान सूखी हुई सरस्वती नदी के समान्तर खुदाई में 5500-4000 वर्ष पुराने शहर मिले हैं जिन में पीलीबंगा, कालीबंगा और लोथल भी हैं। यहाँ कई यज्ञ कुण्डों के अवशेष भी मिले हैं, जो महाभारत में वर्णित तथ्य को प्रमाणित करते हैं। महाभारत में यह भी वर्णन आता है कि निषादों और मलेच्छों से द्वेष होने के कारण सरस्वती नदी ने इनके प्रदेशों मे जाना बंद कर दिया जो इसके सूखने की प्रथम अवस्था को दर्शाती है। यह भी वर्णन मिलता है कि सरस्वती नदी मरुस्थल में विनाशन नामक स्थान पर लुप्त हो कर किसी स्थान पर फिर प्रकट होती है। महाभारत में वर्णन आता है कि ऋषि वसिष्ठ सतलुज में डूब कर आत्महत्या का प्रयास करते हैं जिससे नदी सौ से अधिक धाराओं में टूट जाती है। यह तथ्य सतलुज नदी के अपने पुराने मार्ग को बदलने की घटना को प्रमाणित करता है, क्योंकि प्राचीन वैदिक काल में सतलुज नदी सरस्वती में ही जा कर अपना प्रवाह छोड़ती थी। बलरामजी द्वारा इसके तट के समान्तर प्लक्ष पेड़ (प्लक्षप्रस्त्रवण, यमुनोत्री के पास) से प्रभास क्षेत्र (वर्तमान कच्छ का रण) तक की गयी तीर्थयात्रा का वर्णन भी महाभारत में आता है। महाभारत के अनुसार कुरुक्षेत्र तीर्थ सरस्वती नदी के दक्षिण और दृष्टावती नदी के उत्तर में स्थित है।

पुराण में संदर्भ

सिद्धपुर (गुजरात) सरस्वती नदी के तट पर बसा हुआ है। पास ही बिंदुसर नामक सरोवर है, जो महाभारत का 'विनशन' हो सकता है। यह सरस्वती मुख्य सरस्वती ही की धारा जान पड़ती है। यह कच्छ में गिरती है, किंतु मार्ग में कई स्थानों पर लुप्त हो जाती है।'सरस्वती' का

अर्थ है- सरोवरों वाली नदी, जो इसके छोड़े हुए सरोवरों से सिद्ध होता है। श्रीमद्भागवत "श्रीमद् भागवत (5,19,18)" में यमुना तथा दृषद्वती के साथ सरस्वती का उल्लेख है।"मंदाकिनीयमुनासरस्वतीदृषद्व दी गोमतीसरयु" "मेघदूत पूर्वमेघ" में कालिदास ने सरस्वती का ब्रह्मावर्त के अंतर्गत वर्णन किया है। "कृत्वा तासामभिगममपां सौम्य सारस्वतीनामन्तःशुद्धस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्णः" सरस्वती का नाम कालांतर में इतना प्रसिद्ध हुआ कि भारत की अनेक नदियों को इसी के नाम पर 'सरस्वती' कहा जाने लगा। पारसियों के धर्मग्रंथ अवेस्ता में भी सरस्वती का नाम हरहवती मिलता है।

उद्गम स्थल तथा विलुप्त होने के कारण वैदिक सरस्वती नदी (हरे रंग के जल वाली)

महाभारत में मिले वर्णन के अनुसार सरस्वती नदी हरियाणा में यमुनानगर से थोड़ा ऊपर और शिवालिक पहाड़ियों से थोड़ा सा नीचे आदिबद्री नामक स्थान से निकलती थी। आज भी लोग इस स्थान को तीर्थस्थल के रूप में मानते हैं और वहां जाते हैं। किन्तु आज आदिबद्री नामक स्थान से बहने वाली नदी बहुत दूर तक नहीं जाती एक पतली धारा की तरह जगह-जगह दिखाई देने वाली इस नदी को ही लोग सरस्वती कह देते हैं। वैदिक और महाभारत कालीन वर्णन के अनुसार इसी नदी के किनारे ब्रह्मावर्त था, कुरुक्षेत्र था, लेकिन आज वहां जलाशय हैं। जब नदी सूखती है तो जहां-जहां पानी गहरा होता है, वहां-वहां तालाब या झीलें रह जाती हैं और ये तालाब और झीलें अर्ध्दचन्द्राकार शक्ल में पायी जाती हैं। आज भी कुरुक्षेत्र में ब्रह्मसरोवर या पेहवा में इस प्रकार के अर्ध्दचन्द्राकार सरोवर देखने को मिलते हैं, लेकिन ये भी सूख गए हैं। लेकिन ये सरोवर प्रमाण हैं कि उस स्थान पर कभी कोई विशाल नदी बहती रही थी और उसके सूखने के बाद वहां विशाल झीलें बन गयीं। भारतीय पुरातत्व परिषद् के अनुसार सरस्वती का उद्गम उत्तरांचल में रूपण नाम के हिमनद (ग्लेशियर) से होता था। रूपण ग्लेशियर को अब सरस्वती ग्लेशियर भी कहा जाने लगा है। नैतवार में आकर यह हिमनद जल में परिवर्तित हो जाता था, फिर जलधार के रूप में आदिबद्री तक सरस्वती बहकर आती थी और आगे चली जाती थी। वैज्ञानिक और भूगर्भीय खोजों से पता चला है कि किसी समय इस क्षेत्र में भीषण भूकम्प आए, जिसके कारण जमीन के नीचे के पहाड़ ऊपर उठ गए और सरस्वती नदी का जल पीछे की ओर चला गया। वैदिक काल में एक और नदी दृषद्वती का वर्णन भी आता हैं। यह सरस्वती नदी की सहायक नदी थी। यह भी हरियाणा से हो कर बहती थी। कालांतर में जब भीषण भूकम्प आए और हरियाणा तथा राजस्थान की धरती के नीचे पहाड़ ऊपर उठे, तो नदियों के बहाव की दिशा बदल गई। दृषद्वती नदी, जो सरस्वती नदी की सहायक नदी थी, उत्तर और पूर्व की ओर बहने लगी। इसी दृषद्वती को अब यमुना कहा जाता है, इसका इतिहास 4,000 वर्ष पूर्व माना जाता है। यमुना पहले चम्बल

की सहायक नदी थी। बहुत बाद में यह प्रयागराज में गंगा से जाकर मिली। यही वह काल था जब सरस्वती का जल भी यमुना में मिल गया। ऋग्वेद काल में सरस्वती समुद्र में गिरती थी। जैसा ऊपर भी कहा जा चुका है, प्रयाग में सरस्वती कभी नहीं पहुंची। भूचाल आने के कारण जब जमीन ऊपर उठी तो सरस्वती का पानी यमुना में गिर गया। इसलिए यमुना में यमुना के साथ सरस्वती का जल भी प्रवाहित होने लगा। केवल इसीलिए प्रयाग में तीन नदियों का संगम माना गया जबकि भूगर्भीय यथार्थ में वहां तीन नदियों का संगम नहीं है। वहां केवल दो नदियां हैं। सरस्वती कभी भी प्रयागराज तक नहीं पहुंची।

सरस्वती नदी और हड़प्पा सभ्यता

सरस्वती नदी के तट पर बसी सभ्यता को जिसे हड़प्पा सभ्यता या सरस्वती सभ्यता या सिन्धु-सरस्वती सभ्यता कहा जाता है, यदि इसे वैदिक ऋचाओं से हटा कर देखा जाए तो फिर सरस्वती नदी मात्र एक नदी रह जाएगी, सभ्यता खत्म हो जाएगी। सभ्यता का इतिहास बताता है कि सरस्वती नदी तट पर बसी बस्तियों से मिले अवशेष तथा इन अवशेषों की कहानी केवल हड़प्पा सभ्यता से जुड़ती है। हड़प्पा सभ्यता की 2600 बस्तियों में से वर्तमान पाकिस्तान में सिन्धु तट पर मात्र 265 बस्तियां हैं, जबकि शेष अधिकांश बस्तियां सरस्वती नदी के तट पर मिलती हैं। अभी तक हड़प्पा सभ्यता को सिर्फ सिन्धु नदी की देन माना जाता रहा था, लेकिन अब नये शोधों से सिद्ध हो गया है कि सरस्वती का सिन्धु सभ्यता के निर्माण में बहुत बड़ा योगदान रहा है। आज के समय में यह विलुप्त मानी गई है जबकि ऐसा नहीं है क्योंकि नदी का विलुप्त होना संभव नहीं। सभ्यता के विकास क्रम में यह विलोप एक दृश्य भाव है। सरस्वती इस सृष्टि के साथ थीं, हैं और रहेंगी।

कुंभ लोकपक्ष

सर्वेश तिवारी श्रीमुख

> गाँव देहात के सामान्य जन के लिए कुम्भ साधु संतों का मेला भी है। हजारों लोग तो केवल बाबाओं के सामूहिक दर्शन के सात्विक लोभ में जाते हैं नहान में। भाँति भाँति के बाबा लोग... कोई जटा वाले, कोई बिना जटा वाले... कोई दाढ़ी वाले, कोई बिना दाढ़ी वाले... कोई दूध की भांति धवल निर्मल तो कोई देह भर में भभूत लपेटे हुए... किसी के शरीर पर दस मनई के बराबर कपड़ा लदा है तो कोई नङ्ग धड़ंग... हर भगवाधारी को देवता मानने वाला निश्छल देहाती मन सबके चरणधूलि ले लेना चाहता है, पर हो नहीं पाता। वे दूर से ही प्रणाम करते हैं...

जिस दौर में बेटियों के हाथों पर चढ़ने वाली मेहंदी का रंग भादो में बरसने के मेघों की दया पर टिका होता था, उस दौर भी लोग दो-दो सौ कोस चल कर कुम्भ नहाने पहुँचते थे। बनिहारी कर के बटोरे गए दो दो पैसों के बल पर बुढ़ापे का सबसे बड़ा सपना पूरा करने निकलती महिलाएं तो टोले भर की बहुएं आ कर पाँव छूतीं... कोई पैरों में महावर लगा देती तो कोई अपने हाथों केश संवार देती... जैसे विवाह के दिन किसी कन्या का श्रृंगार हो रहा हो। कुम्भ का स्नान तो छोड़िये, स्नान करने की सोच लेने भर से लोग अपने समाज के लिए पूज्य हो जाते थे। समय बदला है, जीवनशैली बदली है, सामाजिक साहचर्य का भाव भी दरक गया है, पर कुम्भ नहान के लिए निकलते बुजुर्ग अभी भी अपने साथ पड़ोस की श्रद्धा,सम्मान ले कर जाते हैं।

बहुत दिन नहीं हुए, अभी पिछली ही पीढ़ी के उम्रदराज लोग आग तापने बैठते तो कहते- "तीन बच्चे तो बियहा गए, बस छोटकी बेटी का लगन लग जाय तो हम भी गङ्गा नहा लें।" जैसे गङ्गा नहा लेना ही जीवन की पूर्णता हो... हाँ भाई साहब! गङ्गा नहाने को लोक ने सदैव इसी भाव से देखा है। कुम्भ इसी भाव का उच्चतम बिन्दु है।

लोक अपने पर्वों में श्रद्धा और उल्लास का संगम गढ़ता है। कुम्भ केवल गङ्गा मइया में डुबकी लगा लेने से पूरा नहीं होता। कुम्भ पूरा होता है जब बाबा टोले भर के नाती-पोतों के लिए पतला वाला माला और मुट्ठी भर रक्षासूत्र खरीद लें। जब काकी पड़ोस की चनेसर बो के होने वाले बच्चे के लिए झुनझुना खरीद लें। गङ्गा मइया की ओर बार बार हाथ जोड़ कर अपने

लेखक राष्ट्रवादी चिन्तक, लोकपक्ष के रचनाकार और शिक्षक हैं।

बच्चों के लिए दुनिया जहान का सुख मांगते मांगते काकी को कुछ याद आये और वह देवरानी की भौजाई की छोटकी निपूती पतोह के लिए बेटा मांगते मांगते रो पड़े, तब कुम्भ का नहान पूरा होता है। यह देश अपने मूल चरित्र में बहुत पवित्र है, बहुत ही निर्मल, करुण, कोमल...

कुम्भ में एक दूसरे का हाथ थाम कर धीरे धीरे चलते असंख्य बृद्ध जोड़े दिखते हैं। पूछिये तो पता चलता है कि दो सौ कोस दूर से आये हैं और साथ में कोई नहीं। किसके भरोसे? तो उत्तर मिलेगा एक दूसरे के... अस्सी साल का बूढ़ा व्यक्ति जो स्वयं बिना लाठी के चल नहीं पाता, वह पत्नी का सहारा बना हुआ है। और उसी आयु की पत्नी पति के लिए अन्नपूर्णा बनी साथ चल रही है। आप सोचते रह जाएंगे कि कैसे सम्भव होता है यह, पर कोई उत्तर नहीं मिलेगा। वस्तुतः यही धर्म की शक्ति है। वे घर से निकल पड़ते हैं और बस हो जाता है...

गाँव देहात के सामान्य जन के लिए कुम्भ साधु संतों का मेला भी है। हजारों लोग तो केवल बाबाओं के सामूहिक दर्शन के सात्विक लोभ में जाते हैं नहान में। भाँति भाँति के बाबा लोग... कोई जटा वाले, कोई बिना जटा वाले... कोई दाढ़ी वाले, कोई बिना दाढ़ी वाले... कोई दूध की भांति धवल निर्मल तो कोई देह भर में भभूत लपेटे हुए... किसी के शरीर पर दस मनई के बराबर कपड़ा लदा है तो कोई नङ्ग धड़ंग... हर भगवाधारी को देवता मानने वाला निश्छल देहाती मन सबके चरणधूलि ले लेना चाहता है, पर हो नहीं पाता। वे दूर से ही प्रणाम करते हैं...

कभी कभी सोचता हूँ, मध्यकाल में जब सभ्यता अपने इतिहास के सबसे बड़े दुर्दिन से गुजर रही थी, तब भी विदेशी सत्ता के केंद्र दिल्ली आगरा के उतने निकट प्रयाग में, कुम्भ के समय लाखों निहत्थे हिंदुओं का श्राद्ध भाव से जुट जाना कितनी बड़ी बात रही होगी... बाबर और औरंगजेब के समय में कुम्भ बर्बरता के सामने सभ्यता की चुनौती ही थी। अकबर का सन 1575 में प्रयाग का नाम बदल कर इलाहाबाद करना वस्तुतः हिंदुओं से उनके सबसे बड़े तीर्थ को छीन लेने का प्रयास ही तो था। ऐसा पहली बार नहीं हो रहा था, कभी संस्कृत शिक्षा का गढ़ रहे अजयमेरु में अपने एक फकीर को बैठा कर उसे इसी तरह हिंदुओं से छीना गया था। पर इस बार हिन्दू डिगे नहीं। अकबर की कागजें चीखती रहीं, पर नहान में जुटती लाखों की भीड़ हर बार इलाहाबाद को प्रयाग बना देती थीं। यह कुम्भ की शक्ति थी।

एक गुरुवर्ष भर पर लगने वाला कुम्भ मेला सभ्यता के लिए नई ऊर्जा प्राप्त करने की बेला है। एक ही घाट पर अपने पापों का प्रायश्चित और सुखद भविष्य की याचना करते राजा राजा रंक सभ्यता के विरुद्ध गढ़े गए समस्त साम्प्रदायिक कुतर्कों का मौन उत्तर तो देते ही हैं, यह स्वतःस्फूर्त विशाल आयोजन सृष्टि के अंत तक सभ्यता के पुष्पित पल्लवित होते रहने का भरोसा और राह में आने वाली बर्बर बाधाओं से संघर्ष का साहस और शक्ति देता है। सदैव विश्व का कल्याण चाहने वाली परम्परा के करोड़ों लोग जब एक घाट पर 'धर्म की जय' मनाएंगे, तो देव कैसे न सुनेंगे भला?

सप्तपुरियों का संगम स्नान

रात्रि का अंतिम प्रहर! सङ्गम तट के उस निर्जन हिस्से में कोई कोलाहल नहीं था। कुछ था तो अपनी धारा में अमृत ले कर बहती गङ्गा यमुना सरस्वती का पवित्र स्वर, जैसे तीन माताएं साथ बैठ कर प्रभाती गा रही हों। ठीक उसी समय, छह देवियां उस निर्जन घाट पर पहुँचीं। अहा! देखने वालों की आंखें चौंधिया जाएं, ऐसा वैभव... अचानक नेपथ्य से प्रार्थना के स्वर गूंजने लगे... सबसे आगे चल रही देवी ने पीछे से एक का हाथ पकड़ कर खींचा और मुस्कुराते हुए बोलीं- अयोध्या बेन! अबकी तुम आगे चलो न! आज तुमसे अधिक वैभवशालिनी संसार में और कोई नहीं... सबने मुस्कुरा कर जैसे द्वारावती(द्वारिका) की बात का समर्थन किया। नख से शिख तक रत्नजड़ित आभूषणों से सुसज्जित देवी अयोध्या के वस्त्रों से समस्त नक्षत्रों की शोभा झर रही थी। उन्होंने सकुचाते हुए हाथ छुड़ाना चाहा तो पीछे से माया(हरिद्वार) का पवित्र स्वर उभरा- सचमुच आगे चलो बहन! तुम्हारी अगुआई में चलने में हमें कितनी प्रसन्नता होगी, यह केवल महादेव जानते हैं। तुम्हारे दिन क्या लौटे, सभ्यता के दिन लौट गए..." "अरे मैंने कहा था न! माता का वैभव उसकी संतान के पुरुषार्थ से निर्मित होता है। एक पुत्र यशश्वी हो जाय तो दिन फिर ही जाते हैं। और यही हुआ... आपका वह साधु पुत्र! अहा... जुग जुग जिये हमारा बच्चा!" यह अवंतिका का स्वर था। देवी अवंतिका की बात सुनते ही बोल पड़ीं अयोध्या, "सच कहा बहन! युग युग जिये हमारा बेटा... पाँच सदी तक चले संघर्षों के घाव जैसे भर गए हैं। पर उसमें तुम्हारे पुत्रों का योगदान भी कम नहीं बहन द्वारावती... पिछले कुम्भ तक सर्वाधिक वैभवशालिनी दिखी द्वारावती ने अपनी बड़ाई सुनते ही बड़ी चतुराई से बात को पलट दिया और माया से कहा, " तुम अपनी सुनाओ बहन! तुम्हारे यहाँ सब कुशल तो है?" माया के अधरों पर बसी निश्छल मुस्कान तनिक धूमिल हो गयी। कहा, " प्रदूषण का ज्वाला अब मेरे शांतिवन को भी जलाने लगी है दीदी! सब पहले जैसा तो नहीं रहा। वेद मंत्रों से गूंजती घाटियों में घुसपैठियों की कर्कश चीखें भी गूंजने लगीं हैं अब तो... ईश्वर ही जाने कि आगे क्या होगा..." देवी अवंतिका ने गम्भीर स्वर में कहा, "संघर्षों से मत घबड़ाना बहन! सभ्यता के भाग्य में कभी कभी युगों लम्बी अंधेरी रातें भी आती हैं। यहाँ तक कि सूर्योदय की कोई आशा ही नहीं दिखती। फिर भी, एक न एक दिन प्रकाश फैलता ही है। अब मुझे ही देखो, लगभग चार शताब्दी तक पाप की काली छाया में जीना पड़ा था मुझे। फिर एक दिन आया मेरा प्रिय पुत्र बाजीराव बल्लाळ! मेरा जीर्णोद्धार हुआ, महाकाल की पुनर्प्रतिष्ठा हुई, मेरा वैभव लौटा! दुख सुख तो आते ही रहते हैं।" देवी अयोध्या ने फिर बातचीत की दिशा बदली। उन्होंने सुन्दर रेशमी साड़ी पहने खड़ी देवी से कहा, "आप बताएं बहन कांची! आप चुपचुप सी क्यों हैं? आपने पिछली बार हमारे लिए कांजीवरम साड़ियां लाने के लिए कहा था, लाईं नहीं?" "मया सर्वम् भगिनी आनयितम! परन्तु यूयं परस्परं व्यस्ताः सन्ति!" कांची ने कहना शुरू किया कि शेष सब खिलखिला पड़ीं। सबसे बड़ी होने के कारण सभी बहनें कांची से परिहास करती थीं। माया ने कहा, "भला हुआ कि आपने तमिल में न कहा दीदी! पर अभी आप प्रयाग में खड़ी हैं, हिन्दी में बोलिये। और शीघ्र हमारी साड़ियां दिखाइए।" कांची प्रसन्न भाव से अपनी गठरी खोल कर सबको उपहार बांटने लगीं। रात्रि का चतुर्थ प्रहर प्रारम्भ होने ही वाला था। देवी द्वारावती ने कहा, "शीघ्र स्नान कर के चलो बहनों! अब हमें काशी भी चलना है।" माया ने हंसते हुए कहा, "हाँ चलना तो पड़ेगा ही। देवी काशी अपने महादेव को छोड़ कर कहीं हिलती जो नहीं हैं, तो उनसे मिलने उनके घर जाना ही पड़ेगा। उनकी छटा भी निराली हुई पड़ी है। चलो, कुछ उपहार उनसे भी वसूलने हैं हमें..." सभी हँस पड़ीं। अबतक चुपचाप खड़ी देवी मथुरा ने कहा, "मेरे दुख के दिन कब फिरेंगे बहनों? मेरे लिए भी तनिक प्रार्थना करो..." देवी अयोध्या में आगे बढ़ कर उन्हें गले लगा लिया और पीठ सहलाते हुए कहा, "काशी चलो बहन! वहीं से कोई मार्ग निकलेगा। अबकी महादेव से कहेंगी हम सब..."

(मान्यता है कि प्रत्येक कुम्भ में स्नान के लिए सप्तपुरियों में से छह पुरियाँ एक साथ आती हैं। बस काशी कहीं नहीं जाती!)

कुंभ के कोतवाल

जब ब्रह्मा जी ने प्रयागराज में सृष्टि का प्रथम यज्ञ किया था, तब उस यज्ञ की रक्षा भगवान विष्णु ने द्वादश रूपों में की थी। यही बारह माधव मंदिर भगवान विष्णु के विभिन्न रूपों को समर्पित हैं। द्वादश माधव तीर्थराज प्रयागराज के विभिन्न स्थानों पर स्थित हैं और इनका वर्णन पौराणिक ग्रंथों में मिलता है। माना जाता है कि इन माधव मंदिरों के दर्शन करने से व्यक्ति के पापों का नाश होता है और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। प्रयागराज के मुख्य देवता विष्णु कहे गये हैं, इन्हें अलग-अलग नामों से जाना जाता है। प्रयागराज क्षेत्र को स्थानीय स्तर पर माधव क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है, द्वादश माधव का वर्णन इस प्रकार है।

सृष्टि का प्रथम यज्ञ प्रयाग में प्रारंभ हुआ जो कल्पवास का मूल आधार है। जब देवता, दानव, यक्ष, मानव यहाँ आने लगे तो इस क्षेत्र की रक्षा के लिए ब्रह्मा जी ने सृष्टि के पालनकर्ता विष्णु जी से कहा कि यहां इस क्षेत्र में मेले की रक्षा करें। भगवान विष्णु प्रत्येक दिशा में द्वादश माधव स्वरूप में यहाँ विराजमान हुए जिनके नाम त्रिवेणी माधव, शँख माधव, सँकष्टहर माधव, वेणी माधव, असि माधव, मनोहर माधव, अनंत माधव, बिंदु माधव, पद्म माधव, गदा माधव, आदि माधव, चक्र माधव हैं।

द्वादश माधव का नेतृत्व करने का जिम्मा वेणी माधव को सौंपी गई जिन्हें कुंभ का कोतवाल कहा जाता है। सभ्यता की शुरुआत का साक्षी बना प्रथम कल्पवास, उसके बाद एक महीने का कल्पवास प्रत्येक मनुष्य, यति, देव, किन्नर, अन्यान्य प्राणी का धर्म बन गया किंतु आज भी उनकी रक्षा का दायित्व द्वादश माधव पर ही है। साल में एक बार द्वादश माधव यात्रा भी निकाली जाती है।परम्परा है कि माघ मेले की शुरुआत में वेणी माधव के स्वरूप को भ्रमण कराया जाता है उसके बाद यह माना जाता है कि पौष पूर्णिमा से चलने वाले माघ मेले के दौरान वेणी माधव माघ मेले में ही विचरण करते हुए माघ मेले की रक्षा करेंगे। कल्पवासियों की पूजा अर्चना तभी सम्पूर्ण मानी जाती है जब वे कल्पवास के सम्पन्न होने पर वेणी माधव मंदिर जाकर उनका दर्शन करें। मंदिर में शालिग्राम शिला से बनी वेणी माधव की प्रतिमा के साथ त्रिवेणी जी की प्रतिमा भी है। त्रिवेणी जी की प्रतिमा भी माधव की तरह ही शंख चक्र धारण लिए हुए है. माधव विष्णु रूप में खड़े हैं पर त्रिवेणी जी कमल पर विराजमान हैं। कहा जाता है कि ये इस रूप विष्णु जी की यह अद्वितीय प्रतिमा है जो कहीं और नहीं है। पूरे माघ मेले के दौरान वेणी माधव मंदिर में श्रद्धालुओं के आने का सिलसिला जारी रहता है। वेणी माधव जी को रिझाने के लिए, उनकी कृपा माघ मेले पर बनी रहे इसके लिए पूजा पाठ के अलावा कई कलाकार भी मंदिर में प्रस्तुति देतेहैं।

– संस्कृति पर्व

विशेष आलेख

डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी

महाकुंभ का यह आयोजन स्नान मात्र नहीं है। ध्यान देने की बात है कि साधारण लोग ग्रीष्म ऋतु में स्नान करते हैं। गर्मी में स्नान करते तो त्वचा भीगती, साधारण आनंद आता, जिसे हर कोई आसानी से करना चाहता, बार बार करना चाहता। पर जो चीज जितनी सरलता से प्राप्त होती है, उतनी ही शीघ्रता से समाप्त भी हो जाती है। माघ की ठिठुरन भरी भोर में, जब कंबल या वस्त्र से बाहर हाथ निकालने का साहस न होता हो, परम शीतल गतिमान जल में स्नान करना जीवन की एक घटना बन जाता है।

संयुक्त निदेशक
एसओएल, दिल्ली विश्वविद्यालय

आत्मानुशासन का महापर्व कुंभ-मेला

भारतीय परंपरा बाहर से अधिक, भीतर की ओर देखने को; दूसरों से ज़्यादा स्वयं को जानने को तथा पिंड में निहित ब्रह्मांड को पहचानने को महत्व देती रही है। कोई बाहरी सत्ता, कोई सरकार या प्रशासक आपको संचालित और शासित करे उससे अच्छा है कि आप स्वयं द्वारा शासित हों। पशु और मनुष्य में यहीं अंतर आता है। धीरे धीरे विकास के क्रम में हम आत्म को पहचानने की कला और आत्म नुशासन के आनंद को भूलते चले गए। भारत में आयोजित होनेवाला दुनिया का सबसे बड़ा मेला 'कुंभ' इस आत्मानुशासन का जीता जागता प्रमाण है।

भारतीय संस्कृति द्वारा प्राप्त कुछ सबसे सुंदर और अर्थगर्भी शब्दों में से एक है-'आत्म'। इसी आत्म से आत्मा, महात्मा, सर्वात्मा, परमात्मा आदि अनेक शब्द बनते हैं। यह शब्द भारतीय संस्कृति की एक बड़ी विशेषता की ओर संकेत करता है। भारतीय परंपरा बाहर से अधिक, भीतर की ओर देखने को; दूसरों से ज्यादा स्वयं को जानने को तथा पिंड में निहित ब्रह्मांड को पहचानने को महत्व देती रही है। कोई बाहरी सत्ता, कोई सरकार या प्रशासक आपको संचालित और शासित करे उससे अच्छा है कि आप स्वयं द्वारा शासित हों। पशु और मनुष्य में यहीं अंतर आता है। धीरे धीरे विकास के क्रम में हम आत्म को पहचानने की कला और आत्म नुशासन के आनंद को भूलते चले गए। भारत में आयोजित होनेवाला दुनिया का सबसे बड़ा मेला 'कुंभ' इस आत्मानुशासन का जीता जागता प्रमाण है। यह मात्र मेला नहीं प्रकृति और संस्कृति का मंजुल मिश्रण करनेवाली संपूर्ण जीवन दृष्टि है।

कुंभ सिर्फ़ एक मेला या लोगों का जमावड़ा नहीं है बल्कि दुनिया भर के समाजशास्त्रियों के लिए इसलिए भी आश्चर्य का विषय रहा है कि जब कोई व्यवस्थित सरकार, कोई बाह्य शक्ति, कोई प्रबंधन तंत्र नहीं होता था तब करोड़ों लोग कैसे और किस शक्ति से इतना विशाल और सफल आयोजन सदियों सदियों से संचालित करते आ रहे हैं। देश के कोने-कोने से कुंभ मेले में पहुंचनेवाले लोगों को, संगम के जल का स्पर्श करने जाते लोगों के चेहरे को कभी ध्यान से देखिए, उनका हुलास, उनकी आंखों की चमक कुछ कहती है। इन लोगों को जब कोई पैसे देकर बुलाता, या आदेश देकर पहुंचाता तो यह उल्लास, यह प्रेम, यह आनंद नहीं होता। 12 वर्षों के बाद फिर से तन-मन को ही नहीं आत्म ा को भिगोने का यह अवसर जीवन में कब मिलेगा, कौन जानता है? जैसे बिछड़ा हुआ प्रेमी उत्कट लगन के साथ किसी आत्म ीय से मिलने चले, जैसे पहाड़ी नदी हहराते हुए समुद्र की ओर बढ़े, वैसे ही करोड़ों पांव, एक अदृश्य डोर से बंधे हुए, सहस्त्रो वर्षों की सांस्कृतिक ऊर्जा से भरे हुए प्रयागराज की ओर जब बढ़ते हैं तो दुनिया के सबसे सुंदर दृश्यों में से एक दृश्य का सृजन होता है। इसी प्रेम के कारण कुंभ मेला को किसी बाह्य शक्ति की आवश्यकता नहीं पड़ती, जन-जन में व्याप्त इस आत्म ानुशासन की जड़ें इस प्रेम की संस्कृति में निहित हैं।

महाकुंभ का यह आयोजन स्नान मात्र नहीं है। ध्यान देने की बात है कि साधारण लोग ग्रीष्म ऋतु में स्नान करते हैं। गर्मी में स्नान करते तो त्वचा भीगती, साधारण आनंद आता, जिसे हर कोई आसानी से करना चाहता, बार बार करना चाहता। पर जो चीज जितनी सरलता से प्राप्त होती है, उतनी ही शीघ्रता से समाप्त भी हो जाती है। माघ की ठिठुरन भरी भोर में, जब कंबल या वस्त्र से बाहर हाथ निकालने का साहस न होता हो, परम शीतल गतिमान जल में स्नान करना जीवन की एक घटना बन जाता है। तब जल की ठंडक त्वचा मात्र को नहीं भिगोती, क्षण भर के लिए सांस रुक जाती है, जल तत्व शरीर के किसी अदृश्य कोने को झंकृत कर देता है, तब एक अलौकिक अनुभव प्राप्त होता है और उस पल में ऋषि मुनियों से, सहस्त्रों वर्षों से स्नान करते आ रहे पूर्वजों से हमारा संबंध जुड़ जाता है। कुंभ स्थल पर घट से छलका अमृत तो हर समय यहीं पर रहता है पर ग्रह नक्षत्रों के संयोग के साथ इस शीत ऋतु में आयोजन की परिकल्पना करनेवाले हमारे पूर्वजों ने अद्भुत योजना बनायी है। यह स्नान नहीं तप है, तप में वेदना होती है, वेदना स्मृति में स्थान बनाती है, प्रसन्नता शीघ्र विस्मृत हो जाती है, वेदना सालों साल याद रहती है। इसीलिए वेदना का संबंध वेद और ज्ञान से जुड़ता है। वेदना अपने चरम रूप में आनंद स्वरूपा हो जाती है। यह स्नान इसीलिए ज्ञान और आनंद का उत्सव बन जाता है। महाकुंभ अनेक अर्थों में महासंगम बन जाता है। यह केवल गंगा-यमुना-सरस्वती का ही नहीं, लोक और शास्त्र का, विविध प्रकार के ज्ञान का, भिन्न जीवन दृष्टियों का भी महासंगम है।

सभी पक्षों के विस्तार में जाने का यहां अवसर नहीं बस एक पक्ष की चर्चा प्रासंगिक होगी। लोक और शास्त्र को अनेक लोग विरोधी की तरह प्रस्तुत करते हैं। महाकुंभ सप्रमाण दिखाता है कि भारतीय

समाज लोक और शास्त्र दोनों से संचालित होता है और ये विरोधी नहीं एक दूसरे के पूरक हैं। जितने महत्वपूर्ण कवि हुए उनमें शास्त्र और लोक के बीच की आवाजाही उतनी ही बड़ी रही है जिसे श्रीरामचरित मानस जैसे महाकाव्यों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

साधारण शब्दों में कहें तो धर्म के दो पक्ष होते हैं- विचार(भीतरी) और आचार या आचरण (बाह्य)। दोनों अभिन्न हैं। इन दोनो पक्षों की अपनी विशेषता होती है। विचार, शिक्षित एवं प्रबुद्ध वर्ग से अधिक जुड़ता है जबकि आचार बहुसंख्यक समाज के दैनंदिन जीवन के कार्यकलापों में अभिव्यक्त होता है। विचार सूक्ष्म होता है, आचार प्रत्यक्ष। विचार भीतरी होता है, आचार बाह्य। विचार मूल होता है आचार आनुषंगिक। विचार समय के साथ तेजी से परिवर्तनशील होता है, आचार में दृढ़ता अधिक होती है, वह धीरे-धीरे बदलता है। उदाहरण के लिए 'बड़ों को सम्मान देना चाहिए' यह विचार है और दंडवत करना, पैर छूना या प्रणाम करना आचार है। अपने जीवन के लिए किसी परम शक्ति के प्रति आभारी होना विचार है और धूप दीप जलाकर पूजा करना आचार। किसी भी धर्म के विकास और विस्तार में विचार के साथ-साथ आचार की भी बड़ी भूमिका होती है। विचार और आचार दोनों एक दूसरे को पुष्ट करते हुए साथ चलते हैं कई बार लोक के स्तर पर विचार, आचार के रूप में पहुँचता है और उसका रूप थोड़ा बदल जाता है जिसे लोग भ्रमवश कुरीति समझ बैठते हैं। अनेक अवसरों पर बड़ी संख्या में आम जनों का स्नान, पूजा, ध्यान करने जाने को तथाकथित विकसित लोगों ने कुरीति समझते हुए सीमित अर्थों में देखा और उसको पिछड़ेपन का प्रतीक माना जबकि ये परम्परायें न केवल समृद्ध जीवनशैली का प्रतीक रही हैं अपितु पूरे भारत को एक सूत्र में बाँधने का भी माध्यम बनती रही हैं। जब संचार के साधन बहुत कम थे, लोगों के बीच सूचनाओं के आदान प्रदान करने, बड़े विचारकों और सिद्ध महात्माओं को सुनने-जानने का अवसर कम होता था तब ये मेले एक साथ कई भूमिकाएं निभाते थे। धर्म और आस्था के ये केंद्र जनसंचार, मनोरंजन आदि के बड़े माध्यम तो थे ही, साथ ही भारतीय सारस्वत परंपरा और आत्म परक जीवन दृष्टि इन माध्यमों से ऊर्जा पाती थी और जन-जन तक पहुँचती थी। कुम्भ अत्यंत प्रतीकात्मक शब्द है जो केवल बाह्य नहीं आंतरिक का भी सूचक है। 'घट में ही गंगा राम, घट में ही जमुना राम, घट में ही ताल-तलैया राम' की चिंतन परंपरा इस शरीर को घट मानते हुए इस कच्ची मिट्टी के घट को तप के द्वारा पक्का बनाने की बात करती है। इस घट रूपी कुंभ में अमृत और विष यानी शुभ और अशुभ दोनों विद्यमान् होते हैं। यह दृष्टि बताती है कि घट रुपी शरीर में जीवन का आना पर्याप्त नहीं है यह घट कितना तपा हुआ है, कितना सधा हुआ है इससे जीवन का सच्चा अर्थ तय होता है। भारतीय परम्परा व्यक्ति की सफलता से अधिक सार्थकता की बात करती है और प्रकृति के साथ तादात्म्य को महत्व देती है।

आधुनिक शिक्षा की सबसे बड़ी विसंगति यह रही कि शिक्षित और बौद्धिक लोगों का एक बड़ा हिस्सा प्रकृति और परम्परा से दूर होता गया। प्रकृति का साक्षात्कार करने, उससे तादात्म्य बनाने के स्थान पर आधुनिकता की होड़ में हम उस पर कब्जा जमाने लगे। परिणाम यह हुआ कि सौंदर्य, शांति और आनंद की पर्याय मातृस्वरूपा प्रकृति, विकृत और विध्वंसक होती चली गयी। वरदान देने वाली मां, शाप देने लगी। प्रकृति से अलगाव का ही परिणाम है कि जीवनदायी हवा, जल, मिट्टी जैसे तत्व विषमय होते जा रहे हैं। भयानक प्रदूषित यमुना में छठ मनाती, स्नान करती महिलाओं पर हंसनेवाले लोग, कुंभ के अवसर में परम ठंड में महीनों कल्पवास करनेवालों को पिछड़ा और बिना काम धाम वाला घोषित करनेवाले लोग अभी विकास के बहुत नीचले स्तर पर स्थित हैं। उन्हें हीरे और कंकड़ की पहचान नहीं है।

महाकुंभ इस हेरा गए (खो गए) सांस्कृतिक हीरे को पहचानने का अवसर देता है। स्वत्व और आत्म से जुड़ने का अवसर देता है। कल्पवास का अवसर देता है। 'कल्प' केवल उचित और योग्य का सूचक नहीं है। कोई व्यक्ति भूत और भविष्य की चिंता से मुक्त वर्तमान की साधना करना, वर्तमान में रहना, आत्म से जुड़ना सीख जाता है तो उसे 'कल्प' कहते हैं। 'कायाकल्प होना' मुहावरा यूं ही नहीं बना। कुंभ क्षेत्र में एक मास के कल्पवास के दौरान करोड़ों नर नारी इसी वर्तमानमय, आत्म मय जीवन का साक्षात्कार करते हैं। सबके सुख, सबके कल्याण की कामना तबतक पूर्ण नहीं हो सकती जबतक हम 'स्व' की संकुचित सीमा से ऊपर नहीं उठ जाते। सहज जीवन हमारे लक्ष्य रहे हैं नदी के सहज प्रवाह की तरह, जैसे प्रतिदिन सूरज सहज ढंग से चला आता है, जैसे मंगल के बाद बुद्ध चला आता है, जैसे ग्रीष्म के बाद वर्षा चल आती है वैसे ही जीवन के सभी पक्षों का सहज स्वीकार सीखाता है कुंभ। भारतीय जन की संजीवनी शक्ति, साधना और सबके कल्याण की कामना से संचालित यह कुंभ मेला वास्तव में सांस्कृतिक उत्कृष्टता का परिचायक है।

विशेष आलेख

लोक आस्था का सांस्कृतिक महापर्व

डॉ. रेखा शेखावत

विभागाध्यक्ष- हिन्दी, राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, सतनाली, महेन्द्रगढ़, हरियाणा। प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में शोध आलेख प्रकाशित है। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में वक्ता रूप में। संत साहित्य एवं भारतीय ज्ञान परंपरा पर लेखन कार्य जारी। कविता लेखन में रूचि।

मानव को नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाता कुम्भ नई पीढ़ी के लिए किसी विश्वविद्यालय से कम नहीं है। भारतीय एकता-अखंडता का विहंगम उदाहरण कुंभ महापर्व हमारे समक्ष जीवंत उदाहरण है जो कि भारतीय लोक आस्था की परंपराओं, उत्सवों एवं सनातन धर्म-संस्कृति की निरंतर प्रवाहमान धारा को जीवंत बनाये हुए है। यह महापर्व हमारे अखंड भारतवर्ष की ज्ञान परंपरा को चिरजीवी रूप प्रदान कर राष्ट्र के पुनरूत्थान हेतु महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन कर रहा है।

कुंभ मेला सनातन संस्कृति एवं भारतीय लोक आस्था का महापर्व है। लोक आस्था मनुष्य के विचारों का पोषण करती है और जीवन में सहभागिता, सहयोग एवं पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता का भाव जागृत करती है। लोक-दृष्टि समभाव की अनुगामी बनकर लोकसंस्कृति को परिपुष्ट करती है। लोकसंस्कृति में सह-अस्तित्व का भाव हमें मानव धर्म से परिचित करवाता है। सह-अस्तित्व का यह भाव मात्र मनुष्यों के बीच ही नहीं बल्कि पर्यावरण के सभी जीवों के साथ भी है। कुंभ मेला भारतीय लोकमानस में रामराज्य की अवधारणा का प्रेरणा स्रोत है। जिसमें हर व्यक्ति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी और अनुशासन से पालन करता है। महाकुम्भ राष्ट्रीय गौरव के रूप में मनुष्य को नैतिक मूल्यों का संदेश प्रेषित करता हुआ हमारी सांस्कृतिक परंपराओं और विरासत को जीवंत बनाये हुए है।

कुंभ का मेला सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का परिचायक है। हमारे देश की सांस्कृतिक चेतना

के वाहक प्रत्येक ऋतु के साथ आने वाले पर्व-त्योहार हैं। भारतीय जनमानस उत्सवधर्मी है। प्राचीन काल से ही पवित्र नदियों के संगम स्थल संपूर्ण संत समाज के समागम में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करते थे। प्राचीन काल में वर्तमान जैसी संपर्क और आवाजाही की सुविधा नहीं थी लेकिन फिर भी उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम के सभी संत-महात्मा कुछ निश्चित समय एवं तिथियों की गणना के अनुसार अपने समागम स्थल निश्चित कर लेते थे। दीर्घकाल तक चलने वाली संतों की सामूहिक गोष्ठियों में बिना किसी जाति-धर्म, ऊँच-नीच के भेदभाव से ऊपर उठकर मानवीय आचार, व्यवहार और संस्कारों की शिक्षा मिलती थी। इन्हीं के आधार पर आज तक अमावस्या, पूर्णिमा एवं कुछ विशेष पर्वों आदि पर स्नान-दान की यह परंपरा चली आ रही है।

महाकुम्भ में सभी लोगों की भाषा और संस्कृति भिन्न होने पर भी भावों में समरसता बनी रहती है। एक-दूसरे की भाषा जाने बिना भी सभी एक-दूसरे की सहायता करने को तत्पर रहते हैं। परहित का भाव

लोक आस्था के बलबूते ही कुंभ मेला संसार का सबसे बड़ा आयोजन है। जिसमें बिना आमंत्रण के लाखों लोग पहुँचते हैं। इस समागम में साधु-संत, संन्यासी और गृहस्थ स्त्री-पुरुषों सहित अनेक श्रद्धालु आते हैं। इसके मुख्य आयोजक अखाड़े, आश्रमों, धार्मिक संगठनों से जुड़े व्यक्ति होते हैं। कुंभ का मेला भारतीय धर्म एवं सनातन मूल्यों का निरंतर निर्वाह कर रहा है।

सर्वोपरि रहता है। परोपकार की बात करते हैं तो तुलसी बाबा याद आ जाते हैं- "परहित सरिस धर्म नहिं भाई। परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।"

अर्थात् दूसरों का हित करने के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा देने के समान कोई अधर्म नहीं है। यह सांस्कृतिक चेतना का सबसे बड़ा स्वरूप है जो मेलों के रूप में इन पवित्र नदियों के संगम स्थल पर आयोजित किया जाता है। यह धार्मिक संस्कृति से जुड़ा हुआ दैवीय आयोजन है, जिसका सौभाग्य हम पृथ्वीवासियों को भी मिला हुआ है। इस आयोजन की प्रतीक्षा देवी-देवता भी करते हैं। क्षीरसागर में समुद्र मंथन से निकले अमृत पाने के लिए देवताओं और असुरों में हुए संग्राम के दौरान पृथ्वी लोक पर जहाँ-जहाँ अमृत की बूंदे गिरी वहाँ-वहाँ पर देवताओं के आदेश से कुंभ का आयोजन शुरू हुआ। तीर्थराज प्रयाग की महिमा का वर्णन और माघ स्नान का महत्व रामचरितमानस में बताते हुए संत तुलसीदास कहते हैं कि -

"माघ मकरगत रवि जब होई। तीरथ पतिहि आव सब सोई।।
देव दनुज किंनर नर श्रेणी। सादर मज्जहिं सकल त्रिवेन्द्र।।"

(बालकाण्ड)

अर्थात् माघ में जब सूर्य मकर राशि पर जाते हैं, तब सब लोग तीर्थराज प्रयाग में आते हैं।

देवता, दैत्य, किन्नर और मनुष्यों के समूह सब आदरपूर्वक त्रिवेणी में स्नान करते हैं।

प्रयाग में संत समाज उल्लासित होकर स्नान- दान हेतु एकत्रित होता है। मानस में तुलसीदास कहते हैं-

"तहाँ होई मुनि रिषय समाजा। जाहिं जे मज्जन तीरथ राजा।।
मज्जहिं प्रात समेत उजाला। कहहिं परसपर हरि गुन गाहा।।"

(बालकाण्ड)

अर्थात तीर्थराज प्रयाग में जो स्नान करने जाते हैं उन ऋषि मुनियों का समाज वहाँ भारद्वाज ऋषि के आश्रम में जुटता है। प्रातः काल सब उत्साहपूर्वक स्नान करते हैं और फिर परस्पर भगवान के गुणों की कथाएँ कहते हैं।

कुंभ में आत्म-शुद्धि हेतु स्नान किया जाता है। भारत में अनेक तीर्थ-स्थलों पर मेलों में शामिल होने और पवित्र नदियों में स्नान करने का महत्व है। कुंभ मेला तीर्थ यात्रियों का सबसे बड़ा समागम है। यहाँ आने वाले सभी श्रद्धालु और संत पवित्र नदी के जल में स्नान करते हैं। प्रयागराज में लोग महीने भर वही रहते हुए हरि भजन में लीन रहते हैं। मानसकार कहते हैं-

"एहि प्रकार भरी माघ नहाहीं। पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं।।
प्रति संबत अति होइ अनंदा। मकर मज्जि गवनहिं मुनिवृंदा।।"

अर्थात इसी प्रकार वहाँ माघ में महीने भर स्नान करते हैं और फिर सब अपने-अपने आश्रमों को चले जाते हैं। हर साल वहाँ इसी तरह बड़ा आनंद होता है। मकर में स्नान करके मुनिगण चले जाते हैं।

प्रयागराज की महिमा का गायन करते हुये एक स्थान पर अयोध्याकांड में तुलसीदास जी कहते हैं-

"संगमु सिंहासनु सुबह सोहा। छत्रु अजय बटु मुनि मनु मोहा।।
चँवर जमुन अरू गंग तरंगा। देखि होहिं दुख दारिद भंगा।।"

अर्थात गंगा यमुना और सरस्वती का संगम ही उसका अत्यंत सुशोभित सिंहासन है। अक्षयवट छत्र है, जो मुनियों के भी मन को मोहित कर लेता है। यमुना जी और गंगा जी की तरंगे उसके (श्याम और श्वेत) चँवर है, जिनको देखकर ही दुःख और दरिद्रता नष्ट हो जाती है।

जल तत्व की पवित्रता से हमारा जुड़ाव जीवन पर्यंत बना रहता है। हमारे शरीर में जल तत्व की प्रधानता है। प्रयागराज श्रद्धालुओं का संगम स्थल है। हिंदू धर्म में कुंभ मेले का विशेष महत्व है।

इस संबंध में समुद्र मंथन की पौराणिक कथा प्रचलित है। ज्योतिष से गणना एवं विशेष नक्षत्रीय संयोग में होने वाले कुंभ में सभी देवी-देवता शामिल होते हैं। इस विशेष संयोग में संगम पर गंगाजल अमृत रूप में प्रवाहित होता है। नक्षत्रों का यह विशेष संयोग पवित्र गंगा के

औषधिय गुण युक्त जल को अमृतमयी बना देता है। इस विशेष योग में गंगा स्नान से मनुष्य के सभी कष्ट एवं पाप दूर हो जाते हैं और वह मोक्ष प्राप्त कर स्वर्ग का अधिकारी बन जाता है। हिन्दू धर्म में कुंभ मेले का विशेष महत्व है। समुद्र मंथन के दौरान यह अमृत की बूंदे पृथ्वी पर प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में विशेष नक्षत्रीय योग में गिरी थी, जिससे वहीं इस विशेष संयोग में कुंभ का आयोजन होता है।

लोक आस्था के बलबूते ही कुंभ मेला संसार का सबसे बड़ा आयोजन है। जिसमें बिना आमंत्रण के लाखों लोग पहुँचते हैं। इस समागम में साधु-संत, संन्यासी और गृहस्थ स्त्री-पुरुषों सहित अनेक श्रद्धालु आते हैं। इसके मुख्य आयोजक अखाड़े, आश्रमों, धार्मिक संगठनों से जुड़े व्यक्ति होते हैं। कुंभ का मेला भारतीय धर्म एवं सनातन मूल्यों का निरंतर निर्वाह कर रहा है।

यह हमें हमारी विरासत से जोड़कर "वसुधैव-कुटुंबकम" का संदेश प्रेषित करता है। हम पुरातन भाव को विस्मृत नहीं करना चाहते। हम प्राकृतिक दैवीय शक्तियों की पूजा-अर्चना करने वाले और विश्व को नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाले अमृत-पुत्र हैं। हम भारतवासी नदियों, वृक्षों,पर्वतों, सूर्य,चंद्रमा और नक्षत्रों आदि सभी की स्तुति करते हुए प्रकृति की ओर लौटने का संदेश देते हैं। प्रकृति को अपनी माता, सखी-सहचरी बनाकर पर्यावरण संरक्षण हेतु जयघोष करते हैं।

कुंभ मेला मात्र धार्मिक आयोजन ही नहीं है बल्कि सामाजिक समरसता और धार्मिक सहिष्णुता का उत्सव है। जिस प्रकार शरीर रूपी कुंभ में सदगुणों रूपी अमृत-जल भरा रहता है। मन, वचन, कर्म से मनुष्य शरीर एवं आत्मा के बुरे भावों को त्याग कर अमृत सदृश सदगुणों से सुन्दर समाज का निर्माण करता है।

संक्षेप में कहना चाहूँगी कि कुंभ महापर्व हमारी धार्मिक संस्कृति एवं हमारे अंतःकरण से जुडाव रखता है। यह हमें धर्म संगत जीवन जीने की सीख देता है। मानव को नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाता कुम्भ नई पीढ़ी के लिए किसी विश्वविद्यालय से कम नहीं है। भारतीय एकता-अखंडता का विहंगम उदाहरण कुंभ महापर्व हमारे समक्ष जीवंत उदाहरण है जो कि भारतीय लोक आस्था की परंपराओं, उत्सवों एवं सनातन धर्म- संस्कृति की निरंतर प्रवाहमान धारा को जीवंत बनाये हुए है। यह महापर्व हमारे अखंड भारतवर्ष की ज्ञान परंपरा को चिरजीवी रूप प्रदान कर राष्ट्र के पुनरूत्थान हेतु महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन कर रहा है।

विशेष आलेख

महाकुम्भ का अन्वेषण

भारत की खोज एवं स्वयं का साक्षात्कार

डॉ.अर्चना पाठया

भारतीय अस्मिता का रक्षा कवच "कुम्भ" आस्था, विश्वास, सौहार्द एवं संस्कृतियों के मिलन का पर्व है। ज्ञान, चेतना और उसका परस्पर मंथन कुम्भ मेले का वो आयाम है जो आदि काल से ही हिन्दू धर्मावलम्बियों की जागृत चेतना को बिना किसी आमन्त्रण के खींच कर ले आता है। कुम्भ पर्व किसी इतिहास निर्माण के दृष्टिकोण से नहीं शुरू हुआ था अपितु इसका इतिहास समय के प्रवाह से साथ स्वयं ही बनता चला गया। कुम्भ जैसा विशालतम् मेला संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए ही आयोजित होता है।

"कुम्भ परम्परा भारतवर्ष में वैदिक काल से चली आ रही है। यूनेस्को द्वारा 2017 में कुम्भ को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता प्राप्त कुंभ मेले की जड़ें हजारों साल पुरानी हैं जिसका प्रारंभिक उल्लेख वेदों तथा मौर्य और गुप्त काल (चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईस्वी) के दौरान मिलता है। कुम्भ पर्व एक अमृत स्नान और अमृतपान की बेला है।"

भारत समृद्ध संस्कृति का एक ऐसा देश है जहाँ एक से ज्यादा धार्मिक संस्कृति के लोग एक साथ रहते हैं। इसलिए यहां धार्मिक यज्ञ, मेला आदि समय-समय पर आयोजित होते रहते हैं इन्ही में एक कुम्भ मेला है जो हिन्दू धर्म का एक महत्त्वपूर्ण पर्व है इस उत्सव में करोड़ों श्रद्धालु कुम्भ पर्व स्थल- हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में स्नान करते हैं।

कुम्भ परम्परा भारतवर्ष में वैदिक काल से चली आ रही है। यूनेस्को द्वारा 2017 में कुम्भ को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता प्राप्त कुंभ मेले की जड़ें हजारों साल पुरानी हैं जिसका प्रारंभिक उल्लेख वेदों तथा मौर्य और गुप्त काल (चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईस्वी) के दौरान मिलता है। कुम्भ पर्व एक अमृत स्नान और अमृतपान की बेला है। इसी समय गंगा की पावन धारा में अमृत का सतत प्रवाह होता है। इसी समय कुम्भ स्नान का संयोग भी बनता है। तीर्थ नगरी हरिद्वार का कुम्भ तो महाकुम्भ कहा जाता है। वेद, पुराण, रामायण और महाभारत में इस स्थान को 'प्रयाग' कहा गया है। गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का यहाँ संगम होता है इसलिए हिन्दुओं के लिए इस शहर का विशेष महत्त्व है। कुम्भ मेला विश्व का सबसे विशाल आयोजन है जिसमें अलग अलग जाति, धर्म, क्षेत्र के लाखों लोग भाग लेते हैं। कुम्भ महापर्व भारत के चार प्रमुख तीर्थ स्थलों में मनाये जाने की बहुत ही प्राचीन परम्परा है।

लेखिका राष्ट्रवादी चिंतक और महात्मा गांधी हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा में शोध अध्येता हैं।

हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक ये चार प्रमुख तीर्थ स्थल हैं, जहाँ कुम्भ महापर्व मनाये जाने का पौराणिक माहात्म्य है। हरिद्वार और प्रयाग में छह वर्ष में अर्द्धकुम्भ और बारह वर्ष में कुम्भ महापर्व मनाने की परम्परा है प्रयाग में कुम्भ का महापर्व माघ के महीने में मनाये जाने की परम्परा है यहाँ जब सूर्य और चन्द्रमा मकर राशि के हों और बृहस्पति मेष अथवा वृष राशि में स्थित हों तो कुम्भ महापर्व का योग बनता है। भारतीय अस्मिता का रक्षा कवच "कुम्भ" आस्था, विश्वास, सौहार्द एवं संस्कृतियों के मिलन का पर्व है। ज्ञान, चेतना और उसका परस्पर मंथन कुम्भ मेले का वो आयाम है जो आदि काल से ही हिन्दू धर्मावलम्बियों की जागृत चेतना को बिना किसी आमन्त्रण के खींच कर ले आता है। कुम्भ पर्व किसी इतिहास निर्माण के दृष्टिकोण से नहीं शुरू हुआ था अपितु इसका इतिहास समय के प्रवाह से साथ स्वयं ही बनता चला गया। कुम्भ जैसा विशालतम् मेला संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए ही आयोजित होता है।

कुम्भ का शाब्दिक अर्थ कलश है। यहाँ 'कलश' का सम्बन्ध अमृत कलश से है। कुंभ पर्व के आयोजन को लेकर दो-तीन पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं जिनमें से सर्वाधिक मान्य कथा देव-दानवों द्वारा समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कुंभ से अमृत बूँदें गिरने को लेकर है जो इस प्रकार हैं– इस कथा के अनुसार महर्षि दुर्वासा के शाप के कारण जब इंद्र और अन्य देवता कमजोर हो गए तो दैत्यों ने देवताओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया। तब सब देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास गए और उन्हे सारा वृतान्त सुनाया। तब भगवान विष्णु ने उन्हे दैत्यों के साथ मिलकर क्षीरसागर का मंथन करके अमृत निकालने की सलाह दी। देवासुर संग्राम के बाद दोनों पक्ष समुद्र मंथन को राजी हुए थे। मथना था समुद्र तो मथनी और नेति भी उसी हिसाब की चाहिए थी। ऐसे में मंदराचल पर्वत मथनी बना और नागवासुकि उसकी नेति। मंथन से चौदह रत्नों की प्राप्ति हुई जिन्हें परस्पर बाँट लिया गया परन्तु जब धन्वन्तरि ने अमृत कलश देवताओं को दे दिया तो फिर युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई। तब भगवान् विष्णु ने स्वयं मोहिनी रूप धारण कर सबको अमृत-पान कराने की बात कही और अमृत कलश का दायित्व इंद्र-पुत्र जयंत को सौपा। अमृत-कलश को प्राप्त कर जब जयंत दानवों से अमृत की रक्षा हेतु भाग रहे थे तभी इसी क्रम में अमृत की बूंदे पृथ्वी पर चार स्थानों पर गिरी- हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और प्रयागराज। तत्पश्चात अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देव-दानवों में बारह दिन तक अविराम युद्ध होता रहा। व इस दौरान सूर्य, चंद्रमा, गुरु एवं शनि ने अमृत कलश की रक्षा में सहयोग दिया। कहते हैं उन्हीं स्थानों पर ग्रहों के उन्हीं संयोगों पर कुम्भ पर्व मनाया जाता है। मान्यता है कि उनमें से आठ पवित्र स्थान देवलोक में हैं तथा चार स्थान पृथ्वी पर हैं। देव-दानव कलह शांत करने के लिए भगवान ने मोहिनी रूप धारण कर यथाधिकार सबको अमृत बाँटकर पिला दिया। इस प्रकार देव-दानव युद्ध का अंत किया गया। जिस समय में चंद्रादिकों ने कलश की रक्षा की थी उस समय की वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले चंद्र-सूर्यादिक ग्रह जब आते हैं उस समय कुंभ का योग होता है अर्थात जिस वर्ष, जिस राशि पर सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति का संयोग

होता है उसी वर्ष, उसी राशि के योग में जहाँ-जहाँ अमृत बूँद गिरी थी वहाँ-वहाँ कुंभ पर्व होता है।

हर बार कुंभ मेला भारत की चार पवित्र नदियों और चार तीर्थ स्थानों पर ही आयोजित किया जाता है लेकिन महाकुंभ मेले का आयोजन सिर्फ प्रयागराज, नासिक, हरिद्वार और उज्जैन में किया जाता है। चूँकि विष्णु की आज्ञा से सूर्य, चन्द्र, शनि एवं बृहस्पति भी अमृत कलश की रक्षा कर रहे थे और विभिन्न राशियों (सिंह, कुम्भ एवं मेष) में विचरण के कारण ये सभी कुम्भ पर्व के द्योतक बन गये। इस प्रकार ग्रहों एवं राशियों की सहभागिता के कारण कुम्भ पर्व ज्योतिष का पर्व भी बन गया। जयंत को अमृत कलश को स्वर्ग ले जाने में 12 दिन का समय लगा था और माना जाता है कि देवताओं का एक दिन पृथ्वी के एक वर्ष के बराबर होता है। यही कारण है कि कालान्तर में वर्णित स्थानों पर ही ग्रह-राशियों के विशेष संयोग पर 12 वर्षों में कुम्भ मेले का आयोजन होने लगा। ज्योतिष गणना के क्रम में कुम्भ का आयोजन चार प्रकार से माना गया है:

- ❖ बृहस्पति के कुम्भ राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर हरिद्वार में गंगा-तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है।
- ❖ बृहस्पति के मेष राशि चक्र में प्रविष्ट होने तथा सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में आने पर अमावस्या के दिन प्रयागराज में त्रिवेणी संगम तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है।
- ❖ बृहस्पति एवं सूर्य के सिंह राशि में प्रविष्ट होने पर नासिक में गोदावरी तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है।
- ❖ बृहस्पति के सिंह राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर उज्जैन में शिप्रा तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है।

यह पर्व प्रकृति एवं जीव तत्त्व में सामंजस्य स्थापित कर उनमें जीवनदायी शक्तियों को समाविष्ट करता है। ब्रह्माण्ड की शक्तियों के साथ पिण्ड (शरीर) कैसे सामंजस्य स्थापित करे, उसे जीवनदायी शक्तियाँ कैसे मिले इसी रहस्य का पर्व है कुम्भ। विभिन्न मतों-अभिमतों-मतान्तरों के व्यावहारिक मंथन का पर्व है-'कुम्भ', और इस मंथन से निकलने वाला ज्ञान-अमृत ही कुम्भ-पर्व का प्रसाद है।

कुम्भ मेला हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु कुम्भ पर्व स्थल प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में एकत्र होते हैं और नदी में स्नान करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर प्रति १२वें वर्ष तथा प्रयाग में दो कुम्भ पर्वों के बीच छह वर्ष के अन्तराल में अर्धकुम्भ भी होता है।

जब बृहस्पति ग्रह मृगसिरा नक्षत्र में गोचर करता है तो उसे कुंभ काल कहा जाता है। कुंभ काल के स्वागत और पूजा के लिए एक आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया जाता है, जिसे कुंभ मेला कहा जाता है। बृहस्पति ग्रह हर 12 साल में मृगसिरा नक्षत्र में गोचर करता है, इसलिए कुंभ मेला हर 12 साल में आता है। सभी जीवित प्राणी मनुष्य और भगवान कुंभ काल में ही वैकुंठ से पृथ्वी पर आते हैं।

खगोल गणनाओं के अनुसार यह मेला मकर संक्रान्ति के दिन प्रारम्भ होता है, जब सूर्य और चन्द्रमा, वृश्चिक राशि में और वृहस्पति, मेष राशि में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रान्ति के होने वाले इस योग को "कुम्भ स्नान-योग" कहते हैं और इस दिन को विशेष मंगलकारी माना जाता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार इस दिन खुलते हैं और इस प्रकार इस दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति सहजता से हो जाती है। यहाँ स्नान करना साक्षात् स्वर्ग दर्शन माना जाता है। इसका हिन्दू धर्म मे बहुत अधिक महत्व है।

कुम्भ मेले का अर्थ है "अमरत्व का मेला" है। ज्योतिषियों के अनुसार कुम्भ का असाधारण महत्व बृहस्पति के कुम्भ राशि में प्रवेश तथा सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के साथ जुड़ा है। ग्रहों की स्थिति हरिद्वार से बहती गंगा के किनारे पर स्थित हर की पौड़ी स्थान पर गंगा जल को औषधिकृत करती है तथा उन दिनों यह अमृतमय हो जाती है। यही कारण है कि अपनी अन्तरात्मा की शुद्धि हेतु पवित्र स्नान करने लाखों श्रद्धालु यहाँ आते हैं।

ब्रह्माण्ड की शक्तियों के साथ पिण्ड (शरीर) कैसे सामंजस्य स्थापित करे, उसे जीवनदायी शक्तियाँ कैसे मिले इसी रहस्य का पर्व है कुम्भ। विभिन्न मतों-अभिमतों-मतान्तरों के व्यावहारिक मंथन का पर्व है-'कुम्भ', और इस मंथन से निकलने वाला ज्ञान-अमृत ही कुम्भ-पर्व का प्रसाद है। कुम्भ मेला हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु कुम्भ पर्व स्थल प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में एकत्र होते हैं और नदी में स्नान करते हैं।

कुम्भ मेला धार्मिक-आध्यात्मिक अनुष्ठानों का एक भव्य आयोजन है जिसमें संगम-स्नान उन सभी अनुष्ठानों में सबसे महत्त्वपूर्ण है। त्रिवेणी संगम पर लाखों तीर्थयात्री इस पवित्र कार्य में भाग लेने के लिए एक साथ आते हैं। उनको यह दृढ़ विश्वास है कि संगम के पवित्र जल में स्नान करने से व्यक्ति सभी पापों से मुक्त हो जाता है तथा अपने साथ अपने पूर्वजों को पुनर्जन्म के चक्र से छुटकारा दिलाकर अंततः मोक्ष, या आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त कर सकता है। संगम-स्नान के अलावा, तीर्थयात्री पवित्र नदी के किनारे पूजा में भी शामिल होते हैं और विभिन्न साधुओं और संतों के मार्गदर्शन में ज्ञानवर्धक प्रवचनों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। पवित्र जल में स्नान करना पवित्र माना जाता है किन्तु कुछ विशिष्ट तिथियाँ हैं जो विशेष महत्त्व रखती हैं इन तिथियों पर विभिन्न अखाड़ों के संत अपने शिष्यों के साथ भव्य जुलूस निकालते है वे एक भव्य अनुष्ठान में भाग लेते हैं जिसे 'शाही स्नान' भी कहा जाता है जो कुम्भ

मेले के शुभारम्भ का प्रतीक है। शाही स्नान कुम्भ मेले का मुख्य आकर्षण है जिसके लिए विशेष प्रबन्ध किये जाते हैं। शाही स्नान के अवसर पर लोगों को शाही स्नान करने वाले साधु-संतो के पुण्य कर्मों एवं और गहन-ज्ञान का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

वेद, पुराण, रामायण और महाभारत में इस स्थान को प्रयाग कहा गया है। गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का यहाँ संगम होता है, इसलिए हिन्दुओं के लिए इस शहर का विशेष महत्त्व है। 12 साल बाद यहाँ कुम्भ के मेले का आयोजन होता है जहां पर लोग स्नान करते हैं इस पर्व को 'स्नान पर्व' भी कहते हैं यही स्थान तीर्थराज कहलाता है।

'कुम्भ पर्व' एक अमृत स्नान और अमृतपान की बेला है। इसी समय गंगा की पावन धारा में अमृत का सतत प्रवाह होता है। इसी समय कुम्भ स्नान का संयोग बनता है। कुम्भ पर्व भारतीय जनमानस की पर्व चेतना की विराटता का द्योतक है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के किनारे बसा इलाहाबाद भारत का पवित्र और लोकप्रिय तीर्थस्थल है। वेद, पुराण, रामायण और महाभारत में इस स्थान को प्रयाग कहा गया है। गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का यहाँ संगम होता है, इसलिए हिन्दुओं के लिए इस शहर का विशेष महत्त्व है। 12 साल बाद यहाँ कुम्भ के मेले का आयोजन होता है जहां पर लोग स्नान करते हैं इस पर्व को 'स्नान पर्व' भी कहते हैं यही स्थान तीर्थराज कहलाता है। गंगा और यमुना का उद्गम हिमालय से होता है जबकि सरस्वती का उद्गम अलौकिक माना जाता है।

मान्यता है कि सरस्वती का उद्गम गंगा-यमुना के मिलन से हुआ है जबकि कुछ ग्रंथों में इसका उद्गम नदी के तल के नीचे से बताया गया है। इस संगम स्थल पर ही अमृत की बूंदें गिरी थी इसीलिए यहां स्नान का महत्व है। त्रिवेणी संगम तट पर स्नान करने से शरीर और आत्मा शुद्ध हो जाती है। यहां पर लोग अपने पूर्वजों का पिंडदान भी करते हैं।

कुम्भ पर्व विश्व में किसी भी धार्मिक प्रयोजन हेतु भक्तों का सबसे बड़ा संग्रहण है विश्व का सबसे विशाल आयोजन है जिसमें अलग अलग जाति, धर्म, क्षेत्र के लाखों लोग भाग लेते हैं। सैंकड़ों की संख्या में लोग इस पावन पर्व में उपस्थित होते हैं। कुम्भ मेले में शैवपंथी नागा साधुओं को देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ती है। कुम्भ के सबसे पवित्र शाही स्नान में सबसे पहले स्नान का अधिकार इन्हें ही मिलता है। नागा साधु अपने पूरे शरीर पर भभूत मले, निर्वस्त्र रहते हैं। उनकी बड़ी-बड़ी जटाएं भी आकर्षण का केंद्र रहती है। हाथों में चिलम लिए और चरस का कश लगाते हुए इन साधुओं को देखना अजीब लगता है। मस्तक पर आड़ा भभूत लगा, तीनधारी तिलक लगा कर धूनी रमा कर, नग्न रह कर और गुफ़ाओं में तप करने वाले नागा साधुओं का उल्लेख पौराणिक ग्रंथों में भी मिलता है। नागा जीवन की विलक्षण परंपरा में दीक्षित होने के लिए वैराग्य भाव का होना ज़रूरी है। संसार की मोह-माया से मुक्त कठोर दिल वाला व्यक्ति ही नागा साधु बन सकता है इनका जीवन अखाड़ों, संत परंपराओं और समाज के लिए समर्पित हो जाता है।

विशेष आलेख

कुंभ से ही प्राप्त हुआ काशी हिंदू विश्वविद्यालय

डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी द्वारा सनातन समाज को दी गयी वह बहुमूल्य भेंट है जिससे पराधीन भारत से मुक्त होकर स्वाधीन भारत की अबतक की यात्रा में सनातन संस्कृति, अध्यात्म और भारतीय ज्ञान परम्परा को अपनी जड़ों से जुड़ने का आधार मिल रहा है। यह संयोग है कि महामना ने कुम्भ के समय पवित्र त्रिवेणी के तट से अपने इस सपने को आकार देने का अभियान संकल्प के साथ शुरु किया था।

मदनमोहन मालवीय ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रीगणेश 1904 ई॰ में किया, जब काशीनरेश महाराज प्रभुनारायण सिंह की अध्यक्षता में संस्थापकों की प्रथम बैठक हुई। 1905 ई॰ में विश्वविद्यालय का प्रथम पाठ्यक्रम प्रकाशित हुआ। जनवरी, 1909 ई॰ में कुंभ मेले में मालवीय जी ने त्रिवेणी संगम पर भारत भर से आयी जनता के बीच अपने संकल्प को दोहराया। कहा जाता है, वहीं एक वृद्धा ने मालवीय जी को इस कार्य के लिए सर्वप्रथम एक पैसा चन्दे के रूप में दिया।

ऐनी बेसेन्ट जी काशी में विश्वविद्यालय की स्थापना में आगे बढ़ रही थीं। इन्हीं दिनों दरभंगा के राजा महाराजा रामेश्वर सिंह भी काशी में "शारदा विद्यापीठ" की स्थापना करना चाहते

थे। इन तीन विश्वविद्यालयों की योजना परस्पर विरोधी थी, अतः मालवीय जी ने बेसेंट जी और महाराज रामेश्वर सिंह से परामर्श कर अपनी योजना में सहयोग देने के लिए उन दोनों को राजी कर लिया। फलस्वरूप बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी सोसाइटी की 15 दिसम्बर 1911 को स्थापना हुई, जिसके महाराज दरभंगा अध्यक्ष, इलाहाबाद उच्च न्यायालय के प्रमुख बैरिस्टर सुन्दरलाल सचिव, महाराज प्रभुनारायण सिंह, मदनमोहन मालवीय एवं ऐनी बेसेंट सम्मानित सदस्य थीं।

तत्कालीन शिक्षामंत्री सर हारकोर्ट बटलर के प्रयास से 1915 ई॰ में केन्द्रीय विधानसभा से हिन्दू यूनिवर्सिटी ऐक्ट पारित हुआ, जिसे तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिंज ने तुरन्त स्वीकृति प्रदान कर दी। 14 जनवरी 1916 ई॰ (वसंतपंचमी) के दिन ससमारोह वाराणसी में गंगातट के पश्चिम, रामनगर के समानान्तर महाराज प्रभुनारायण सिंह द्वारा प्रदत्त भूमि में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का शिलान्यास हुआ। उक्त समारोह में देश के अनेक गवर्नरों, राजे-रजवाड़ों तथा सामन्तों ने गवर्नर जनरल एवं वाइसराय का स्वागत और मालवीय जी से सहयोग करने के लिए हिस्सा लिया। अनेक शिक्षाविद् वैज्ञानिक एवं समाजसेवी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। गांधी जी भी विशेष निमन्त्रण पर पधारे थे।

अपने वाराणसी आगमन पर गांधी जी ने बेसेण्ट जी की अध्यक्षता में आयोजित सभा में राजा-रजवाड़ों, सामन्तों तथा देश के अनेक गण्यमान्य लोगों के बीच, अपना वह ऐतिहासिक भाषण दिया, जिसमें एक ओर ब्रिटिश सरकार की और दूसरी ओर हीरे-जवाहरात तथा सरकारी उपाधियों से लदे, देशी रियासतों के शासकों की घोर भर्त्सना की गई।

बेसेण्ट जी द्वारा समर्पित सेण्ट्रल हिन्दू कालेज में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का विधिवत शिक्षणकार्य, 1अक्टूबर1917 से आरम्भ हुआ। 1916 ई॰ में आयी बाढ़ के कारण स्थापना स्थल से हटकर कुछ पश्चिम में 1,300 एकड़ भूमि में निर्मित वर्तमान विश्वविद्यालय में सबसे पहले इंजीनियरिंग कालेज का निर्माण हुआ तत्पश्चात क्रमशः आर्ट्स कालेज एवं साइंस कालेज स्थापित किया गया। 1921 ई॰ से विश्वविद्यालय की पूरी पढ़ाई कमच्छा कॉलेज से स्थानान्तरित होकर नए भवनों में प्रारम्भ हुई। विश्वविद्यालय का औपचारिक उद्घाटन 13 दिसम्बर 1921 को प्रिंस ऑफ़ वेल्स ने किया।

लेखक काशी के प्रख्यात चिकित्सक, इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन के वरिष्ठ पदाधिकारी, कई पुस्तकों के लेखक, चिकित्सा शास्त्र के शोध अध्येता और राष्ट्रवादी चिंतक हैं।

विशेष आलेख

प्रत्येक कुंभ में संतों के साथ ही स्नान करते हैं 8 चिरंजीवी

कृष्ण कान्त उपाध्याय

लेखक वरिष्ठ पत्रकार और राष्ट्रवादी चिन्तक हैं।

मान्यता है कि देवताओं और असुरों के बीच 12 दिवसीय युद्ध हुआ, जो मानव वर्षों में 12 वर्षों के बराबर माना गया है।इसलिए, हर 12 साल में कुंभ का आयोजन होता है। प्रत्येक कुंभ में सनातन परम्परा के अनुयायियों के शीर्ष लोग स्नान करते हैं। इनमें ऋषि, मुनि, महात्मा, तपस्वी, वैरागी, भक्त, साधु, संन्यासी, और समस्त सनातन अनुरागी आवश्यक रूप से शामिल होते हैं। प्रत्येक कुंभ में जितने भी प्रमुख स्नान होते हैं उन सभी स्नानों की अपनी महत्ता है। यहां चर्चा इसके उस पक्ष पर है जिस पर कभी न तो कहीं कुछ लिखा गया या कहा जाता है।

ब्रह्मांड और सृष्टि में सनातन संस्कृति के सबसे बड़े समागम में संतों, मनीषियों और लोक की उपस्थिति के साथ ही देवता और वे सभी पात्र भी शामिल होकर स्नान करते हैं जिन्हें भौतिक जगत का कोई व्यक्ति देख नहीं पाता। यह आध्यात्मिक लीला अद्भुत है। कुंभ जैसा समागम होगा तो लौकिक और पारलौकिक सभी पात्र तो जुटेंगे ही। शास्त्र और सनातन के मर्मज्ञ इस तथ्य को ठीक से व्याख्यायित करते हैं।

देवता, असुर, अमृत घट और गरुण

पौराणिक कथाओं में समुद्र मंथन की कथा से जुड़ी हुई है. कथा के अनुसार, जब देवताओं और असुरों ने अमृत प्राप्त करने के लिए समुद्र मंथन किया, तो उस मंथन से अमृत का घट निकला। अमृत को पाने के लिए देवताओं और असुरों के बीच युद्ध छिड़ गया, जिसके चलते भगवान विष्णु ने अपने वाहन गरुड़ को अमृत

के घड़े की सुरक्षा का काम सौंप दिया। गरुड़ जब अमृत को लेकर उड़ रहे थे, तब अमृत की कुछ बूंदें चार स्थानों – प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में गिर गईं। शास्त्रीय मान्यता है कि तभी से हर 12 वर्ष बाद इन स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन होता है। मान्यता है कि देवताओं और असुरों के बीच 12 दिवसीय युद्ध हुआ, जो मानव वर्षों में 12 वर्षों के बराबर माना गया है इसलिए, हर 12 साल में कुंभ का आयोजन होता है। प्रत्येक कुंभ में सनातन परम्परा के अनुयायियों के शीर्ष लोग स्नान करते हैं। इनमें ऋषि, मुनि, महात्मा, तपस्वी, वैरागी, भक्त, साधु, संन्यासी, और समस्त सनातन अनुरागी आवश्यक रूप से शामिल होते हैं। प्रत्येक कुंभ में जितने भी प्रमुख स्नान होते हैं उन सभी स्नानों की अपनी महत्ता है। यहां चर्चा इसके उस पक्ष पर है जिस पर कभी न तो कहीं कुछ लिखा गया या कहा जाता है। युगपुरुष स्वामी अखंडानंद जी महाराज और उनसे भी पहले के अनेक आचार्यों ने सनातन यात्रा के सात चिरंजीवियों की अनेक संदर्भों में चर्चा की है लेकिन कुंभ पर लिखते समय विद्वज्जन अपने सप्त चिरंजीवियों और उन्हीं के समतुल्य ऋषि मार्कण्डेय की चर्चा कभी भी नहीं करते। यह सामान्य सी बात है कि कुंभ में पूरे अवधि अनेक प्रकार के प्रवचन, कथा पाठ, शास्त्र चर्चा और सत्संग होते हैं। इन सभी स्थानों में लौकिक रूप से सम्मिलित होने वाले सनातन प्रेमियों और ईश अनुरागियों के साथ ही हमारे महान और पूज्य सप्त चिरंजीवी भी उपस्थित रहते हैं। लोक ज्ञान में श्री हनुमान जी के बारे में सभी को पता है कि वे उस प्रत्येक स्थान पर उपस्थित रहते हैं जहां श्री रामकथा होती है। यह स्थिति अन्य चिरंजीवियों के लिए भी समान है। सनातन का एक महा तीर्थ हो और वहां सत्संग तथा भक्ति की गंगा प्रवाहित हो रही हो, ऐसे स्थान पर उनकी अनुपस्थिति संभव ही नहीं। गुफाओं और हिमकंदराओं से निकल कर प्रत्येक तपस्वी यदि कुंभ में आ चुका तो भला वे सभी महान चिरंजीवी कैसे नहीं आएंगे।

मारे वेदों और पुराणों के अनुसार धरती लोक पर ऐसे सात चिरंजीवी किसी न किसी वचन, वरदान या शाप से बंधे हुए हैं और यह सभी दिव्य शक्तियों से संपन्न है। योग में जिन अष्ट सिद्धियों की बात कही गई है वे सारी शक्तियां इनमें विद्यमान है। सनातन धर्म में सप्त चिरंजीवी को पृथ्वी के सात महामानव कहा गया है। जानते हैं पुराणों के अनुसार सप्त चिरंजीवी कौन है? इन सात के साथ ही उस आठवें महामनीषी के बारे में भी क्रम से चर्चा करते हैं जिनको ऋषि मार्कण्डेय के नाम से जानते हैं। शास्त्र कहते हैं कि ऋषि मार्कण्डेय भी सप्त चिरंजीवियों के समान ही अभी पृथ्वी पर अपने कार्य कर रहे हैं। इस आधार पर इन्हें भी विद्वज्जन चिरंजीवी के रूप में ही स्वीकार करते हैं।

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविनः।।
सप्तैतान्सं स्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद्वर्षशतं सोपि सर्वव्याधिविवर्जित।।

इस श्लोक की प्रथम दो पंक्तियों का अर्थ है कि अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य और भगवान परशुराम ये सात महामानव चिरंजीवी हैं। तथा अगली दो पंक्तियों का अर्थ है कि यदि इन सात महामानवों और आठवे ऋषि मार्कण्डेय का नित्य स्मरण किया जाए तो शरीर के सारे रोग समाप्त हो जाते है और मनुष्य को 100 वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

1. महर्षि परशुराम

भगवान विष्णु के छठें अवतार हैं परशुराम। परशुराम के पिता ऋषि जमदग्नि और माता रेणुका थीं। राम ने भगवान शिवजी को प्रसन्न करने के लिए कठोर तप किया था। शिवजी तपस्या से प्रसन्न हुए और राम को अपना अस्त्र फरसा दे दिया था। तब से राम परशुराम बन गये। इनका जन्म हिन्दी पंचांग के अनुसार वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को हुआ था। इसलिए वैशाख मास के शुक्ल पक्ष में आने वाली तृतीया को अक्षय तृतीया कहा जाता है। भगवान परशुराम श्रीराम के पूर्व हुए थे, लेकिन वे चिरंजीवी होने के कारण श्रीराम के समय में भी रहे।

2. राजा बलि

देवताओं पर चढ़ाई कर राजा बलि ने इंद्रलोक पर अधिकार कर लिया था। राजा बलि के घमंड का हनन करने के लिए भगवान ने ब्राह्मण का वह धारण कर राजा बलि से तीन पग धरती दान में मांगी थी। भगवान ने अपना विराट रूप धारण कर दो पगों में तीनों लोक नाप दिए और तीसरा पग बलि के सर पर रखकर उसे पाताल लोक भेज दिया। शास्त्रों के अनुसार राजा बलि भक्त प्रहलाद के वंशज हैं। राजा बलि से श्रीहरि अतिप्रसन्न थे। इसी कारण से श्रीविष्णु जी राजा बलि के द्वारपाल भी बन गए थे।

3.श्री हनुमान

अंजनी पुत्र हनुमान को भी अजर अमर रहने का वरदान मिला हुआ है। यह राम के काल में राम भगवान के परम भक्त रहे हैं। महाभारत में प्रसंग हैं कि भीम उनकी पूंछ को मार्ग से हटाने के लिए कहते हैं तो हनुमानजी कहते हैं कि तुम ही हटा लो, लेकिन भीम अपनी पूरी ताकत लगाकर भी उनकी पूंछ नहीं हटा पाता है। सीताजी ने हनुमानजी को लंका की अशोक वाटिका में श्रीराम का संदेश सुनने के बाद आशीर्वाद दिया था कि वे अजर-अमर अविनाशी रहेंगे।

4. विभीषण

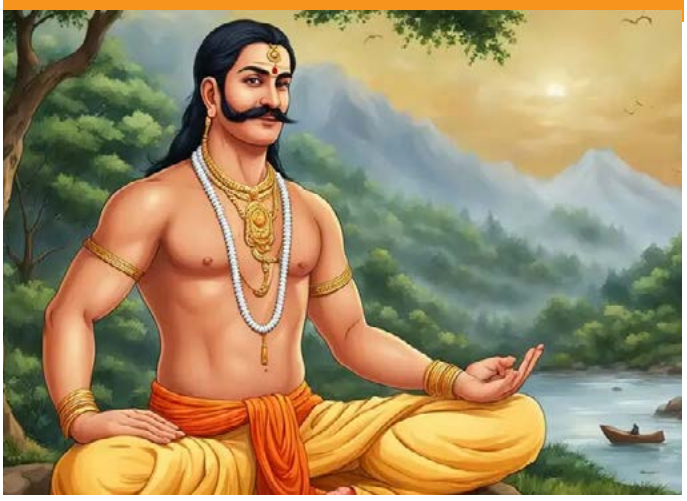

यह राक्षस राज रावण के छोटे भाई हैं। विभीषणजी श्रीराम के अनन्य भक्त हैं। जब रावण ने माता सीता हरण किया था, तब विभीषण ने रावण को श्रीराम से शत्रुता न करने के लिए बहुत समझाया था। इस बात पर रावण ने विभीषण को लंका से निकाल दिया था। विभीषण श्रीराम की सेवा में चले गए।

5. ऋषि व्यास

ऋषि व्यास को वेदवव्यास के नाम से भी जाना जाता है इन्होंने ही चारों वेद,18 पुराण, महाभारत, श्रीमद्भागवत् गीता और भविष्यपूरण की रचना की है। इन्हें वैराग्य का जीवन पसंद था, किन्तु माता के आग्रह पर इन्होंने विचित्रवीर्य की दोनों सन्तानहीन रानियों द्वारा नियोग के नियम से दो पुत्र उत्पन्न किए जो धृतराष्ट्र तथा पाण्डु कहलाए, इनमें तीसरे विदुर भी थे।

6. कृपाचार्य

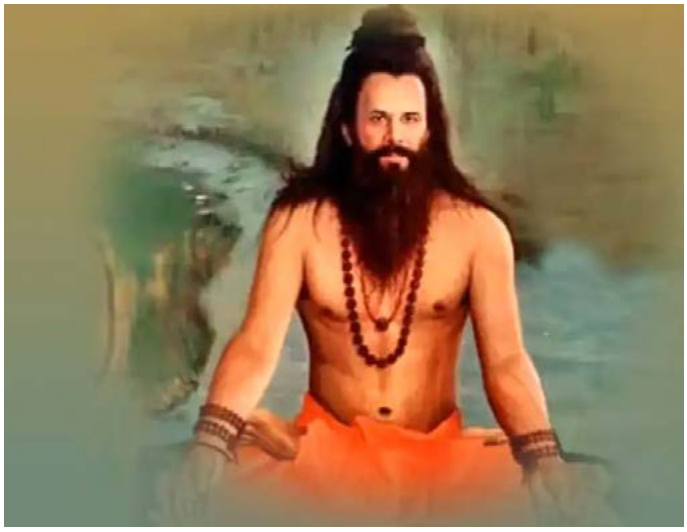

कृपाचार्य अश्वथामा के मामा और कौरवों के कुलगुरु थे। शिकार खेलते हुए शांतनु को दो शिशु प्राप्त हुए। उन दोनों का नाम कृपी और कृप रखकर शांतनु ने उनका लालन-पालन किया।

7. अश्वत्थामा

गुरु द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा श्री कृष्ण के शाप के कारण आज भी धरती लोक पर भटक रहे हैं। महाभारत के अनुसार अश्वस्थामा के माथे पर अमरमणि थी। लेकिन अर्जुन ने वह अमरमणि निकाल ली थी। ब्रह्मास्त्र चलाने के कारण कृष्ण ने उन्हें शाप दिया था कि कल्पांत तक तुम इस धरती पर जीवित रहोगे, इसीलिए अश्वत्थामा आठ चिरन्जीवियों में गिने जाते हैं। माना जाता है कि वे आज भी जीवित हैं तथा अपने कर्म के कारण भटक रहे हैं। मध्यप्रदेश के बुरहानपुर और हरियाणा में उनके दिखाई देने की लोक कथा आज भी प्रचलित हैं।

8.ऋषि मार्कण्डेय

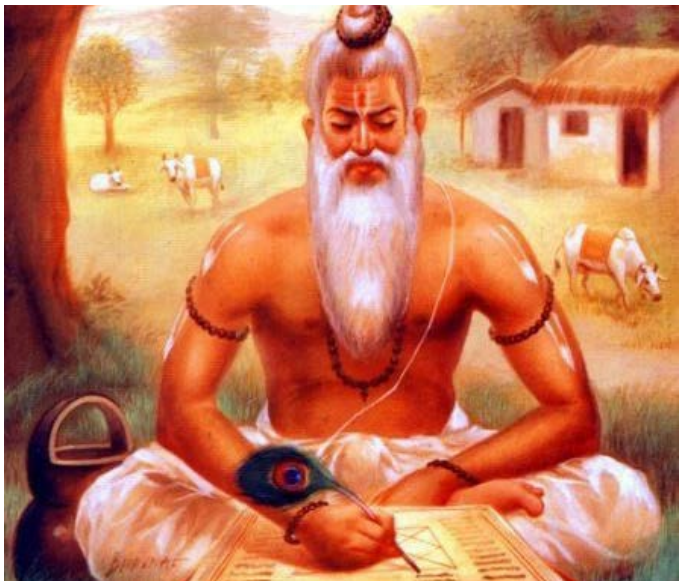

भगवान शिव के परम भक्त थे ऋषि मार्कण्डेय। इन्होंने शिवजी को अपने तप से प्रसन्न किया और महामृत्युंजय मंत्र को सिद्धि किया था। इसलिए इन सातों के साथ-साथ ऋषि मार्कण्डेय का भी नित्य स्मरण करने के लिए कहा जाता है।

सनातन की ऋषि परंपरा

भारतीय ऋषियों और मुनियों ने ही इस धरती पर धर्म, समाज, नगर, ज्ञान, विज्ञान, खगोल, ज्योतिष, वास्तु, योग आदि ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया था। दुनिया के सभी धर्म और विज्ञान के हर क्षेत्र को भारतीय ऋषियों का ऋणी होना चाहिए। उनके योगदान को याद किया जाना चाहिए। उन्होंने मानव मात्र के लिए ही नहीं, बल्कि पशु-पक्षी, समुद्र, नदी, पहाड़ और वृक्षों सभी के बारे में सोचा और सभी के सुरक्षित जीवन के लिए कार्य किया।

सप्त ब्रह्मर्षि, देवर्षि, महर्षि, परमर्षयः।
कण्डर्षिश्च, श्रुतर्षिश्च, राजर्षिश्च क्रमावशः।।

अर्थात : 1. ब्रह्मर्षि, 2. देवर्षि, 3. महर्षि, 4. परमर्षि, 5. काण्डर्षि, 6. श्रुतर्षि और 7. राजर्षि- ये 7 प्रकार के ऋषि होते हैं इसलिए इन्हें सप्तर्षि कहते हैं।

सप्तऋषि तारा मंडल : आकाश में 7 तारों का एक मंडल नजर आता है। उन्हें सप्तर्षियों का मंडल कहा जाता है। इसके अतिरिक्त सप्तर्षि से उन 7 तारों का बोध होता है, जो ध्रुव तारे की परिक्रमा करते हैं। उक्त मंडल के तारों के नाम भारत के महान 7 संतों के आधार पर ही रखे गए हैं। वेदों में उक्त मंडल की स्थिति, गति, दूरी और विस्तार की विस्तृत चर्चा मिलती है।

भारत में ऋषियों और गुरु-शिष्य की लंबी परंपरा रही है। ब्रह्मा के पुत्र भी ऋषि थे तो भगवान शिव के शिष्यगण भी ऋषि ही थे। प्रथम मनु स्वायंभुव मनु से लेकर बौद्धकाल तक ऋषि परंपरा के बारे में जानकारी मिलती है। हिन्दू पुराणों ने काल को मन्वंतरों में विभाजित कर प्रत्येक मन्वंतर में हुए ऋषियों के ज्ञान और उनके योगदान को परिभाषित किया है। प्रत्येक मन्वंतर में प्रमुख रूप से 7 प्रमुख ऋषि हुए हैं। विष्णु पुराण के अनुसार इनकी नामावली इस प्रकार है-

1. प्रथम स्वायंभुव मन्वंतर में- मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वशिष्ठ।
2. द्वितीय स्वारोचिष मन्वंतर में- ऊर्ज्ज, स्तम्भ, वात, प्राण, पृषभ, निरय और परीवान।
3. तृतीय उत्तम मन्वंतर में- महर्षि वशिष्ठ के सातों पुत्र।
4. चतुर्थ तामस मन्वंतर में- ज्योतिर्धामा, पृथु, काव्य, चैत्र, अग्नि, वनक और पीवर।
5. पंचम रैवत मन्वंतर में- हिरण्यरोमा, वेदश्री, ऊर्ध्वबाहु, वेदबाहु, सुधामा, पर्जन्य और महामुनि।
6. षष्ठ चाक्षुष मन्वंतर में- सुमेधा, विरजा, हविष्मान, उतम, मधु, अतिनामा और सहिष्णु।
7. वर्तमान सप्तम वैवस्वत मन्वंतर में- कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और भारद्वाज।

भविष्य में -

1. अष्टम सावर्णिक मन्वंतर में- गालव, दीप्तिमान, परशुराम, अश्वत्थामा, कृप, ऋष्यश्रृंग और व्यास।
2. नवम दक्षसावर्णि मन्वंतर में- मेधातिथि, वसु, सत्य, ज्योतिष्मान, द्युतिमान, सबन और भव्य।
3. दशम ब्रह्मसावर्णि मन्वंतर में- तपोमूर्ति, हविष्मान, सुकृत, सत्य, नाभाग, अप्रतिमौजा और सत्यकेतु।
4. एकादश धर्मसावर्णि मन्वंतर में- वपुष्मान्, घृणि, आरुणि, निःस्वर, हविष्मान्, अनघ और अग्नितेजा।
5. द्वादश रुद्रसावर्णि मन्वंतर में- तपोद्युति, तपस्वी, सुतपा, तपोमूर्ति, तपोनिधि, तपोरति और तपोधृति।
6. त्रयोदश देवसावर्णि मन्वंतर में- धृतिमान, अव्यय, तत्वदर्शी, निरुत्सुक, निर्मोह, सुतपा और निष्प्रकम्प।
7. चतुर्दश इन्द्रसावर्णि मन्वंतर में- अग्नीध्र, अग्नि, बाहु, शुचि, युक्त, मागध, शुक्र और अजित।

इन ऋषियों में से कुछ कल्पान्त-चिरजीवी, मुक्तात्मा और दिव्यदेहधारी हैं।

'शतपथ ब्राह्मण' के अनुसार

1. गौतम, 2. भारद्वाज, 3. विश्वामित्र, 4. जमदग्नि, 5. वसिष्ठ, 6. कश्यप और 7. अत्रि।

'महाभारत' के अनुसार

1. मरीचि, 2 . अत्रि, 3. अंगिरा, 4. पुलह, 5. क्रतु, 6. पुलस्त्य और 7. वसिष्ठ सप्तर्षि माने गए हैं।

❖ महाभारत में राजधर्म और धर्म के प्राचीन आचार्यों के नाम इस प्रकार हैं- बृहस्पति, विशालाक्ष (शिव), शुक्र, सहस्त्राक्ष, महेन्द्र, प्राचेतस मनु, भरद्वाज और गौरशिरस मुनि।

❖ कौटिल्य के अर्थशास्त्र में इनकी सूची इस प्रकार है- मनु, बृहस्पति, उशनस (शुक्र), भरद्वाज, विशालाक्ष (शिव), पराशर, पिशुन, कौणपदंत, वातव्याधि और बहुदंती पुत्र।

❖ वैवस्वत मन्वंतर में वशिष्ठ ऋषि हुए। उस मन्वंतर में उन्हें ब्रह्मर्षि की उपाधि मिली। वशिष्ठजी ने गृहस्थाश्रम की पालना करते हुए ब्रह्माजी के मार्गदर्शन में उन्होंने सृष्टि वर्धन, रक्षा, यज्ञ आदि से संसार को दिशाबोध दिया।

महाकुम्भ का वैदिक साक्ष्य

कैप्टन सुभाष ओझा

महाकुम्भ मानव सभ्यता की सांस्कृतिक विरासत का स्वर्णकाल है। जिसे हम अपने मन-मस्तिष्क में संजोये हुए हैं। यही भारतीय दर्शन, विचार, परम्परा, इतिहास और संस्कृति को परिभाषित करती है। दुनिया में महाकुम्भ जैसा कोई आयोजन नहीं होता है। कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों में पृश्चि ब्रह्माण्ड के द्वितीय मनवंतर के, जम्बूद्वीप के, आर्यावर्त के, भारतवर्ष के, भरत खण्ड के हिमालय की तरायी क्षेत्र के, गंगा के तट पर, गुप्त सरस्वती के पुण्य सलिल पर सौर्य मण्डल के विशेष ग्रह नक्षत्र की अवस्था में सनातन मानव का समागम आदिकाल से हो रहा है।

लेखक सनातन चिन्तक और उच्च न्यायलय में वरिष्ठ अधिवक्ता हैं।

सृष्टि में पृथ्वी पर ऋषियों द्वारा ज्योतिष के आधार पर महान आकाश में ग्रह, राशि आदि के योग से, कुम्भ आता है। मनुष्य की उत्पत्ति के साथ विकास का साक्षी महाकुम्भ पर्व है। प्रयाग, त्रयंम्बकेश्वर, हरिद्वार और उज्जैन में हर तीन वर्ष के अंतर पर लगने वाले कुम्भ का ऐतिहासिक साक्ष्य है। जनश्रुतियों के आधार पर यह पृथ्वी अनन्तकाल से साक्षी रही है। भारती वांग्डमय मानव सभ्यता के सबसे प्रमाणित दस्तावेज हैं, वेदव्यास से पूर्व की परम्परा में मनुष्य की संस्कृति कैसी रही होगी, यह विज्ञान और परिकल्पना की कसौटियों से परे है। श्रीमद्भागवत पुराण जैसे आदि ग्रंथ में कुम्भ की छाया और इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखायी देता है। जिस प्रकार गंगा नदी अपने तटों को काटती हुई अविरल बहती है, उसी प्रकार कुम्भ पर्व मनुष्य के पूर्व संचित कर्मों से प्राप्त हुए शारीरिक पापों को नष्ट करता है। पूर्ण कुम्भ बारह वर्ष के बाद आया करता है। जिसे हम तीर्थ स्थलों मे देखा करते है। वस्तुतः यह सृष्टि का पृथ्वी पर्व है। महाकुम्भ मानव सभ्यता की सांस्कृतिक विरासत का स्वर्णकाल है। जिसे हम अपने मन-मस्तिष्क में संजोये हुए हैं। यही भारतीय दर्शन, विचार, परम्परा, इतिहास और संस्कृति को परिभाषित करती है। दुनिया में महाकुम्भ जैसा कोई आयोजन नहीं होता है। कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों में पृश्चि ब्रह्माण्ड के द्वितीय मनवंतर के, जम्बूद्वीप के, आर्यावर्त के, भारतवर्ष के, भरत खण्ड के हिमालय की तरायी क्षेत्र के, गंगा के तट पर, यमुना के समन्वय स्थल पर, गुप्त सरस्वती के पुण्य सलिल पर सौर्य मण्डल के विशेष ग्रह नक्षत्र की अवस्था में सनातन मानव का समागम आदिकाल से हो रहा है। हरिद्वार में गंगा तट पर, उज्जैन में शिप्रा नदी, तथा नासिक में गोदावरी तट पर और प्रयाग में संगम अर्थात गंगा, यमुना, अदृश्य सरस्वती के मिलन स्थल पर महाकुम्भ लगता है। सनातन की विभिन्न शाखाओं और भाषाओं को जानने वाले तथा अपने-अपने धर्म की मान्यता को मानने वाले, विभिन्न प्रकार के तिलक लगाये बिना किसी निमंत्रण के यहाँ लाखों की संख्या में दर्शनार्थी पहुँचते है। पंचांग में तिथि देखकर यहाँ लोग पहुँचते हैं। यहाँ पण्डित, साधु, महन्त, संत, महात्मा, तपस्वी, ऋषि-मुनि व अमीर-गरीब, ऊँच-नीच, छोटे-बड़े का भेद-भाव नहीं रहता है। पैदल, घोड़ा, हाथी, गाड़ी, ट्रैक्टर, ट्राली, बैलगाड़ी पर चारपाई बाँधे गाँव व परिवार के लोग जो साधन जैसा मिला उसी से चल पड़ते हैं, साध्य मात्र एक होता है, महाकुम्भ में स्नान व दान। कुम्भ शब्द समस्त सृष्टि के लिए कल्याणकारी है। कुम्भ शुभ-भावना, मंगल कामना, लोक-कल्याण, पाप-उद्धार, पाप-प्रायश्चित, लोक-परलोक में पुण्य की प्रेरणा अंतरनिहित

है। भूमण्डल में मनुष्य मात्र के पापों को दूर करना ही कुम्भ की उत्पत्ति का हेतु है।

पुराणों में कुम्भ पर्व की स्थापना 12 की संख्या में की गई है। जिनमें से चार-मृत्युलोक (पृथ्वी) और आठ देवलोक के लिये है। कुम्भ की उत्पत्ति समुद्र मंथन के अमृत कुम्भ की प्राप्ति एवं अमृत तत्व पृथ्वी के निर्धारित तीर्थ क्षेत्रों पर गिरने से मनाया जाता है।

स्कन्द पुराण के अनुसार एक समय की बात है। असुरों ने बड़ी भारी सेना लेकर देवताओं पर आक्रमण कर दिया। उस युद्ध में दानवों के सामने देवताओं को पराजित होना पड़ा, तब देवताओं ने अग्नि की अगुवाई में ब्रह्मा की शरण ली। ब्रह्मा जी ने कहा आप लोग भगवान विष्णु के शरण में क्षीरसागर चलिए वहीं कल्याण का उपाय बताएंगे। भगवान विष्णु की प्रार्थना करने पर पुरुषोतम ने कहा कि हे देवगण! मैं आपके तेज की वृद्धि करूँगा, जो उपाय बताता हूँ उसे आप करिये। असुरों के साथ मिलकर सब प्रकार की औषधियां ले आईये व उसे क्षीरसागर में डाल दीजिए, उसके पश्चात मंदरांचल पर्वत को मथानी व वासुकी नाग को रस्सी बनाकर समुद्र मंथन करिये। इस कार्य में, मैं आप लोगों की अवश्य सहायता करूँगा। इस मंथन से अमृत के कलश की प्राप्ति होगी, जिसका पान कर देवता गण अमर हो जाएंगे। तत्पश्चात, देवताओं व असुरों ने पृथ्वी के उत्तर भाग में हिमालय के समीप, क्षीर सिन्धु सागर में मंथन प्रारम्भ किया। कच्छप (कछुआ) रूपधारी भगवान मंदरांचल पर्वत के आधार केंद्र पर विराजमान हुए और वासुकी नाग के रूप में रस्सी का उपयोग कर देवतागण और असुरगण अपने-अपने पुरुषार्थ का प्रमाण देने लगे। मंथन चल पड़ा, जिसमें क्षीरसागर से 14 रत्न- लक्ष्मी, कौश्तुभ, पारिजात, सुरा, धन्वन्तरि, चन्द्रमा, गरल (विष), पुष्पक विमान, ऐरावत, पाँचजन्य शंख, रम्भा, कामधेनु, उच्चैश्रवः (घोड़ा) और अमृत कुम्भ निकलें। उन्हीं रत्नों में से अमृत कुम्भ के निकलते ही देवताओं के इशारे से इन्द्रपुत्र जयंत अमृत कलश को लेकर आकाश में उड़ गया। उसके बाद दैत्य गुरू शुक्राचार्य ने असुरों को अमृत वापस लाने के लिये कहा, असुरों ने जयंत का पीछा किया और अमृत कलश को लेकर बारह दिन तक अविराम युद्ध होता रहा। इस छीना-झपटी में पृथ्वी के चार स्थानों (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन व नासिक) पर अमृत की बूंदे कलश से गिरी थी। उस समय चन्द्रमा ने घट से, अमृत को रिसने से रोका। सूर्य ने घट फूटने से, गुरू ने दैत्यों के अपहरण से एवं शनि ने देवेन्द्र के भय से, घट (कलश) की रक्षा की। कलह शांत करने के लिए भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर सभी देवताओं को अमृत पान कराया, देव-दानव में अमृत प्राप्ति के लिये बारह दिन तक निरंतर युद्ध हुआ था। देवताओं को चौदह दिन पृथ्वी के बारह वर्ष तुल्य होते हैं। इसलिए कुम्भ भी बारह होते हैं, जिनमें से चार कुम्भ पृथ्वी व आठ कुम्भ देवलोक में होते हैं जिन्हें देवगण ही प्राप्त कर सकते हैं। जिस समय चन्द्रादिकों ने कलश की रक्षा की थी, उस समय की वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले चन्द्र-सूर्यादिक ग्रह जब आते हैं, तब कुम्भ का योग होता है। अर्थात लग्न वर्ष, जिस राशि के योग में रहा, वहां-वहां अमृत कुम्भ-सुधाबिन्दु गिरा था, उन-उन स्थानों पर कुम्भ पर्व होता है। प्रयाग में यह मेला माघ माह (जनवरी-फ़रवरी) में होता है। हरिद्वार में गंगा के किनारे लगने वाला मेला फागुन व चैत्र मास (मार्च-अप्रैल) में होता है, सूर्य मेष व बृहस्पति कुंभ राशि में होते है। उज्जैन में शिप्रा नदी का स्नान वैशाख माह (अप्रैल-मई) में होता है। जब यह सभी ग्रह तुला राशि में होते है। गोदावरी नदी तट पर बसे नासिक में यह पर्व श्रावण माह (जुलाई-अगस्त) में होता है। उस समय चन्द्रमा, सूर्य और बृहस्पति तीनों कर्क राशि में होते है। उज्जैन और नासिक के पूर्व कुम्भ के समय, हरिद्वार व प्रयाग में अर्द्ध कुम्भ लगता है, कहा जाता है कि अर्द्ध-कुम्भ मेलों का प्रारम्भ, हिन्दू धर्म को मुगलों से रक्षा के लिये सनातन समाज को एकजुट करने के लिए किया गया था।

कुम्भ सम्पूर्ण भारत को एक नजर में एक स्थान पर दर्शाता है। सनातन धर्म से सीख कर अन्य मतावलंबी भी आस्था क्षेत्रों में एकजुट होते हैं। कुम्भ में आने वाले विभिन्न सम्प्रदायों के हिन्दू, पवित्र स्नान के महत्व और उस अदृश्य सत्ता की एकता और सम्पूर्णता के विषय में अपने आप में मतैक्य का अनुभव करते हैं। यह मेला अपने विशाल रूप में हमें अपने अद्भुत धर्म और आध्यात्मिक धरोहर की याद दिलाता है, तथा जनमानस में राष्ट्रीय एकीकरण में सहायक होता है।

एक दिलचस्प बात आपको बताना है कि कुम्भ पर्व के आध्यात्मिक रहस्य में जीवात्मा के मोक्ष और गमन की विधि बतायी गई है। जो मनुष्य सांसारिक विषय-वासनाओं से विरक्त होकर श्रद्धापूर्वक तपस्या और संयम का आचरण करते है। वह उत्तरायण मार्ग से सूर्यलोक होते हुए ब्रह्मलोक जाते है। वहां अनेक कल्प तक निवास कर दोबारा जिस मार्ग से गये थे उसी मार्ग से लौटकर इन्द्रादि लोकों में रहते हुए, गुरू-उपदेश द्वारा ज्ञान प्राप्त हो जाने के कारण मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। जो साधारण गृहस्थ जन ग्राम में रहते हैं, वे इष्ट, अग्निहोत्र, वैदिक कर्म, कुओं व तालाबों का निर्माण व नदियों का संरक्षण करते हैं, पौधरोपण करते हैं, पर्यावरण बचाने का आचरण करते हैं। वे दक्षिणायन मार्ग से अर्थात धुम्र मार्ग से चन्द्रलोक जाते हैं। वहां से पुष्य पर्यन्त निवास कर फिर बादल आदि बनकर इस पृथ्वी पर औषधि, तृण तथा वनस्पति रूप में वर्षा द्वारा पैदा होते हैं। जो मनुष्य दान, यज्ञ, व लोक-कल्याण के कार्य नही करते हैं, वे कीट-पतंगा आदि की योनियों में जाते हैं, और बार-बार जन्म-मरण के चक्र में कष्ट भोगते हैं इस प्रकार मरने के बाद मनुष्यों की उत्तम-मध्यम तथा

अधम यह तीन गतियाँ उपनिषदों में वर्णित है। पूर्ण कुम्भ व अर्द्ध कुम्भ मनाने का रहस्य यह है कि पवित्र तीर्थों में आकर गंगा स्नान से पवित्र होकर, श्रेष्ठ विद्वानों के उपदेश द्वारा ज्ञान प्राप्त करके ताप, सत्य, दान, यज्ञ, लोक-कल्याण, आदि शुभ कर्मों का आचरण करने से मृत्यु के बाद हमें सर्वोत्तम, उत्तम, मध्यम गति प्राप्त हो, और अधम गति कदापि न मिले।

चीनी यात्री ह्वेनसाँग, सातवीं शताब्दी में भारत आया था, उसने लिखा है कि सम्राट हर्षवर्धन द्वारा त्रिवेणी संगम के तट पर लगभग पांच लाख साधु-संत आमंत्रित किये गए थे। जिसमें साधु, संत, भिखारी, विद्वान, योगी, सन्यासी, दार्शनिक और आध्यात्मिक जिज्ञासु होते थे, जबकि सच यह है कि कुम्भ पर्व के लिए किसी को आमंत्रण नहीं दिया जाता। सनातन धर्मी पंचांग देखकर स्वयं त्रिवेणी के तट पर उपस्थित होते हैं। ह्वेनसाँग ने लिखा कि सम्राट बौध भिक्षुओं तथा निर्धनों को अन्न-धन और वस्त्र दान करते थे। इस पर्व को 644 ई. में मनाया गया था। ह्वेनसाँग लिखता है कि सम्राट पांच वर्ष के अन्तराल पर अपना समस्त धन, दान कर देते थे। सम्भवतः यह प्रयाग का अर्द्धकृम्भ रहा होगा।

जहाँ तक वर्तमान कुम्भ मेले का प्रश्न है इसे आदिगुरू शंकराचार्य ने अपने दैवीय बल पर वर्तमान स्वरूप दिया। भगवान शंकराचार्य ने सर्वप्रथम चार प्रसिद्ध मठों की स्थापना की। उत्तरप्रदेश में ज्योर्ति मठ, दक्षिण- श्रृंगेरी मठ, पूर्व में- गोवर्धन मठ तथा पश्चिम में- शारदा मठ यह सभी केन्द्र अद्वैत वाद के दर्शन को प्रोत्साहित करने के लिए बनाये गए। तत्पश्चात् उन्होंने इन केन्द्रों को दस भागों में विभक्त किया- पुरी, वन, तीर्थ, गिरी पर्वत, भारती, सरण्य, आश्रम तथा सागर। इन शाखाओं का एक-एक मुखिया नियुक्त किया गया, जिसकी छत्र छाया में साधु, मार्गदर्शन प्राप्त करते थे। भगवान शंकराचार्य द्वारा ही साधुओं को कुम्भ मेले में सम्मिलित होने का निर्देश दिया। जिससे सनातन संतों के साथ सामंजस्य बनाकर, आध्यात्मिक जिज्ञासुओं को प्रेरणा प्रदान कर सकें।

कुम्भ की एक घटना का जिक्र करना चाहता हूँ - सन् 1196 में राजपूतों का प्रभुत्व समाप्त होने के बाद दिल्ली मुस्लिम शासकों के आधिपत्य में आ गयी। सन् 1206 में मोहम्मद गोरी की मृत्यु हुयी और उसके बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने स्वयं को दिल्ली का सुल्तान घोषित कर दिया। तब हरिद्वार क्षेत्र भी उसके राज्य का भाग था सन् 1217 में गुलाम वंश के सुल्तान सम्सुद्दीन एल्तमस ने मंझावर समेत शिवालिक् क्षेत्र को अपने अधिकार में कर लिया। सन् 1253 में सुल्तान नसीरुद्दीन, पंजाब के पहाड़ियों के राजाओं पर विजय प्राप्त करता हुआ, सेना सहित हरिद्वार पहुँचा। हरिद्वार में उस समय कुम्भ चल रहा था, सुल्तान ने उस विशाल जनसैलाब को देखकर युद्ध का इरादा बदल दिया। और कुछ समय ठहरने के बाद गंगा पार करके बदायूँ भाग गया। जल शक्ति एवं जन शक्ति का सामर्थ देखकर सुल्तान भाग खड़ा हुआ। यह कुम्भ की अपनी क्षमता रही है। इतिहास में यह भी दर्ज है कि तैमूर ने अपने समय में निहत्थे तीर्थ यात्रियों पर कुम्भ के दौरान बड़े पैमाने पर नर-संहार किया था। सन् 1398 में दिल्ली को ध्वस्त कर गंगा के किनारे-किनारे हरिद्वार तक पहुँच गया। तैमूर ने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-तैमूर में लिखता है कि जब मुझे पता चला कि गंगा के किनारे बड़ी संख्या में हिन्दू अपने बच्चों एवं पत्नी के साथ एकत्र हुए हैं, उनके साथ बहुत धन-दौलत व पशु इत्यादि है। यह समाचार पाकर वह तीसरे पहर की नमाज अदा कर अमीर सुलेमान के साथ दर्रा-ए-कुटीला (हरिद्वार) की ओर रवाना हुआ। वह स्नान पूर्व वैशाखी पर हरिद्वार आया था। मेले में नर संहार से हरिद्वार की गंगा का पानी रक्त से लाल हो गया। कुम्भ पर्व की गणना के अनुसार 629 वर्ष पूर्व, सन् 1398 में यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटित हुई थी, जिसे हिन्दू समाज कभी नहीं भूल पायेगा। महिला, पुरुष व बच्चों की लाशें गंगा तट के किनारे क्षत-विक्षत पड़ी हुयी थीं। चारों ओर हाहाकार मचा हुआ था, मुगलों ने अचानक मेले पर आक्रमण करके, हिन्दूओं की आस्था गंगा मईया पर चोट पहुँचाने का असफल प्रयास किया। कालान्तर में तीर्थ यात्री उससे भी अधिक संख्या में आकर पर्व पर स्नान किए और कुम्भ के शाश्वत अविनाशी अमृत तत्व का पुण्य लाभ प्राप्त करते रहे हैं।

सन 1628 में जहाँगीर के कालखंड में गंगा स्नान करने वाले हिन्दूओं पर गंगा टैक्स लगाया गया था जिसे शंकाराचार्य मधुसूदन सरस्वती की प्रार्थना पर शाहजहाँ के दरबार में उसकी बेटी जहाँआरा बेग़म और पुत्र दाराशिकोह की सहमति से समाप्त किया गया परन्तु बाद के मुग़ल शासकों ने फिर से गंगा स्नान पर टैक्स लगाया था इस घटना से पता चलता है कि हमारी पीढ़ियों ने कितना अपमान सहकर और बलिदान देकर सनातन को बचाने में अपनी भूमिका निभाई है। उनके बलिदान और गौरव गाथा की कहानी उनकी अगली पीढ़ी के पाठ्य पुस्तकों में होना चाहिए था।

क्षेत्रीय अभिलेखागार प्रयागराज में सन् 1880 के दस्तावेज में स्पष्ट लिखा है कि प्रयागराज को तीन हिस्सों में बाँट दिया जाता था। तीनों हिस्सों में प्रशासनिक अधिकारी तैनात होकर मेले की व्यवस्था करते थे। हमारे गाँव के एक वृद्ध ने अपने दिनों को याद करते हुए बताया कि बेटा वह दिन भी बहुत अच्छे होते थे, जब हम प्रयागराज जाने के लिए एक वर्ष पहले से तैयारी करते थे। बाकायदा तीन माह के लिए राशन बाँधते थे। जानवरों को खाने के लिए घास हम लोग रास्ते में काटते थे। कई गाँव के लोग एक साथ होते थे। महिलायें गाना गाती हुयी बैलगाड़ियों के पीछे-पीछे चला करती थी। प्रशासन विज्ञापन छपवाकर सरायों मे यात्रियों को ठहरने की सूचना देता था।

इतिहास के पन्नों से, कुम्भ के साक्ष्य उजागर होते हैं। जिसमें 600 ईसा पूर्व सम्राट चन्द्रगुप्त के दरबार में यूनानी दूत ने एक मेले को

प्रतिवेदित किया। इसी तरह 547 ईसा पूर्व में अभान नामक सबसे प्रारम्भिक अखाड़े का लिखित प्रतिवेदन इसी समय का है। 904 ईसा पूर्व निरंजनी अखाड़े का गठन हुआ था। आषाढ़ शुक्ल पक्ष की एकादशी सन 1116 ई. श्री पंचाग्नि अखाड़े की स्थापना हुई इनकी इष्ट देव माँ गायत्री हैं। फिर 1146 ई. में जूना अखाड़े का गठन हुआ तथा 1300 ई. में कनफटा योगी, चरमपन्थी साधू, राजस्थान सेना में कार्यरत हुए। 1565 ई. में मधुसूदन सरस्वती द्वारा दसनामी अखाड़े की व्यवस्था करके लड़ाका इकाइयों का गठन किया गया।

आपको बताते चलें कि यह मुगल कालखण्ड था जिसमें मुगल आक्रमणकारियों से हिन्दूओं को अपनी अस्मिता बचाने के लिये साधु समाज में नागा सन्यासियों के अखाड़े का गठन किया। सन् 1684 ई. में फ्रांसीसी यात्री जीन-बैप्टिस्ट टैवर्नियर ने भारत में 12 लाख हिन्दू साधुओं का अनुमान लगाया था। 1690 ई. में नासिक में शैव और वैष्णव सम्प्रदायों में संघर्ष हुआ, जिसमें साठ हजार लोग मारे गए, यह बहुत दुःखद घटना थी। जबकि बाबा तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा है- "शिव द्रोहि मम दास कहावा, सो नर सपने मोहि ना भावा।'' अर्थात जो मनुष्य शिव का द्रोही होगा, वैष्णव सम्प्रदाय को मानने वाला होगा, वह मेरी भक्ति और मुझे कभी प्राप्त नहीं कर पायेगा- ऐसा भगवान श्रीरामजी ने कहा। लगभग 70 वर्षों बाद 1760 ई. में शैव और वैष्णव के बीच हरिद्वार मेले के संघर्ष में 1800 लोग मारे गए ऐसा प्रतीत होता है कि अंग्रेजों की नीति 'फूट डालो, राज करो' के कारण यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना हुयी थी। सन् 1820 ई. में हरिद्वार मेले में भगदड़ के समय 430 लोग मारे गए। भारत की आजादी के बाद 1954 ई. में 40 लाख लोगों अर्थात् भारत की 15 प्रतिशत जनसंख्या ने प्रयागराज में आयोजित कुम्भ में भागीदारी की थी उस मेले की भगदड़ में कई सौ लोग मारे गए। 6 फरवरी 1989 में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने प्रयागराज मेले में 1.5 करोड़ लोगों की उपस्थिति प्रमाणित की थी। जो कि उस समय की किसी एक लक्ष्य के लिए एकत्रित, लोगों की सबसे बड़ी जनसंख्या थी। यह सिलसिला सनातन को लगातार मुगलों व अंग्रेजों के द्वारा कुचलने के प्रयास के बावजूद हिन्दू धर्म की आस्था सतत मजबूत होती रही और मेले में तीर्थ यात्रियों की संख्या में गुणोत्तर वृद्धि होती रही। 30 जनवरी 1994 प्रयाग अर्द्ध-कुम्भ के स्नान दिवस पर दो करोड़ लोगों की उपस्थिति हुयी थी। पांच करोड़ से अधिक श्रद्धालु सन् 1998 ई. में हरिद्वार महाकुम्भ में चार महीनों के पर्व के दौरान पधारे। सन् 2001 ई. में प्रयागराज के मेले में 6 सप्ताह के तीर्थ पर्व में 7 करोड़ श्रद्धालु आये तथा 24 जनवरी के सिर्फ एक दिन में 3 करोड़ तीर्थ यात्रियों ने स्नान किया। सन 2019 में नये भारत में, विश्व के सबसे बड़े धार्मिक व अध्यात्मिक मेला प्रयागराज में कुल 19 दिन में 23 करोड़ लोगों ने संगम में स्नान किया। उत्तर प्रदेश सरकार ने इस बार कुम्भ मेले को सबसे भव्य मेला आयोजित किया था। जिसमें स्वछता अभियान का मानक सर्वोच्च रहा, घाटों पर स्नान के लिए, अच्छी व्यवस्था की गयी और महिलाओं को कपड़े बदलने के लिए बूथ भी बनाये गए, सरकारी आँकडों के अनुसार प्रयागराज कुम्भ आयोजन पर लगभग चार हजार तीन सौ करोड़ रुपये खर्च किये गए।

नासिक मे गोदावरी नदी के तट पर, दक्षिणी गंगा के नाम से विख्यात तीर्थ स्थल है। जिसे ऋषि श्रेष्ठ गौतम की घोर तपस्या के कारण भगवान आशुतोष ने फलस्वरूप प्रदान किया था। इसलिए गोदावरी का नाम गौतमी भी है। बृहस्पति के सिंह राशि मे आने पर यहाँ बड़ा भारी कुम्भ का मेला लगता है।

भगवान महाकाल की नगरी उज्जैन को पूर्व में 'अवंतिका पुरी' के नाम से भी जाना जाता है। इस स्थान को पृथ्वी का नाभिदेश (केन्द्र) भी कहा जाता है। द्वापर में श्रीकृष्ण व बलराम यहां महर्षि संदीपनि के आश्रम में अध्ययन करने आये थे। भारतीय ज्योतिष शास्त्र में देशांतर की शून्य रेखा उज्जैन से ही मानी जाती थी, इसीलिए यह पृथ्वी का केन्द्र माना जाता है। यहां प्रत्येक 12वें वर्ष में कुम्भ का मेला लगता है। अवंतिका के प्रत्येक कल्प में भिन्न-भिन्न नाम होते हैं यथा-कनकश्रृंगा, कुश स्थल, पदमावती, कुमुद्वती, उज्जैनी, विशाल और अमरावती। जो मनुष्य शिप्रा नदी में स्नान करके भगवान महेश्वर का पूजन करते हैं, वह महादेव की सम्पूर्ण कामनाओं को पा लेते है। शिप्रा नदी सर्वत्र पूर्ण दायनी, अतिशय पवित्र तथा पाप हारिणी है। जब भगवान महाविष्णु ने वाराह रूप में प्रकट होकर पृथ्वी का उद्धार किया, उन्हीं भगवान वाराह के हृदय से एक नदी प्रकट हुयी जिसे शिप्रा नदी कहते है। देवताओं को आश्वस्त करते हुये भगवान वाराह ने कहा कि महाकाल वन में तुम्हारी मनोरथ सिद्धी का कारण भूत गुहा से पुण्य स्थान है, जहां मेरे शरीर से उत्पन्न हुयी शिप्रा नदी लीन हुयी है। जहां सरिताओं में श्रेष्ठ गंगा, प्राची, सरस्वती, पुष्कर, गया तीर्थ, तथा शुभ पुरुषोत्तम सरोवर है, उस शिप्रा नदी को जाओ, भगवान वाराह का यह वचन सुनकर ब्रह्मा, इन्द्रादि सब देवता, परम सुन्दर महाकाल वन में जहां सरिताओं में श्रेष्ठ शिप्रा बहती हैं, उस नदी में स्नान करके महाकाल का दर्शन कर लेने पर मृत्यु की कोई चिंता नहीं रहती। कीट या पतंग भी मरने पर रूद्र के अनुचर हो जाते हैं।

स्कन्दपुराण मे अवन्ती क्षेत्र-महात्म्य के अन्तर्गत शिप्रा-महात्म्य की एक बहुत सुन्दर कथा मिलती है। एक समय की बात है - 'भगवान शिव हाथ में कपाल लेकर नागलोक की भगवती पुरी में भिक्षा के लिए गये और घर-घर घूमकर उन्होंने 'भिक्षां देहि' की रट लगायी, किन्तु उन भूखे भगवान शिव को किसी ने भिक्षा नहीं दी। तब वे पुरी से बाहर निकले और उस स्थान पर गये, जहां नागलोक के संरक्षण में अमृत के इक्कीस कुण्ड भरे हुए थे। वहां पहुँच कर सर्वान्तर्यामी भगवान शंकर ने अपने तृतीय नेत्र से अमृत के समस्त कुण्डों को पी लिया और फिर

वहां से उठकर चल दिये। यह सब देख-सुनकर समस्त नागलोक कांप उठा और सब एक-दूसरे से पूछने लगे, यह किसका कर्म है? किसने क्या कर दिया है? जिससे इन कुण्डों का अमृत यहां से चला गया? अब हमारा जीवन निर्वाह कैसे होगा, इस रूप में चिंता प्रकट करते हुये भगवान श्रीहरि के शरण में गये, आकाशवाणी हुयी, नाग गण तुम लोगों ने घर पर आये हुये देवता का आतिथ्य सत्कार नहीं किया और भिक्षा भी नहीं दी। इसलिए तुम्हारे कुण्डों का समस्त अमृत नष्ट हो गया। अब तुम लोग पताल से निकलकर, उत्तम महाकाल वन में जाओ, जो वहां तीनों लोकों को पवित्र करने वाली श्रेष्ठ नदी शिप्रा बहती है, जो समस्त कामनाओं व फलों को देने वाली है। वहां जाकर तुम लोग स्नान करके भगवान शिव का भजन करो। आकाशवाणी से प्राप्त आदेश के अनुसार नागगण सपरिवार विधिवत पूजा अर्चना की, जिससे महादेव भगवान महाकाल प्रसन्न हुये। कहा जाता है कि- उज्जैन में प्रातः काल की बेला में जलने वाले शव का भस्म भी महाकाल को अर्पित किया जाता है। कालांतर में अवंतिका नाम से विख्यात यह नगरी सम्राट विक्रमादित्य के नाम से भी पहचानी जाती है। जिन्होंने भग्नावशेष मिलने के बाद अयोध्या नगरी को पुनः स्थपित किया था।

कुम्भ मेला सम्पूर्ण भारत को एक नजर में एक स्थान पर दर्शाता है। भारत के सनातन धर्म से सीख कर अन्य मतावलंबी भी आस्था क्षेत्रों में एकजुट होते हैं। इस प्रकार कुम्भ में आने वाले विभिन्न सम्प्रदायों के हिन्दू, पवित्र स्नान के महत्व और उस अदृश्य सत्ता की एकता और सम्पूर्णता के विषय में अपने आप में मतैक्य का अनुभव करते हैं। यह मेला अपने विशाल रूप में हमें अपने अद्भुत धर्म और आध्यात्मिक धरोहर की याद दिलाता है, तथा जनमानस में राष्ट्रीय एकीकरण में सहायक होता है।

विश्व के अन्य भागों से आये हुए आगन्तुकों के लिए भारत में कोई भी अन्य मेला इतना चमत्कारिक नहीं दिखता, जितना की कुम्भ मेला। लाखों तीर्थ यात्री मेले में इस लालसा से जाते हैं कि उनका साक्षात्कार, उन विशिष्ट सन्तों से हो जायेगा जो कि ईश्वर से एकाकार हो चुके हैं और उन्हें उस आनन्द की अनुभूति दे देंगे, जो ध्यान और प्रार्थनाओं से पवित्र स्नान के विशेष समय में यह नदियाँ चिरस्थाई, आध्यात्मिक तरंगों से अनुप्राणित होती है। सुदूर और दुर्गम गुफाओं में तपस्या में लीन यह संत, प्रत्येक तीन वर्षों में, सांसारिक व्यक्तिओं में आध्यात्मिक प्राण फूकने के लिये, कुम्भ मेले में अपने आप एकत्रित होते हैं। यह सत्य है कि कोई भी विचार चिरस्थायी तरंगों को जन्म देता है और यह भी सत्य है कि वाणी अथवा विचार का कोई भी स्वर नाशवान नहीं होता है। सदैव ब्रह्मांडीय चेतना में विचार जीवित रहता है। अतः साधक यहां आकर अपने आपको अतीत में बिखरे हुए आध्यात्मिक संगीत से एकाकार कर सकता है। सहस्त्रों शताब्दियों के ध्यान व प्रार्थनाओं ने इन कुम्भ स्थलों के इर्द-गिर्द एक घनीभूत पवित्र वातावरण का निर्माण कर दिया है। अतः इस मेले से सम्बंधित सब कुछ, साधक को अध्यात्म और धर्म से सम्बंधित सारे लाभ प्रदान करता है।

कुम्भ मेले की विशालता और महानता से प्रभावित सिडनी लॉ जो कि सन् 1906 में इंग्लैंड के राजकुमार प्रिंस ऑफ वेल्स के साथ आए थे, वह लिखते हैं कि- 'कुम्भ मेले से अधिक प्रभावशाली, सुन्दर तथा अर्थ और महत्व से भरा हुआ दृश्य, भारत में अन्यत्र कहीं नहीं देखा जा सकता है। वह आगे कहते हैं, 'जब तक आकर इस विशाल जन समूह को नहीं देखते हैं तब तक भारतीय जीवन के कई पक्ष तथा भारतीय चरित्र को आप समझ नहीं पाएंगे। आप देखेंगे हिंदुत्व अपनी चरम अवस्था में है और तब आपको यह अनुभव होगा कि इस श्रद्धा, आध्यात्म और शुद्ध मूर्तिपूजा की भारतीय जनमानस पर कैसी पकड़ है। आप ब्राह्मणत्व को आदिकालीन तांत्रिक व्यवस्था के साथ स्वाभाविक रूप से कार्य करते पाएंगे। आपके सामने एक समय में इतने पुरुष और स्त्रियां होंगे जो कि कदाचित आप जीवन में दोबारा कभी देखने को नहीं पाएंगे।

भारत गाँवों का देश है। हम गाँव में रहते थे, और गाँव की संस्कृति में, माँ की आस्थावान प्रयोगधर्मिता अब मुझे वैज्ञानिक कसौटी पर सही लगने लगी है। कुम्भ गंगा स्नान को लेकर माँ की प्रबल आस्था और माँ गंगा के साथ उनका गहरा रिश्ता था। माँ ने गँगा मैया के लिए अद्भुत संकल्प लिए थे। सन् 2002 कुम्भ के समय में माँ से कहा, माँ इस बार बहुत भीड़ प्रयाग में होगी, आप ना चलें हम आपके लिए गंगा जल ले आएंगे। माँ ने तुरन्त उत्तर दिया- मेरे शरीर मे जब तक प्राण हैं, वह गंगा मइया के कारण ही है, हम सिर्फ स्नान ही नहीं करेंगे' एक महीने माघ मास में गंगा के किनारे कल्पवास भी करेंगे, उनका संकल्प सोच कर मेरा मन भर आया। मुझे लगा, शायद भारत की प्रत्येक ग्रामीण स्त्रियां सदियों से इस भाव में रही होगी, जिनके कारण सनातन की परम्परा अटूट व अक्षुण है। माँ के संस्कार उनके गीतों में होते थे। कुछ दिन बाद पता चला कि माँ ने मेरे विवाह की भी मनौती गंगा तट पर ही की थी। यही भारत की पौराणिक परम्परा है। जिसमे माँ गंगा, गीता, गायत्री और गाँव के जन-जन को जोड़ने की अलौकिक शक्ति सदा मिलती रही।

एक विद्वान की भविष्यवाणी है कि- विश्व का सबसे बड़ा महा समागम सन् 2050 के आस-पास जो महाकुम्भ आयेगा, उसमें हवा में उड़कर पहुँचने वाले वाहनों की संख्या सर्वाधिक होगी। अर्थात विकसित भारत का पूर्ण वैभव उस समय अपने लक्ष्य पर होगा। भारत पूरी दुनिया के लिये विश्व गुरु के रूप में पुनः आरूढ होगा।

(-पुस्तक भारतीय धरोहर से साभार)

विशेष आलेख

कुम्भ की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

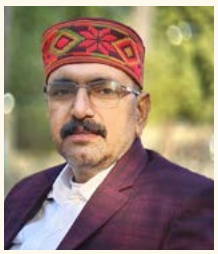

कौस्तुभ नारायण मिश्र

ज्योतिषशास्त्र अब तक का सर्वाधिक वैज्ञानिक और प्राचीन तर्कयुक्त धर्मशास्त्र है। कुम्भ पर्व हर तीन वर्ष के अन्तराल पर हरिद्वार से शुरू होता है। हरिद्वार के बाद कुम्भ पर्व प्रयाग नासिक और उज्जैन में मनाया जाता है। प्रयाग और हरिद्वार में मनाये जाने वाले कुम्भ पर्व में एवं प्रयाग और नासिक में मनाये जाने वाले कुम्भ पर्व के बीच तीन वर्ष का अन्तर होता है। यहाँ माघ मेला संगम पर आयोजित एक बार का वृहद कुम्भ समारोह होता है।

सृष्टि और सृष्टि के जीव या किसी भी तत्व के निर्माण तीन अवस्थाएँ सर्वविदित हैं। निर्माण या सृजन का आरम्भ, निर्माण या सृजन की प्रक्रिया और निर्माण या सृजन की पूर्णता। सृष्टि का शून्य होना; मतलब समाप्त होना नहीं होता। इसका आशय होता है- विस्तार, अनन्त, नभ, आकाश अर्थात अनिवार्य और अकल्पनीय विस्तार। शून्य, बिन्दु का उद्घाटन, विस्तारक और पूर्णता का भी नाम है, साथ ही बिन्दु, उन तीनों अवस्थाओं का बोधक या प्रकटीकरण भी है। जब बिन्दु विस्तार पाता है तो वह शून्य की तरफ अग्रसर होता है। बिन्दु रूप में विद्यमान किसी इकाई को जब आप उसके स्वभाव के अनुरूप चतुर्दिक फैलाएंगे, तो वह शून्य या छिद्र या होल की तरफ अग्रसर होता है। शून्य अर्थात जिसमें क्षेत्र होता है। छिद्र अर्थात जिसमें से आप झाँकिया देख सकते हैं। आपको दिखाई कितना पड़ता है, आपकी देखने की क्षमता कितनी है, यह अलग बात है। विज्ञान के आधुनिक सिद्धान्त ब्लैकहोल, जो कि सूर्य के केन्द्र की ऊर्जा अर्थात शून्यता अर्थात सम्पूर्णता अर्थात पूर्णता और समग्रता में विलीन होने से है और उसके साथ एकाकार होकर उसके अनुसार विलीन हो जाने से सम्बन्धित है। यह छिद्र भी उसी बिन्दु और शून्य का भौतिक रूप है। अणुओं और परमाणुओं की संरचना से लेकर, जीवन का आधारभूत वायुमण्डलीय सतह ओजोन की संरचना में भी ऑक्सीजन के तीन अणुओं के मेल का विधान या नियम हैं।

लेखक प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति के अध्येता एवं शिक्षक हैं।

जीवन की प्राणवायु ऑक्सीजन के ग्रहण और दूसरे रूप में निस्तारण के दौरान भी इनका आगमन और निर्गमन गोलाकार और वृत्ताकार या शून्य आकर स्वरूप में ही जीव जगत द्वारा होता है। जब आप शून्य के बीच से सुदूर झाँकिये और आपकी देखने की जहाँ तक दृष्टि जाती है, किसी लौकिक अवरोध के कारण वहीं तक आपकी दृष्टि होगी। किन्तु यदि आपकी दृष्टि को किसी अवरोध का आसरा नहीं मिला तो आपकी दृष्टि उस शून्य मार्ग से अनन्त की तरफ देखती हुई चली जाती है; जहाँ सब कुछ दिखाई देकर भी कुछ नहीं दिखाई पड़ता और कुछ नहीं दिखाई पड़कर भी, सब कुछ का बोध होता है या दिखाई पड़ता है।

आज से लगभग 10,000 वर्ष पूर्व, सनातन चिरन्तन पुरातन भारतीय दर्शनशास्त्र गणित और विज्ञान के इस वास्तविक निष्कर्ष के बाद; 1859 में प्रकाशित चार्ल्स डार्विन की पुस्तक 'ओरिजिन ऑफ द स्पेसीज' की तीनों आधारभूत मान्यताएँ जीन म्यूटेशन (आनुवंशिक उत्परिवर्तन), नेचुरल सलेक्शन (प्राकृतिक चयन), सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट (सशक्ततम का वर्चस्व) कहीं ठहरती नहीं हैं, अर्थात बचकानी लगती हैं अर्थात खारिज हो जाती हैं। भारतीय दर्शनशास्त्र गणित और विज्ञान के इस वास्तविक नियम कि गहराई में जब आप जाइए तो आपके सामने आधुनिक विज्ञान की एक और काल्पनिक, गलत एवं पूर्वाग्रही मान्यता की भी नींव हिल जाती है कि 'एवरी एक्शन हैज इट्स ओन रिएक्शन'; क्योंकि जिस दर्शन ने गणित और बाद में चलकर विज्ञान की विभिन्न शाखाओं को जन्म दिया है; उसके अनुसार सृष्टि या प्रकृति के नियम के कारण की दो अवस्थाएं होती हैं। पहला, सशर्त या कण्डीशनल अर्थात् यह होगा तो यह होगा और दूसरा शर्त रहित या अनकण्डीशनल अर्थात चाहे जो भी हो, यही होगा। इन दोनों दृष्टियों से एवरी एक्शन हैज इट्स ओन रिएक्शन गलत सिद्धान्त है।

भारतीय विद्या परम्परा में कलश को कुम्भ कहा जाता है। कुम्भ का अर्थ होता है घट या घड़ा। जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है; यह शून्य और उस अनन्तता का बोधक है, जिसकी ऊपर चर्चा की गई है। सृष्टि के प्रत्येक ठोस द्रव और गैसीय अवस्था का मूल स्वरूप बिन्दु ही है। जैसे द्रव चाहे जल या रक्त ही क्यों न हो, आधार भाग या विभाजन की आधारभूत इकाई बूँद ही है। ठोस की आधारभूत इकाई अणु, जिससे आप ज्ञान बघारते हुए नैनो पार्टिकल कहिए या सहजता में लघुतम कण कह दीजिये। गैस की आधारभूत इकाई भी अणु या कण पर ही आधारित है। ऑक्सीजन जिसे हम सर्वाधिक आधारभूत एवं जीवनदायिनी गैस कहते हैं, में दो कणों का युग्म होता है। इतना ही नहीं सूर्य की पराबैगनी किरणों से रक्षा करने वाले जीवन रक्षक ओजोन नामक गैस की परत का भी तीन कणों के मेल से निर्माण होता है।आशय यह है कि सृष्टि की मूल संरचना बिन्दु आधारित है और उसका विस्तार अनन्त शून्य है। यह बात जो हम कह रहे हैं, यह सब भारत की प्राचीन आर्ष परम्परा द्वारा दर्शन गणित और विज्ञान के सम्बन्ध में बताये गये, ज्ञान और विद्या के अधिष्ठान का शिखर बिन्दु है और वहीं से मार्गदर्शन लेकर मैं यह सब बात कह रहा हूँ या कह पा रहा हूँ।

पृथ्वी के उत्पत्ति के आज के तथाकथित सिद्धान्त जिन बातों की चर्चा कर रहे हैं या करते हैं; वे सभी निर्माण और विध्वंस की भी चर्चा करते हैं। निर्माण और विध्वंस प्राकृतिक सृष्टि की स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा है। यही बात महाद्वीपों महासागरों और फिर पर्वतों पठारों मैदानों और सभी प्रकार के प्राकृतिक तत्वों के निर्माण और उत्पत्ति के सम्बन्ध में भी बतायी जाती रही है और बताई जा रही है। यह सब विगत सौ, डेढ़ सौ वर्षों में दुनिया ने बताया है। यह वास्तव में भारत की विगत साल से अधिक की ज्ञान और विद्या या दूसरे शब्दों में कहें तो दर्शन गणित विज्ञान की नकल करके नई पैकिंग के साथ दुनिया को आधुनिक विज्ञान बताकर भरोसा गया है और परोसा जा रहा है। यह भी

आधुनिक विज्ञान ने बताया है कि सृष्टि या पृथ्वी के निर्माण के पहले चरण के बाद पैंजिया नाम के विस्तृत भूभाग और पैंजिया के चतुर्दिक पैंथालासा नाम के विस्तृत सागरीय भाग का अस्तित्व आया। आगे चलकर और दृश्य प्राकृतिक शक्तियों अर्थात निर्माण और विध्वंस की शक्तियों के प्रभाव से पैंजिया में खिंचाव तनाव और संकुचन से यह टूटकर वर्तमान उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव की ओर सरकने से क्रमशः गोण्डवानालैण्ड और अंगारालैण्ड का निर्माण हुआ और पुनः क्रमिक प्रक्रिया से अगले चरण में विभिन्न महद्वीपों और महासागरों पर्वतों पठारों मैदानों नदियों झीलों आदि का तथा उसके अगले चरण में जीव जगत के पोषण और सम्वर्धन हेतु विभिन्न प्रकार की मानव या जीव, जल, वायु, वनस्पति, ऊर्जा, खनिज आदि संसाधनों का निर्माण हुआ।

इसी बात को भारतीय दार्शनिक परम्परा में दैवी अर्थात निर्माण और आसुरी अर्थात विध्वंस या संघारक शक्तियों के बीच संघर्ष या समुद्र मन्थन कहा गया है। समुद्र की तली अर्थात पैंथालाशा की तली में और पैंजिया के नीचे इसी समुद्र मन्थन से जीव जगत के संचालन हेतु अमृत के कलश का प्रकटीकरण हुआ। यही कलश संसाधनों के उत्पत्ति का हेतु और कारण बना और इसीलिये भारत में पूजा अनुष्ठान रीति रिवाज में इसी कलश को केन्द्र मानकर सभी संसाधनों को सांकेतिक रूप से उपयोग करते हुए संकल्प आदि वैज्ञानिक पद्धतियों का विकास और प्रचलन हुआ है। इसी अमृत कलश को पाने के लिये ही दैवी या निर्माण और आसुरी या संघारक शक्तियों के बीच संघर्ष हुआ और उस संघर्ष के परिणामस्वरूप सृष्टि और जीव जगत के संचालन हेतु दैवी शक्तियों को जो विजय प्राप्त हुई उसी के फलस्वरूप हम कुम्भ महोत्सव मनाते हैं।अमृत का मूल स्रोत या आधार जलागार या सागर है। इन्हीं से विभिन्न संसाधनों का निर्माण हुआ है, जिनको आधुनिक संसाधनों- मानव जल वन वायु मिट्टी ऊर्जा और खनिज के द्वारा वैदिक रीति से कुम्भ या येसे ही किसी उत्सव में संकल्प प्रदान करने और पुण्य आदि का विधान है। पवित्र जल में विभिन्न मुख्य तिथियों पर स्नान करके हम पुण्य आरोग्य और दीर्घायु का फल प्राप्त करते हैं। पवित्र और मुख्य तिथियों का सम्बन्ध, सूर्य की पृथ्वी सहित सभी ग्रहों और उपग्रहों पर पड़ने वाली किरणों के साथ तथा ग्रहों के आपस में एक दूसरे पर प्रभाव और स्थान के आधार पर तय होता है। क्योंकि सभी ग्रह सूर्य के सापेक्ष एक निश्चित कक्षा से निश्चित समयावधि में परिक्रमा करते हैं। इस पर इस महोत्सव का सम्बन्ध समुद्र मन्थन से निकले अमृत कलश से जुड़ा है।

दैवीय या निर्माणक और आसुरी या विध्वंसक यह संघारक शक्तियों द्वारा अमृत पान के लिये जब अमृत कलश को एक दूसरे से छीना जा रहा था अर्थात संसाधनों पर अपना-अपना अधिकार जमाने का प्रयास किया जा रहा था; तब महाद्वीप या स्थलीय भूभाग पर विस्तीर्ण, उसकी बूँदें छिटककर धरती की तीन नदियों गंगा गोदावरी और छिप्रा में छिटककर गिर गई। जहाँ जब ये बूँदें गिरी थीं, उस स्थान पर तब कुम्भ का आयोजन होता है। अर्ध का अर्थ है, आधा। हरिद्वार और प्रयाग में दो कुम्भ पर्वों के बीच छह वर्ष के अन्तराल में अर्धकुम्भ का आयोजन होता है। क्योंकि हरिद्वार और प्रयाग दोनों स्थानों पर एक ही नदी गंगा के तट पर कुम्भ के पर्व का आयोजन होता है। पौराणिक और प्राचीन भारतीय शास्त्रीय वैज्ञानिक ग्रन्थों में भी कुम्भ एवं अर्धकुम्भ के आयोजन को लेकर ज्योतिषीय विश्लेषण उपलब्ध है। ज्योतिषशास्त्र अब तक का सर्वाधिक वैज्ञानिक और प्राचीन तर्कयुक्त धर्मशास्त्र है। कुम्भ पर्व हर तीन वर्ष के अन्तराल पर हरिद्वार से शुरू होता है। हरिद्वार के बाद कुम्भ पर्व प्रयाग नासिक और उज्जैन में मनाया जाता है। प्रयाग और हरिद्वार में मनाये जाने वाले कुम्भ पर्व में एवं प्रयाग और नासिक में मनाये जाने वाले कुम्भ पर्व के बीच तीन वर्ष का अन्तर होता है। यहाँ माघ मेला संगम पर आयोजित एक बार का वृहद कुम्भ समारोह होता है। सृष्टि, घट या कुम्भ के प्राकट्य की दिव्यता की गहराई में जब आप जायेंगे तो आपको इसके वास्तविक स्वरूप का एहसास होगा। कुम्भ मेले का आयोजन प्राचीन काल से हो रहा है। क्योंकि यह सृष्टि निर्माण के दूसरे हिस्से या चरण अर्थात सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया का हिस्सा है।

एक बात सदैव ध्यान में रखना चाहिये कि श्रेष्ठ निर्माण का आरम्भ बिन्दु से और उस निर्माण की पूर्णता अर्थात शून्य से होती है। किन्तु निर्माण की प्रक्रिया के दौरान यह बिन्दु विभिन्न प्रकार की अवस्थाओं व्यवस्थाओं स्वरूपों और आकृतियों से होकर गुजरता है। इसी प्रक्रिया से यह अनेक बार रेखा द्विभुज त्रिभुज चतुर्भुज शटभुज आदि का भी रूप ग्रहण करता है। इस क्रम में आप आकृतियों को अनेक बार गेंद के समान, अनेक बार नारंगी के समान, अनेक बार अण्डे के समान या पृथ्वी के समान अर्थात इसको पृथिव्याकार ही क्यों न मान लें! इसी कारण पृथ्वी नामक ग्रह पर अन्य ग्रहों के प्रभाव और सृष्टि के अनुसार आकृतियों की निर्मित होती है और इसी के अनुसार इन कुम्भ पर्वों के समय का भी निर्धारण होता है। कुम्भ पर्व के दार्शनिक गणितीय और वैज्ञानिक प्रमाण तो सृष्टि की उत्पत्ति के प्रक्रिया के द्वितीय चरण से ही उपलब्ध है; किन्तु इसमें पर्व के महत्त्व से सम्बन्धित प्रथम साहित्यिक और कलात्मक प्रमाण महान बौद्ध तीर्थयात्री ह्वेनसाँग के लेख में मिलता है; जिसमें उसने छठवीं शताब्दी पूर्व में सम्राट हर्षवर्धन के शासन में होने वाले भारतीय कुम्भ महोत्सव का प्रसंगवश वर्णन किया है। उसने उल्लेख किया है कि कुम्भ मेले का आयोजन चार जगहों पर प्रत्येक तीन वर्ष में होता है। उक्त चार स्थानों पर प्रत्येक तीन वर्ष बाद कुम्भ आयोजित होता है।

प्रश्न यह है कि किसी एक स्थान पर प्रत्येक 12 वर्ष बाद ही कुम्भ का आयोजन होता है। जैसे प्रयाग में कुम्भ का आयोजन हो रहा है तो उसके बाद अब तीन वर्ष बाद नासिक में, फिर अगले तीन वर्ष बाद उज्जैन और फिर अगले तीन वर्ष बाद हरिद्वार में कुम्भ का

आयोजन होगा। सिंहस्थ कुम्भ का सम्बन्ध सिंह राशि से है। सिंह राशि में बृहस्पति एवं मेघ राशि में सूर्य के प्रवेश करने पर उज्जैन में कुम्भ का आयोजन होता है। इसके अलावा सिंह राशि में बृहस्पति के प्रवेश होने पर कुम्भ पर्व का आयोजन गोदावरी के तट पर नासिक में होता है। किसी भी महाकुम्भ को उत्सव के रूप में ही क्यों मनाते हैं? क्योंकि यह योग 12 वर्ष बाद ही आता है। इस कुम्भ के कारण ही यह धारणा प्रचलित हो गयी कि मेले का आयोजन प्रत्येक 12 वर्ष में होता है। हरिद्वार के कुम्भ का सम्बन्ध वृश्चिक राशि से है। कुम्भ राशि में बृहस्पति के प्रवेश होने पर एवं मेघ राशि में सूर्य के प्रवेश होने पर कुम्भ का पर्व हरिद्वार में आयोजित किया जाता है। प्रयाग के कुम्भ का भी विशेष महत्त्व इसलिये है; क्योंकि यह 12 वर्ष के बाद गंगा यमुना एवं सरस्वती के संगम पर आयोजित होता है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार जब बृहस्पति कुम्भ राशि में और सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है; तब कुम्भ मेले का आयोजन प्रयाग में होता है। दूसरे नियम से मेष राशि के चक्र में बृहस्पति एवं सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में प्रवेश करने पर अमावस्या के दिन कुम्भ का पर्व प्रयाग में आयोजन का आरम्भ होता है। बारह वर्ष में एक बार सिंहस्थ कुम्भ पर्व नासिक एवं त्रयम्बकेश्वर में आयोजित होता है। सिंह राशि में बृहस्पति के प्रवेश होने पर कुम्भ पर्व गोदावरी के तट पर नासिक में होता है। अमावस्या के दिन बृहस्पति सूर्य एवं चन्द्र के कर्क राशि में प्रवेश होने पर भी कुम्भ पर्व गोदावरी तट पर आयोजित होता है। उज्जैन का कुम्भ सिंह राशि में बृहस्पतिवार एवं मेष राशि में सूर्य के प्रवेश होने पर यह कुम्भ आयोजित होता है। इसके अलावा कार्तिक की अमावस्या के दिन सूर्य और चन्द्र के साथ होने पर एवं बृहस्पति के तुला राशि में प्रवेश होने पर भी मोक्षदायक कुम्भ उज्जैन में आयोजित होता है।

समुद्र मन्थन की कथा में कहा गया है कि कुम्भ पर्व का सीधा सम्बन्ध तारों से है। अमृत कलश को स्वर्गलोक तक ले जाने में जयन्त को 12 दिन लगे थे। देवों का 1 दिन मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है। युद्ध के दौरान सूर्य चन्द्र और शनि आदि देवताओं ने कलश की रक्षा किया था। इसीलिये इनके युग्म और समीकरण का भी कुम्भ से सम्बन्ध है। अमृत की ये बूँदें चार जगह गिरी थीं। गंगा नदी प्रयागराज एवं हरिद्वार में; गोदावरी नदी, नासिक में और शिप्रा नदी उज्जैन में। सभी नदियों का सम्बन्ध गंगा से है। गोदावरी को गोमती, गंगा के नाम से और क्षिप्रा नदी को भी उत्तरी गंगा के नाम से जाना जाता है। इसी क्रम में यहाँ गंगा गंगेश्वर की आराधना स्कन्ध ब्रह्मा स्कन्धपुराण में स्पष्टता से की गयी। विन्ध्यस्य दक्षिणी गंगा, गौतम ने उत्तरी विन्ध्यस्य भागीरथ को विधियते एवं मुक्तदा गंगा कलया वन संस्था गंगेश्वर कहा जाता है। सनातन पद्धति के अनुसार भारत में मनाये जाने वाला विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक पर्व या उत्सव या त्यौहार या कुम्भ मेला होता है।

वर्ष 2019 में प्रयाग में अर्धकुम्भ मेले का आयोजन नैमित्तिक और पारम्परिक दोनों दृष्टियों से हुआ था। खगोल गणनाओं के अनुसार यह मेला मकर संक्राति के दिन से प्रारम्भ होता है। जब सूर्य और चन्द्रमा वृश्चिक राशि में और बृहस्पति मेष राशि में प्रवेश करते हैं तथा सूर्य उत्तरायण होना आरम्भ होते हैं। मकर संक्राति के दिन होने वाले इस योग को कुम्भ स्नान योग कहते हैं। इस दिन को विशेष मांगलिक योग इसलिये माना जाता है; क्योंकि इस दिन पृथ्वी से उच्च योगों के द्वारा अर्थात उत्तरायण का आरम्भ इसी दिन से होता है। इस दिन स्नान करना साक्षात स्वर्ग का दर्शन माना जाता है। अर्ध का अर्थ होता है आधा; इसी कारण 12 वर्षों के अन्तराल में आयोजित होने वाले पूर्ण कुम्भ के बीच अर्धपूर्ण कुम्भ के छह वर्ष बाद अर्द्धकुम्भ आयोजित होता है। हरिद्वार में 26 जनवरी से 14 मई 14 तक पिछला कुम्भ चला था। अर्धकुम्भ मेला उत्तरांचल राज्य के गठन के पश्चात ऐसा प्रथम अवसर था। ज्योतिषी और पौराणिक विश्लेषणों के अनुसार ग्रहों की स्थिति हरिद्वार से बहती गंगा के किनारे पर स्थित हर की पैड़ी स्थान पर गंगा जल औषधि का निर्माण करती है तथा उन दिनों यह अमृतमय हो जाती है।

सागर मन्थन से जुड़े कुम्भ पर्व के आयोजन को लेकर दो तीन पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं; जिनमें देव दानव द्वारा समुद्र मन्थन से प्राप्त अमृतकुम्भ से अमृत की बूँदों के गिरने को लेकर है। इस कथा के अनुसार महर्षि दुर्वाषा के श्राप के कारण जब इन्द्र और अन्य देवता कमजोर हो गये तब दैत्यों ने देवताओं पर आक्रमण करके उन्हें परास्त कर दिया। तत्पश्चात सब देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास गये और उन्हें सारा वृतान्त कह सुनाया। भगवान विष्णु ने उन्हें दैत्यों के साथ मिलकर छीरसागर का मन्थन करके अमृत निकालने की सलाह दिया। भगवान विष्णु का ऐसा कहने पर सभी देवता के साथ सन्धि करके अमृत निकालने के यत्न में लग गये। इसी हेतु दैवी और आसुरी लोगों के लिये अप्रकट सृष्टियों अर्थात निर्माण और विध्वंसक शक्तियाँ समुद्र मन्थन में लग गयीं। अमृत कुम्भ के निकलते ही देवताओं के इशारे पर इन्द्र पुत्र जयन्त, अमृत कलश को लेकर आकाश में उड़ गया। उसके बाद दैत्यगुरु शुक्राचार्य के आदेशानुसार दैत्यों ने अमृत को वापस लाने के लिये जयन्त का पीछा किया और काफी देर के बाद उन्होंने बीच रास्ते में ही जयन्त को पकड़ लिया। जैसा कि ऊपर वर्णित है जयन्त को पकड़ने के पश्चात् अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिये देवताओं और दानवों में 12 दिन तक अविराम युद्ध होता रहा। जिस समय चन्द्र आदि देवताओं तथा अन्य ग्रहों आदि ने कलश की रक्षा किया था, उस समय वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले चन्द्र और सूर्यादिक ग्रह जब आते हैं, उस समय कुम्भ का योग होता है अर्थात जिस वर्ष जिस राशि पर सूर्य चन्द्रमा और बृहस्पति का संयोग होता है, उसी वर्ष और उसी राशि के योग में जहाँ जहाँ अमृत की बूँद गिरी थी, वहाँ वहाँ कुम्भ पर्व का आयोजन किया जाता है।

महाकुंभ: सांस्कृतिक परंपराएँ, कलात्मक अभिव्यक्तियाँ और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

डॉ. अतुल नारायण सिंह

कुंभ पर्व का ज्योतिषीय महत्व इसे और विशिष्ट बनाता है। यह पर्व सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति ग्रहों की विशेष स्थिति पर आधारित होता है। भारतीय ज्योतिषशास्त्र में सूर्य को आत्मा, चंद्रमा को मन और बृहस्पति को ज्ञान का प्रतीक माना गया है। यह पर्व तब आयोजित होता है, जब ये ग्रह किसी विशेष राशि में प्रवेश करते हैं। कुंभ का महत्व केवल धार्मिक नहीं है; यह भारतीय समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है। मेले में धार्मिक अनुष्ठानों के साथ-साथ प्रवचन, सांस्कृतिक गतिविधियाँ और व्यापारिक मेलों का आयोजन होता है। ऐतिहासिक रूप से, यह मेले न केवल धार्मिक आस्था के केंद्र रहे हैं, बल्कि भारतीय समाज के आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन के भी अभिन्न अंग रहे हैं।

“कुंभ भारतीय संस्कृति का एक भव्य और ऐतिहासिक पर्व है, जो धार्मिक, सांस्कृतिक और ज्योतिषीय परंपराओं का संगम है। इसकी जड़ें वैदिक युग के ‘समन’ उत्सवों में हैं, जिनका उल्लेख ऋग्वेद और अथर्ववेद में मिलता है। ‘समन’ उत्सवों में हजारों लोग किसी विशिष्ट स्थान पर एकत्र होकर यज्ञ, हवन, स्नान और दान जैसे धार्मिक कर्मों में भाग लेते थे। इन उत्सवों को ही कुंभ मेले का प्रारंभिक रूप माना जाता है।”

महाकुंभ भारतीय संस्कृति, आस्था और परंपराओं का जीवंत प्रतीक है। यह विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक और सांस्कृतिक समागम है, जिसमें करोड़ों लोग गंगा, यमुना और सरस्वती के त्रिवेणी संगम पर स्नान और धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से आत्मशुद्धि के लिए एकत्र होते हैं। महाकुंभ का आयोजन चार प्रमुख स्थलों—प्रयागराज (उत्तर प्रदेश), हरिद्वार (उत्तराखंड), उज्जैन (मध्य प्रदेश) और नासिक (महाराष्ट्र)—पर 12 वर्षों के अंतराल में होता है। इस मेले की जड़ें प्राचीन भारतीय संस्कृति, पौराणिक कथाओं और धार्मिक विश्वासों में गहराई से समाहित हैं। महाकुंभ न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक आयोजन है, बल्कि यह भारतीय कला, संस्कृति और सामाजिक समरसता का उत्सव भी है। इसका ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, सांस्कृतिक परंपराएँ और कलात्मक अभिव्यक्तियाँ इसे अद्वितीय बनाती हैं। महाकुंभ का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य इसे भारतीय समाज की धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर के रूप में विशिष्ट पहचान प्रदान करता है। इसके पौराणिक संदर्भ, प्राचीन ऐतिहासिक प्रमाण, मध्यकालीन विकास और आधुनिक समय में वैश्विक पहचान ने इसे एक अद्वितीय आयोजन बना दिया है।

कुंभ भारतीय संस्कृति का एक भव्य और ऐतिहासिक पर्व है, जो धार्मिक, सांस्कृतिक और ज्योतिषीय परंपराओं का संगम है। इसकी जड़ें वैदिक युग के ‘समन’ उत्सवों में हैं, जिनका उल्लेख ऋग्वेद और अथर्ववेद में मिलता है। ‘समन’ उत्सवों में हजारों लोग किसी विशिष्ट स्थान पर एकत्र होकर यज्ञ, हवन, स्नान और दान जैसे धार्मिक कर्मों में भाग लेते थे। इन उत्सवों को ही कुंभ मेले का प्रारंभिक रूप माना जाता है। स्कंद पुराण में कुंभ पर्व का विस्तृत वर्णन मिलता है, जिसमें इसे पुष्कर योग से जोड़ा गया है। पुष्कर योग बारह वर्षों में एक बार बनता है और इस दौरान प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक जैसी पवित्र स्थलों पर कुंभ का आयोजन होता है। इन स्थानों की नदियों में स्नान करना विशेष रूप से पुण्यदायी माना गया है।

कुंभ पर्व का ज्योतिषीय महत्व इसे और विशिष्ट बनाता है। यह पर्व सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति ग्रहों की विशेष स्थिति पर आधारित होता है। भारतीय ज्योतिषशास्त्र में सूर्य को आत्मा, चंद्रमा को मन और बृहस्पति को ज्ञान का प्रतीक माना गया है। यह पर्व तब आयोजित होता है, जब ये ग्रह किसी विशेष राशि में प्रवेश करते हैं। उदाहरण के लिए, हरिद्वार में कुंभ पर्व तब होता है, जब बृहस्पति कुंभ राशि में और सूर्य मेष राशि में होते हैं। इसी तरह, उज्जैन का कुंभ पर्व तब आयोजित होता है, जब सूर्य और बृहस्पति

सहायक आचार्य,
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सिंह राशि में होते हैं। ग्रहों की इन स्थितियों को धार्मिक दृष्टि से नदियों के जल में अमृततुल्य गुण उत्पन्न करने वाला माना गया है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो ग्रहों और पृथ्वी के बीच गुरुत्वीय और विद्युत-चुंबकीय प्रभाव से नदियों के जल में शुद्धिकरण और ऊर्जा के विशेष गुण आते हैं, जो इसे मन और शरीर के लिए लाभकारी बनाते हैं।

कुंभ का महत्व केवल धार्मिक नहीं है; यह भारतीय समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है। मेले में धार्मिक अनुष्ठानों के साथ-साथ प्रवचन, सांस्कृतिक गतिविधियाँ और व्यापारिक मेलों का आयोजन होता है। ऐतिहासिक रूप से, यह मेले न केवल धार्मिक आस्था के केंद्र रहे हैं, बल्कि भारतीय समाज के आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन के भी अभिन्न अंग रहे हैं। कुंभ मेले के दौरान लाखों श्रद्धालु कल्पवास करते हैं , जिसमें साधना, दान और आत्मसंयम का विशेष महत्व है।

पुराणों में वर्णित कथाओं के अनुसार, कुंभ पर्व का संबंध समुद्र मंथन से भी है। देवताओं और दानवों ने मिलकर अमृत कुंभ के लिए संघर्ष किया था, जिसमें अमृत से भरा हुआ कुंभ पृथ्वी के चार स्थानों पर गिरा था। यही चार स्थान—प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक—आज के कुंभ पर्व के आयोजन स्थल हैं। स्कंद पुराण के अनुसार, इन स्थानों पर स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है । कुंभ पर्व के आयोजन का समय, ज्योतिषीय गणनाओं के आधार पर, इन चार स्थानों पर तय किया जाता है।

कुंभ मेले की अनूठी विशेषता इसका विशाल आयोजन और विश्व स्तर पर इसकी पहचान है। यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपरा का जीवंत प्रतीक है। करोड़ों श्रद्धालु हर बार इसमें भाग लेते हैं, जिससे यह विश्व का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण और धार्मिक आयोजन बनता है। कुंभ मेला भारतीय जन-जीवन में धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक चेतना का अद्वितीय उदाहरण है, जो आध्यात्मिकता, परंपरा और विज्ञान का समन्वय प्रस्तुत करता है। यह भारतीय परंपरा और सांस्कृतिक धरोहर को विश्व स्तर पर गौरवान्वित करता है।

मध्यकालीन और औपनिवेशिक काल में महाकुंभ ने नए आयाम प्राप्त किए। संत परंपरा और भक्ति आंदोलन के विकास के साथ, महाकुंभ संतों और साधुओं के लिए एक संगम स्थल बन गया। इसी दौरान विभिन्न अखाड़ों की स्थापना हुई, जो कुंभ मेले का एक प्रमुख हिस्सा हैं। औपनिवेशिक काल में, ब्रिटिश प्रशासन ने महाकुंभ को दस्तावेजों में दर्ज किया और मेले के प्रबंधन को संगठित किया। ब्रिटिश अधिकारियों ने इस आयोजन की भव्यता और उसमें शामिल होने वाले जनसमूह का उल्लेख किया, जिससे इसे वैश्विक पहचान मिलने लगी।

आधुनिक काल में महाकुंभ भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। इसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा 'अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर' के रूप में मान्यता प्राप्त है। आज महाकुंभ न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन है, बल्कि यह भारतीय परंपराओं, आध्यात्मिकता और सामाजिक एकता का वैश्विक मंच बन गया है। आधुनिक तकनीक, मीडिया और प्रशासनिक व्यवस्थाओं ने महाकुंभ को एक अभूतपूर्व भव्यता प्रदान की है, जिसमें करोड़ों लोग शामिल होते हैं।

महाकुंभ का यह ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य इसे केवल एक धार्मिक आयोजन से कहीं अधिक बनाता है। यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक गहराई, पौराणिक मान्यताओं, ऐतिहासिक परंपराओं और आध्यात्मिकता का प्रतीक है। इसके माध्यम से भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत को न केवल सहेज रहा है, बल्कि उसे विश्व स्तर पर प्रस्तुत भी कर रहा है। महाकुंभ भारतीय समाज की सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं का एक अद्भुत संगम है। यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि समाज में एकता, समरसता और सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक भी है। महाकुंभ में धार्मिक अनुष्ठानों, लोक परंपराओं और आध्यात्मिक गतिविधियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति की गहराई और समृद्धि को जीवंत किया जाता है। महाकुंभ के धार्मिक अनुष्ठान इसकी सबसे प्रमुख विशेषता हैं। इनमें शाही

स्नान प्रमुख है, जिसे आध्यात्मिक शुद्धिकरण का प्रतीक माना जाता है। साधु-संतों, अखाड़ों और लाखों श्रद्धालुओं द्वारा पवित्र संगम में डुबकी लगाने का यह आयोजन मेले का केंद्र बिंदु होता है। विभिन्न अखाड़ों जैसे नागा, दिगंबर, जूना और निर्मोही का आगमन महाकुंभ को धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से और भी महत्वपूर्ण बना देता है। ये अखाड़े अपनी अनूठी परंपराओं और रीति-रिवाजों का प्रदर्शन करते हैं। साथ ही, साधु-संतों द्वारा प्रवचन, भजन और सत्संग का आयोजन श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करता है।

महाकुंभ की लोक परंपराएँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम इसे एक संपूर्ण सांस्कृतिक आयोजन बनाते हैं। मेले के दौरान विभिन्न राज्यों से आए लोक कलाकार अपने गीत, नृत्य और नाटकों के माध्यम से भारतीय लोक कला और परंपराओं की झलक प्रस्तुत करते हैं। इन कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कलाकार न केवल अपनी क्षेत्रीय सांस्कृतिक धरोहर का प्रदर्शन करते हैं, बल्कि समाज में कला और संस्कृति के महत्व को भी रेखांकित करते हैं। आध्यात्मिकता का प्रचार-प्रसार महाकुंभ का मुख्य उद्देश्य है। संत-महात्मा और धार्मिक गुरु समाज को धार्मिक शिक्षा और आध्यात्मिक संदेश देते हैं । उनके प्रवचन और सत्संग न केवल धार्मिक ज्ञान का प्रचार करते हैं, बल्कि समाज को नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की ओर भी प्रेरित करते हैं। महाकुंभ एक ऐसा मंच बनता है, जहाँ धर्म और आध्यात्मिकता की गहराई को समझने और अनुभव करने का अवसर मिलता है। सामाजिक समरसता महाकुंभ का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। यह आयोजन जाति, धर्म और वर्ग की सीमाओं को मिटाकर समाज में एकता और भाईचारे को बढ़ावा देता है। यहाँ हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी पृष्ठभूमि से हो, समान भाव से इस महान आयोजन में भाग लेता है । यह आयोजन भारतीय समाज की सहिष्णुता और विविधता में एकता के आदर्श को साकार करता है।

महाकुंभ न केवल धार्मिक अनुष्ठानों का केंद्र है, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक परंपराओं का प्रतीक है। यह आयोजन धर्म, संस्कृति और समाज के विभिन्न पहलुओं को एक साथ लाकर मानवता को एकता और आध्यात्मिकता का संदेश देता है। महाकुंभ केवल धार्मिक आयोजन भर नहीं है, बल्कि यह भारतीय कला, शिल्प और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का एक भव्य मंच भी है। यहाँ स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला, लोक कला, संगीत, और नृत्य की समृद्ध परंपराएँ देखने को मिलती हैं, जो भारतीय संस्कृति की विविधता और गहराई को उजागर करती हैं।

महाकुंभ के दौरान स्थापत्य कला का अद्भुत प्रदर्शन होता है। अस्थायी पंडाल, शिविर, और आश्रमों का निर्माण आधुनिक तकनीकी और पारंपरिक शिल्पकला का अनूठा संगम प्रस्तुत करता है। इन संरचनाओं में विशाल तोरणद्वार और सजावट मेले को भव्यता प्रदान करते हैं। ये स्थापत्य केवल संरचनाएँ नहीं हैं, बल्कि श्रद्धालुओं के लिए आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुभव का एक हिस्सा बनती हैं। मूर्तिकला और चित्रकला महाकुंभ की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है। धार्मिक चित्रकारी और मूर्तिकला का प्रदर्शन मेले की शोभा बढ़ाता है। साधुओं, देवताओं और धार्मिक घटनाओं पर आधारित कलाकृतियाँ श्रद्धालुओं को न केवल आध्यात्मिक रूप से प्रेरित करती हैं, बल्कि कला प्रेमियों के लिए भी आकर्षण का केंद्र होती हैं। विभिन्न कलात्मक शैलियों जैसे मधुबनी, गोंड और वारली पेंटिंग्स की झलक मेले में स्पष्ट रूप से दिखती है, जो भारत की पारंपरिक चित्रकला की विविधता को प्रदर्शित करती है।

लोक कला और शिल्पकला महाकुंभ के दौरान विशेष स्थान रखती हैं। देश के विभिन्न हिस्सों से आए कारीगर अपने हस्तशिल्प उत्पादों और पारंपरिक कलाओं का प्रदर्शन करते हैं। इनमें मिट्टी के बर्तन, लकड़ी के खिलौने, कपड़े पर की गई हाथ की कढ़ाई और पारंपरिक आभूषण प्रमुख हैं। ये कलाएँ न केवल मेले की शोभा बढ़ाती हैं, बल्कि स्थानीय कारीगरों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में सहायक होती हैं।

संगीत और नृत्य महाकुंभ के सांस्कृतिक आयोजन का अभिन्न हिस्सा हैं। शास्त्रीय संगीत, भजन, कीर्तन, और लोक नृत्य के माध्यम से धार्मिक और सांस्कृतिक एकता का संदेश फैलाया जाता है। इन कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कलाकार भारतीय संगीत और नृत्य परंपरा की समृद्धि को जीवंत करते हैं। मेले के दौरान इन आयोजनों का अनुभव न केवल आध्यात्मिक उन्नति देता है, बल्कि यह सांस्कृतिक धरोहर को भी सहेजता है। महाकुंभ की ये कलात्मक अभिव्यक्तियाँ इसे एक संपूर्ण सांस्कृतिक आयोजन बनाती हैं । यह न केवल श्रद्धालुओं के लिए आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है, बल्कि भारतीय कला और संस्कृति को सजीव बनाए रखने और उसे प्रोत्साहित करने का एक प्रभावी माध्यम भी है। महाकुंभ का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था पर गहरा और व्यापक प्रभाव डालता है। यह आयोजन केवल धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक विविधता और आर्थिक

सशक्तिकरण का भी प्रतीक है। महाकुंभ में करोड़ों लोग एकत्र होते हैं, जो जाति, धर्म, भाषा और भौगोलिक सीमाओं को भूलकर एक साथ पवित्र नदियों में स्नान करते हैं। यह समाज में भाईचारे और एकता की भावना को प्रोत्साहित करता है। महाकुंभ में होने वाले प्रवचन, सत्संग और धार्मिक गतिविधियाँ समाज के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को सुदृढ़ करती हैं । इसके अलावा, यह आयोजन भारतीय समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता को एक मंच पर लाने का कार्य करता है, जिससे विविधता में एकता की भावना सशक्त होती है।

आर्थिक दृष्टि से महाकुंभ का महत्व अत्यंत व्यापक है। यह आयोजन स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है। महाकुंभ के दौरान देश और विदेश से लाखों पर्यटक आते हैं, जिससे पर्यटन उद्योग को बड़ा प्रोत्साहन मिलता है। होटल, परिवहन, खानपान, और हस्तशिल्प उद्योगों की मांग में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। स्थानीय कारीगरों, दुकानदारों और सेवा प्रदाताओं के लिए यह आयोजन आर्थिक गतिविधियों का एक प्रमुख स्रोत बनता है। इसके अलावा, महाकुंभ से जुड़े बुनियादी ढांचे के निर्माण और रखरखाव के लिए बड़े पैमाने पर रोजगार उत्पन्न होता है। मेले के दौरान स्थानीय उत्पादों और कला शिल्प को भी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलती है, जिससे स्थानीय उद्यमियों और कारीगरों को दीर्घकालिक लाभ प्राप्त होता है।

महाकुंभ का वैश्विक महत्व भी उल्लेखनीय है। यह आयोजन भारतीय संस्कृति, परंपराओं और आध्यात्मिक धरोहर को विश्व स्तर पर प्रदर्शित करने का एक बड़ा अवसर प्रदान करता है। महाकुंभ में बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटक, शोधकर्ता और पत्रकार शामिल होते हैं, जो भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का अनुभव करते हैं। इसके माध्यम से योग, आयुर्वेद और भारतीय दर्शन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियता मिलती है। संक्षेप में, महाकुंभ केवल धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समरसता का प्रतीक, आर्थिक विकास का माध्यम और भारतीय संस्कृति का वैश्विक मंच है । यह आयोजन न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है। महाकुंभ भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर को सशक्त करता है और समाज तथा अर्थव्यवस्था को नए अवसर प्रदान करता है।

महाकुंभ का आयोजन अपनी भव्यता और विशालता के कारण कई चुनौतियों के साथ आता है, जिनका समाधान कुशल प्रबंधन और आधुनिक तकनीकों के माध्यम से किया जाता है। भीड़ प्रबंधन महाकुंभ की सबसे बड़ी चुनौती है, क्योंकि करोड़ों श्रद्धालुओं की आवाजाही को सुचारू रखना एक जटिल कार्य है । इसके लिए ड्रोन निगरानी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सीसीटीवी कैमरों और ग्रीन कॉरिडोर जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है। इसके अलावा,

स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाएँ सुनिश्चित करना भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। कचरा प्रबंधन, शौचालयों की अस्थायी सुविधाएँ और स्वच्छ भारत अभियान के तहत जागरूकता कार्यक्रमों का संचालन स्वच्छता बनाए रखने में सहायक होता है, वहीं अस्थायी अस्पताल और एंबुलेंस सेवाएँ स्वास्थ्य सेवाओं को प्रभावी बनाती हैं। महाकुंभ सांस्कृतिक संरक्षण के लिए भी एक महत्वपूर्ण मंच है, जहाँ पारंपरिक कलाओं और शिल्पकारों को बढ़ावा दिया जाता है। स्थानीय शिल्प और लोक कलाओं के प्रदर्शन के लिए विशेष स्थानों की व्यवस्था की जाती है, जिससे इन कलाओं का संरक्षण और प्रचार होता है। इन सभी प्रयासों के माध्यम से महाकुंभ न केवल एक धार्मिक आयोजन के रूप में सफल होता है, बल्कि भारतीय संस्कृति, कला और आध्यात्मिकता का वैश्विक प्रतिनिधि भी बनता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. महाभारत, (आदि पर्व, अध्याय 17-19) वेदव्यास, भारतीय साहित्य परिषद, दिल्ली, 2015
2. रामायण, वाल्मीकि (बाल कांड सर्ग 45), श्रीरामाचार्य प्रेस, लखनऊ, 2010
3. श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप, भक्ति वेदान्त बुक ट्रस्ट, मुंबई, 1990
4. स्कन्द पुराण, (माहेश्वर खंड, केदार खंड, अध्याय 9-12) गीता प्रेस, गोरखपुर, 2010
5. सांस्कृतिक विरासतः कुम्भ मेला, दुबे, श्यामसुंदर, संस्कृति मंत्रालय, दिल्ली, 2014
6. भारत में कुम्भ , चोपड़ा, धनंजय, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, 2023
7. महाकुंभः सनातन संस्कृति की अजस्र चेतना, संजय चतुर्वेदी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2024
8. बृहत्संहिता, वराहमिहिर, संस्कृत साहित्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2003
9. आध्यात्मिकता और मोक्षः कुम्भ मेला का धार्मिक महत्व, चौधरी, अर्चना, धर्म और संस्कृति शोध संस्थान, दिल्ली, 2017
10. भारत के प्रमुख तीर्थ स्थल : इतिहास और परंपराएँ, पांडे, महेश, भारतीय इतिहास अकादमी, प्रयागराज, 2012

संगम क्षेत्र में लहरा रही सनातन की ऊर्जा

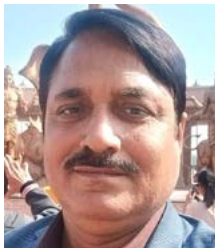

रतिभान त्रिपाठी

इस बार संगम तट मकर संक्रांति से महाशिवरात्रि के बीच 45 दिनों तक महाकुंभ पर्व का पावन सुयोग होगा। इस अवधि में शैव संप्रदाय के दशनामी संन्यासी, वैष्णव संप्रदाय के रामानंदाचार्य , रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य,निम्बार्काचार्य, वल्लभाचार्य, गौड़पादाचार्य आदि के साथ ही गृहस्थ, दार्शनिक, वैज्ञानिक, देशी-विदेशी श्रद्धालु, पर्यटक संगम तट पहुंच रहे हैं। सरकारी अनुमानों की मानें तो 45 दिनों की इस अवधि में यहां करीब 40 करोड़ लोग यहां आने वाले हैं।

सनातन धर्म ही नहीं एक संस्कृति और परंपरा है जो युगों युगों से जनमानस को आकर्षित करती रही है। इस संस्कृति के महापर्व महाकुंभ का प्रयागराज के त्रिवेणी संगम तट पर शुभारंभ हो चुका है जिसके माध्यम से सनातन का उजास फैल चुका है। इसकी ऊर्जा संगम क्षेत्र में लहरा रही है। सनातन की ध्वजा की ओर पूरा विश्व खिंचा चला आ रहा है। महाकुंभ एक ऐसा महापर्व है जहां भारत ही नहीं, विश्व भर की सामाजिक समस्याओं पर विचार-विमर्श होता है और उनका समाधान भी खोजने का प्रयास किया जाता है। और इसीलिए हजारों वर्षों से इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है। मोक्ष की कामना लिए गंगा यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम में स्नान को करोड़ों श्रद्धालु इस महापर्व के अवसर पर संगम तट पर आते हैं।

कुंभ पर्व ज्योतिषीय आधार ही होता है। ज्योतिर्विज्ञान के अनुसार प्रयागराज में कुंभ पर्व के लिए ग्रह नक्षत्रों का संयोग आगामी 13 जनवरी से 26 फरवरी के बीच बनने वाला है। ''मकरे च दिवानाथे वृषगे च वृहस्पतौ। कुंभयोगो भवेतत्व प्रयागेऽयाति दुर्लभं।।'' भाव यह कि सूर्य जब मकर राशि में सूर्य और वृहस्पति वृष राशि में प्रवेश करता है, तब प्रयागराज में कुंभ का यह दुर्लभ पर्व होता है। इस बार संगम तट मकर संक्रांति से महाशिवरात्रि के बीच 45 दिनों तक महाकुंभ पर्व का पावन सुयोग होगा। इस अवधि में शैव संप्रदाय के दशनामी संन्यासी, वैष्णव संप्रदाय के रामानंदाचार्य , रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य,निम्बार्काचार्य, वल्लभाचार्य, गौड़पादाचार्य आदि के साथ ही गृहस्थ, दार्शनिक, वैज्ञानिक, देशी-विदेशी श्रद्धालु, पर्यटक

संगम तट पहुंच रहे हैं। सरकारी अनुमानों की मानें तो 45 दिनों की इस अवधि में यहां करीब 40 करोड़ लोग यहां आने वाले हैं। क्या है महाकुंभ : महाकुंभ क्यों होता है, इसकी अनेक कथाएं हैं। पर, सर्वाधिक प्रचलित कथा समुद्र मंथन की है। देवों और असुरों में किसी न किसी कारण से संघर्ष होता रहता था। पुराणों में इसे देवासुर संग्राम कहा गया है। अमर होने की कामना से अमृत कुंभ की प्राप्ति के लिए देवों और असुरों ने मिलकर एक बार समुद्र मंथन किया। मंथन के दौरान समुद्र से एक-एक करके चौदह रत्न निकले। इनमें लक्ष्मी, चंद्रमा, कल्पवृक्ष, कौस्तुभमणि, कामधेनु, ऐरावत गज,, उच्चैश्रवा अश्व, शारंगधर धनुष, पांचजन्य शंख, रंभादिक अप्सराएं, धनवंतरि, वारुणी, कालकूट विष और अमृत कुंभ। इन सबकी अलग अलग व्याख्या है। कुंभ में भरे अमृत को पीने के लिए देवताओं और असुरों में संघर्ष की स्थिति बनी। देवों और असुरों, दोनों को पता था कि जो भी अमृत पी लेगा, अमर हो जाएगा। इसलिए अमृत कुंभ छीनने की होड़ में देवराज इंद्र का पुत्र जयंत उसे लेकर आकाश में चला गया। असुर उसके पीछे भागे। देवों और असुरों में संग्राम फिर शुरू हो गया। इसी संघर्ष में कुंभ से अमृत की कुछ बूंदें छलककर जिन चार स्थानों प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में गिरीं, कालांतर में वहीं-वहीं पर कुंभ पर्व होने लगा। अवधारणा यह है कि जिन जिन तिथियों और काल में यहां की नदियों में अमृत की बूंदें गिरीं, उसी अमृत पान और स्नान की कामना से श्रद्धालु इन स्थानों पर एकत्र होते हैं। यह समागम विशाल कुंभ मेले का रूप लेते हैं। ज्योतिर्विद कहते हैं कि जब विशिष्ट नक्षत्र संयोग बनता है तो उसे महाकुंभ नाम दिया जाता है। दार्शनिक पक्ष : कुंभ का दार्शनिक पक्ष बहुत सटीक लगता है। मनुष्य के मनोमष्तिष्क में जब शाश्वत जिजीविषा की अवधारणा पैदा हुई तभी ''मृत्योर्माअमृतं गमय'' का बीजमंत्र पनपा। भाव यह कि हम मृत्यु नहीं, अमरत्व की ओर चलें। और इसी अमरता के लिए अमृत तत्व की खोज हुई। अमृत से मनुष्य की अदम्य जिजीविषा का भावबोध होता है। इस जिजीविषा का सम्मान तभी रह सकता है, जब समुद्र रूपी वैचारिक मंथन से ज्ञान का अमृत कुंभ प्रकट हो। इस प्रकार कुंभ पर्व संतों, मनीषियों, दार्शनिकों, विचारकों आदि के बीच परस्पर विचार मंथन का स्थल भी होता है। हर बारह वर्ष पर होने वाले इस आयोजन में विद्वान, दार्शनिक, वैज्ञानिक तरह तरह के सामाजिक और वैश्विक विषयों पर चिंतन करते हैं और बेहतर विचारों के जरिए समाज के लिए उन्नत जीवन परंपरा का सूत्रपात करते हैं। गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम स्थल पर आने वाला विशाल जनसमुदाय संतों के ऐसे ही विचारों की त्रिवेणी में स्नान कर लाभान्वित होता है। अमृत वह उपलब्धि अथवा कालजयी कृति या आविष्कार है जिससे किसी मनुष्य का नाम अमर होता है। एक प्रकार से ज्ञानमंथन की यही चरम उपलब्ध है। दार्शनिक शब्दावली में कुंभ का अमृत बिंदु यही है। समुद्र मंथन में अमृत कुंभ सबसे बाद में निकला था और यह भरा हुआ कुंभ था। यानी कुंभ ज्ञान की पूर्णता का प्रतीक है।

महाकुंभ का अमृत : कुंभ की कथाएं और इसका दर्शनशास्त्र अलग पहलू हैं पर वैज्ञानिक पक्ष भी बहुत ही तथ्यपरक है। दरअसल, गंगा-यमुना के संगम स्थल पर जल के घर्षण से जो ऊर्जा पैदा होती है, अदृश्य रूप में वही अमृत तत्व है। चूंकि सूर्य प्राणवान तत्व है। वृहस्पति जीव है। कुंभकाल में जो ग्रहीय स्थिति बनती है, उससे स्वतः अमृत शरीर के अंदर प्रवेश करता है। यानी जीवनवर्धनी शक्ति प्राप्त होती है। यह दिखाई भले नहीं पड़ता है, लेकिन यह परिघटना चलती रहती है। राशि और ग्रहों की बात करें तो मकर का स्वामी शनि है। मेष का स्वामी मंगल है। वृष का स्वामी शुक्र है। शुक्र संजीवनी तत्व है। सूर्य के मकर में और वृहस्पति के वृष में संक्रमण की दशाओं में गंगा-यमुना के जल के घर्षण से संगम में जो ऊर्जा पैदा होती है, उस काल में वहां स्नान से अमृतरूपी उसी संजीवनी यानी अमृत पाने को जनसमुदाय वहां उमड़ता है। ज्योतिष विज्ञान के अनुसार प्रयागराज में ग्रहों का यह सुयोग माघ के महीने में बनता है। ज्योतिषाचार्यों ने दावा किया है कि इस बार ग्रहों का जो संयोग बन रहा है वह 144 बाद यह शुभ मुहूर्त आया है और इसीलिए यह महाकुंभ कहा गया है। खगोल विज्ञानी भी इन ग्रहीय स्थितियों को स्वीकार कर रहे हैं।

कुंभ का शुभारंभ काल : यह महापर्व कब से शुरू हुआ, ऐतिहासिक रूप से इसकी तिथि तो निश्चित नहीं की जा सकती है लेकिन वेदों और पुराणों में इसका संकेत जरूर है। सितासिते सरिते यंत्र संगते.. यानी सित और असित जल अर्थात गंगा और यमुना के संगम के साथ ही यहां स्नान करने की परंपरा का सूत्रपात माना गया है। सातवीं शताब्दी में महाराजा हर्षवर्धन के शासन काल में भ्रमण पर आए चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वर्णनों से भी स्पष्ट होता है कि हर्षवर्धन ने ही कुंभ मेले की परंपरा को व्यवस्थित और शासकीय स्वरूप दिया था। वह हर बारहवें और छठें वर्ष पर संगम क्षेत्र आकर निवास करता था और अपना सर्वस्व दान कर देता था। इसके बाद अपनी बहन से वस्त्र मांगकर पहनता था और पुनः राजपाट का संचालन करने चला जाता था। आदि शंकराचार्य ने इसी क्रम में इस परंपरा को आगे बढ़ाया। सनातन धर्म के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संतों के अखाड़ों की संरचना करायी। प्रतिष्ठानपुर (वर्तमान झूंसी) के पास इंद्रवन में संतों का सम्मेलन आयोजित कर शास्त्रों के साथ शस्त्रों का अभ्यास करने का संकल्प दिलाया, ताकि भौतिक रूप से भी सनातन धर्म की रक्षा की जा सके। उसी परंपरा को बढ़ाते हुए अखाड़े अब भी धर्म की रक्षा के लिए कृतसंकल्प हैं। इसीलिए साधु-संत और अखाड़ों से जुड़े लाखों नागा साधु अपने शस्त्रों के साथ आज भी संगम तट पर जुटते हैं।

समन्वय का संदेश : भारतीय संस्कृति की समन्वयवादी परंपरा समुद्र मंथन जैसे वैचारिक मंथन से संत समाज अमृत कुंभ रूपी विचारों के जरिए समाज का हितचिंतन करता है। संगम तट पर आने वाले अनेक

संप्रदायों के संत बिना भेदभाव के अपनी मान्यताओं का पालन करते हुए धर्म-कर्म में लीन होते हैं। संगम तट पर विभिन्न मतों, पंथों और संप्रदायों के दस से बीस लाख संत आते हैं और उनके दर्शन को उनके करोड़ों अनुयायी भी आते हैं, जो संगम के पावन जल में अमृत स्नान करते हैं।

बढ़ता मेला क्षेत्र और आबादी : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार महाकुंभ की तैयारी में लगभग दो वर्षों से लगी है लेकिन मेला के भीतरी क्षेत्र की तैयारियां लगभग ढाई तीन महीने में ही की गई हैं। तैयारियां लगभग पूरी हैं। वर्ष 2013 में कुंभ मेला दो हजार हेक्टेअर में बसाया गया था। 2019 में 3200 हेक्टेअर में कुंभ मेला बसाया गया है लेकिन 2025 का महाकुंभ क्षेत्र 10 हजार एकड़ में है। 25 सेक्टर और 3 जोन में बांटे गए मेला क्षेत्र में लगभग 12 किलोमीटर में 44 स्नान घाट बनाए गए हैं। खासियत यह है कि इस बार 8 स्नान घाट पक्के बनाए गए हैं। लगभग 5 हजार एकड़ क्षेत्रफल में 105 पार्किंग स्थल बनाए गए हैं जिनमें 7 लाख वाहन पार्क किए जा सकते हैं। एक भव्य दिव्य मीडिया सेंटर है जहां से पूरी दुनिया का मीडिया अपना काम कर पाएगा। विदेशी मीडिया के लिए अलग से कॉलोनी बनाई गई है। अबकी लगभग 25-30 लाख कल्पवासियों के बसेरा डालने का अनुमान है। सरकार ने महाकुंभ के लिए करीब 5400 करोड रुपये के बजट का प्रावधान किया है। प्रयागराज नगर और ग्रामीण क्षेत्रों की तहसीलों को मिलाकर परंपरागत रूप से महाकुंभनगर उत्तर प्रदेश के नए जिले के रूप में काम कर रहा है जिसके जिलाधिकारी विजय किरन आनंद और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी हैं।

हर घर अतिथि गृह : वैसे तो महाकुंभ क्षेत्र एक नोटीफाइड एरिया है लेकिन प्रयागराज नगर के मुहल्ले और आसपास के गांव महाकुंभ क्षेत्र की तरह अतिथि सत्कार की तैयारी में हैं। "अतिथि देवो भव" की परंपरा निभाते हुए करोड़ों की आबादी का समाहित करने, स्थान देने के लिए प्रयागराज के नागरिकों में अपने घरों को भी अतिथिगृहों में बदलने में कोताही नहीं दिखाई है। प्रयागराज नगर के पूर्वी क्षेत्र से दारागंज के दशाश्वमेध घाट के काफी आगे सलोरी तक, गंगापार झूंसी में शंखमाधव के आगे छतनाग से काफी दूर तक, अरैल में सोमेश्वर महादेव से लेकर यमुना और गंगा के पूरे तट पर एक ऐसा वैभवशाली नगर बसाया गया है, जो नयनाभिराम और अविस्मरणीय है। त्रिवेणी बांध के इस पार परेड मैदान जो आमतौर पर खाली रहता है लेकिन इन दिनों तंबुओं के नगर में तब्दील हो चुका है।

श्रद्धालुओं के लिए हर सुविधा का ध्यान : संगम क्षेत्र में बसाये जा गए विशालतम अस्थाई महानगर, जिसे महाकुंभ नगर कहा जा रहा है, में सभी आवश्यक सुविधाएं और संसाधन मुहैया कराये गए हैं जो किसी महानगर में सहज सुलभ होते हैं। यहां की सुविधाएं देखकर कोई भी अचरज में पड़ सकता है कि दो महीने से भी कम समय के लिए बसाये जाने वाले नितांत अस्थाई महानगर में 550 किलोमीटर की चकर्ड प्लेट वाली टू और फोर लेन सड़कें, एक लाख से अधिक टॉयलेट, गंगा-यमुना पार करने को 30 पांटून पुल बनाए गए हैं।

सुरक्षा के चाक-चौबंद इंतजाम : महाकुंभ में संभावित भीड़ के मद्देनजर 37 हजार पुलिस कर्मी और 14 हजार होमगार्ड तैनात किए गए हैं। 56 पुलिस थाने और सवा सौ चौकियां स्थापित की गई हैं। एनएसजी, एटीएस, एसटीएफ और अन्य सुरक्षा एजेंसियां अपना काम कर रही हैं। 123 वॉच टॉवर और 2750 एआई सीसीटीवी भी मेला क्षेत्र में लगे हैं। सात स्तरों के सुरक्षा घेरे व्यवस्था में जांच एवं फ्रिस्किंग के लिए 102 मोर्चे बनाए गए हैं जिनमें 1026 पुलिस कर्मी तैनात किए गए हैं। यातायात पुलिस और फायर ब्रिगेड का पर्याप्त इंतजाम भी हैं। जल, थल और नभ तीनों स्तर पर सुरक्षा व्यवस्था है। आपदा काल के लिए प्रशिक्षित सुरक्षा कर्मी और अत्याधुनिक उपकरणों की भी उपलब्धता यहां पर है।

विशेष ट्रेनें और बसें : कुंभ के दौरान प्रयागराज के लिए 3 हजार ट्रेनें व 8 हजार स्पेशल बसें चलाई जा रही हैं, ताकि यात्रियों को वहां पहुंचने में परेशानी न हो। शहर से मेले को लिंक करते हुए 500 शटल बसें और 300 इलेक्ट्रिक बसें चलाई जा रही हैं। गंतव्य तक आसानी से पहुंचने के लिए 3 हजार डिजिटल साइनेज लगाए गए हैं। महाकुंभ मेला एप के जरिए कोई श्रद्धालु अपने गंतव्य तक आसानी से पहुंच सकता है। मेले में नियमित रूप से रहने वाली 30 से 40 लाख की आबादी के लिए 15 लाख से अधिक राशन कार्ड बनाये जा रहे हैं।, जिससे कार्डधारकों को सस्ती दरों पर खाद्य सामग्री मुहैया करायी जा सके। जगह जगह रेस्टोरेंट, मिल्क बूथ और खान-पान की दुकानें भी खुल गई हैं। सेहत का पूरा इंतजाम यहां हैं। इसके लिए एलोपैथिक, होम्योपैथिक और आयुर्वेदिक अस्पताल खोले गए हैं।

अर्थव्यवस्था को मिलने वाली है गतिः वैश्विक स्तर के इस मेले में जहां करोड़ों लोगों के आने का अनुमान है, उससे उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को भी गति मिलने वाली है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्वयं कहा है कि आस्था और आधुनिकता के इस समागम से आर्थिक खुशहाली भी आने वाली है। महाकुंभ से दो लाख करोड़ की आर्थिक ग्रोथ का अनुमान लगाया जा रहा है।

इंतजाम ऐसे कि सबको ख़ुशी मिलेगीः महाकुंभ सबके लिए खुशहाली का सबब बनेगा। देशी-विदेशी पर्यटकों की आवासीय सुविधा के लिए पर्यटन विभाग की ओर से 23 सौ टेंटों वाली टेंट कॉलोनी बनाई गई है जिसमें साधारण, प्रीमियम और सुपर लक्जरी क्लास का भी ध्यान रखा गया है। श्रद्धालुओं के मनोरंजन की भरपूर व्यवस्था : मनोरंजन के लिए पूरे मेला क्षेत्र में प्रदेश और केंद्र के सांस्कृतिक विभाग अनेकानेक कार्यक्रम करा रहे हैं जो 45 दिनों तक लगातार चलने वाले हैं। पर्यटन विभाग ने महाकुंभ गाथा दिखाने के लिए लेजर शो, लाइट एंड साउंड शो का भी इंतजाम यहां पर किया है। संतों का कथा प्रवचन और योग फेस्टिवल तो होगा ही।

हर जरूरत का ध्यानः मेला विशालतम होगा तो जाहिर है कि कोई भटक भी सकता है। ऐसे में खोया पाया केंद्र खोले गए हैं, जिन्हें डिजिटल सिस्टम से जोड़ा गया है। इस उपाय से मेले में कोई भटका भी तो गंतव्य तक या अपनों तक कुछ ही देर में पहुंच जाएगा। मेले में एटीएम, बैंक शाखाएं, विदेशी मुद्रा विनिमय केंद्र, मोबाइल टॉवर, फ्री वाई-फाई जोन, मोबाइल रिचार्ज काउंटर भी खुल गए हैं।

डिजिटल महाकुंभ सेंटरः डिजिटल महाकुंभ सेंटर इस बार का सबसे आकर्षण वाला स्थल होने जा रहा है जहां श्रद्धालुओं को कुंभ गाथा डिजिटली देखने को मिलेगी। यह ऐसा अद्भुत स्थल होगा जो लोगों को आश्चर्यचकित करने वाला है।

कौतूहल पैदा करने वाले नामः महाकुंभ मेला क्षेत्र में पहुंचने पर वहां ऐसी अनुभूति हो कि सबको कुछ न कुछ नयापन लगे। इसीलिए यहां के मार्गों का नामकरण कौतूहल जगाता है। त्रिवेणी मार्ग, मुक्ति मार्ग, अक्षयवट मार्ग, नागवासुकी मार्ग, बजरंगदास मार्ग, रामानुज मार्ग, हर्षवर्धन मार्ग, महावीर मार्ग, काली सड़क, लाल सड़क, तुलसी मार्ग, रामानंदाचार्य मार्ग, शंकराचार्य मार्ग, दंडी बाड़ा मार्ग, दशाश्वमेध मार्ग आदि ऐसे ही नाम हैं जो महाकुंभ में आने वाले यात्रियों का यहां से तादात्म्य स्थापित करते हैं।

सुपर वीआईपी भी बढ़ाएंगे महाकुंभ की शोभाः संगम क्षेत्र के लिए श्रीरामचरितमानस में कहा गया है - "माघ मकरगत रबि जब होई। तीरथपतिहिं आव सब कोई।। देव दनुज किन्नर नर श्रेनी। सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनी।।" यानी माघ के महीने में त्रिवेणी संगम में केवल मनुष्य ही नहीं देवता, दैत्य, किन्नर, नाना प्रकार के प्राणी पूरे आदर के साथ स्नान करते हैं। अनेक सूक्ष्म शरीरधारी भी संगम में गोते लगाकर पुण्य अर्जित करने आते हैं। लेकिन भौतिक रूप से सभी वीआईपी, सुपर वीआईपी भी संगम आने की तैयारी में हैं। भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के यहां आने का कार्यक्रम है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक बार आ चुके हैं लेकिन दूसरी बार भी आने वाले हैं। दुनिया के सबसे धनी व्यक्ति एलन मस्क की पत्नी के आने की सूचना आई है। दुनिया के अनेक देशों के नेता, अभिनेताओं के साथ ही अमिताभ बच्चन, अक्षय कुमार समेत अनेक प्रसिद्ध फिल्म स्टार व निर्देशक आने वाले हैं। उत्तर प्रदेश का मंत्रिमंडल तो स्नान करेगा ही, देश के अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री अपनी कैबिनेट के साथ संगम स्नान की तैयारी कर रहे हैं। इसके साथ ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अपनी कैबिनेट की बैठक भी महाकुंभ में करने वाले हैं।

महानगर की भी बढ़ी शोभाः प्रयागराज महानगर का भी कायाकल्प किया गया है । शहर के चौराहों और सड़कों का सुंदरीकरण और चौड़ीकरण किया चुका है। धार्मिक और पौराणिक स्वरूप उभारने के लिए सभी सरकारी भवनों, स्कूल-कॉलेजों की दीवारों पर समुद्र मंथन के आख्यानों पर आधारित पेंटिंग, संगम स्नान आदि की पेंटिंग तथा अलग-अलग प्रकार के धार्मिक और प्राकृतिक चित्रों से रंग दी गई हैं। पार्कों का सुंदरीकरण किया गया है। चौराहों को सजाकर उनमें पौराणिक और आधुनिक दोनों तरह के म्यूरल्स लगाए गए हैं। अरैल क्षेत्र में बनाया गया शिवालय पार्क लोगों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है जहां ब्रह्मा की मूर्ति स्थापित की गई है। पौराणिकता से भरपूर इस पार्क को देखने वालों का हुजूम उमड़ रहा है। बस और रेलवे स्टेशनों को भी सजाया-संवारा गया है। महाकुंभ क्षेत्र में रात का नजारा आकाशगंगा या झिलमिल सितारों वाली रात जैसा है। महाकुंभ का आध्यात्मिक सौंदर्य यह है कि वह करोड़ों श्रद्धालुओं के मन में आस्था और विश्वास को संबल प्रदान करता है तो भौतिक सौंदर्य में भी तंबुओं का यह विशालतम अस्थाई महानगर सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् की अवधारणा को साकार करता है।

आस्था का महासंगम और दिव्यता की भव्यता

अमृता त्रिपाठी

इस बार डिजिटल सिस्टम ने महाकुंभ में आस्था के साथ आधुनिकता की चकाचौंध बढ़ा दी है। विशाल महाकुंभ क्षेत्र में चौतरफा श्रद्धालु जनों की ही भीड़ है। यहां मानो पूरी दुनिया खिंची चली आ रही है। महाकुंभ दर्शन को आये केआर सुंदरम गंगा की उत्ताल तरंगों को देखकर मंत्रमुग्ध हैं तो आस्ट्रेलिया के सिडनी से आए चार्ल्स और उनकी सहयोगी टेरेसा अखाड़ों का वैभव देखकर चकित। संतों की यज्ञशालाओं से उठता हविष्य का धुआं वातावरण को सुगंधित ही नहीं कर रहा, दिव्यता का अनुभव भी दे रहा है।

महाकुंभ का संदेश पूरी दुनिया में जा रहा है। आस्था और विश्वास के इस अस्थाई महानगर की भव्य छटा देखते ही बनती है। पिछले अनेक कुंभों के मुकाबले इस बार का मेला नया कलेवर ओढ़े हुए दिखता है।

इस बार डिजिटल सिस्टम ने महाकुंभ में आस्था के साथ आधुनिकता की चकाचौंध बढ़ा दी है। विशाल महाकुंभ क्षेत्र में चौतरफा श्रद्धालु जनों की ही भीड़ है। यहां मानो पूरी दुनिया खिंची चली आ रही है।

महाकुंभ दर्शन को आये केआर सुंदरम गंगा की उत्ताल तरंगों को देखकर मंत्रमुग्ध हैं तो आस्ट्रेलिया के सिडनी से आए चार्ल्स और उनकी सहयोगी टेरेसा अखाड़ों का वैभव देखकर चकित। संतों की यज्ञशालाओं से उठता हविष्य का धुआं वातावरण को सुगंधित ही नहीं कर रहा, दिव्यता का अनुभव भी दे रहा है। खाकचौक में धूनी रमाये संतों की टोली और संगम के पावन जल में खड़े होकर जटा-जूट संवारते युवा संतों का उल्लास इस बात का साक्षी है कि महाकुंभ भौतिकता से इतर दिव्यता और आध्यात्मिकता से सराबोर है।

सागर मंथन से निकले हलाहल को पीकर नीलकंठ हुए महादेव जैसी भस्म रमाये धुनी नागाओं का समूह जब यहां निकल पड़ता है तो मानों साक्षात् महादेव अपने गणों के साथ संगम की रेती पर रमण कर रहे हों। दंडी संन्यासियों के समूह समूह समष्टि की समरसता के प्रत्यक्ष स्वरूप दिखते हैं। महाकुंभ की यह सतरंगी छटा किसी को भी बरबस मुग्ध कर लेती है। यहां गूंजते गीत और कर्णप्रिय संगीत सरस्वती के प्राकट्य का आभास देते हैं। हर-हर गंगे और हर-महादेव का उदघोष करते स्नानार्थियों के समूह उस अनहद नाद को प्रकट करते दिखते हैं तो निरंतर हमारे भीतर गूंजता रहता है।

त्रिवेणी के जल में पड़ने से सूर्य की रश्मियां हीरे-मोतियों के उजाले को फीका करती दिखती हैं। यहीं वह अनंत ऊर्जा घनीभूत होकर अंतस

में भर जाती महसूस होती है। संगम के गहरे जल में खड़े होकर शरीर पर रेणुका (संगम की बलुई मिट्टी) रगड़ते हुए कायाशोधन में लगे साधु को देखकर ऐसा लगता है मानो वह संगम के जलरूपी अमृत की संपूर्ण ऊर्जा अपने में समाहित कर लेने का आतुर हो। डमरूधारी साधुओं अपनी जटाओं में गेंदे की मालाएं ऐसे सजा रखी हैं मानों स्वयं नारद, याज्ञवल्क्य और भरद्वाज रामकथा सुनने सुनाने की तैयारी में श्रृंगार किये बैठे हैं।

कौपीनधारी संतों के समूह अपनी संपूर्ण चेतना के साथ यहां विद्यमान हैं तो भक्तिरस में सराबोर रामलीला और रासलीला के कलाकार अवधी और ब्रज भाषाओं का सम्मेलन सा करते दिखते हैं। तभी अचानक आशा एंड कंपनी के लाउडस्पीकर पर 'चलो कुंभ चलें प्रयाग चलें' का आह्वान करता सुरीला गीत गूंजने लगता है। उस पर कान देने को कई लोग अचानक ठहर जाते हैं। सिर पर गठरी लादे त्रिवेणी रोड से संगम की ओर आते स्नानार्थी ग्रामीण परिवेश का समूचा दृश्य उपस्थित करते हैं तो मेले की चकर्ड प्लेटों वाली सड़कों पर फर्राटा भरती बेशकीमती गाड़ियां देश की आधुनिकता व शहरी भारत का आभास देती हैं।

महाकुंभ मेले में अनेक आयाम हैं। यहां स्वच्छता का संदेश गूंजता है तो उसे अमल में लाते स्वच्छता सहायक भी लाल सड़क से लेकर मुक्ति मार्ग और मोरी मार्ग से लेकर अरैल तक घूम रहे हैं। गंगा में पुष्पार्पण करते भक्त हैं तो उन पुष्पों को फौरन अपने जाल में छान लेने वाले किशोर भी, ताकि गंगाजल निर्मल रहे। हवनकुंडों में अगर उत्तर का अनाज हविष्य के रूप में है तो दक्षिण के चंदन की समिधा भी है। समिधा प्रज्जवलन से उठी अग्निशिखाएं त्यागवृत्ति की संदेशवाहक के रूप में हैं। महाकुंभ जोड़ रहा है दक्षिण से उत्तर को और पूरब से पश्चिम को। यहां असम के व्यंजन हैं तो गुजरात के ढोकला का भी भोग लग रहा है। तमिलनाडु के दोसा और इडली खाने को रेस्टोरेंट में आधा घंटे से भी ज्यादा इंतजार करने को तैयार हैं।

महाकुंभ वसुधैव कुटुंबकम का संदेश दे रहा है। संपूर्ण विश्व की संस्कृतियां यहां समाहित होने का आतुर हैं। वह साक्षी बनना चाहती हैं उन देवताओं की, जो अमृत पान करने को देवलोक से धराधाम में आ चुके हैं। जनसाधारण की असाधारण आस्था और ज्ञानियों के संगम से निकले विचारों का संदेश देता यह महाकुंभ अपनी कहानी स्वयं कह रहा है।

महाकुंभ मेले के लिए प्रयागराज में प्रवेश करते ही आपको शहर नया नया दिखने लगता है जैसे अभी अभी सज संवर कर तैयार हुआ हो। कुछ है भी ऐसा ही। महाकुंभ के लिए ही सारी साज सज्जा की गई है। महर्षि भरद्वाज की 30 फिट ऊंची भव्य प्रतिमा इस बात की साक्षी है कि यह नगर पहले भरद्वाज की तपोभूमि और कथाभूमि है तब किसी अन्य की विरासत। दूसरी ओर अरैल क्षेत्र में महर्षि वाल्मीकि की भव्य प्रतिमा और शिवालय पार्क लोगों को आकर्षित कर रहे हैं। सजे चौराहे और उनमें हरित गमले बताते हैं कि यहां महाउत्सव है। इमारतों की दीवारे कुंभ की पुरातनगाथा खुद कहती दिख रही हैं। हजारों प्रहरी अपने अपने सुरक्षा बोध कराते हैं। लोगों को रास्ता बताते और मदद करते स्वयंसेवक इस बात का जीवंत प्रमाण हैं कि परोपकार का माध्यम और संदेशप्रदाता है कुंभ।

अखाड़ा मार्ग पर महानिर्वाणी, निरंजनी, अग्नि, जूना, आवाहन, अटल, आनंद अखाड़ों की ध्वजाएं लहरा रही हैं। यहीं पर निर्वाणी, दिगंबर, निर्मोही अनी अखाड़ों के साथ साथ पंचायती पनया उदासीन, पंचायती बड़ा उदासीन और निर्मल अखाड़ों के भी शिविर हैं, जहां सबके अपने अपने इष्टदेवों की नित्यप्रति उपासना चल रही है। एक तरफ खालसों में पूजा पाठ और प्रवचन की धूम है तो दूसरी ओर महामंडलेश्वरों से अपने यहां व्यष्टियों (विशिष्ट संतों का भोज) और समष्टियों (सामूहिक भोज) की तैयारियां शुरू कर दी हैं।

महाकुंभ क्षेत्र में सब कुछ अच्छा ही अच्छा नहीं है। सरकार ने अपना काम तो कर दिया लेकिन उसके कारिंदे अपनी "कला" दिखाने से बाज नहीं आ रहे। दंडी बाड़े की अपनी समस्याएं हैं जिनके लिए बूढ़े संत अपने हरकारे भेजते हैं। प्रशासन अनसुनी करता है तो वह खुद मौजूद होते हैं। तीर्थ पुरोहित और कल्पवासी बताते हैं कि उन्हें जो सुविधाएं पिछले कुंभ मे मिली थीं, प्रशासनिक अफसरों ने उन पर कैंची चला दी। जो देने को कहा, वह दे भी नहीं रहे। अब वह किससे कहें। वह चेतावनी देने से भी बाज नहीं आते हैं कि समस्या दूर करो नहीं तो योगी जी से शिकायत कर देंगे, फिर न कहना। प्रशासन के अफसर हाथ जोड़कर सामने खड़े हो जाते हैं कि महराज जी, आज ही समाधान हो जाएगा। ऐसे ही अनेक दृश्य यहां देखने को मिल रहे हैं। संतों की शिकायत कई मायने में सही भी दिखती है। कुछ लोगों ने अपनी संस्थाओं के नाम पर प्रशसन से मुफ्त में यहां जमीन और सुविधाएं ले लीं और फिर कुछ धनी बाबाओं को बेच दीं। छानबीन हो तो ऐसे भी तथ्य यहां मिलते हैं। यानी पावन क्षेत्र में ठगों का नेटवर्क भी काम कर रहा है।

संतों के शिविरों में उनका वैभव देखते ही बनता है। विशालकाय द्वार और ऊंचे सिंहासन, कीमती मालाएं, महंगे झूमर और सोफे भी भारतीय अध्यात्म जगत के वैभव का एक पहलू हैं। जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि का शिविर देखें तो ज्ञान और धन दोनों का वैभव एक साथ यहां मिलेगा। ऐसे ही निम्बार्काचार्य, मध्वाचार्य, रामानंदाचार्य, रामानुजाचार्य, समेत अनेक संतों के आश्रम यहां वैभव की गवाही दे रहे हैं। अरैल क्षेत्र में त्रिवेणी पुष्प और स्वामी निदानंद सरस्वती मुनि का परमार्थ आश्रम शिविर अपने आप में वैश्विकता की झलक देता है। यहां देश विदेशी संतों और पर्यटकों की खासी जमात है।

विशेष आलेख

कुम्भपर्व का पौराणिक-ज्योतिषीय-आध्यात्मिक-सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक अवगाहन

डॉ. मीनाक्षी जोशी 'शाङ्करी'

कुंभ भारतीय संस्कृति का एक भव्य और ऐतिहासिक पर्व है, जो धार्मिक, सांस्कृतिक और ज्योतिषीय परंपराओं का संगम है। इसकी जड़ें वैदिक युग के 'समन' उत्सवों में हैं, जिनका उल्लेख ऋग्वेद और अथर्ववेद में मिलता है। 'समन' उत्सवों में हजारों लोग किसी विशिष्ट स्थान पर एकत्र होकर यज्ञ, हवन, स्नान और दान जैसे धार्मिक कर्मों में भाग लेते थे। इन उत्सवों को ही कुंभ मेले का प्रारंभिक रूप माना जाता है।

सहायक आचार्य,
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

पुरोवाक्य

यज्ञों और तपस्वियों से तपःपूत प्रयागराज की पावन भूमि पर ज्ञान, तपस्या और संस्कृति रूपी त्रिवेणी में आयोजित होने वाला महाकुम्भ हमारी चिरन्तन आस्था का महापर्व है। हिमालय से लेकर समुद्र पर्यंत तक केवल साधकों तथा जन साधारण की आध्यात्मिक, धार्मिक, सांस्कृतिक महायात्रा की गाथाओं का यह केवल दिग्घोष ही नहीं अपितु विश्व भर में भारतीय समरसता का अद्भुत परिचायक यह महाकुम्भ है।

'महाजनो येन गता स पन्थाः' अर्थात् महान् व्यक्ति जिस मार्ग से गमन करते हैं वही श्रेष्ठ मार्ग होता है। इसी श्रेष्ठ मार्ग का अनुसरण करते हुए हजारों वर्षों से आयोजित हो रहे गंगा, यमुना और सरस्वती के इस संगम तट पर आस्था के समुद्र के इस ऐतिहासिक महापर्व को 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना ही सर्वदा गुंजायमान होती है। कबीर कहते हैं कि-

जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है बाहर भीतर पानी।
फूटा कुम्भ जल जल ही समाना यह तत्त कहे गियानी।।

कबीर अमृत के कुम्भ से जुड़ा यह महापर्व मानवों के इस महासमुद्र में स्वयं को मिला लेने का उत्सव है। कबीरदास जी कहते हैं- ईश्वर के साथ जब हमारा एकाकार हो जाता है तब हममें कोई भी भिन्नता नहीं रहती। जैसे नदी के भीतर और बाहर पानी ही रहता है कोई अन्तर नहीं होता। यहां सारे साधु- संत, गृहस्थ, अधिकारी, कर्मचारी, साधारण जनता सभी संगम के प्रवाह के समान हैं। कुम्भ की संस्कृति को समझने के लिए पहले हमें नदियों की संस्कृति को समझना आवश्यक है। ऋग्वेद में कहा गया है कि-

॥ आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ (ऋ. ७/४९/१)

वेदों में जल को देवी स्वरूप में स्थापित किया गया है। नदियां वास्तव में केवल जल-प्रवाह न होकर सभ्यता और संस्कृति का प्रवाह होती है। सभ्यता जिसे ठौर नदी प्रदान करती है और संस्कृति जिसे नदी अपने जल के समान गति, सार्थकता और निर्मलता से अभिसिञ्चित करती हैं जो मानव के नवजीवन को प्रदान करने वाली होती है।

वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त नदी शब्द के अर्थ को निरुक्त ग्रन्थ के प्रणेता महर्षि यास्क उसकी उत्पत्ति इस प्रकार बताते हैं-

नदमा इमा भवन्ति शब्दवत्यः - निरुक्त २/७

अर्थात् जो नाद करती है शब्द करती है, शब्दमयी होती है उन्हें नदी कहा जाता है। "णद् अव्यक्ते शब्दे" धातु से घञ् प्रत्यय करने पर तथा नद तथा ङीप् प्रत्यय से नदी बनता है।

नद् + अच् - नद (पु.), नद् + ङीप् = नदी (स्त्री.)

इस प्रकार नद का अर्थ है समुद्र, शब्द करना, कल कल की ध्वनि, बादलों के समान गर्जना, गुर्राना। मोनियर विलियम्स के अनुसार नदी का अर्थ - to vibrate, to sound, sound thunder as a cloud, to roar. यही कारण है कि जब भी मनुष्य अवसाद से दूर जाना चाहता हो, थके मानस को विश्रान्ति देना चाहता हो अथवा एकान्त के क्षणों को जीना चाहता है तो वह कल-कल-निनादिनी नदी तट की ही शरण लेता है और वही कल-कल की ध्वनि, वह निनाद, मानव की मनो-चिकित्सा करता है।

आ ते कारो शृणवामा वचांसि ययाथ दूरादनसा रथेन।
निते नंसै पीप्यानेव योषा मर्यायेव कन्या शश्वचै ते ॥
ऋ. ३.३३.१०

नदियों अंतः सम्बन्ध मानव के साथ माता- पुत्र तथा पिता-पुत्री के समान है। प्रथम सम्बन्ध के अंतर्गत नदियाँ मां के रूप में मानव सभ्यता को पुष्टि प्रदान करती है। द्वितीय सम्बन्ध के अनुसार पिता, पुत्री के समान नदियों की सुरक्षा और पवित्रीकरण का ध्यान रखता है।

यह दोनों ही सम्बन्ध जन्म से जुड़े हैं इसलिए नदियों के साथ मानव सभ्यता का सम्बन्ध जन्मना ही हैं। जल का प्रतिशत मानव देह में 70% है यही प्रतिशत पृथ्वी में भी जल का है तब "यत् पिंडे तद् ब्रह्मांडे" यह उक्ति सार्थक हो जाती है। प्रदक्षिणा का तात्पर्यः 'प्रगतं क्षिणमिति प्रदक्षिणं' के अनुसार अपने दक्षिण भाग की ओर गति करना प्रदक्षिणा कहलाता है। प्रदक्षिणा में व्यक्ति का दाहिना अंग देवता की ओर होता है। इसे परिक्रमा के नाम से प्रायः जाना जाता है। 'शब्दकल्पद्रुम' में कहा गया है कि देवता को उद्देश्य करके दक्षिणावर्त भ्रमण करना ही प्रदक्षिणा है।

आदिकाल से भारतवर्ष में प्रदक्षिणा मन्दिरों तक सीमित न रह कर व्यक्ति विशेष यथा गुरु, पर्वत तथा गोवर्धन या कामदगिरि, नदी, और स्थल विशेष यथा वृन्दावन की भी की जाती है, जितना प्रभाव मन्दिर का होता है उतना ही इन स्थलों का भी माना जाता है।

परिक्रमा की दक्षिण दिशाः

परिक्रमा को हमेशा दक्षिण दिशा में या बाएं से दाएं ओर करने को ही क्यों कहा जाता हैं, इसका विपरीत क्यों नही? जब मन्दिर का गर्भगृह और मन्दिर ऊर्जा का स्त्रोत ही हैं तो परिक्रमा चाहे दक्षिण की ओर करो या उत्तर की ओर, क्या अंतर पड़ता हैं?

वस्तुतः इसके पीछे भी एक गहरा रहस्य छुपा हुआ हैं जिसका जानना आपके लिए आवश्यक हैं। इसे हम आपको एक उदाहरण देकर समझाएंगे जो परिक्रमा के दार्शनिक महत्त्व को समझाता हैं। परिक्रमा का दार्शनिक महत्त्व कहता हैं कि इस विश्व में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में हरेक वस्तु जैसे आकाशगंगा, तारे, ग्रह, उपग्रह, नदियों का आवर्त, चुम्बकीय तरंगें, ध्वनि तरंगें, शरीर में रक्त-प्रवाह इत्यादि सभी दक्षिण दिशा में ही गतिमान हैं । सभी निरन्तर गति कर रहे हैं तभी उनके अन्दर ऊर्जा हैं और उसी ऊर्जा के कारण उनका अस्तित्व हैं। सभी की गति को देखने पर हम पाएंगे कि सभी उत्तर की ओर नहीं बल्कि दक्षिण की ओर घेरा बनाते हुए गति करते हैं। इसका साक्ष्य हम प्रतिदिन उगने वाले सूर्य की गति को देखकर भी कर सकते हैं। सूर्य पूर्व दिशा से उगता है और दक्षिण की ओर घूमता हुआ पश्चिम दिशा में पहुँच जाता है। सरल शब्दों में कहने का तात्पर्य यह हुआ कि जैसे चुम्बक के समान ध्रुव एक-दूसरे से दूर जाते हैं लेकिन विपरीत पास। ठीक उसी प्रकार यदि हम मन्दिर/ नदी/ पर्वत इत्यादि की दक्षिणावर्ती परिक्रमा ना करके वामवर्ती परिक्रमा करेंगे तो वहां की सकारात्मक ऊर्जा हमारे शरीर की आंतरिक ऊर्जा के तेज को बढ़ाने की बजाए उसे कम कर देगी अर्थात् इस प्रक्रिया का हमारे ऊपर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इसलिए हमेशा दक्षिणावर्ती परिक्रमा करने को ही कहा गया हैं। ज्ञान प्रदान करने की दिशा भी दक्षिण मानी गई है इस कारण दक्षिणामूर्ति शिव को जगद्गुरु और् ज्ञान प्रदाता कहा जाता है। कठोपनिषद् में नचिकेता अमरता का ज्ञान दक्षिण दिशा में जाकर मृत्यु के देवता से ही प्राप्त करते हैं। अतः परिक्रमा मार्ग दक्षिणावर्ति होता है।

भारतीय संस्कृति में नदी प्रदक्षिणाः

भारत में नीर, नारी और नदी, तीनों का गहरा सम्बन्ध और सम्मान रहा है। इन तीनों को हमारे ऋषि-मुनियों ने पोषक माना है। इसलिए नारी और नदी को माँ का स्थान दिया गया है, और नीर, यानी जल को जन्म से ही जोड़कर देखा जाता है। भारतीय संस्कृति में भी पोषण करनेवालों को 'माँ' और शोषण करने वालों को 'राक्षस' कहा गया है। देवता और दानव के बीच अन्तर की यह सोच, जो अनादिकाल से चली आ रही है और यहीं से आई है। वस्तुतः नदियों के किनारे, नदियों के साथ, जो जैसा व्यवहार करता था, उसी के आधार पर उसे देवता या दानव, मनुष्य बोलने लगते थे। अगर मनुष्य भी नदियों को पवित्र रखने का काम करता था, तो उसे 'देवता', कहा जाता था और अगर उसने उसको गन्दा करने

का काम किया, तो उसे 'दानव', यानी राक्षस माना जाता।

कुम्भ का पौराणिक महत्त्व

भारतीय पौराणिक साहित्य में यह धारणा भी बलवती है कि देवताओं ने रक्ष संस्कृति के दुष्परिणामों को रोकने के लिए उस काल के विद्वानों, राजाओं और जन-सामान्य को (राजा, प्रजा और सन्त) नदियों की अशुद्धि और पवित्रता को अलग-अलग रखने हेतु बारह वर्षों पर वैचारिक मन्थन किया करते थे। मनुष्य ने इसे अपनी बोली-भाषा में 'कुम्भ' कहा। यह कुम्भ नदियों के जल के साथ सच्चाई और बुराई का निर्धारण करता था। यह कुम्भ नदियों के साथ नियम और नीति का निर्धारण करता था। कुम्भ वस्तुतः विभिन्न नदियों की प्रदक्षिणा ही है जो ज्ञान –भक्ति-वैराग्य-समरसता का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में नदी के प्रति उचित व्यवहार करने हेतु जहां एक ओर दण्ड का प्रावधान है, वहीं दूसरी ओर नदी को इतना महत्त्व की स्थिति में प्रस्तुत किया गया ताकि समाज उचित व्यवहार के लिए स्वयं प्रेरित हो। समाज नदियों से कैसा व्यवहार करे? इसे तय करने के लिए प्रत्येक नदी के उद्गम से संगम तक मठ-मन्दिर बनाये गये। और नदियों की परिक्रमा का विधान किया गया। मठ-मंदिरों में साधुओं को नदी को गुरुभाव वाला संरक्षक बनाकर बैठाया।

कुम्भ का ऐतिहासिक तथा ज्योतिषीय महत्त्वः

कुम्भ की ऐतिहासिकता के बारे में कुछ कह पाना इसलिए संभव नहीं है क्योंकि हमारी काल गणना रेखीय ना हो करके चक्रीय काल अवधारणा है। अर्थात् चारों युग क्रमशः एक के बाद एक चले आते हैं। और कुम्भ से जुड़ी घटना जो समुद्र मंथन है वह भी कई बार आवृत्त होती है तब इसके इतिहास के बारे में कहना कठिन हो जाता है। वेदों से लेकर पुराणों तक कुम्भ का वर्णन मिलता है। और जब-जब ग्रहों की और राशियों की ऐसी स्थिति होती है तब तक कुम्भ के आयोजन होते हैं तो यह तो अनवरत धारा है। भारतवर्ष में चार स्थानों में कुम्भपर्व प्रत्येक बारहवें वर्ष में हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा नासिक में सम्प्राप्त होता है। जिस वर्ष वैशाख मास में भगवान् सूर्य मेष राशि में रहें। भगवान् देवगुरु बृहस्पति कुम्भ राशि में रहते हैं। तब हरिद्वार क्षेत्र में कुम्भ नामक महान् पुण्यपद उत्तम योग होता है –

"पद्मनीनायके मेषे कुम्भराशिगते गुरौ।
गङ्गाद्वारे भवेद् योगः कुम्भनामा तथोत्तमः।।" (स्कन्दपुराण)

इसी प्रकार बारहवें वर्ष जब माघमास मे भगवान् सूर्य मकर राशि में रहे, सुरगुरु भगवान् बृहस्पति वृष राशि में रहें तथा अमावस्या के दिन चन्द्रमा भी मकर राशि जो स्थित होता है तो उस दिन प्रयाग में कुम्भ नामक महापुण्यदायी उत्तम योग बनता है –

"माघे वृषगते जीवे मकरे चन्द्रभास्करे।
अमायां च तदा योगः कुम्भाख्यस्तीर्थनायके।।" (स्कन्दपुराण)

उज्जैन पुरी जिसे अवन्तिका विशाला आदि नाम से भी जाना जाता है। जहाँ भगवान् महाकाल का परमपवित्र क्षिप्रा के तट पर नित्य निवास है वहां भी प्रत्येक बारहवें वर्ष जब मेष राशि में सूर्य, सिंह राशि में सुरगुरु बृहस्पति विद्यमान हों तो सदैव मुक्तिप्रदान करने वाला कुम्भ नामक परमपवित्र उत्तम कुम्भ नामक योग होता है –

"मेषराशिगते सूर्ये सिंहराशौ बृहस्पतौ।
उज्जयिन्यां भवेत् कुम्भः सदामुक्तिप्रदायकः।।"

(स्कन्दपुराण)

नासिक नगरी दक्षिणगङ्गागोदावरी के तट पर विद्यमान है। जहां पर समीप में त्र्यम्बकेश्वर महादेव का नित्य सन्निधान है। वहां पर भी जब भगवान् सूर्य एवं देवगुरु बृहस्पति सिंह राशि में स्थित हों उस अवस्था में नासिक क्षेत्र में गोदावरी तीर्थ में परम पवित्र मुक्तिदायक उत्तम कुम्भ योग प्रत्येक बारहवें वर्ष प्राप्त होता है।

"सिंहराशिगते सूर्ये सिंहराशौ बृहस्पतौ।
गोदावर्यां भवेत् कुम्भो जायते खलु मुक्तिदः।।" (स्कन्दपुराण)

यहां चन्द्रमास के रूप भाद्रपद मास कुम्भ पर्व के लिए गृहीत होता है। यहां पर विचारणीय विषय यह है कि हरिद्वार तथा उज्जैन में कुम्भ पर्व वैशाख मास में होता है। मेष क्रान्ति अमावस्या तथा पूर्णिमा तिथि इन स्थानों स्नान हेतु विशेष महत्त्व रखते है। किन्तु हरिद्वार में माघमास से लेकर वैशाख पर्यन्त लोग इस उत्सव में सम्मिलित होतें है। पर विशेष कुम्भविषयक पुण्यकाल वैशाख में ही होता है। तथैव उज्जैन में भी वैशाखमास में सभी पुण्यपर्व कुम्भयोग के होते है। प्रयागराज में मकर संक्रान्ति माघ अमावस्या, पौषीपूर्णिमा, माघीपूर्णिमा तथा वसन्तपञ्चमी को मुख्यपर्व होते हैं। परन्तु मुख्यकुम्भपर्व अमावस्या को ही अभिमान्य होता है।

सम्पूर्ण कुम्भपर्व का वर्णन स्कन्दपुराण के समुद्रमन्थन के प्रसङ्ग में आया हुआ है। जिसका पूर्व के कुम्भ की उत्पत्ति-विषयक कुछ श्लोक इस प्रकार का है।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि कलशोत्पत्तिमुत्तमम्।
उत्तरे हिमवत् पार्श्वे क्षीरोदो नाम सागरः।।
आरब्धं मन्थनं तत्र देवैर्दानवपूर्वकैः।
मन्थानं मन्दरं कृत्वा नेत्रं कृत्वा तु वासुकिम्।।
मूले कूर्मं तु संस्थाप्य विष्णोर्बाहू च मन्दरे।
एकत्र देवताः सर्वे बलिमुस्यास्तथैकतः।
मथ्यमाने तदा तस्मिन् क्षीरोदो सागरोत्तमे।
उत्पन्नं गरलं पूर्वं शम्भुना भक्षितं हि तत्।।
अथ स्वास्थ्यगते लोके प्रकथ्यन्तेऽद्य तानि हि।
उत्पन्नानि च रत्नानि यानि तत् महान्ति च।।
कलशश्च समुद्भूतो धन्वन्तरिकरोल्लसन्।
मुखान्तं सुधया पूर्णं सर्वेषां हि मनोहरः।।

अजितस्य पदाम्भोजकृपयैव समुद्गतम्।
क्षीराब्धलोडनोद्भूतं कशलान्तेन्दुरत्नकम्।।
दृष्टवा तु तत्क्षणादेव महाबलपराक्रमः।
जयन्तोऽमृतमादाय गतो देवप्रचोदितः।।
देवकर्म समालोच्य तदा दैत्यपुरोधसा।
नागच्छवासप्रव्यथिता दैत्याः शुक्रेण सूचिताः।।
जग्मुस्ते पृष्ठतो लग्ना भीतः सोऽपि पलायितः
दिशो दश दिवारात्रं द्वादशाहं प्रपीडितः।।
दैत्यैर्गृहीतस्तद्धस्तात् तेनापि पुनरेव सः।
अहं पिबेयं पूर्वं तु न त्वञ्चेति विचुक्रुशुः।।
एवं विवदनमानेषु काश्यपेषु सुधागृहे।
भगवान् मोहयित्वा तान् मोहिन्या विभजत् सुधाम्।।
विवादे काश्यपेयानां यत्र यत्रावनिस्थले।
कलशो न्यपपत्तत्र कुम्भपर्व तदोच्यते।।
(स्कन्दपुराण)

अर्थात् ऋषि कहते हैं कि मैं अब कलश की उत्तम उत्पत्ति की कथा को आप सबके लिए कहूँगा। उत्तर दिशा में हिमालय के पास क्षीरोदक (क्षीर सागर) नाम का समुद्र है। वहां पर दानवों को साथ में लेकर देवताओं ने उस क्षीर सागर का मन्थन प्रारम्भ किया। उन्होंने मन्दराचल मथाना तथा नागराज वासुकि को नेती और मथानी के रूप में गृहीत मन्दराचल को धारण करने के लिए भगवान् श्री विष्णु के रूप को धारण किया तथा मन्थन मन्दराजल को भी अपने हाथों में सम्हाला। मथने के लिए वासुकिनाग के पूछ की ओर देवता तथा मुख की ओर सभी दानव दैव्य बलि आदि लगाकर प्रवृत्त हुए। उस मथने की प्रक्रिया में सर्व प्रथम द्रत्वा हल विष उत्पन्न हुआ। जिससे सम्पूर्ण विश्व जलने लगा। देवताओ की प्रार्थना से सब के कल्याण के लिए भगवान् शङ्कर ने उसका पान कर सबकी रक्षा की। विष की ज्वाला को भगवान् शिव के द्वारा शान्त कर दिए जाने पर मन्थन पुनः प्रारम्भ हुआ जिनसे चौदह से अधिक रत्न उत्पन्न हुए। हंसवाहन वाले पुष्पक विमान, ऐरावत हाथी, पारिजात नामक कल्पवृक्ष, वीणावाद्य के साथ नृत्यगान आदि प्रवीण रम्भा आदि अप्सराएँ, कौस्तुभ मणि, बालचन्द्रमा, कुण्डल, पश्चात् लक्ष्मी, सुरूपा यमुना सुशीला तथा सुरभि नाम पाँच कल्याणकारिणी कामधेनु गाएँ उत्पन्न हुई। इसके अनन्तर उच्चैःश्रवा अश्व, वर को वरण करने वाली विष्णुप्रिया भगवती लक्ष्मी, धन्वन्तरि देवता, कलाविद विश्वकर्मा, सबको अनन्तर वह अमृतकलश भगवान् धनवन्तरि जी को हाथों सुशोभित होता हुआ उत्पन्न हुआ, जो कण्ठ के ऊपर तक अमृतरस से भरा हुआ था। भगवान श्री विष्णु की कृपा के फल स्वरूप मणिमय कलश में पूर्व रूपेण भरे हुए उस अमृत को देवताओं की प्रेरणा से धनवन्तरि जी के हाथ से महापराक्रमी इन्द्रपुत्र जयन्त ने अपने हाथ में ले लिया। देवताओं की इस प्रक्रिया को देखकर दैत्यगुरु शुक्राचार्य ने उग्रकर्म वाले सर्प के समान उच्छ्वास वाले दैत्यों को जयन्त से अमृतकलश को छुडाने के लिए प्रेरित किया। शुक्राचार्य से प्रेरित दैत्य तथा दानव महाबली उनसे छुड़ा लिया उस अमृत कलश को इस प्रकार के अमृतार्थ कलह में दशों दिशाओं तथा कभी स्वर्गादि लोकों तथा कभी पाताल आदि लोकों में तोकभी पृथिवी के अनेक स्थानों में देवताओं तथा दैत्यों के आने जाने से बारह दिनों तक यह कलश अमृत को लेकर चलता रहा। तब भगवान् विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर उस अमृत का बटवारा किया। देवताओ तथा दैत्यों ओर दानवों के बीच अमृत के लिए उस कलश में छीना झपटी से जहाँ-जहाँ अमृत कलश छलका उस स्थानों पर कुम्भ पर्व माना जाता है। इस अमृत कलश का छलकना बारह स्थानों पर हुआ। इनमें चार स्थान स्वर्गादि लोकों में हैं। और चार स्थान पाताल आदि लोकों में है और पृथिवीलोक में वे चार स्थान हैं – हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जयिनी तथा नासिक। कश्यपुत्र देव, दानव, दैत्यों अमृतार्थ विवाद जो इनकें बारह दिन लगे थे। वही मनुष्यों के बारह वर्ष माने जाते हैं। मनुष्यों के उत्तरायण और दक्षिणायन दो अयन वर्ष के होते हैं। वहीं उत्तरायण देवताओं का दिन तथा दक्षिणायन रात्रि कहा जाता है। उस विवाद में जहाँ-जहाँ अमृत विन्दु छलका वहां कुम्भ पर्व होने के कारण बृहस्पति, चन्द्रमा, सूर्य तथा सूर्य पुत्र शनि ग्रहों के संयोग होने से पृथिवी में चार स्थानों पर कुम्भ पर्व ऋषियों ने स्वीकरा किया। क्योंकि शुक्राचार्य से सम्प्रेरित दैत्यों के आक्रमण से इन्हीं चारों ने उस अमृत कलश की पूर्णतया रक्षा की थी। इनमें चन्द्रमा ने अमृत कलश के छलकने से रक्षा की कि वह अधिक न गिर जाए। सूर्य ने उस कलश को उसके टूटने से बचाया। बृहस्पति ने दैत्यों से तथा सूर्यपुत्र शनि ने जयन्त से उसकी रक्षा की। इसलिए जिस वर्ष जिस दिन सूर्य, चन्द्रमा तथा गुरु के संयोग योग उन-उन विशेष राशिओं पर होता है उस काल विशेष ही अमृतकलश के उस स्थान विशेष छलकने से हुए कुम्भ पर्व योग में अमृततत्त्व विद्यमान होने से मुक्ति दायक योग उन-उन स्थानों पर बनता है। ये कुम्भयोग पृथिवी लोक में प्रत्येक बारहवें वर्ष हरिद्वार, प्रयाग, उज्जयिनी तथा नाषिक में होता है। जैसा की पूर्व में कहा गया है कि गुरु, सूर्य, चन्द्रमा तथा शनि इनके योग पर महाकुम्भपर्व विशेष रूप से जब होता है तभी मुख्य कुम्भपर्व होता है। यह अवस्था अमावस्या तिथि को विशेष रूप से होती है। क्योंकि प्रत्येक अमावस्या को सूर्य तथा चन्द्रमा दोनों एक ही राशि में स्थित होते हैं। यथा वैशाख भी अमावस्या को सूर्य तथा चन्द्रमा में रहते हैं। और गुरु, शनि की राशि कुम्भ में रहते हैं। ऐसे प्रयाग में माघमास में सूर्य चन्द्रमा यो दोनों माघ अमावस्या को मकर राशि जो शनि की राशि है में रहते हैं तथा गुरु वृष राशि में रहते है। तब कुम्भ नामक अमृत जो होता है। इसी प्रकार वैशाख में भी अमावस्या मेष राशि में सूर्य तथा चन्द्रमा ओर स्वमित्र सूर्य की राशि सिंह में गुरु के रहने पर कुम्भ नामक अमृतयोग उज्जयिनी होता है। एवमेव भाद्रपद अमावस्या में सूर्य चन्द्रमा तथा गुरु इन तीनों की सिंह राशि में स्थिति होने पर नासिक में कुम्भ अमृत योग बनता है।

प्रयाग-स्नान का महत्त्व :

प्रयाग में स्नान इत्यादि का महत्त्व वर्णित करते हुए मत्स्य पुराण में कहा गया है-

मोक्षलक्ष्मीर्हिरण्यं च सेयं वेणी विमुक्तिदा।
तत्र स्नात्वा च पीत्वा च पुनात्या सप्तमं कुलम्।।

मत्स्यपुराण, प्रयाग महात्म्य, अध्याय 7/11

अर्थात् यहां तीन वेणियां अर्थात् तीन नदियां मोक्ष, धन और प्रकाश के साथ-साथ मुक्ति भी प्रदान करती हैं। यहां स्नान करने वाले और आचमन करने वालों के साथ कुल पवित्र हो जाते हैं।

अश्वमेध सहस्त्राणि वाजपेयशतानि च।
लक्षप्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नानेन तत् फलम्।।

-विष्णु पुराण

गोस्वामी तुलसीदास प्रयाग की राजाओं के समान शोभा और प्रभुता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि-

संगमु सिंहासन सुठि सोहा। छत्रु अखयबटु मुनि मनु मोहा।।
चंवर जमुन अरु गंग तरंगा। देखि होहिं दुख दारिद भंगा।।
सुकृती साधु सुचि पावहिं सब मनकाम।
बंदी बेद पुरान गन कहहिं बिमल गुन ग्राम ॥105॥

- रामचरितमानस,अयोध्याकाण्ड,105

अर्थात् गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम ही उसका अत्यन्त सुशोभित सिंहासन है। अक्षयवट छत्र है, जो मुनियों के भी मन को मोहित कर लेता है। यमुनाजी और गंगाजी की तरंगें उसके (श्याम और श्वेत) चँवर हैं, जिनको देखकर ही दुःख और दरिद्रता नष्ट हो जाती है। पुण्यात्मा, पवित्र साधु उसकी सेवा करते हैं और सब मनोरथ पाते हैं। वेद और पुराणों के समूह भाट हैं, जो उसके निर्मल गुणगणों का बखान करते हैं।

सरस्वती ज्ञान,विद्या और कला की देवी जो उत्ताल तरंगों और गर्जना से युक्त एक नदी है जिसका वर्णन ऋग्वेद में मिलता है। ऋषियों ने उद्घोष किया था , जिसे ज्ञान और कला में श्रेष्ठ चाहिए मेरे तट पर आकर निवास करें। सरस्वती हिमालय की ऊंचाइयों से गंगा-सिंधु के बीच बहती हुई सतलज, चिनाब और रावी को साथ जोड़ते हुए विशाल सिंधु में प्रवेश कर जाती थी। उसके ही जल ने नवीन ज्ञान कलाओं को विस्तार दिया और वैदिक युग का निर्माण किया। परंतु काल की गति के साथ, प्रचंड भूगर्भीय हलचलों ने, सरस्वती की धारा को रोक दिया। धीरे-धीरे सरस्वती की गर्जना मूक हो गई और अदृश्य होकर, केवल इतिहास के पन्नों में सिमट गई।कई पुराण तो उसी के तट पर लिखे गए। वेद व्यास की जन्मकथा सरस्वती से ही तो जुड़ी है। सरस्वती जन्म भी अद्भुत रहस्य है उतना ही, जितना उसका अदृश्य होकर अन्तः सलिला होना। वामन पुराण के अनुसार ऋषि मार्कंडेय ने सरस्वती, एक पाकड़ के वृक्ष के नीचे प्रकट होते हुए देखा, उन्होंने उपासना की और इस संसार को आशीर्वाद प्रदान करने हेतु प्रकट हुई।

संगम वही स्थान है, जहां मिलते हैं दृश्य और अदृश्य, रुक जाता है समय भी, राज होता है दिव्यता का संगम में प्रवाहित अदृश्या सरस्वती भी दृश्या हो जाती है- अनंत, पवित्र, सर्वव्यापिनी।

कुम्भ का आध्यात्मिक महत्त्व तथा वैज्ञानिक महत्त्वः

अब यदि यहां हम ज्योतिष और वैज्ञानिक दोनों ही रूपों में देखें तो प्रतीक के रूप में देखें गुरु ज्ञान का प्रतीक है चंद्रमा मन का सूर्य जीवनी शक्ति का। और यहां एक और ग्रह प्रभावी होता है वह है शनि जो कर्म फल के अधिष्ठाता माने जाते हैं वह भी निष्पक्ष। गुरु मेष राशि में उच्चतम अवस्था में होता है पौष अमावस्या के दिन सूर्य और पृथ्वी के बीच सीधा और सबसे निकट सम्बन्ध होता है बीच में चंद्रमा नहीं होता तो कोई व्यवधान भी नहीं उत्तरायण चल रहा है तो नक्षत्रीय स्थिति में भी सूर्य पृथ्वी के सबसे निकट रहेगा अर्थात हमारे जीवनी शक्ति सबसे जागृत अवस्था में होगी। गुरु के कारण ज्ञान उत्कृष्ट रूप में रहेगा और मन अर्थात् चंद्रमा भी अपनी संकल्प शक्ति के साथ रहेगा। जो भी हम कर्म कुम्भ के दौरान करते हैं उसके साक्षी शनि प्रभावी रहेंगे। अर्थात् एक रूप में जीवनी शक्ति के साथ ज्ञान, मनोबल और कर्म तीनों ही अपने चरम पर होंगे तो जो कार्य हम कर रहे हैं उसका हजार गुना फल हमें प्राप्त होगा। और समुद्र मंथन की कहानी को भी देखें तो सूर्य ने अमृत कलश को टूटने से बचाया चंद्रमा ने अमृतकुंभ को चटकने से बचाया गुरु ने दैत्य से बचाया तो शनि ने इंद्र के पुत्र जयंत से कलश को बचाया इस प्रकार अमृत की रक्षा में यह चारों ही ग्रहण का योगदान माना जाता है। और यही अमृत परम पुरुषार्थ मोक्ष के रूप में यहां पर संगम किनारे दिखाई देता है। अभी प्रश्न बचता है जल ही क्यों स्नान ही क्यों। तो आप सभी जानते हैं कि जल जो है ऊष्मा का सर्वाधिक सुचालक तत्त्व है । तब ग्रहों की ऊर्जा या कह सकते हैं की प्रकृति की ऊर्जा चारों ओर से घनीभूत हो रही है और जल के माध्यम से वह सीधे शरीर में प्रविष्ट हो जाती है। क्योंकि यहां का वातावरण भी आद्रता लिए होता है इसलिए कुम्भ में जो प्रवेश भी करता है प्रयाग में उसे भी यह ऊर्जा प्राप्त हो जाती है। आयुर्वेद में भी विभिन्न प्रकार के स्थान द्वारा शरीर की चिकित्सा की जाती है यहां न केवल शरीर बल्कि मन कर्म वचन तीनों की ही पवित्रता का विधान होता है। माघ मास की अमावस्या के दिन मकर राशि में स्थित सूर्य तथा चंद्र तथा वृष राशि में स्थित गुरु कुम्भ की स्थिति का निर्माण करते हैं।

गुरु ज्ञान का प्रतीक है चंद्रमा मन का सूर्य जीवनी शक्ति का। और यहां एक और ग्रह प्रभावी होता है वह है शनि जो कर्म फल के अधिष्ठाता माने जाते हैं वह भी निष्पक्ष। गुरु मेष राशि में उच्चतम अवस्था में होता है पौष अमावस्या के दिन सूर्य और पृथ्वी के बीच सीधा और सबसे निकट सम्बन्ध होता है बीच में चंद्रमा नहीं होता तो कोई व्यवधान भी नहीं उत्तरायण चल रहा है तो नक्षत्रीय स्थिति में भी सूर्य पृथ्वी के सबसे निकट

रहेगा अर्थात हमारे जीवनी शक्ति सबसे जागृत अवस्था में होगी। गुरु के कारण ज्ञान उत्कृष्ट रूप में रहेगा और मन अर्थात् चंद्रमा भी अपनी संकल्प शक्ति के साथ रहेगा। जो भी हम कर्म कुम्भ के दौरान करते हैं उसके साक्षी शनि प्रभावी रहेंगे। अर्थात एक रूप में जीवनी शक्ति के साथ ज्ञान, मनोबल और कर्म तीनों ही अपने चरम पर होंगे तो जो कार्य हम कर रहे हैं उसका हजार गुना फल हमें प्राप्त होगा। और समुद्र मंथन की कहानी को भी देखें तो सूर्य ने अमृत कलश को टूटने से बचाया चंद्रमा ने अमृतकलश को चटकने से बचाया गुरु ने दैत्य से बचाया तो शनि ने इंद्र के पुत्र जयंत से कलश को बचाया इस प्रकार अमृत की रक्षा में यह चारों ही ग्रहण का योगदान माना जाता है। और यही अमृत परम पुरुषार्थ मोक्ष के रूप में यहां पर संगम किनारे दिखाई देता है। अभी प्रश्न बचता है जल ही क्यों स्नान ही क्यों। तो आप सभी जानते हैं कि जल जो है ऊष्मा का सर्वाधिक सुचालक तत्त्व है। तब ग्रहों की ऊर्जा या कह सकते हैं कि प्रकृति की ऊर्जा चारों ओर से घनीभूत हो रही है और जल के माध्यम से वह सीधे शरीर में प्रविष्ट हो जाती है। क्योंकि यहां का वातावरण भी आर्द्रता लिए होता है इसलिए कुम्भ में जो प्रवेश भी करता है प्रयाग में उसे भी यह ऊर्जा प्राप्त हो जाती है। आयुर्वेद में भी विभिन्न प्रकार के स्थान द्वारा शरीर की चिकित्सा की जाती है यहां न केवल शरीर बल्कि मन कर्म वचन तीनों की ही पवित्रता का विधान होता है। बृहस्पति ज्ञान का प्रतीक हैं, चंद्रमा मन का, सूर्य जीवनी शक्ति का और शनि जो कर्म फल के निष्पक्ष अधिष्ठाता माने जाते हैं। गुरु मेष राशि में उच्चतम अवस्था में होता है।

उत्तरायण में पौष अमावस्या के दिन सूर्य और पृथ्वी के बीच सीधा और सबसे निकट सम्बन्ध होता है बीच में चंद्रमा नहीं होता तो कोई व्यवधान भी नहीं अर्थात् हमारे जीवनी शक्ति सबसे जागृत अवस्था में होगी। गुरु के कारण ज्ञान उत्कृष्ट रूप में रहेगा और मन अर्थात् चंद्रमा भी अपनी संकल्प शक्ति के साथ रहेगा। जो भी हम कर्म कुम्भ के दौरान करते हैं उसके साक्षी शनि प्रभावी रहेंगे। अर्थात एक रूप में जीवनी शक्ति के साथ ज्ञान, मनोबल और कर्म तीनों ही अपने चरम पर होंगे तो जो कार्य हम कर रहे हैं उसका हजार गुना फल हमें प्राप्त होगा। जल जो है ऊष्मा का सर्वाधिक सुचालक तत्त्व है । तब ग्रहों की ऊर्जा चारों ओर से घनीभूत होती है और जल के माध्यम से वह सीधे शरीर में प्रविष्ट हो जाती है। क्योंकि यहां का वातावरण भी आर्द्रता लिए होता है इसलिए प्रयाग में कुम्भ में जो प्रवेश भी करता है उसे भी यह ऊर्जा प्राप्त हो जाती है। यहां न केवल शरीर बल्कि मन कर्म वचन तीनों की ही पवित्रता का विधान होता है।

आत्माभिव्यक्तिः

सृष्टि के पहले यज्ञ के स्थान के रूप में प्रयागराज प्राचीनकाल से ही तीर्थों में एक विशिष्ट स्थान रखता है। प्रयागराज केवल तीन नदियों का ही संगम नहीं अपितु कईं संस्कृतियों का संगम है। गंगा से ज्ञान-वैराग्य, यमुना से भक्ति तथा सरस्वती के रूप में समस्त कलाओं का भी संगम यहां दिखाई देता है। समुद्र मंथन से उत्पन्न अमृत कलश की बूंदें जिन स्थानों पर गिरी, प्राचीन काल से ही प्रत्येक 12 वर्षों में उन स्थानों पर महाकुम्भ का आयोजन किया जाता है। महाकुम्भ विराट् विश्व संस्कृति का समागम है। यह संगम है आध्यात्मिक, सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं का। यह विशाल जनसमूह अपनी लक्ष लक्ष आस्थाओं, विविध उपासना पद्धतियों का प्रतीक है जो संगम के जल के समान सभी को पवित्र करता हैं । भारतीय सांस्कृतिक समन्वय का यह महाकुम्भ विश्व को ऋग्वेद के अन्तिम मंत्र में प्रतिपादित समन्वय का संदेश देता है -

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

अर्थात् साथ-साथ चले साथ-साथ बोले हम सब के मन समान हो।

इस त्रिवेणी संगम के तट पर महाकुम्भ के वसर पर स्नान, ध्यान और दान का महत्त्व है। महाकुम्भ का पर्व समुद्र-मंथन के कथा के रूप में आत्म-मंथन को ही प्रोत्साहित करता है। लोकव्यापी सहस्त्राब्दियों से सफल रहने वाला महाकुम्भ मानवतावादी दृष्टिकोण को धारण करता है जो मनुष्य को अध्यात्मवाद और भौतिकवाद दोनों के मध्य संतुलन बनाना सीखाता है। यहां यदि ध्यान से देखा जाए तो मानवता का जो विशाल स्वरूप मनुष्य के सामने संस्कृति और इतिहास को केंद्र मानकर साकार हो रहा है वह न केवल राष्ट्र वरन् विश्व को एक नीड में समग्रता से देखने का प्रयास भी कर रहा है। संगम के जल मानो धरती और आकाश श्वेत और नीले रूप में एक साथ यहां पर मिल रहे हैं, जिसमें समग्र विशाल जन समुदाय अपने आप को निमज्जित करने के लिए आतुर खड़ा है। हमारे विशाल सनातन संस्कृति उस विशाल अक्षयवट के समान है जो सनातन काल से यहां पर सभी प्राणियों को आश्रय दे रहा है। सरस्वती मानो यहीं पर आकर साधू संन्यासियों के ज्ञान के रूप में एक स्थान उस कूप में स्थिर हो गई। हनुमानजी जो अष्ट सिद्धि नव निधियों के दाता है वहां से लेकर सरस्वती कूप तक का यह मार्ग मानो संसार को ज्ञान, भक्ति और कर्म की राह बता रहा है। महाकुम्भ का आयोजन भारत की विविध सांस्कृतिक, आध्यात्मिक परंपराओं, विविध संप्रदायों का मिलन स्थान है जहां पर संस्कृति का हस्तांतरण होता है पुरानी पीढ़ी से नई पीढ़ी में, और यही कुम्भ की विशेषता भी रही है। योगियों द्वारा सामान्य जन को उपदेश तथा जीवन जीने की सही मार्ग प्रदर्शित करना ही इन कुम्भ आयोजनों का उद्देश्य होता है। आज जब भारत आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर विश्व में अपनी पहचान बना रहा है तब भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक ध्वजा भी इन कुम्भ मेलों के माध्यम से विश्व में फहरा रही है।

विशेष आलेख

विज्ञान ही तो है महाकुंभ

डॉ रेखा त्रिपाठी

कुंभ पर्व के सम्बन्ध में वेदों में अनेक मन्त्र हैं जिनसे सिद्ध होता है कि, कुंभ पर्व अत्यंत प्राचीन और वैदिक धर्म से ओत-प्रोत है। प्राचीन वेद और पुराणों से ज्ञात होता है कि, कालिक दृष्टि से ऐसे ग्रहयोग जो खगोल में लुप्त-सुप्त अमृतत्व को प्रत्यक्ष और प्रबुद्ध कर देते हैं, चारों स्थानों में बारह-बार वर्ष पर अर्थात द्वादश वर्षात्मक कालयोग से प्रकट होते हैं। इस समय नदियां (गंगा हरिद्वार एवं प्रयाग में, शिप्रा उज्जैन में और गोदावरी नासिक में) अपनी जलधारा में अमृतत्व को प्रवाहित करती हैं। फलस्वरूप अमृतघट अर्थात कुंभ का अवतरण होता है।

देवानां द्वादशाहोभिर्मर्त्यै द्वार्दशवत्सरैः।
जायन्ते कुम्भपर्वाणि तथा द्वादश संख्यया:।
गंगाद्वारे प्रयागे च धारा गोदावरी तटे।
कलसाख्योहि योगोहयं प्रोच्यते शंकरादिभिः।
पद्मिनीनायके मेषे कुंभराशि गते गुरौ।
गंगाद्वारे भवेत् योगः कुंभनामा तदोत्तमः।। (विष्णुपुराण)

हमारी संस्कृति हमारी जीवनधारा गंगा है। महाकुंभ हमारी आस्था है। गंगा हमारी माता है। गंगा संस्कृति की जीवनधारा है। महाकुंभ में जब गंगा का दर्शन पावन है तो गंगा स्नान मोक्षदायिनी होगा है। तथापि यह अवसर 12 वर्ष में एक बार आता है। महाकुंभ महज स्नान नहीं, यह सनातन विचारों का महापर्व है। हजारों वर्षों के ज्ञात इतिहास में महाकुंभ ने सनातन धर्म के माध्यम से विश्व को शांति, सद्भाव और एकजुटता का संदेश दिया है। यह धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक समाज के निर्माण के साथ ही आर्थिकी से भी जुड़ा है।

धार्मिकता एवं ग्रह-दशा के साथ-साथ कुम्भ पर्व को पुनः तत्वमीमांसा की कसौटी पर भी कसा गया है। जिससे कुम्भ की उपयोगिता स्वयं सिद्ध होती है। कुम्भ पर्व के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि, यह पर्व प्रकृति एवं जीव तत्व में सामंजस्य स्थापित कर उनमें जीवनदायी शक्तियों को समाविष्ट करने का उपक्रम है। प्रकृति ही जीवन व मृत्यु का आधार है। ऐसे में प्रकृति से सामंजस्य अति-आवश्यक हो जाता है।

"हमारी संस्कृति हमारी जीवनधारा गंगा है। महाकुंभ हमारी आस्था है। गंगा हमारी माता है। गंगा संस्कृति की जीवनधारा है। महाकुंभ में जब गंगा का दर्शन पावन है तो गंगा स्नान मोक्षदायिनी होगा है। तथापि यह अवसर 12 वर्ष में एक बार आता है। महाकुंभ महज स्नान नहीं, यह सनातन विचारों का महापर्व है। हजारों वर्षों के ज्ञात इतिहास में महाकुंभ ने सनातन धर्म के माध्यम से विश्व को शांति, सद्भाव और एकजुटता का संदेश दिया है।"

महाकुंभ केवल धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह मानव और ब्रह्मांड के बीच संबंधों का अद्भुत संगम है। विज्ञान और ज्योतिष विज्ञान दोनों ही मानते हैं कि, गुरु, सूर्य और चंद्रमा का विशेष संयोग पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को प्रभावित करता है। इन खगोलीय संयोगों के दौरान कुंभ में स्नान का महत्व अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय है।

बृहस्पति का स्थिर राशियों वृष, सिंह, वृश्चिक एवं कुंभ में होना ही बुद्धि का स्थैर्य है। चन्द्रमा का सूर्य से युक्त होना अथवा अस्त होना ही मन पर आत्मा का वर्चस्व है। आत्मा एवं मन का संयुक्त होना स्वकल्याण के पथ पर अग्रसर होना है। कुंभ, अर्ध कुंभ को हम शरीर, पेट, समुद्र, पृथ्वी, सूर्य, विष्णु के पर्यायों से सम्बद्ध करते हैं पर समुद्र, नदी, कूप आदि सभी कुंभ के प्रतीक है। वायु के आवरण से आकाश, प्रकाश से समस्त लोकों को आवृत करने के कारण सूर्य नाना प्रकार की कोशिकाओं, स्नायु तंत्रों से आवृत्त रहता है, इसलिए कुंभ है।

कुंभ मेले का संबंध विज्ञान से है क्योंकि यह खगोलीय घटनाओं से जुड़ा है। कुंभ मेले की तिथियां वैज्ञानिक तकनीकों से तय की जाती हैं. कुंभ मेले से जुड़े कुछ वैज्ञानिक तत्व इस तरह से ज्ञात होते हैं। सूर्य चक्र का समय भी कुंभ से जुडा हुआ होता है। ठंड के दिन में जब वातावरणमें ऑक्सीजन मॉलिक्यूल का घनत्व ज्यादा होता है। वातावरण और पानी में उसे समय ऑक्सीजन की मात्रा अधिक होती है।

(लेखिका उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विवि प्रयागराज के कानपुर की क्षेत्रीय समन्वयक एवं सहायक आचार्य हैं)

कुंभ मेला के लिए जगहों का चुनाव भी प्राचीन भारत की भूगोल और भू-चुंबकीय शक्तियों की गहन समझ को सामने रखता है। ऐसा माना जाता है कि ये जगहें, जो नदियों के संगम पर हैं, आध्यात्मिक विकास के लिए अनुकूल मजबूत भू-चुंबकीय ऊर्जा क्षेत्र प्रदर्शित करते हैं। प्राचीन ऋषियों ने इन क्षेत्रों को पृथ्वी की ऊर्जा प्रणालियों का उपयोग करने के लिए सबसे बेहतर जगह के रूप में पहचाना ताकि न केवल समय बल्कि इस महत्वपूर्ण त्यौहार के लिए जगह भी तय किया जा सके।

इस समय जल में विचित्र प्रकार के आकार दिखने लगते हैं जैसे छोटे-छोटे चमकते हुए हीरे की तरह के क्रिस्टल तैर रहे हों। जल पर गहन शोध में पाया गया है कि जल में अत्यंत विशेष प्रकार की संरचनाएं निर्मित होती हैं जिनका आधार वहां का वातावरण, कॉस्मिक ऊर्जाएं और वहां स्थित भावनाएं होती हैं। जल के यह विशेष क्रिस्टल हमारी ऊर्जाओं को प्रभावित करते हैं क्योंकि हमारा शरीर 75 फीसद से ज्यादा हिस्सा जल से निर्मित है इसलिए जल के यह क्रिस्टल शरीर को बनाने बिगाड़ने में बड़ा योगदान करते हैं। ऋषियों का अनुसंधान लाखों साल पहले इस सत्य को जान चुका था और विशेष कॉस्मिक परिस्थितियों का लाभ कैसे आने वाली पीढ़ियों को दिया जाए इसका उन्होंने तरीका भी निकाल लिया था। वस्तुतः कुम्भ इसी प्रकार की खोज का नतीजा है जो मानवमात्र के लिए प्रत्येक लिहाज से कल्याणकारी है।

कुंभ ऊर्जा का स्त्रोत

कुंभ मानव-जाति को पाप, पुण्य और प्रकाश, अंधकार का एहसास कराता है। नदी जीवन रूपी जल के अनंत प्रवाह को दर्शाती है। मानव शरीर पंचतत्वों से निर्मित है यह तत्व हैं-अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी और आकाश। इसलिए कुंभ अपने आप में एक पूर्ण सार्थकता लिए हुए है। कुंभ भगवान विष्णु का नाम है- कुंभ शब्द चुरादि-गणीय। (विष्णु सहस्त्रनाम-श्लोक 87) कुभि (कुंभ) आच्छादन धातु से विपन्न होता है। जो आच्छान करता है, ढकता है, आवृत किए रहता है। इसलिए वह भी कुंभ है। इसे कमु कान्तै धातु से जोड़ने पर अमृत प्राप्ति की कामना का बोध होता है। इसलिए कुंभ को पेट, गर्भाशय, ब्रह्मा, विष्णु की संज्ञा दी गई है। पृथ्वी लोक में कुंभ, अर्धकुंभ पर्व के सूर्य, चन्द्रमा तथा बृहस्पति तीन ग्रह कारक हैं। सूर्य आत्मा है, चन्द्रमा मन है, बृहस्पति ज्ञान है। आत्मा अजर, अमर, नित्य तथा शान्त है, मन चंचल, ज्ञान मुक्ति कारक है। आत्मा में मन का लय होना, बुद्धि का स्थिर होना नित्य मुक्ति का हेतु है।

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं सपैतृकाः।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फल प्रदाः।।

कालचक्र न केवल जीवन के क्रिया-कलापों का मूलाधार है अपितु समस्त यज्ञ कार्य, अनुष्ठान एवं संस्कार आदि भी कालचक्र पर ही आधारित है। कालचक्र में सूर्य, चन्द्रमा एवं देवगुरू बृहस्पति का महत्वपूर्ण स्थान है। इन तीनों का योग ही कुंभ पर्व का प्रमुख आधारा माना गया है। जब बृहस्पति मेष राशि पर चन्द्रमा सूर्य ककर राश पर स्थित हो तब प्रयाग में अमावस्या का अति दुर्लभ कुंभ होता है। इस स्थिति में सभी ग्रह मित्रतापूर्ण और श्रेष्ठ होते हैं।

कुंभ में ज्योतिषीय दृष्टिकोण

समुद्र मंथन की कथा में कहा गया है कि कुंभ पर्व का सीधा सम्बन्ध तारों से है। अमृत कलश को स्वर्ग लोक तक ले जाने में इंद्र के पुत्र जयंत को 12 दिन लगे। देवों का एक दिन मनुष्यों के 1 वर्ष के बराबर है

इसीलिए तारों के क्रम के अनुसार हर 12 वें वर्ष कुंभ पर्व विभिन्न तीर्थ स्थानों पर आयोजित किया जाता है। पौराणिक विश्लेषण से यह साफ़ है कि कुंभ पर्व एवं गंगा नदी आपस में सम्बंधित हैं। गंगा प्रयाग में बहती हैं परन्तु नासिक में बहने वाली गोदावरी को भी गंगा कहा जाता है, इसे हम गोमती गंगा के नाम से भी पुकारते हैं। क्षिप्रा नदी को काशी की उत्तरी गंगा से पहचाना जाता है। यहाँ पर गंगा गंगेश्वर की आराधना की जाती है।

विन्ध्यस्य दक्षिणे गंगा गौतमी सा निगद्यते उत्तरे सापि विन्ध्यस्य भगीरत्यभिधीयते।

एव मुक्त्वा गता गंगा कलया वन संस्थिता गंगेश्वरं तु यः पश्येत स्नात्वा शिप्राम्भासि प्रिये। (ब्रह्म पुराण, स्कन्द पुराण)

ज्योतिषीय गणना के अनुसार कुंभ का पर्व 4 प्रकार से आयोजित किया जाता है।

कुंभ राशि में बृहस्पति का प्रवेश होने पर एवं मेष राशि में सूर्य का प्रवेश होने पर कुंभ का पर्व हरिद्वार में आयोजित किया जाता है।

पद्मिनी नायके मेषे कुंभ राशि गते गुरोः।
गंगा द्वारे भवेद योगः कुंभ नामा तथोत्तमाः।।

मेष राशि के चक्र में बृहस्पति एवं सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में प्रवेश करने पर अमावस्या के दिन कुंभ का पर्व प्रयाग में आयोजित किया जाता है।

मेष राशि गते जीवे मकरे चन्द्र भास्करौ।
अमावस्या तदा योगः कुंभख्यस्तीर्थ नायके।।

एक अन्य गणना के अनुसार मकर राशि में सूर्य का एवं वृष राशि में बृहस्पति का प्रवेश होनें पर कुंभ पर्व प्रयाग में आयोजित होता है। सिंह राशि में बृहस्पति के प्रवेश होने पर कुंभ पर्व गोदावरी के तट पर नासिक में होता है।

सिंह राशि गते सूर्ये सिंह राशौ बृहस्पतौ।
गोदावर्या भवेत कुंभों जायते खलु मुक्तिदः।।

सिंह राशि में बृहस्पति एवं मेष राशि में सूर्य का प्रवेश होने पर यह पर्व उज्जैन में होता है।

मेष राशि गते सूर्ये सिंह राशौ बृहस्पतौ।
उज्जियन्यां भवेत कुंभः सदामुक्ति प्रदायकः।।

पौराणिक ग्रंथों जैसे नारदीय पुराण (2/66/44), शिव पुराण (1/12/22-23) एवं वराह पुराण (1/71/47/48) और ब्रह्म पुराण आदि में भी कुंभ एवं अर्द्ध कुंभ के आयोजन को लेकर ज्योतिषीय विश्लेषण उपलब्ध है। कुंभ पर्व हर 3 साल के अंतराल पर हरिद्वार से शुरू होता है। कहा जाता है कि हरिद्वार के बाद कुंभ पर्व प्रयाग, नासिक और उज्जैन में मनाया जाता है। प्रयाग और हरिद्वार में मनाये जाने वाले कुंभ पर्व में एवं प्रयाग और नासिक में मनाये जाने वाले कुंभ पर्व के बीच में 3 सालों का अंतर होता है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ग्रहों का शुभाशुभ फल मनुष्य के जीवन पर पड़ता है। बृहस्पति जब विभिन्न ग्रहों के अशुभ फलों को नष्ट कर पृथ्वी पर शुभ प्रभाव का विस्तार करने में समर्थ हो जाते हैं, तब उक्त शुभ स्थानों पर अमृतप्रद कुंभयोग अनुष्ठित होता है। अनादिकाल से इस कुंभयोग को आर्यों ने सर्वश्रेष्ठ साक्षात मुक्तिपद की संज्ञा दी है। इन कुंभयोगों में उक्त पुण्य तीर्थस्थानों में जाकर दर्शन तथा स्नान करने पर मानव कायमनोभाव से पवित्र, निष्पाप और मुक्तिभागी होता है- इस बात का उल्लेख पुराणों में है। यही वजह है कि धर्मप्राण मुक्तिकामी नर-नारी कुंभयोग और कुंभ मेले के प्रति इतने उत्साहित रहते हैं।

महाकुंभ का आरंभ "समुद्र मंथन" की पौराणिक कथा से जुड़ा है. इस कथा के अनुसार, देवताओं और असुरों ने अमृत प्राप्त करने के लिए समुद्र मंथन किया। अमृत कलश से गिरा अमृत चार स्थानों प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में गिरा. यही स्थान कुंभ मेलों के आयोजन के केंद्र बने। 'कुंभ' शब्द स्वयं अमृत कलश का प्रतीक है, जो अमरता और आध्यात्मिक पोषण का प्रतीक है।

महाकुंभ का समय और आयोजन एस्ट्रोनॉमिकल घटनाओं पर आधारित है। यह मेला तब आयोजित होता है जब गुरु ग्रह, सूर्य और चंद्रमा के विशेष संयोग में होता है। गुरु का 12-साल का परिक्रमा चक्र और पृथ्वी के साथ इसकी विशेष स्थिति आयोजन को शुभ बनाती है।

महाकुंभ का आयोजन प्राचीन भारतीय एस्ट्रोनॉमिकल साइंस की गहरी समझ को बताता है। आयोजन स्थल और समय दोनों को पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्रों और ग्रहों की स्थिति के आधार पर निर्धारित किया गया है। इससे पता चलता है कि हमारे पूर्वज एस्ट्रोनॉमिकल साइंस और जैविक प्रभावों की गहन जानकारी रखते थे।

कुंभ मेले की तिथियां ग्रहों की स्थिति के आधार पर तय की जाती हैं।

कुंभ मेले के दौरान सूर्य, चंद्रमा, और बृहस्पति ग्रह एक खास स्थिति में होते हैं। कुंभ मेले के सथान का चुनाव भूगोल और भू-चुंबकीय शक्तियों के आधार पर किया गया है। कुंभ के दौरान गंगा, क्षिप्रा और गोदावरी नदी के जल में फ़िल्टरेशन होता है।

कुंभ के समय गंगा, क्षिप्रा और गोदावरी नदी के पानी में पीएच, घुली हुई ऑक्सीजन, और मिनरल्स सही मात्रा में होते हैं।

महा कुंभ का रहस्य

कुंभ देश की उन कुछ खास जगहों पर आयोजित किये जाते हैं जहां पर एक संपूर्ण ऊर्जा मंडल तैयार किया गया था। चूंकि हमारी पृथ्वी अपनी धुरी पर घूम रही है इसलिए यह एक अपकेंद्रिय बल' यानी केंद्र से बाहर की ओर फैलने वाली ऊर्जा पैदा करती है। पृथ्वी के 0 से 33 डिग्री अक्षांश में यह ऊर्जा हमारे तंत्र पर मुख्य रूप से लम्बवत व उर्ध्व दिशा में काम करती है। खास तौर से 11 डिग्री अक्षांश पर तो ऊर्जाएं बिलुकल सीधे ऊपर की ओर जातीं हैं। इसलिए हमारे प्राचीन गुरुओं और योगियों ने गुणा-भाग कर पृथ्वी पर ऐसी जगहों को तय किया, जहां इंसान पर किसी खास घटना का जबर्दस्त प्रभाव पड़ता है।

कुंभ को दो दृष्टिकोण

कुम्भ के दो पक्ष हैं। पहला पक्ष है पुराणों से उद्धृत है, ज्योतिष शास्त्र भी मान्यता देता है लेकिन ज्योतिष शास्त्र ज्यादा पुराना है और इसे पहले से मान्यता दे रहा है। ज्योतिष शास्त्र के हिसाब से सूर्य, चंद्रमा, गुरु और शनि की विशेष युतियों में कुछ खास किस्म की खगोलीय ऊर्जाएं पृथ्वी पर चुनिंदा स्थानों पर स्थित जल भंडारों को प्रभावित करती हैं और यह ऊर्जित जल मनुष्य के स्वास्थ व कार्मिक ऊर्जाओं को बल देता है, पुष्ट बनाता है। कुम्भ के लिए जो नियम निर्धारित हैं उसके अनुसार प्रयागराज में कुम्भ तब लगता है। माघ अमावस्या के दिन सूर्य और चंद्रमा मकर राशि में होते हैं और गुरु मेष राशि में होता है।

विष्णु पुराण में बताया गया है कि, जब गुरु कुम्भ राशि में होता है और सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है तब हरिद्वार में कुम्भ लगता है। सूर्य एवं गुरु जब दोनों ही सिंह राशि में होते हैं तब कुम्भ नासिक में गोदावरी के तट पर लगता है। गुरु जब कुम्भ राशि में प्रवेश करता है तब उज्जैन में कुम्भ लगता है। सागर मंथन से जब अमृत कलश प्राप्त हुआ तब अमृतघट को लेकर देवताओं और असुरों में युद्ध शुरू हो गया। इसी खींचतान में अमृत की बूंदें जहां छलकीं वहां कुम्भ का आयोजन होता है। इस युद्ध के दौरान चंद्रमा ने अमृत की सुरक्षा की, गुरु ने कलश को छिपाकर रखा, सूर्य ने कलश को फूटने से बचाया और शनिदेव ने इंद्र के कोप से अमृत की रक्षा की। ऐसे में इन चार ग्रहों का कुम्भ के आयोजन में व्यापक महत्व है।

ज्योतिषीय गणना के चार युग

सतयुग- 4800 दिव्य वर्ष यानी 1 करोड़, 72 लाख साल

त्रेतायुग- 3600 दिव्य वर्ष यानी 1 करोड़, 29 लाख, 60 हजार साल

द्वापर युग- 2400 दिव्य वर्ष यानी 86 लाख 40 हजार साल

कलियुग- 1200 दिव्य वर्ष 4 लाख 32 हजार साल

यानी इस गणना के मुताबिक, जिस अमृतकलश के लिए देवताओं असुरों में 12 दिन तक छीना छपटी चली, वो धरती के लिए 12 बरस हो गए। इसी अंतराल पर महाकुंभ का आयोजन आज भी किया जाता है. इस गणना को समझने के लिए आपको दिव्य वर्ष के बारे में बता दें- एक दिव्य वर्ष, यानी देवताओं का साल 3600 मानव वर्ष का होता है। युगों को नापने के लिए इसे एक इकाई के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। इसी के आधार पर एक दिव्य दिन मतलब धरती का एक साल होता है।

ये गणना करीब 2500 साल पहले हमारे मशहूर खगोलविद और गणित शास्त्री आर्य भट्ट ने की थी। ये गणना इतनी सटीक है, इसका अंदाजा आप इस तरीके से लगा सकते हैं कि पूरे सौरमंडल में सूर्य से पृथ्वी समेत सभी ग्रहों की दूरी पर आज का स्पेस साइंस भी मुहर लगाता है।

सूर्य को विज्ञान भी मानता है पूरे सौरमंडल की उर्जा का श्रोत, चंद्रमा को धरती का अपना हिस्सा और वहीं बृहस्पति सौरमंडल मंडल का सबसे बड़ा और धरती का सबसे बड़ा रक्षक ग्रह है। विज्ञान की भाषा में समझें, तो ये तीनों ग्रह सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति का क्रम हमारे सौरमंडल में ऐसा नहीं होता, तो हमारी धरती पर जीवन का नाम ओ निशान नहीं रहता।

कुंभ कब बन जाता है महाकुंभ ?

11 महीने 27 दिन बृहस्पति का चक्र रहता है और 11 से 12 वर्ष के बीच कुंभ का योग होता है। बृहस्पति और कुंभ के इस ज्योतिषीय योग को देखें, तो पता चलता है, इस योग में ख्याल चंद्रमा और सूर्य की स्थिति का भी ध्यान रखा जाता है लेकिन बृहस्पति सबसे ज्यादा निर्णायक होता है। इसी आधार पर कुंभ और महाकुंभ की तिथियों का निर्धारण किया जाता है। वहीं 11 कुंभों के बाद महाकुंभ का संयोग बनता है। अर्धकुंभ, कुंभ, और महाकुंभ,धर्म की हमारी सनातन परंपरा में ये मान्यता हमारी जांची परखी और आजमाई हुई आस्था का हिस्सा रही है। वो आस्था जो अलौकिक रूप से एक ऐसे अध्यत्म को जन्म देती है, जिसके सबसे बड़े प्रतीक के रूप में उभरा कुंभ।

इसका एक जिक्र महाभारत में जरूर मिलता है, सतयुग की बात है, 12 वर्षों में पूर्ण होने वाले एक महान यज्ञ का अनुष्ठान किया गया था। उस पर्व में बहुत सारे ऋषि मुनि स्नान करने पधारे। सरस्वती नदी का दक्षिणी तट खचाखच भर गए। महाभारत के इस जिक्र के मुताबिक कुंभ जैसे मेले की शुरुआत धरती के पहले युग सतयुग से ही होती है। और इसमें सरस्वती के जिस दक्षिणी तट का जिक्र है। आज का प्रयाग है- गंगा यमुना और सरस्वती का संगम। धरती के इस अनूठे संगम से कुंभ की शुरुआत मानी जाती है, लेकिन ये कुंभ का सिर्फ एक अमृत-धाम है। देश में तीन ऐसी जगहें और भी हैं, जो कुंभ के लिए पावन भूमि घोषित हैं। ये जगहें हैं- प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक। इन चार जगहों पर कुंभ किस साल कब लगेगा, इसकी गणना भी सदियों पुरानी है और यही आज के विज्ञान के लिए भी बड़ी पहेली है।

कुम्भ के समय कल्पवास का भी एक विधान है। मान्यताओं के अनुसार जो कल्पवासी लगातार बारह वर्ष तक अनवरत कल्पवास करते हैं, वह मोक्ष के भागी होते हैं। कर्मकाण्ड अथवा पूजा में हर कार्य संकल्प के साथ शुरू होता है और संकल्प में "श्रीश्वेतवाराहकल्पे" का सम्बोधन किया जाता है। इस कल्प का तात्पर्य यह है कि सृष्टि के सृजन से लेकर अब तक 11 कल्प व्यतीत हो चुके हैं और बारहवां कल्प चल रहा है। कल्पवास के वैज्ञानिक महत्व के अनुसार 'कल्प' का एक अर्थ तो सृष्टि के साथ जुड़ा है और दूसरे 'कल्प' का तात्पर्य कायाकल्प वस्तुतः - भारतीय संस्कृति इस धरती पर सबसे जटिल और रंगबिरंगी संस्कृति है। अगर आप गौर से देखें, तो पाएंगे कि हर पचास से सौ किलोमीटर पर लोगों के जीने का तरीका ही बदल जाता है। एक स्थान ऐसा है जहां इस जटिल संस्कृति को आप वाकई बहुत करीब से देख सकते हैं, वह है - महा कुंभ मेला।

विशेष

बारूदी धुएं में कराह रही मानवता के कल्याण के लिए सनातन का उदघोष

विश्व संत्रस्त है। अनेक देश युद्ध की विभीषिका में हैं। मानवता कराह रही है। स्त्रियों, वृद्धों, मासूम बच्चों की लाशें गिनती से बाहर हैं। पश्चिम में बारूद ही बारूद है। भारत के पास पड़ोस में भी बारूदी धुएं से वातावरण दूषित है। मनुष्य ही मनुष्य का दुश्मन बनकर रक्त पिपासु हो गया है। किसी देश का नाम लें यह जरूरी नहीं किंतु दृश्य भयावह हैं। कई वर्षों से असमान में तोप, रॉकेट और सुपरसोनिक युद्ध विमान कोहराम मचाए हुए हैं। ऐसे माहौल में भारत की सनातन संस्कृति अपने सृष्टि पर्व के माध्यम से विश्व के कल्याण का उदघोष कर रही है। गंगा, यमुना और सरस्वती के पवित्र त्रिवेणी तट पर प्रयाग राज में करोड़ों लोग आस्था की डुबकी लगा चुके हैं। यह अद्भुत है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विश्वगुरु भारत का सपना साकार हो रहा है। प्रयाग की धरती से भारत विश्व को मानवता और लोक कल्याण का संदेश दे रहा है। भारत की संस्कृति, अध्यात्म और आस्था के आगे विश्व नतमस्तक है। धरती का हर कोना प्रयागराज से आकर्षित है। सभी यहां आना चाहते हैं। सभी पवित्र त्रिवेणी में डुबकी भी लगाना चाहते हैं। यह वास्तव में विश्व के अन्वेषकों और चिंतनशील शोधार्थियों के लिए कौतुक जैसा है। ऐसा क्यों है, यह विचारणीय है। अभी कुछ ही दिन हुए, 26 दिसंबर 2024 को द हिंदू ने हिंसाग्रस्त विश्व के हालातों पर एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी। इस रिपोर्ट में कहा गया कि वर्ष 2024 में कई ऐसे अंतरराष्ट्रीय संघर्ष हुए, जिन्होंने भू-राजनीतिक परिदृश्य और वैश्विक स्थिरता को चुनौती दी। यूक्रेन में चल रहे युद्ध से लेकर मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव तक , इस वर्ष गठबंधनों में बदलाव और विनाशकारी सैन्य अभियान देखने को मिले। इन संकटों का प्रभाव उनके तत्काल क्षेत्रों से कहीं आगे तक फैला, जिसने दुनिया भर में राजनयिक संबंधों और रणनीतिक प्राथमिकताओं को प्रभावित किया। रिपोर्ट में कहा गया किबीते वर्ष की शुरुआत रूस द्वारा यूक्रेन के विरुद्ध 2022 के युद्ध को जारी रखने के साथ हुई , जिसका उद्देश्य उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) को अपनी सीमाओं की ओर बढ़ने से रोकना था। तीन महीने पहले, अक्टूबर 2023 में, उग्रवादी समूह हमास ने गाजा में हमला किया, जिसमें 1,000 से अधिक लोग मारे गए और फिलिस्तीन के विरुद्ध इजरायल की ओर से बड़े पैमाने पर जवाबी कार्रवाई की गई । जैसे-जैसे युद्ध आगे बढ़ा, इजरायल की लड़ाई ईरानी प्रॉक्सी के खिलाफ अन्य क्षेत्रों में भी फैल गई, जिनमें हमास भी शामिल है। यमन में हूथी विद्रोहियों ने जहाजों और अन्य जहाजों को रोका और उन पर हमला किया जिन्हें उन्होंने इजरायल की सहायता करने वाला बताया। लेबनान में हिजबुल्लाह के आतंकवादियों ने सीमा पर इजरायल के साथ गोलीबारी की।सितंबर में, इज़राइल ने हिज़्बुल्लाह के पेजिंग उपकरणों को निशाना बनाया, जिससे दर्जनों लोग मारे गए और सैकड़ों लोग घायल हो गए। नवंबर में

एक युद्धविराम समझौते ने क्षेत्रीय तनाव को कम कर दिया। हालाँकि, सीरियाई विद्रोहियों ने ईरान समर्थित असद सरकार के खिलाफ़ तेज़ हमले शुरू कर दिए और उनकी सरकार को गिरा दिया, जिससे हिंसा का एक नया दौर शुरू हो गया।अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावों में डोनाल्ड ट्रंप की जीत के साथ ही यूक्रेन को अमेरिका से मिलने वाले समर्थन में बदलाव आने की संभावना बनी। इस बीच, क्षेत्र में ईरानी प्रॉक्सी कमजोर हो गए हैं, जिससे इजरायल को अपनी क्षेत्रीय स्थिति को और मजबूत करने का मौका मिल गया है।सशस्त्र संघर्ष स्थान और घटना डेटा (ACLED) डेटाबेस हर संघर्ष घटना और उससे जुड़ी मौतों को रिकॉर्ड करता है। इस डेटा के आधार पर, संघर्ष सूचकांक तैयार किया जाता है। सूचकांक प्रत्येक देश को चार मापदंडों के आधार पर रैंक करता है - घातकता, खतरा, प्रसार और विखंडन। इन मापदंडों के आधार पर प्रत्येक देश को संघर्ष श्रेणी और रैंकिंग दी जाती है। 12 दिसंबर 2024 से पहले के 12 महीनों के लिए 10 देशों को चरम संघर्ष वाले देशों की श्रेणी में रखा गया है। ये हैं - फिलिस्तीन, म्यांमार, सीरिया, मैक्सिको, नाइजीरिया, ब्राज़ील, लेबनान, सूडान, कैमरून और कोलंबिया। जैसे-जैसे 2024 खत्म होने को आ रहा था , नए और चल रहे युद्धों के कारण संघर्ष क्षेत्रों में मौतों में वृद्धि हो रही थी जो 2025 के आरम्भ में अभी बढ़ ही रही है। 2024 में साल एक जनवरी से 13 दिसंबर तक, युद्धों, विस्फोटों, दूरस्थ हिंसा और नागरिकों के खिलाफ हिंसा में 200,000 से अधिक लोग मारे गए। इस मृत्यु दर का लगभग आधा हिस्सा मुख्य रूप से तीन देशों से आता है: यूक्रेन, फिलिस्तीन और म्यांमार। हालांकि वास्तविक मौतों का आंकड़ा इससे कहीं ज्यादा है।पिछले वर्षों में, अफ़गानिस्तान में संघर्ष से संबंधित मौतों का एक बड़ा हिस्सा रहा है, खासकर तालिबान द्वारा सरकार पर कब्ज़ा करने से पहले । हालाँकि, पिछले वर्षों में, यूक्रेन और फिलिस्तीन में होने वाली मौतों ने मरने वालों की संख्या में एक बड़ा हिस्सा बना लिया है। इस बीच, म्यांमार में सरकार को उखाड़ फेंकने वाले एक सैन्य तख्तापलट के बाद, देश ने भी हाल के वर्षों में बढ़ती मृत्यु दर में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह कितना अमानवीय है कि विश्व केवल मौतों के सामान जुटाने और आंकड़े इकट्ठा करने में ही लगा है। 2024 में, इस तरह की हिंसा के कारण हर महीने औसतन लगभग 5,500 मौतें हुईं, जो 2023 में लगभग 5,300 प्रति माह और 2020 में लगभग 3,100 प्रति माह थी। जैसे-जैसे साल 2024 खत्म हो रहा था , ये संकट अंतरराष्ट्रीय कूटनीति, संघर्ष समाधान और मानवीय हस्तक्षेप की तत्काल आवश्यकता की कड़ी याद दिलाते रहे। इस रिपोर्ट में सबकुछ सत्य नहीं है किंतु सत्य के काफी निकट अवश्य है। वैश्विक परिदृश्य में सनातन भारत की यह खगोलीय महाविज्ञानिक घटना अपने 46 दिनों की इस अवधि में बहुत कुछ स्थापित करने वाली है। यह सनातन भारत की आत्मिक शक्ति है जिसके आगे दुनिया नतमस्तक है। यही है कुंभ और यही है भारत की वह भारतीय सनातनी परंपरा जो भारत को विश्वगुरु बना देती है।

- संपादक

द्वादश कुंभ अर्थात महाकुंभ

आपातकाल से मुक्ति के बाद लगा था प्रयागराज महाकुंभ 1977

प्रो. मुन्ना तिवारी
अधिष्ठाता, कला संकाय,
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

1954 में आयोजित कुम्भ का दृश्य

बारह कुम्भ के बाद प्रयाग महाकुम्भ 1977 कई अर्थो में सनातन संस्कृति के लिए मली का पत्थर साबित हुआ। यह महाकुम्भ था जो 144 वर्षों के बाद प्रयागराज में सम्पन्न हुआ था। इस कुम्भ को देखने और इसमें शामिल होने वाले बहुत से लोग हैं जो प्रयागराज कुम्भ २०२५ में भी पुण्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं। 1977 का महाकुम्भ जब लगा था उससे ठीक पहले भारत इमरजेन्सी के दौर से गुजर चुका था। इसलिए देश एक अलग प्रकार की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संरचना से गुजर रहा था। यह वास्तव में नए भारत के निर्माण और लोक शक्ति के प्रभाव का आभास कराने वाला समय था।

को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ। कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा। सुख सागर रघुबर सुखु पावा॥

गोस्वामी के कहने का तात्पर्य यह है कि पापों के समूह रूपी हाथी के मारने के लिए सिंह रूप प्रयागराज का प्रभाव (महत्व-माहात्म्य) कौन कह सकता है। ऐसे सुहावने तीर्थराज का दर्शन कर सुख के समुद्र रघुकुल श्रेष्ठ श्री रामजी ने भी सुख पाया। अब यह संयोग ही कहा जा सकता है कि जब देश इमरजेंसी से मुक्त हुआ उसी समय द्वादश कुंभ अर्थात 144 वर्ष बीत चुके थे। प्रयागराज में 12 कुंभ के बाद महाकुंभ 1977 का आयोजन उत्तर प्रदेश के प्रयागराज (तत्कालीन इलाहाबाद) में 5 जनवरी से शुरू हुआ था। यह महाकुंभ 12 वर्षीय 12 कुंभ के चक्र के बाद आयोजित हुआ था। कुंभ मेला 1977 का आयोजन उस समय की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण था। साल 1977 में महाकुंभ मेला 22 जनवरी को इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में मौनी अमावस्या के दिन आयोजित किया गया था। इस मेले के पहले दिन लाखों हिंदू श्रद्धालु शाही स्नान के लिए आए थे। यह मेला 55 दिनों तक चला था।

खगोलीय संयोग –

ज्योतिष के अनुसार, जब बृहस्पति कुम्भ राशि में, और सूर्य तथा चंद्रमा मकर राशि में होते हैं, तब प्रयागराज में कुंभ मेले का आयोजन होता है। इस खगोलीय संयोग के कारण 1977 का कुंभ धार्मिक रूप से विशेष माना गया। ऐसा कहा जाता है कि 144 वर्षों के बाद ऐसा मौका आया जब ग्रह नक्षत्र महाकुंभ के अनुकूल थे। करोड़ों लोग

इस महाकुंभ में शामिल हुए थे। धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व इस कुंभ मेले में अखाड़ों, संतों, महंतों और नागा साधुओं का विशाल जमावड़ा हुआ। साधु-संतों ने शाही स्नान किया, जो मेले का मुख्य आकर्षण था। धार्मिक प्रवचन, यज्ञ, हवन, और अन्य अनुष्ठानों का आयोजन हुआ। लाखों श्रद्धालुओं ने त्रिवेणी संगम में स्नान कर मोक्ष प्राप्ति की कामना की।

राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि-

1977 का कुंभ मेला भारत में आपातकाल (1975-77) के तुरंत बाद हुआ था। आपातकाल की समाप्ति के बाद देश में एक नई राजनीतिक हवा बह रही थी। कुंभ मेले के दौरान आध्यात्मिक और धार्मिक स्वतंत्रता का व्यापक प्रदर्शन देखा गया। यह मेला जनता के भीतर नई उम्मीद और विश्वास का प्रतीक भी बना। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के आगमन को देखते हुए प्रशासन ने सुरक्षा और स्वच्छता की विशेष व्यवस्था की।

आपातकाल के बाद यह मेला सांस्कृतिक और सामाजिक एकता का प्रतीक बन गया। साधु-संतों और श्रद्धालुओं की अपार भीड़ ने इस मेले को ऐतिहासिक बना दिया। प्रयागराज कुंभ मेला 1977 न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक संगम था, बल्कि यह भारतीय समाज में राजनीतिक और सांस्कृतिक जागरूकता का प्रतीक भी था।

यातायात, स्वास्थ्य सेवाएँ, और आपातकालीन सेवाओं का प्रबंध किया गया। पुलिस और अर्धसैनिक बलों की भारी तैनाती की गई। यह मेला राजनीतिक स्वतंत्रता और धार्मिक आस्था के पुनर्जागरण का प्रतीक था। आपातकाल के बाद यह मेला सांस्कृतिक और सामाजिक एकता का प्रतीक बन गया। साधु-संतों और श्रद्धालुओं की अपार भीड़ ने इस मेले को ऐतिहासिक बना दिया। प्रयागराज कुंभ मेला 1977 न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक संगम था, बल्कि यह भारतीय समाज में राजनीतिक और सांस्कृतिक जागरूकता का प्रतीक भी था। इस मेले ने भारतीय संस्कृति, परंपरा, और धार्मिक सहिष्णुता को वैश्विक मंच पर मजबूत तरीके से प्रस्तुत किया। यह कुंभ मेला धार्मिक और सामाजिक समरसता का एक अद्भुत उदाहरण बना। "1977 का कुंभ मेला न केवल आध्यात्मिक आस्था का संगम था, बल्कि यह स्वतंत्रता, आशा और एक नई शुरुआत का प्रतीक भी था।" वैश्विक पहचान 1977 का कुंभ मेला अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों और मीडिया के लिए आकर्षण का केंद्र बना। विदेशी पर्यटकों, शोधकर्ताओं और पत्रकारों ने इस आयोजन को करीब से देखा और इसे वैश्विक मंच पर पेश किया। इसे 'विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन' कहा गया। कुंभ मेले में धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। संत-

महात्माओं के प्रवचन, भजन-कीर्तन, और सांस्कृतिक नृत्य-नाटकों का आयोजन किया गया। मेला क्षेत्र में अस्थायी पुस्तक मेले, प्रदर्शनी और धार्मिक साहित्य का वितरण हुआ। आर्थिक प्रभाव और चुनौतियां प्रयागराज और आसपास के क्षेत्रों में व्यापार और पर्यटन को बड़ा बढ़ावा मिला। दुकानदारों, होटल व्यवसायियों, परिवहन सेवाओं, और धार्मिक वस्त्रों की बिक्री में भारी वृद्धि हुई। इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के आने से भीड़ प्रबंधन प्रशासन के लिए एक चुनौती बना। स्वच्छता, स्वास्थ्य सेवाएँ और यातायात नियंत्रण में कुछ समस्याएँ सामने आईं। हालांकि, प्रशासन ने इन चुनौतियों का प्रबंधन अपेक्षाकृत सफलतापूर्वक किया।

श्री चक्र यज्ञ

श्री काशी विद्वत्परिषद और गंगा महासभा का विशिष्ट अनुष्ठान

संजय मानव

भारत वर्ष सृष्टि के इस प्रिशनि ब्रह्मांड में पृथ्वी पर अवस्थित विशिष्ट भू भाग है जहां विष्णुप्रिया भूदेवी जी सदैव विराजमान हैं। समस्त सृष्टि की धात्री मां भूदेवी की कृपा से ही सनातन भारत का निर्माण विश्व के रक्षार्थ सदैव होता रहता है। यही श्री हैं जिनकी कृपा के लिए भारत की संत और विद्वत परंपरा निरंतर राष्ट्र की उन्नति और जीव कल्याण के लिए क्रियारत है। श्री काशी विद्वत परिषद भारत के विद्वत परंपरा की प्राण शक्ति है जो राष्ट्र चिंतन के साथ ही आवश्यक यज्ञ और अनुष्ठान भी करती है। महामना पंडित मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित गंगा महासभा इसके साथ मिल कर अनेक उपक्रम कर रही है जिससे प्रयागराज कुंभ पर म्लेच्छ उपद्रवियों की दृष्टि कार्य न करे और भारत की सनातन शक्ति और आगे बढ़े। इसी उद्देश्य से श्री काशी विद्वत परिषद और गंगा महासभा के विद्वान संगठन मंत्री आचार्य गोविंद शर्मा जी के यजमानत्व में गंगा महा सभा के कुंभ शिविर में श्री चक्र यज्ञ का अनुष्ठान निरंतर चल रहा है। कुंभ की सफलता, कुशलता और भारत की उन्नति के लिए यह अनुष्ठान अद्भुत है। श्री यंत्र की साधना और उसके अनुष्ठान के बारे में बहुत कुछ लोग जानते हैं किंतु श्री चक्र यज्ञ से बहुत कम लोग परिचित हैं। यह कठिन साधना और मंत्रों का अनुष्ठान है। गंगा महासभा के शिविर में इस अनुष्ठान को कर्नाटक के प्रख्यात साधक आचार्य स्वामी विद्यानंद जी सरस्वती स्वयं संपन्न करा रहे हैं। श्री काशी विद्वत परिषद और गंगा महासभा के संगठन मंत्री और प्रख्यात विद्वान आचार्य गोविंद शर्मा इस कठिन साधना यज्ञ के यज्ञमान हैं। यह संयोग अद्भुत और अविस्मरणीय है। श्री चक्र यज्ञ के महात्म्य के बारे में विद्वान और साधक संत कहते हैं हम भगवान शिव को तभी देख सकते हैं जब वे चाहें और हमें सक्षम बनाएं। उनकी दया को वे आंखें कहा जा सकता है जो हमें उन्हें देखने में सक्षम बनाती हैं। जिन पर उनकी दयालु दृष्टि नहीं होती वे खुद को

अदियारगल (उत्साही भक्त) नहीं कह सकते। मंदिरों में प्रतिमाएँ हमें दी गई थीं, ताकि हम उनके स्वरूप को अपने मन में स्थिर कर सकें और बाद में उनका ध्यान कर सकें। हम पहले उन्हें अपनी आँखों से देखते हैं, और फिर अपने मन से। उनकी कल्पना करने में सक्षम होना ज्ञानी बनने की दिशा में पहला कदम है। अम्बल की पूजा श्री चक्र के रूप में की जाती है। अम्बिका उपासना में इस तरह की यंत्र पूजा महत्वपूर्ण है । अबिरामी भट्टर ने अपने अबिरामी अण्डादि में नौ कोणों की पूजा के बारे में बताया है। यह श्री चक्र के नौ त्रिकोणों का संदर्भ है। इनमें से पाँच शिव चक्र हैं और चार शक्ति चक्र हैं। बीच में स्थित बिंदु अम्बल है। पाँच त्रिकोण नीचे की ओर और चार ऊपर की ओर हैं। यहाँ शिव शक्ति मिलन का प्रतीक है। हमें अपने विचारों को उनकी ओर रखना चाहिए। तभी वे हमें आशीर्वाद देने के लिए अवतरित होंगी। माया, शुद्ध विद्या, महेश्वर और सदाशिव शिव के पहलुओं का निर्माण करते हैं।

पंचभूत (पांच तत्व) मिलकर शक्ति का निर्माण करते हैं। त्वचा, रक्त, मांसपेशी, वसा और हड्डियां शक्ति से निकलती हैं। वीर्य, अस्थि मज्जा, प्राण (महत्वपूर्ण ऊर्जा) और जीव (आत्मा) शिव से विकसित होते हैं। मानव शरीर को ही श्री चक्र के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें भक्त के हृदय में अम्बाल निवास करता है। श्री चक्र की पूजा अण्ड (ब्रह्मांड) पिंड (शरीर) पूजा है। अम्बाल बंडासुर का वध करने के लिए नौ स्तरों वाले रथ पर सवार होकर गया था। ललिता सहस्त्रनाम में अम्बाल का एक नाम है चक्रराज रथरूढ़ा सर्वायुध परिशक्त , जिसका अर्थ है कि अपने सभी हथियारों के साथ, वह चक्रराज नामक रथ पर सवार हुई। तिरुवरूर मंदिर में शिव मंदिर के रथ को अझि थेर कहा जाता है । अझि का मतलब चक्र है। शिव शक्ति की पूजा में चक्र महत्वपूर्ण है। यह राष्ट्र के गौरव के लिए अद्भुत यज्ञ पूरे कुंभ क्षेत्र के साधकों के लिए विशिष्ट बन गया है। लाखों श्रद्धालु और साधकों ने अभी तक इसमें प्रतिभाग किया है।

सात्विक राजनीति के उन्नायक

विश्व संत्रस्त है। अनेक देश युद्ध की विभीषिका में हैं। मानवता कराह रही है। स्त्रियों, वृद्धों, मासूम बच्चों की लाशें गिनती से बाहर हैं। पश्चिम में बारूद ही बारूद है। भारत के पास पड़ोस में भी बारूदी धुएं से वातावरण दूषित है। मनुष्य ही मनुष्य का दुश्मन बनकर रक्त पिपासु हो गया है। किसी देश का नाम लें यह जरूरी नहीं किंतु दृश्य भयावह हैं। कई वर्षों से असमान में तोप, रॉकेट और सुपरसोनिक युद्ध विमान कोहराम मचाए हुए हैं। ऐसे माहौल में भारत की सनातन संस्कृति अपने सृष्टि पर्व के माध्यम से विश्व के कल्याण का उदघोष कर रही है।

सनातन संत परंपरा और सात्विक राजनीति के उन्नायक योगी आदित्यनाथ के संयोजन में प्रयागराज के त्रिवेणी तट से जो संदेश विश्व को प्रसारित हो रहा है वह नए भारत के प्राचीन गौरव के साथ बहुत कुछ कह रहा है। योगी आदित्यनाथ ने इस महा आयोजन को उतना ही गौरवशाली बना दिया है। योगी के अथक परिश्रम से यह कुंभ विश्व को भारत के सात्विक सनातन और समन्वय की राजनीति का भी संदेश दे रहा है। यह भारत के अध्यात्म की ध्वज तरंग को डिग दिगंत तक प्रसारित करने वाला है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि सभी अखाड़ों, संप्रदायों, जगद्गुरुओं और शंकराचार्यों के साथ ही समस्त नागा एवं संत समाज इस समय योगी आदित्यनाथ के इस परिश्रम और उनके दिव्य संयोजन की भूरि भूरि प्रशंसा कर रहा है। ऐसा पहली बार हो रहा है कि समस्त विद्वत और संत समाज एक स्वर से अपने शासक की तारीफ कर रहा हो।

भारत की प्राण मां गंगा, यमुना और सरस्वती के पवित्र त्रिवेणी तट पर प्रयाग राज में करोड़ों लोग आस्था की डुबकी लगा चुके हैं। यह अद्भुत है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विश्वगुरु भारत का सपना साकार हो रहा है। प्रयाग की धरती से भारत विश्व को मानवता और लोक कल्याण का संदेश दे रहा है। भारत की संस्कृति, अध्यात्म और आस्था के आगे विश्व नतमस्तक है। धरती का हर कोना प्रयागराज से आकर्षित है। सभी यहां आना चाहते हैं। सभी पवित्र त्रिवेणी में डुबकी भी लगाना चाहते हैं। यह वास्तव में विश्व के अन्वेषकों और चिंतनशील शोधार्थियों के लिए कौतुक जैसा है।

- संस्कृति पर्व

महाकुंभ 2025 : अल्प में कल्प

अनूप ओझा

तीर्थराज प्रयाग महाकुंभ वह सनातनी मूल्यों नैसर्गिक धरोहर है जिसे अल्पकाल में कल्पों के संस्कार को सजीव किया जाता है। यह सब सनातन के ध्यान और समाधि का अप्रतिम उदाहरण है। तकनीक और प्रबंधन के इस आधुनिक काल में भी काश की कुटिया में सिद्ध संतों के मंगलाचरण गूंजते है। कल्पों से चले आ रहे परमार्थ और दान के महात्म के सूक्ष्म विज्ञान को समझने के लिए महाकुंभ का दर्शन सनातन के मूल को समझाता है।

तीर्थराज प्रयाग महाकुंभ अल्प में कल्प को घटित करता है। त्रिवेणी तट पर लगने वाला महाकुंभ मनु और उनके मन्वंतर की कथाओं, महर्षियों के अमृत आर्शिवाद और ध्यान- धूनी की भूमि है। अल्प काल में अनेक कल्पों के संस्कार को गंग तरंग से सिंचित-जागृत करने का अनुष्ठान महाकुंभ है।सप्त ऋषियों कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र, और भारद्वाज ने गंगा नदी के किनारे तपस्या की थी। ये सप्त ऋषि अनेक कल्पों से तीर्थराज प्रयाग महाकुंभ में उपस्थित हो कर ग्रह-नक्षत्रों के अद्भुत संयोग पर तप करते है। ऋषिकुल का महाकुंभ में उपस्थिति रहना शास्वत परम्परा का प्रवाह है। महाकुंभ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के साधकों के सनातनी संकल्प का सजीव उदाहरण है। भाव, भगवा, भागवत के दृश्य विकल्पों को समेटे हुए है। यह एक प्रमुख कारण है कि कुंभ मेले के दौरान, ग्रह-नक्षत्रों की विशेष स्थिति के कारण त्रिवेणी संगम का जल अत्यंत पवित्र माना जाता है। कीर्तन, सतसंग, सुर-साज और परमानंद की साक्षात अनुभूति का अनुभव कराने वाली संगट तट की पवित्र भूमि प्रथम पुरुष और युगों को उनके वंशजों का प्रणाम प्रेषित करती है। त्रिवेणी तट पर जटाजूट धारियों और गृहस्थों का जुटाव कई कल्पों के स्वर्ण युग की स्मृतियों को ताजा करता है। संगम रेती में जीवन के सूक्ष्म और जटिल प्रश्नों के उत्तर छिपे है। प्रकृति और प्राणियों के कल्याण के सनातन चिंतन का सुअवसर कई कल्पों से तीर्थराज प्रयाग महाकुंभ निर्मित करता है। संगम तट पर बैठ कर युगों युगों से चली आ रही ध्यान, जप, यज्ञ की परंपराओं को आगे बढ़ाने के लिए वर्तमान काल में भी साधू, साधक,साध्वी और सज्जन विमर्श करते है। वैश्विक मानव कल्याण की परम भावना के ध्वजवाहक ऋषि परंपरा के सनातनी दूत कुंभ मेंले में पधार कर अहिंसा और जीवों पर दया के संदेश को स्वर्णिम करते है। कल्पों से ब्रह्म और जीव के एकाकार होने के सूत्रों पर मेले में संत उपदेश देते है और गृहस्थ उसे कंठस्थ करते है। यह अलौकिक और अद्भुत परंपरा अनवरत कई कल्पों से वर्तमान तक अबाध चलती आ रही है। तीर्थराज प्रयाग महाकुंभ वह सनातनी मूल्यों नैसर्गिक धरोहर है जिसे अल्पकाल में कल्पों के संस्कार को सजीव किया जाता है। यह सब सनातन के ध्यान और समाधि का अप्रतिम उदाहरण है। तकनीक और प्रबंधन के इस आधुनिक काल में भी काश की कुटिया में सिद्ध संतों के मंगलाचरण गूंजते है। कल्पों से चले आ रहे परमार्थ और दान के महात्म के सूक्ष्म विज्ञान को समझने के लिए महाकुंभ का दर्शन सनातन के मूल को समझाता है। यह सब स्प्निल जैसा होने के साथ साक्षात भी है। महाकुंभ का आयोजन त्याग तपस्या की अवधारणा को पुष्ट करता है। स्व से पर की यात्रा को आगे बढ़ाता है। जीव से जगत की धारणा को विकसित करता है। इस चमत्कार को हमारे ऋषियों ने सिद्ध करके हमें सौंपा है। यदि अल्प काल में सनातन के कई कल्पों का दर्शन करने अभिलाषा हो तो 2025 पौष पूर्णिमा से 26 फरवरी महाशिवरात्रि तक तीर्थराज प्रयाग महाकुंभ में गंगाजल से अर्घ्य और आचमन करें। त्रिवेणी महाकुंभ कल्प कल्पांतरों का अल्पकालीन दृश्य है।

फिल्म समीक्षा

भगवा आतंकवाद का षडयंत्र

(लेखिका प्रख्यात फिल्म समीक्षक, डाक्यूमेंट्री फ़िल्म मेकर, पटकथा लेखक, केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड की सदस्य और संस्कृति पर्व की संपादक फिल्म, कला और संचार के रूप में स्थापित हैं।)

ज्योत्सना गर्ग

भारत की कुछ पोलिटिकल पार्टी के हिन्दू विरोधी एजेंडा की पोल अब खुलने लगी है , सनातन या कहें कि भारत विरोधी नैरेटिव प्रसारित करने का इनका तंत्र अब बेनकाब हो रहा है। दक्षिण भारत के फिल्मकारों की बेहतरीन फिल्मों की भारतीय समाज ने बहुत प्रशंसा की । अभी हाल में आई पुष्पा 2 इसका सबसे बड़ा प्रमाण है। अब एक शानदार फिल्म आई है मैच फिक्सिंग। यह सभी भारतीयों को अवश्य देखनी चाहिए। साबरमती रिपोर्ट्स के बाद मैच फिक्सिंग ने गजब का कथ्य और दृश्य प्रस्तुत किया है। सनातन संस्कृति भारतीयता के विरुद्ध रची जाने वाली साजिशों यह फिल्म बहुत सलीके से बेनकाब करती है।

जब से सुना था मैच फिक्सिंग के बारे में, तभी से इच्छा थी यह फिल्म देखने की। इसके प्रीमियर का आमंत्रण भी था, दिल्ली और मुंबई में , लेकिन नैनीताल में फिल्म फेस्टिवल में व्यस्तता के कारण प्रीमियर में शामिल नहीं हो पाई। गुरुवार यानि 16 जनवरी को भी एक कार्यक्रम की रूपरेखा में व्यस्तता से समय निकालकर यह फिल्म देखी, और खुशी है की फिल्म देखी। "भगवा आतंकवाद" सिर्फ एक शब्द नहीं एक षडयंत्र था, एक षडयंत्र विश्व के हिंदुओं को आतंकवाद से जोड़ कर बदनाम करने का , यह षडयंत्र कैसे और क्यों रचा गया, कैसे एक सुशोभित आर्मी ऑफिसर की जिंदगी उस समय की सत्तारूढ़ पार्टी यानि कांग्रेस ने अपने नारेटिव के लिए बर्बाद कर दी, कैसे साध्वी प्रज्ञा की दो साल पहले चोरी हुई बाइक को प्लांट कर के एटीएस द्वारा उन्हें बर्बरता से टॉर्चर किया गया, उनके समेत और लोगों को, सिर्फ उनके हिंदू होने के लिये अमानवीय यंत्रणा दी गई, सत्तारुढ़ पार्टी ने पाकिस्तान के साथ मिलकर, वैश्विक पटल पर हिंदू आतंकवादी होते है यह नैरेटिव चलाने की पुरजोर कोशिश की। यह फिल्म रिटायर कर्नल कंवर खटाना की पुस्तक, द गेम बिहाइंड सैफरन टेरर से प्रेरित है। इस फिल्म का निर्देशन बहुत सधा हुआ है, फिल्म कही भी अपने मुद्दे से नहीं भटकती, बहुत ही कसी हुई फ़िल्म है, पटकथा, संवाद बहुत प्रभावशाली है,छायांकन भी कमाल का है, सभी कलाकारों ने बेहतरीन अभिनय किया है, फ़िल्म आपकों बांधे रखती हैं, और जब आप फ़िल्म देख निकलते है, तो दिल पर बोझ और आंखे नम होती हैं, दिल में बहुत सी भावनाए तूफ़ान उठाती है, श्रद्धा उस आर्मी ऑफिसर के लिए जो देश के लिए जान न्यौछावर करने को तैयार है, नफरत और गुस्सा पोलिटिकल पार्टी के लिए जो अपने वोट बैंक के लिए किसी भी हद तक जा सकते है, और घृणा इस सिस्टम के लिए जो पार्टी के आगे मजबूर है और सही गलत का निर्णय ना ले कर अपने घुटने टेक देता है। 26/11 के आतंकवादी हमलों में तुकाराम ओंबले अगर कसाब को जिंदा नहीं पकडते तो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अपने भगवा आतंकवाद के एजेंडे में सफल हो जाती। बहुत बहुत बधाई इस फ़िल्म के निर्देशक केदार गायकवाड़ को जिन्होंने इस फ़िल्म का छायांकन (Cinematography भी किया है और लंदन और कश्मीर की खूबसूरत वादियों को इतने सेंसिटिव सब्जेक्ट के साथ पिरोया है, विनीत कुमार सिंह का अभिनय लाजवाब है, आर्मी ऑफिसर के किरदार को उन्होंने जिस तरह निभाया है,उनका अभिनय जब उन्हें टॉर्चर किया जाता है आपको रुला देता है। हर भारतीय को यह फिल्म जरूर देखनी चाहिये, ताकि वह पोलिटिकल पार्टी द्वारा किए जा रहे साजिशों और षड्यंत्रों से वाकिफ हो सके।

फिल्म देख कर निकलने वाले सभी दर्शकों की आंखें नम थी यह अपने आप में एक अवार्ड हैं इस फ़िल्म की टीम के लिए।

सनातन आस्था संस्कृति और अध्यात्म के संरक्षण को समर्पित

अदाणी समूह

> महाकुंभ सेवा और परमार्थ की तपोभूमि है। सेवा ही राष्ट्रभक्ति और ईश्वर की पूजा का सर्वोच्च स्वरूप है। कुम्भ का यह अद्वितीय पर्व धार्मिक उन्नति, सामाजिक एकता एवं भारत की सांस्कृतिक समृद्धि का अनुपम प्रतीक है। यह महान धार्मिक अनुष्ठान हम सभी के लिए आंतरिक शुद्धि और आत्म-साक्षात्कार का एक सुगम अवसर भी है।

विश्व में नए भारत की आर्थिक शक्ति का प्रतिनिधि बन चुके अदाणी समूह के सेवा प्रकल्पों ने सनातन आस्था, संस्कृति और अध्यात्म को सुरक्षित और संरक्षित करने का संकल्प लिया है। इस दिशा में समूह ने अनेक आयामों पर कार्य करना शुरू कर दिया है। आर्थिक समृद्धि के साथ ही भारत को विश्व पटल पर इसकी सनातन ज्ञान परंपरा और शक्ति से परिचित कराने के लिए इस समूह ने व्यापक कार्ययोजना बनाई है। इनमें से एक योजना अब प्रयागराज कुंभ के माध्यम से अपना आकार ले चुकी है। संस्कृति, अध्यात्म और सेवा का यह कार्य प्रयागराज में शुरू हो चुका है।

जिमि सरिता सागर मंह जाहीं
जद्यपि ताहि कामना नाहीं।।

यह सृष्टि के स्वतः प्रवाह जैसा ही है। अद्भुत संयोग है। पवित्र प्रयाग कुंभ ही निमित्त बन रहा। सनातन संस्कृति, अध्यात्म और सेवा की भावना से ओत प्रोत गौतम अदाणी जी के औद्योगिक समूह ने इस वैश्विक आयोजन में अपनी बड़ी सहभागिता कर इसे और भी अद्भुत बनाने का प्रयास किया है। भारत को आर्थिक वैश्विक शक्ति बनाने के साथ ही अदाणी समूह ने प्रयागराज कुंभ में कई आयामों में अपनी बड़ी भागीदारी करने का संकल्प लेकर लोक सेवा और संस्कृति के संरक्षण का कार्य शुरू किया है। कुंभ में सनातन आस्था के साथ आने वाले एक करोड़ हाथों में गीताप्रेस से प्रकाशित आरती संग्रह समर्पित करना और इस्कॉन के माध्यम से प्रतिदिन एक लाख से अधिक श्रद्धालुओं को पवित्र महाप्रसाद उपलब्ध कराना अदाणी समूह के संस्कृति और अध्यात्म के प्रति समर्पण को स्थापित करता है। इस सांस्कृतिक, आध्यात्मिक अभियान के पीछे श्री गौतम अदाणी जी का वह समर्पण और चिंतन है जिसमें वह बार बार कहते हैं कि सब ईश्वर का दिया हुआ है और ईश्वरीय कार्य में हर संभव सहयोग की भावना हमारे संस्कार में है। उनका यह भाव वास्तव में सनातन भारत के लिए गर्व करने योग्य है। सनातन आस्था को इतनी श्रद्धा से सम्मान देने वाले गौतम अदाणी जी का यह भाव निश्चय ही प्रयागराज के कुंभ में सेवा का एक नया आयाम गढ़ रहा है।

आरती संग्रह के लिए गीताप्रेस से साझेदारी

गीताप्रेस के 100 वर्षों के सनातन प्रवाह में देश के अग्रणी औद्योगिक समूह अदाणी परिवार भी शामिल हो गया है । अदाणी समूह के अध्यक्ष श्री गौतम अदाणी जी आरती संग्रह के माध्यम से गीताप्रेस से साझेदारी कर स्वयं सनातन संस्कृति और अध्यात्म सेवा का संकल्प लेकर इस सांस्कृतिक, आध्यात्मिक यात्रा में शामिल हो रहे हैं। इससे सनातन को निश्चय ही शक्ति मिलेगी और भारतीय आध्यात्मिक चिंतन से जन सामान्य को जोड़ा जा सकेगा।

सेवा ही है राष्ट्रभक्ति और ईश्वर की पूजा का सर्वोच्च स्वरूप : गौतम अदाणी

अदाणी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अदाणी ने इस पहल को लेकर अपनी खुशी व्यक्त की और सोशल मीडिया पर लिखा, महाकुंभ सेवा और परमार्थ की तपोभूमि है। हम इस्कॉन के साथ मिलकर मां अन्नपूर्णा के आशीर्वाद से लाखों श्रद्धालुओं को भोजन उपलब्ध कराएंगे। सेवा ही राष्ट्रभक्ति और ईश्वर की पूजा का सर्वोच्च स्वरूप है।

उन्होंने इस्कॉन के गुरु प्रसाद स्वामी जी से मुलाकात कर इस सेवा के प्रति अपने समर्पण को व्यक्त किया। उन्होंने कहा, मां अन्नपूर्णा के आशीर्वाद से लाखों श्रद्धालुओं को निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराया जाएगा। आज मुझे इस्कॉन के गुरु प्रसाद स्वामी जी से मिलने का अवसर मिला और मैंने सेवा के प्रति समर्पण की शक्ति को गहराई से अनुभव किया।

आत्मसाक्षात्कार और आंतरिक शुद्धि का अवसर है कुंभ

अदाणी समूह के अध्यक्ष श्री गौतम अदाणी जी का मत है कि कुम्भ का यह अद्वितीय पर्व धार्मिक उन्नति, सामाजिक एकता एवं भारत की सांस्कृतिक समृद्धि का अनुपम प्रतीक है। यह महान धार्मिक अनुष्ठान हम सभी के लिए आंतरिक शुद्धि और आत्म-साक्षात्कार का एक सुगम अवसर भी है। इसलिए अदाणी परिवार ने यह फैसला लिया है कि हम भक्त के मन मस्तिष्क को परमात्मा से जोड़ एकात्मता का भाव जागृत करने वाला यह ग्रंथ 'आरती संग्रह' निःशुल्क लाखों श्रद्धालुओं तक पहुंचाएं। हम स्वयं को अत्यंत भाग्यशाली महसूस कर रहे हैं कि महाकुंभ रूपी महानुष्ठान में हमारे इस गिलहरी योगदान में दुनिया की सबसे पवित्र एवं प्रतिष्ठित संस्था 'गीता प्रेस' ने हमारा सहयोग किया।

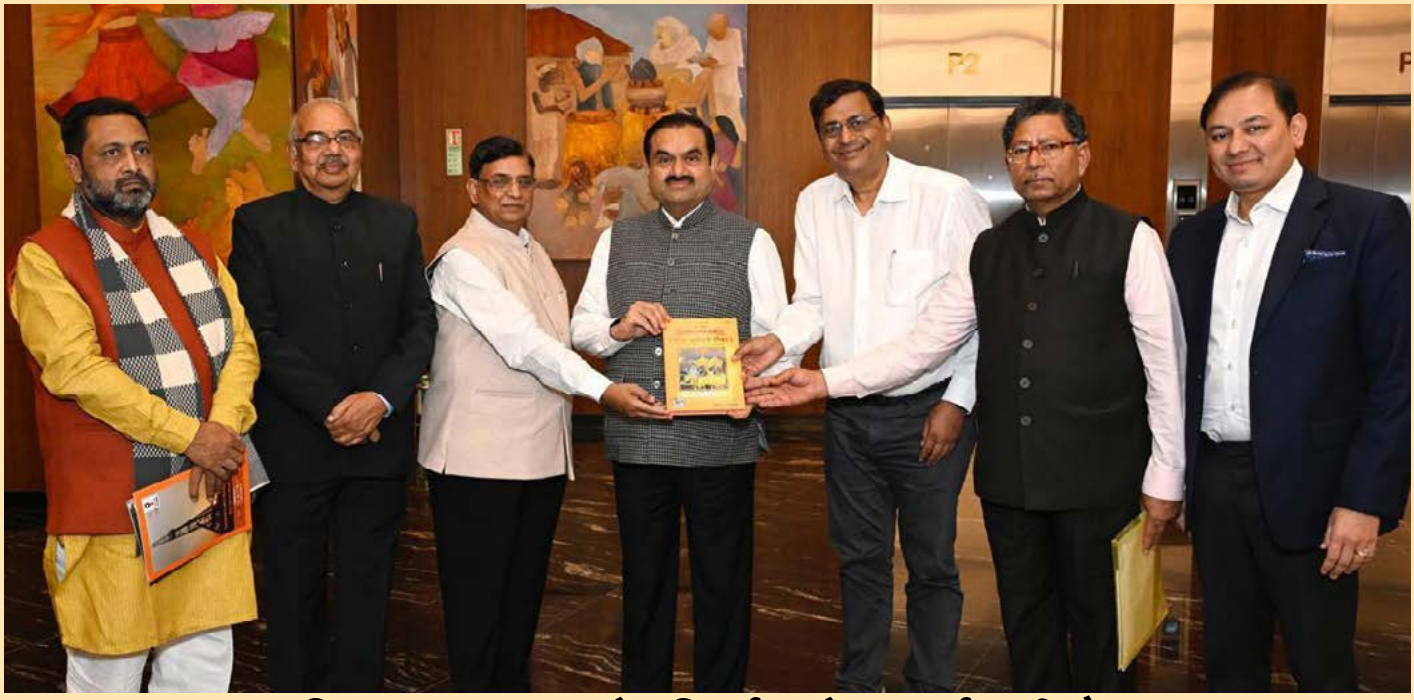

विश्वगुरु भारत के निर्माण में ऊर्जादायी है अदाणी जी का संकल्प : गीताप्रेस

गीताप्रेस को विश्वास है कि दीर्घकालिक सहयोग, समन्वय और आस्था के साथ सनातन धर्म के प्रचार, प्रसार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सपनों के विश्वगुरु भारत के निर्माण में यह संकल्प ऊर्जादायी बनेगा। अदाणी समूह के अध्यक्ष गौतम अदाणी की गीताप्रेस ट्रस्ट बोर्ड के साथ बैठक में सनातन धर्म, संस्कृति और अध्यात्म के प्रचार प्रसार पर व्यापक चर्चा की गई। अभी प्रयागराज कुंभ के माध्यम से अदाणी समूह ने एक करोड़ परिवारों तक गीता प्रेस से प्रकाशित आरती संग्रह पहुंचाने का संकल्प लिया है। गीताप्रेस से प्रकाशित होकर ये पुस्तकें शीघ्र कुंभ में पहुंच रही हैं। इस बैठक में गीताप्रेस की आगामी योजनाओं पर भी चर्चा की गई।

अहमदाबाद में अदाणी समूह के अध्यक्ष श्री गौतम अदाणी जी के साथ हुई इस बैठक में सहभाग करने वाले महानुभावों में श्री नील रतन चांदगोठिया जनरल सेक्रेटरी, गीताप्रेस ट्रस्ट बोर्ड , श्री देवीदयाल अग्रवाल, ट्रस्टी, गीताप्रेस, श्री रामनारायण चांडक ,सदस्य, गीतप्रेस ट्रस्ट बोर्ड, आचार्य (डॉ) लालमणि तिवारी जी प्रबंधक, गीताप्रेस और आचार्य संजय तिवारी अध्यक्ष, भारत संस्कृति न्यास एवं संपादक, संस्कृति पर्व विशेष रूप से अहमदाबाद में उपस्थित थे।

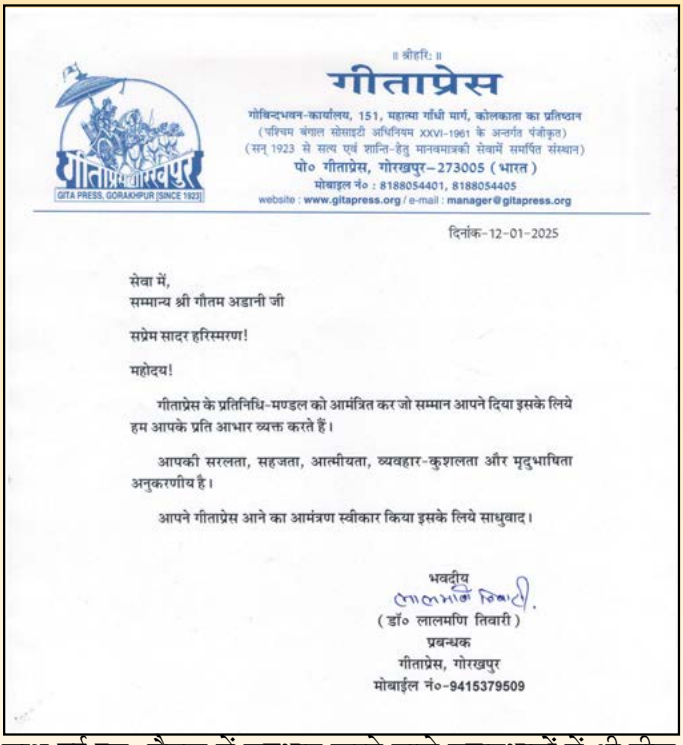

॥ श्रीहरिः ॥

गीताप्रेस

गोविन्दभवन-कार्यालय, 151, महात्मा गाँधी मार्ग, कोलकाता का प्रतिष्ठान
(पश्चिम बंगाल सोसाइटी अधिनियम XXVI-1961 के अन्तर्गत पंजीकृत)
(सन् 1923 से सत्य एवं शान्ति-हेतु मानवमात्रकी सेवामें समर्पित संस्थान)
पो० गीताप्रेस, गोरखपुर–273005 (भारत)
मोबाइल नं० : 8188054401, 8188054405
website : www.gitapress.org / e-mail : manager@gitapress.org

दिनांक-12-01-2025

सेवा में,
सम्मान्य श्री गौतम अडानी जी

सप्रेम सादर हरिस्मरण!

महोदय!

गीताप्रेस के प्रतिनिधि-मण्डल को आमंत्रित कर जो सम्मान आपने दिया इसके लिये हम आपके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

आपकी सरलता, सहजता, आत्मीयता, व्यवहार-कुशलता और मृदुभाषिता अनुकरणीय है।

आपने गीताप्रेस आने का आमंत्रण स्वीकार किया इसके लिये साधुवाद।

भवदीय
(डॉ० लालमणि तिवारी)
प्रबन्धक
गीताप्रेस, गोरखपुर
मोबाईल नं०-9415379509

Post

Gautam Adani
@gautam_adani

महाकुम्भ भारतीय संस्कृति और धार्मिक आस्था का महायज्ञ है!

यह हमारे लिए अपार संतुष्टि का विषय है कि इस महायज्ञ में प्रतिष्ठित संस्थान गीता प्रेस के सहयोग से हम 'आरती संग्रह' की एक करोड़ प्रतियां कुम्भ में आए श्रद्धालुओं की सेवा में निःशुल्क अर्पित कर रहे हैं।

आज सनातन साहित्य के माध्यम से 100 वर्षों से राष्ट्र की सेवा कर रहे @GitaPress के सम्मानित पदाधिकारियों से मिलकर प्रेरणा प्राप्त हुई और गीता प्रेस के उत्कृष्ट सेवा कार्यों के प्रति आभार व्यक्त करने का सौभाग्य मिला।

निःस्वार्थ सेवाभाव और धर्म एवं संस्कृति के प्रति उत्तरदायित्व की भावना राष्ट्रप्रेम का ही एक रूप है, जिसके लिए हम सभी प्रतिबद्ध हैं।

सेवा साधना है, सेवा प्रार्थना है और सेवा ही परमात्मा है। 🙏

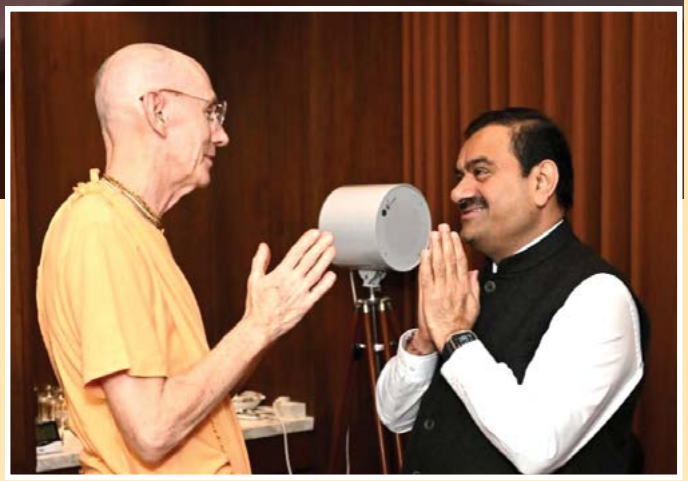

प्रयागराज कुंभ में इस्कॉन के साथ मिल कर महाप्रसाद सेवा

प्रयागराज में आयोजित हो रहे महाकुंभ के दौरान अदाणी ग्रुप और धार्मिक संस्थान इस्कॉन ने मिलकर 'महाप्रसाद सेवा' शुरू करने का फैसला किया है। यह सेवा 13 जनवरी से 26 फरवरी तक चलेगी जिसमें महाकुंभ में आने वाले 50 लाख से अधिक श्रद्धालुओं को निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। दिव्यांगों, बुजुर्गों और बच्चों वाली माताओं के लिए गोल्फ वाली गाड़ी की व्यवस्था भी की गई है। इस सेवा के तहत मेला क्षेत्र और उसके आसपास दो बड़े किचन बनाए गए हैं और भोजन वितरण के लिए 40 स्थान निर्धारित किए गए हैं। इस आयोजन में 2,500 वालंटियर अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय कृष्ण चेतना सोसायटी के प्रमुख प्रचारकों में से एक गुरु प्रसाद स्वामी ने कहा, अदाणी समूह हमेशा से कॉरपोरेट जिम्मेदारी और सामाजिक सेवा का एक शानदार उदाहरण रहा है। इस्कॉन ने इस महाप्रसाद सेवा के अलावा महाकुंभ के दौरान गीता सार की 5 लाख प्रतियां श्रद्धालुओं के बीच बांटने की योजना बनाई है। इसके साथ ही दिव्यांग, बुजुर्ग, और छोटे बच्चों के साथ आने वाली माताओं के लिए गोल्फ कार्ट जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएंगी। इस्कॉन के चेयरमैन गुरु प्रसाद स्वामी जी ने अदाणी ग्रुप की सामाजिक सेवा की सराहना करते हुए कहा कि गौतम अडानी का निस्वार्थ सेवा भाव हर किसी को मानवता की सेवा के लिए प्रेरित

करता है। महाकुंभ में देश-विदेश से करोड़ों श्रद्धालु आ रहे हैं, और अडानी ग्रुप तथा इस्कॉन की यह पहल इस बार के आयोजन को और भी खास बनाएगी। यह सेवा न केवल श्रद्धालुओं के लिए सुविधाजनक होगी बल्कि सेवा और समर्पण की एक मिसाल भी पेश करेगी।

परिवार सहित कुंभ पहुंच कर पूजा, दर्शन और सेवा

यह गौतम अदाणी जी के सनातन के प्रति आस्था और समर्पण का ही भाव है कि उन्होंने 21 जनवरी को अपने परिवार के साथ प्रयागराज पहुंच कर स्नान, पूजा और दर्शन किया तथा कुंभ में चल रहे सेवा प्रकल्पों की गतिविधि में भी सपरिवार शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने गीता प्रेस गोरखपुर के कैंप का भी दौरा किया और ISKCON मंदिर के कैंप में परिवार संग पूजा-अर्चना करने के बाद 'सेवा' भी की।

मां गंगा के आशीर्वाद से बड़ा कुछ नहीं'

अदाणी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अदाणी ने कहा, "प्रयागराज महाकुंभ में मुझे जो अनुभव हुआ, वो अद्भुत है...यहां जो प्रबंधन है, मैं देशवासियों की ओर से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को धन्यवाद देना चाहता हूं...यहां जो प्रबंधन है- वो प्रबंधन संस्थानों के लिए शोध का विषय है। मेरे लिए मां गंगा के आशीर्वाद से बड़ा कुछ नहीं है..."

"गीता प्रेस भारत की संस्कृति एवं आध्यात्मिकता की वह धरोहर है जिसने हमारी समृद्ध भक्ति परंपरा का निःस्वार्थ प्रचार कर सौ वर्षों से भी अधिक समय तक धार्मिक मूल्यों को प्रबलता दी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह 'आरती संग्रह' आपके आस्थावान हृदय को ईश्वर के निकट लाने और आस्था को प्रगाढ़ करने में सहायक सिद्ध होगी।"

- गौतम अदाणी

॥ श्रीहरिः ॥

हृदय से समर्पित

कुम्भ मेले में आए हुए कल्पवासियों, श्रद्धालुओं एवं अन्य सभी प्रबुद्ध चेतनाओं को मेरा प्रणाम।

कुम्भ का यह अद्वितीय पर्व सामाजिक एकता एवं भारत की सांस्कृतिक समृद्धि का अनुपम प्रतीक है। यह महान् धार्मिक अनुष्ठान हम सभी के लिए आंतरिक शुद्धि और आत्म-साक्षात्कार का एक सुगम अवसर भी है। इसलिए अदाणी-परिवार ने यह संकल्प लिया है कि हम भक्त को परमात्मा से जोड़ एकात्मता का भाव जागृत करने वाला यह ग्रंथ 'आरती-संग्रह' निःशुल्क लाखों श्रद्धालुओं की सेवा में अर्पित करेंगे।

हम स्वयं को अत्यंत सौभाग्यशाली महसूस कर रहे हैं कि महाकुम्भ रूपी महानुष्ठान में हमारे इस गिलहरी-योगदान में दुनिया की सबसे पवित्र एवं प्रतिष्ठित संस्था 'गीताप्रेस' ने हमारा सहयोग किया।

गीताप्रेस भारत की संस्कृति एवं आध्यात्मिकता की वो धरोहर है जिसने हमारी समृद्ध भक्ति-परंपरा का निःस्वार्थ प्रचार कर सौ वर्षों से भी अधिक समय तक धार्मिक मूल्यों को प्रबलता दी है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह 'आरती-संग्रह' आपके आस्थावान हृदय को ईश्वर के निकट लाने एवं आपकी श्रद्धा को प्रगाढ़ करने में सहायक सिद्ध होगी।

सादर
गौतम अदाणी

महाकुम्भ, प्रयागराज
13 जनवरी—26 फरवरी 2025

adani

॥ श्रीहरिः ॥ 153

आरती-संग्रह

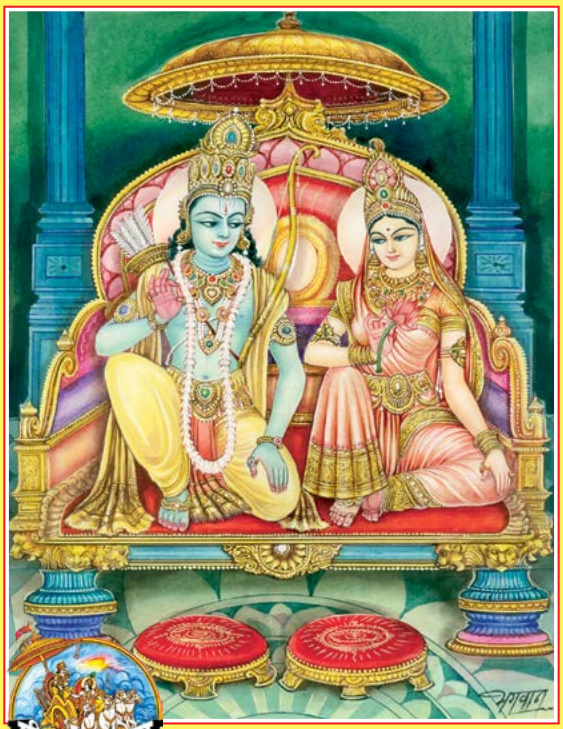

गीताप्रेस, गोरखपुर

"नीरांजनं बर्लिविष्णोर्यस्य गात्राणि संस्पृशेत्। यज्ञलक्षसहस्त्राणां लभते सनातनं फलम्।।"

अर्थात जो साधक निरंतर नीरांजन (आरती) करता है, उसे हजारों यज्ञों के समान अक्षय फल की प्राप्ति होती है।

आरती संग्रह का उद्देश्य

इस श्रद्धा भरी कृति के माध्यम से भक्त अपने आराध्य से जुड़कर मन और आत्मा की शुद्धि कर सकें, यही हमारा उद्देश्य है।

हमारा संकल्प

अदाणी समूह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक एवं वैचारिक विरासत से प्रेरणा लेते हुए भारत के सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण और समाज कल्याण के प्रति पूर्णतः समर्पित है।

विशेष आग्रह

आरती संग्रह आपको निःशुल्क प्रदान की जा रही है। यदि संभव हो तो एक वृक्ष लगाकर इस सेवा में सहभागी बनें और प्रकृति संरक्षण हेतु अपना योगदान दें।

अदाणी समूह जनकल्याण एवं राष्ट्रसेवा हेतु समर्पित है।

कुम्भ गीत

डॉ. रुचि चतुर्वेदी

जब दैव योग बन जाता है।
दिनकर वृश्चिक में आता है।
गुरु मेष राशि को चलते हैं।
ऐसी संक्रांति में ढलते हैं।
पावन प्रयाग का देखो अबके है मौसम अलबेला।
चलो चलें संगम के तट पर लगा कुंभ का मेला।
आया महाकुंभ आया महाकुंभ।।

कुंभ कुंभ ये कुंभ कुंभ
ये सुखदाई अमृतदाई।
यही मोक्षदायिनी शुभदाई,
देवों ने भी महिमा गाई।

गंगा यमुना का गीत सुनो कहतीं हैं पावन बेला।
चलो चलें संगम के तट पर लगा कुंभ का मेला।

संतों का डेरा है साधो
यहीं वास बनायेंगे अपना।
दुनियां के जन मन आयेंगे,
विश्वास बनाएंगे अपना।

यह महाकुंभ ही है जिसने जीवन आनंद उड़ेला।
चलो चलें संगम के तट पर लगा कुंभ का मेला।

कुंभ मुक्तक

01

समय की बाँसुरी पर सत्य का नवगीत गाता है ।
यही तो ज़िंदगी को प्यार का रस्ता दिखाता है।
यहीं मिलतीं हैं नदियाँ, हाँ यही संगम है अमृत का,
सनातन सत्य हमको कुंभ का दर्शन कराता है।।

02

तुम्हें गंगा का जल अमि तत्व अलबेला बुलाता है।
सकल भू से जुड़ा जन धन्य का रेला बुलाता है।
ये पांचों तत्व दस दिश और देवों का समागम है
चले आओ तुम्हें यह कुंभ का मेला बुलाता है।

03

जहां पर भक्ति में डूबे सरल मन लोग मिलते हैं।
जहां शुभ और मंगल के सुखद संजोग मिलते हैं।
वहीं पर देह की कुंभी भरे नव कुंभ अमृत का,
उसी संगम के तट पर सत्य के हठयोग मिलते हैं।

04

हम ऐसी पुण्य भारत भूमि पर जीवन हवन कर लें।
उसी संगम की नगरी में चलो गंगा सा मन कर लें।
मिलेगा कुंभ अमृत का जिसे मन प्राण में धर लो
तो ऐसी पावनी धरती को आओ हम नमन कर लें।

05

किया मंथन कि हो मंथन सभी से देवताओं ने कहा।
तभी से सृष्टि का निर्माण जीवन घाट पर होता रहा।
हृदय संगम हुआ तब से सुफल शुभ कामना जग की,
दिवाकर रश्मि के संग गंग में निर्बाध अमृत है बहा।

महाकुम्भ दोहावली

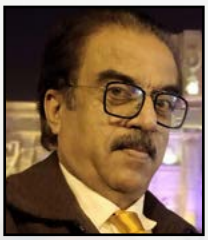

सहजयोगी राजेश राज

सागर मंथन की कथा, कहते कई पुराण।
अमृत पाने को हुआ, देवासुर संग्राम॥
सागर मंथन से मिले, थे जब चौदह रत्न।
अमृत देवों को मिले, इसका हुआ प्रयत्न॥
विष्णु ने तत्काल तब, धरा मोहनी रूप।
देव असुर मोहित हुए, ऐसी छटा अनूप॥
अमृत घट ले कर चले, जब विष्णू भगवान।
बूँद छलकने से बने, चार तीर्थ स्थान॥
हरिद्वार उज्जैन संग, नासिक और प्रयाग।
अमृत घट की बूँद से, जागे इनके भाग॥
चारो में सबसे अधिक, है प्रयाग का मान।
गंगा यमुना सरस्वती, संगम से पहचान॥

असुरों देवों में चला, बारह दिन संघर्ष।
देवों के बारह दिवस, अपने बारह वर्ष॥
बारह वर्षों पर तभी, मने कुम्भ का पर्व।
यह विशालतम विश्व का, पर्व हमारा गर्व॥
कुम्भ पर्व की महत्ता, कारण कई परोक्ष।
करें कुम्भ स्नान जो, मिले सुनिश्चित मोक्ष॥
सूर्य चन्द्रमा बृहस्पति, सब ग्रह हों अनुकूल।
सम्प्रदाय आते सभी, वैमनस्य सब भूल॥
ध्यान कीर्तन आरती, संतों के व्याख्यान।
निकले भव्य जलूस जब, हो शाही स्नान॥
घर बैठे कैसे करें, परमेश्वर का ध्यान।
सहजयोग स्टाल पर, लें कुण्डलिनी ज्ञान॥

गंगा तट पर हर तरफ़ ,झिलमिल दिखे प्रकाश।
लगे किसी ने रात में, उलट दिया आकाश॥
पौष पूर्णिमा जनवरी, को पहला स्नान।
होता है शिवरात्रि को, मेले का अवसान॥
श्रद्धालु गण विश्व से, आते कई करोड़।
महाकुम्भ का विश्व में, कोई जोड़ न तोड़॥
संगम में यूँ तो मिले, तीन नदी की धार।
महाकुम्भ में आ मिले, यहाँ सकल संसार॥
महाकुम्भ का पर्व सब, रखते वर्षों याद।
दो हजार पच्चीस में, सन तेरह के बाद॥
श्री माताजी की कृपा, से सब हो आसान।
वरना महिमा कुम्भ की,करना कठिन बखान॥

मां धरती की शान मां गंगा निर्मल धारा है

अपराजिता

राम हृदय में समाहित सरयू पावन धारा है
मां धरती की शान मां गंगा निर्मल धारा है
जनम मरण की कहानी मां स्वर्गस्वामिनी है,
सुख दायनी दुख हरनी मां पतित पाविनी है,
वन को जाती मातु सीए को शरणदायिनी है,
आकुल मन मानव तन को मोक्ष प्रदायिनी है,
शिव के शीश विराजित गंगा पावन धारा है
मां धरती की शान मां गंगा निर्मल धारा है
धरती पर उजियारा करती जीवन तारती है,
युग युग से जनमानस की गंगा ही सारथी है,
कवि के शब्दों की मां गंगा पावन आरती है,
गंगा की धारा से हर्षित मां भारत भारती है,
गोद में द्वारिका नगरी बसती पावन धारा है

मां धरती की शान मां गंगा निर्मल धारा है
बाबा तुलसी की भक्ति मानस की जुबानी है,
व्यास लिखे महाभारत की अतुल्य कहानी है,
वाल्मीकि के रामायण की अमृत वाणी है,
ऋषि मुनियों के तप की करुणा की निशानी है,
ब्रह्मा विष्णु महेश पूजते गंगा पावन धारा है
मां धरती की शान मां गंगा निर्मल धारा है
भागीरथी के स्वर्णिम तप से गंगा धरा उतरती है
सगर सूत कल्याणी धरा पर अविरल बहती है
राजा रंक हो शंख या पानी गंगा भेद नहीं करती
जन्मों के पाप क्षण में हरती गंगा उद्धार करती है
प्रयाग में त्रिवेणी का संगम पावन धारा है
मां धरती की शान मां गंगा निर्मल धारा है

नवीन भारत, प्रवीण भारत
New India, Skilled India
भारत
संस्कृति न्यास
उद्देश्य
सनातन संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार के लिए सतत प्रयत्नशील
राष्ट्रीय संस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए प्रयासरत
प्राथमिक से स्नातक तक पाठ्यक्रम में संस्कृति शिक्षा को अनिवार्य रूप से शामिल कराने का प्रयास
राष्ट्रीय संस्कृति आयोग का गठन एवं राष्ट्रीय संस्कृति दिवस के निर्धारण के लिए प्रयास
पत्र व्यवहार
बी-64, आवास विकास कालोनी, सूरजकुंड गोरखपुर-273001
1-454 वास्तुखण्ड, गोमती नगर लखनऊ-226010
+91:-9450887186, +91:-9450887187
Follow us
पंजीकृत कार्यालय
बी-38, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024
Contact : 011-24337573
bharatsanskritinyas@gmail.com
Website - www.bharatsanskritinyas.org

MAHARATNA

Bharat Petroleum

energising lives

shaping the energy of tomorrow

Bharat Petroleum, a Fortune Global 500 Company and India's second-largest Oil Marketing Company, is a leader in the integrated energy sector.

As a Maharatna enterprise, our refineries boast a combined capacity of 35.3 MMTPA, with a vast network comprising over 22,000 Energy Stations, 6,200 LPG distributorships, and more. Embracing sustainability, we are on a mission to offer electric vehicle charging at 7000 stations.

Committed to a Net Zero Energy future by 2040 in scope 1 & scope 2 emissions, we're not just an energy company; we're shaping a sustainable tomorrow.

Join us in Energising Lives and Building a Greener Planet!

Scan QR to know more